स्वर्ग की किताब

वॉल्यूम 12

मैंने अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखा।

मेरा दयालु यीशु अचानक प्रकट हुआ। जब मैं शिकायत कर रहा था, उसने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मेरी बेटी, मेरी बेटी,

-यदि आप सब कुछ जानते हैं जो होना है, तो आपको बहुत नुकसान होगा।

इसलिए आपको इतनी बड़ी पीड़ा से बचाने के लिए, मैं आपसे बचने की कोशिश करता हूं।"

जहाँ तक मेरी बात है, मैं अपनी शिकायतों के साथ कहता रहा:

"मेरी ज़िंदगी, मैंने तुमसे इसकी उम्मीद नहीं की थी। तुम जो मेरे बिना रहने में असमर्थ लगते हो,

अब तुम घंटे-घंटे मुझसे दूर बिताते हो।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि आप पूरा दिन इसी तरह बिताना चाहते हैं। यीशु, मेरे साथ ऐसा मत करो! तुम कैसे बदल गए!"

उसने मुझे यह कहकर बाधित किया:

"शांत हो जाओ, शांत हो जाओ! मैं नहीं बदला हूं, **मैं अपरिवर्तनीय हूं** । कब

-मैंने खुद को एक आत्मा से संवाद किया है,

-कि मैंने इसे अपने खिलाफ रखा,

- मैंने उससे बात की और उसने उसे मेरे प्यार से भर दिया,

तुम्हारे और मेरे बीच यह मिलन कभी बाधित नहीं होता है।

ज्यादा से ज्यादा रास्ते बदल जाते हैं।

एक निश्चित बिंदु पर मैं खुद को एक तरह से, दूसरे में, दूसरे तरीके से प्रकट करता हूं।

मैं हमेशा से जानता हूं कि अपने प्यार को उंडेलने के लिए नए तरीकों का आविष्कार कैसे किया जाता है। क्या तुम नहीं देखते कि अगर मैंने सुबह तुमसे कुछ नहीं कहा, तो मैं शाम को तुमसे बात करूंगा?

जब लोग मेरे जुनून के घंटे "ऐप्स" पढ़ते हैं,

-मैं तुम्हारी आत्मा को अतिप्रवाह के बिंदु तक भर देता हूं ई

-मैं आपसे अंतरंग चीजों के बारे में बात करता हूं जो मैंने आपको पहले कभी नहीं बताईं, मेरे तरीके से मेरा अनुसरण कैसे करें।

ये "अनुप्रयोग" मेरे आंतरिक जीवन का दर्पण हैं। जो कोई भी उन पर खुद को मॉडल करता है, उसमें मेरे जीवन को पुन: पेश करता है।

ओह! जैसा कि मेरा प्यार और मेरी प्यासी आत्माओं के लिए प्यास प्रकट होती है

- मेरे दिल के सभी तंतुओं में,

- मेरी हर सांस में,

- मेरे प्रत्येक विचार में, आदि!

दरअसल, मैं आपसे पहले से कहीं ज्यादा बात कर रहा हूं।

लेकिन, जैसे ही मैं समाप्त कर लेता हूं, मैं छिप जाता हूं और मुझे न देखकर, आप कहते हैं कि मैं बदल गया हूं।

मैं इसे जोड़ूंगा

जब तुम अपके शब्द से वही न दोहराओ जो मैं ने तुम से मन में कहा है ,
मेरे प्यार को बहने से रोकें "।

मैंने पूरी तरह से यीशु में विलीन होकर प्रार्थना की।

मैं यीशु के सभी विचारों को प्राणियों के विचारों में जमा करना चाहता था और इस प्रकार उन सभी चीजों की मरम्मत करना चाहता था जो उनके विचारों में उनके दिल के अनुसार नहीं हैं, और इसी तरह बाकी सभी चीजों के लिए।

मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, जब मैं धरती पर था,

मेरी मानवता ने प्राणियों के सभी विचारों को मेरे साथ जोड़ दिया।

ऐशे ही

- उनका हर विचार मेरी आत्मा में परिलक्षित होता था,

- मेरी आवाज में उनका हर शब्द,

- मेरे दिल में उनकी हर धड़कन,

- उनकी हर क्रिया मेरे हाथ में,

- मेरे पैरों में उनका हर कदम, और इसी तरह। ऐसा करते हुए, मैंने पिता को दैवीय क्षतिपूर्ति प्रस्तुत की।

इसके अलावा, जो कुछ भी मैंने पृथ्वी पर किया है, मैं स्वर्ग में जारी रखता हूं:

- जबकि जीव सोचते हैं,

उनके विचार मेरी आत्मा में प्रवाहित होते हैं।

- जब वे देखते हैं, तो मुझे उनकी टकटकी अपने में महसूस होती है, आदि।

तो उनके और मेरे बीच,

एक करंट लगातार गुजरता है, उसी तरह

कि सिर शरीर के अंगों के साथ निरंतर संचार में है।

मैं पिता से कहता हूं:

" मेरे पिता,

-यह सिर्फ मैं तुमसे भीख नहीं मांग रहा हूं, चुकाओ और तुम्हें शांत करो,

-लेकिन ऐसे जीव हैं जो वही करते हैं जो मैं अपने साथ करता हूं।

अपने कष्टों के साथ, वे मेरी अब की गौरवशाली मानवता और पीड़ा में असमर्थ होने की जगह लेते हैं »।

जो आत्माएं मुझमें विलीन हो जाती हैं, वे वही दोहराती हैं जो मैंने किया है।

जब वे मेरे साथ स्वर्ग में होंगे, तो उनका संतोष क्या होगा:

- वे जो मुझ में रहते हैं और

जो, मेरे साथ, तुमने सभी प्राणियों को गले लगाया और हर एक के लिए मरम्मत की!

वे मुझ में अपना जीवन जारी रखेंगे।

और जब जीव अभी भी पृथ्वी पर हैं

वे मुझे अपने विचारों में, इन आत्माओं के विचारों में ठेस पहुंचाएंगे

- उन घायल आत्माओं के मन में गूंजेगा, और

-पृथ्वी पर रहते हुए उन्होंने जो मरम्मत की वह जारी रहेगी।

मेरे साथ, वे ईश्वरीय सिंहासन के सामने सम्मान के प्रहरी होंगे। जब पृथ्वी के जीव मुझे अपमानित करते हैं,

वे स्वर्ग में विपरीत कार्य करेंगे।

वे मेरे सिंहासन के रक्षक होंगे और उनके पास सम्मान के स्थान होंगे। वे वही होंगे जो मुझे सबसे अच्छी तरह समझेंगे।

वे सबसे गौरवशाली होंगे।
उनकी महिमा मेरी और मेरी में उनकी हो जाएगी।

इसलिए, पृथ्वी पर अपने जीवन को पूरी तरह से मेरे साथ मिला दें।
मेरे पास से गुजरे बिना कोई कार्रवाई मत करो
नया धन्यवाद और
एक नई रोशनी।

मैं तुम्हें पाप की छाया से बचाने के लिए तुम्हारे हृदय का चौकस प्रहरी बनूंगा। मैं तुम्हें अपनी मानवता के रूप में रखूंगा।
और मैं स्वर्गदूतों को आज्ञा दूंगा
अपने चारों ओर एक ताज बनाने के लिए,
ताकि आप हर चीज और हर चीज से सुरक्षित रहें »।

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था और मेरे हमेशा दयालु यीशु ने खुद को संक्षेप में दिखाया। वह इतना व्यथित था कि उसे दया आ गई।
मैंने कहा, "क्या हुआ, यीशु?"

उसने जवाब दिया:
"मेरी बेटी,
अचानक और अप्रत्याशित चीजें होंगी; हर जगह क्रांति हो जाएगी। ओह! हालात कैसे बिगड़ेंगे!"
फिर, सब अभिभूत होकर चुप हो गए।

मैंने उससे कहा:
"मेरे जीवन का जीवन, मुझे एक और शब्द बताओ।"
अभिनय करते हुए जैसे कि वह मुझे उड़ाना चाहता है, उसने कहा, " **मैं तुमसे**

प्यार करता हूँ ।"

इसी के साथ " **आई लव यू** ", "

मुझे ऐसा लग रहा था कि हर इंसान और हर चीज को नया जीवन मिला है।

मैंने जारी रखा: "यीशु, एक और शब्द कहो।"

उन्होंने जारी रखा: "मैं आपको ' आई लव यू ' से ज्यादा सुंदर शब्द नहीं कह सकता ।

मुझ से आकर, यह " **आई लव यू"** स्वर्ग और पृथ्वी को भर देता है।

यह उन संतों के बीच प्रसारित होता है जो एक नई महिमा प्राप्त करते हैं। यह सांसारिक तीर्थयात्रियों के दिलों में उतरता है जिनके

- कुछ को रूपांतरण की कृपा प्राप्त होती है e

-अन्य पवित्रीकरण के।

वह शुद्धिकरण में प्रवेश करता है और आत्माओं पर लाभकारी और ताज़ा ओस फैलाता है।

तत्व भी अपनी प्रजनन क्षमता और विकास में एक नए जीवन के साथ निवेशित महसूस करते हैं।

हर कोई आपके यीशु के " **आई लव** यू" को सुनता है !

"क्या आप जानते हैं कि जब आत्मा मुझसे ' **आई लव यू**' अपनी ओर आकर्षित करती है ? जब, मुझ में विलीन हो जाती है,

वह दैवीय दृष्टिकोण अपनाती है और वह सब कुछ करती है जो मैं करता हूं।"

इसके साथ मैं यीशु से कहता हूं:

"मेरे प्यारे, इस दिव्य दृष्टिकोण को हमेशा रखना मुश्किल है।"

उसने जारी रखा:

"मेरी बेटी, अगर आत्मा अपने दैनिक कार्यों में हमेशा ऐसा नहीं कर सकती है, तो वह अपनी अच्छी इच्छा से कर सकती है।

तो, मैं उससे बहुत खुश हूँ कि मैं चौकस संतरी हूँ

- अपने सभी विचारों के साथ,

- उसके सभी शब्दों में,

- उसके पूरे दिल की धड़कन, आदि,

उन्हें एक अनुरक्षण के रूप में मेरे अंदर और बाहर रखना,

उन्हें प्यार से उसकी अच्छी इच्छा के फल के रूप में देखना।

जब आत्मा मुझमें विलीन होकर मेरे साथ मिल कर अपने सामान्य कर्म करती है, तो मैं उसके प्रति इतना आकर्षित होता हूँ कि मैं वह सब कुछ करता हूँ जो वह उसके साथ करता है,

अपने कार्यों को दैवीय कार्यों में बदलना।

मैं हर चीज को ध्यान में रखता हूं और हर चीज को इनाम देता हूं, यहां तक कि सबसे छोटी चीजों को भी। उनकी सद्भावना का कोई भी कार्य अप्रतिफलित नहीं है।"

मैंने अपने हमेशा दयालु यीशु से उनके प्रति मेरी सामान्य प्रार्थना के बारे में शिकायत की, उनसे कहा:

" मेरे प्यार, क्या लगातार मौत! तुम्हारा अभाव एक मौत है।

यह मृत्यु और भी क्रूर है क्योंकि यह वास्तव में मृत्यु की ओर नहीं ले जाती है।

मुझे समझ नहीं आ रहा है कि आपके दिल की अच्छाई मुझे इन लगातार मौतों को देखकर कैसे बर्दाश्त कर सकती है और मुझे जिंदा छोड़ देती है ”।

जैसा कि मैंने इन विचारों का मनोरंजन किया,

धन्य जीसस आए और मुझे अपने दिल से कसकर पकड़कर मुझसे **कहा** :

"मेरी बेटी, अपने आप को मेरे दिल के खिलाफ जोर से दबाओ और जीवन में वापस आ जाओ। उस पीड़ा को जानो

-जो मुझे संतुष्ट करता है और मुझे यह अधिक पसंद है,

-जो मेरे जैसा सबसे शक्तिशाली और सबसे समान है,

यह मेरे निजीकरण का है, क्योंकि यह एक दैवीय पीड़ा है।

आत्माएं मेरे दिल के इतने करीब हैं कि मानो मेरी इंसानियत से बंधी हैं। और जब उनमें से एक खो जाता है,

वह जंजीर जो इसे मेरे पास रखती है वह टूट गई है e

मुझे ऐसा दर्द होता है जैसे कोई अंग टूट गया हो।

और उस टूटी हुई जंजीर को कौन जोड़ सकता है, आंसू सुधार सकता है?

कौन इस आत्मा को मेरे पास वापस ला सकता है, इसे वापस जीवन में ला सकता **है?**

मेरे अभाव के कष्ट, क्योंकि ये दैवीय कष्ट हैं।

आत्माओं की हानि के कारण मेरे कष्ट दिव्य हैं।

जो मुझे नहीं देखते और मुझे नहीं सुनते, उनके कष्ट दिव्य हैं।

ये दो प्रकार के दैवी कष्ट मिलते हैं, आलिंगन करते हैं। उनके पास ऐसी शक्ति है कि वे कर सकते हैं

- आत्माओं को मुझसे अलग कर लो e

-उन्हें मेरी मानवता के साथ फिर से मिलाने के लिए।

मेरी बेटी, क्या मेरे निजीकरण की कीमत आपको इतनी है?

-यदि हां, तो इतनी बड़ी कीमत भुगतने को बेकार न बनाएं।

जब से मैं तुम्हें यह पीड़ा देता हूं,

इसे सिर्फ अपने लिए न रखें बल्कि

इसे लड़ाकों के बीच प्रसारित करें

युद्ध के बीच में आत्माओं को पकड़ने और उन्हें मुझ में बंद करने के लिए।

आत्माओं को बचाने और उन सभी को मेरे पास वापस लाने के लिए आपकी पीड़ा पूरी दुनिया में फैल सकती है।"

मुझे मेरी सामान्य अवस्था में पाकर, मेरा हमेशा प्यारा यीशु आया। चूँकि मैं थोड़ा पीड़ित था, उसने मुझे अपनी बाहों में लिया और कहा:

"मेरी प्यारी बेटी, मेरी प्यारी लड़की, मुझ में आराम करो।

अपने कष्टों को अपने लिए अकेले न रखें, बल्कि उन्हें मेरे क्रॉस पर एक बैकअप के रूप में और मेरे दर्द से राहत के रूप में एकजुट करें।

मेरे कष्ट आपके साथ जुड़ेंगे और आपको बनाए रखेंगे। हमारी पीड़ा उसी आग में जलेगी।

मैं तुम्हारे कष्टों को ऐसे देखूंगा मानो वे मेरे हों।

जब मैं क्रूस पर था तब मैं उन्हें वही प्रभाव और मूल्य दूंगा जो मेरा है।

वे आत्माओं के लिए मेरे पिता के सामने वही पद पूरा करेंगे।

"बेहतर है, स्वयं क्रूस पर आओ। हम कितने खुश होंगे, यहाँ तक कि दर्द में भी!

वास्तव में, यह *दुख नहीं है जो प्राणी को दुखी करता है* । इसके विपरीत *कष्ट उसे विजयी,* गौरवशाली, समृद्ध और सुंदर बनाता है ।

जब उसके प्यार में कुछ कमी होती है तो वह दुखी हो जाता है।

क्रूस पर मेरे साथ संयुक्त, तुम हर चीज में, प्रेम से संतुष्ट होओगे। तुम्हारे कष्ट प्रेम होंगे, तुम्हारा जीवन प्रेम होगा।

और इसलिए आप खुश रहेंगे "।

मैं सभी प्राणियों में अपने आप को फैलाने और उन सभी को उसमें घोलने के लिए अपने प्यारे यीशु में विलीन हो गया।

मैं यीशु और प्राणियों के बीच रहना चाहता था ताकि वे यीशु को नाराज न कर सकें।जब मैं यह कर रहा था, यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, जब तुम मेरी वसीयत में मेरे साथ विलीन हो जाती हो, तो तुममें एक सूर्य बन जाता है।

जब आप सोच रहे हैं, प्यार कर रहे हैं, मरम्मत कर रहे हैं, आदि, इस सूर्य की किरणें बन रही हैं और, पृष्ठभूमि में,

मेरी वसीयत इन किरणों का ताज पहनाती है।

यह सूर्य आकाश में उगता है और सभी प्राणियों पर लाभकारी ओस की तरह विकिरण करता है। जितना अधिक तुम मुझ में लीन होते हो, उतने ही अधिक तुम ऐसे सूर्य बनाते हो।

ओह! उन सूर्यों को देखना कितना सुंदर है, जो उगते हैं,

- मेरे सूरज में पिघल जाओ ई

- सभी के लिए लाभकारी ओस लाने के लिए!

इस प्रकार जीवों को कितनी कृपा नहीं मिलती!

मैं इससे इतना प्रभावित हूं कि जैसे ही एक आत्मा मुझमें पिघलती है, मैं उस पर बारिश करता हूं, बहुत धन्यवाद,

एक और भी बड़ा सूर्य बनाने के लिए

ताकि सब पर और अधिक ओस डालने में समर्थ हो सकें »।

बाद में, जैसे ही मैं उसमें विलीन हुआ,

मैंने महसूस किया कि मेरे सिर पर प्रकाश, प्रेम और कृपा बरस रही है।

अपने आप को अपनी सामान्य स्थिति में पाकर, मैंने अपने प्यारे यीशु से शिकायत की कि मैं उनकी उपस्थिति से वंचित हूँ, कह रही हूँ:

" मेरे प्यार, कौन जान सकता है कि तुम्हारा अभाव मेरे लिए कितना दर्दनाक है? मैं खुद को थोड़ा-थोड़ा करके मरता हुआ महसूस कर रहा हूं।

मैं जो भी कार्य करता हूं वह एक मृत्यु है जो मुझे लगता है क्योंकि मुझे वह नहीं मिल रहा है जो मेरा जीवन है।

एक साथ मरना और जीना मौत से भी ज्यादा क्रूर है। यह दोहरी मौत है।"

मेरे प्यारे **यीशु ने** आकर **मुझसे कहा** :

" मेरी बेटी, हर चीज में साहसी और दृढ़ रहो!

इसके अलावा, क्या तुम मेरी नकल नहीं करना चाहते?

मैं भी धीरे-धीरे मर गया।

-जब जीवों ने मुझे मेरे कदमों में मारा, तो मुझे लगा कि मेरे पैरों में ऐंठन है जो मुझे मौत दे सकती है।

हालाँकि, भले ही मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं मर रहा हूँ, मैं नहीं मरा।

-जब जीवों ने मुझे अपने कार्यों से नाराज किया, तो मुझे अपने हाथों में मौत का एहसास हुआ।

मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं मर रहा हूं, लेकिन मेरे पिता की इच्छा ने मुझे मरने से रोक दिया।

मेरी आवाज में जीवों के बुरे शब्द और भयानक अपशब्द गूंज रहे थे।

तो मुझे घुटन महसूस हुई।

मैंने अपनी आवाज में मौत सुनी, लेकिन मैं मरा नहीं हूं।

-और मेरा प्रताड़ित दिल? जब यह स्पंदित हुआ, मैंने महसूस किया कि जीवों और आत्माओं के बदसूरत जीवन मुझसे अलग हो गए हैं।

मेरा दिल लगातार फटा और फटा हुआ था।

मैं हर प्राणी के लिए, हर अपराध के लिए लगातार मर रहा था।

यहां भी मोहब्बत और परमात्मा की मर्जी ने मुझे जीने पर मजबूर कर दिया। इसलिए तुम भी धीरे-धीरे मर रहे हो।

मैं चाहता हुँ की तुम मेरे पास ररो।

मैं अपने मृतकों के बीच आपकी कंपनी चाहता हूं। क्या तुम खुश नहीं हो?"

अपनी दयनीय स्थिति में जारी रखते हुए, मैंने अपने प्यारे यीशु में घुलने-मिलने की कोशिश की,

मेरी आदत के अनुसार। हालाँकि, मेरे सभी प्रयास व्यर्थ गए हैं। यीशु ने स्वयं मुझे विचलित किया।

मुश्किल से सांस लेते हुए **उसने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी, *जीव कोई और नहीं बल्कि मेरी सांस है।*

जब मैं सांस लेता हूं, तो मैं सब कुछ जीवंत कर देता हूं।

सारा जीवन सांसों में है।

अगर सांस नहीं है,

-दिल अब धड़कता नहीं है,

- रक्त अब प्रसारित नहीं होता है,

- हाथ निष्क्रिय हो जाते हैं,

-बुद्धि मर जाती है, और इसी तरह।

मेरी सांस के उपहार और उसकी स्वीकृति में मानव जीवन बसता है।

हालाँकि, मैं जीवों को कैसे जीवन और गति देता हूँ

मेरी पवित्र सांसों से

इसलिए मैं उन्हें पवित्र करना चाहता हूं, उनसे प्यार करना चाहता हूं, उन्हें सजाना चाहता हूं, उन्हें समृद्ध करना चाहता हूं, आदि। वे मुझे अपनी आवेशित सांस के साथ उत्तर देते हैं

- अपराध, विद्रोह, कृतघ्नता, निन्दा, आदि।

संक्षेप में,

-मैं एक शुद्ध सांस भेजता हूं और एक अशुद्ध सांस मेरे पास लौट आती है।

-मैं आशीर्वाद की सांस भेजता हूं और शाप की सांस मेरे पास लौट आती है;

-मैं प्यार की सांस भेजता हूं और मुझे अपने दिल की गहराई में अपराधों की सांस मिलती है।

लेकिन मेरा प्यार मुझे मानव जीवन की मशीनों को रखने के लिए अपनी सांस भेजता रहता है।

अन्यथा, वे अब काम नहीं करेंगे और नष्ट हो जाएंगे।

आह! मेरी बेटी, क्या आप जानते हैं कि *मानव जीवन कैसे बनाए रखा जाता है? मेरी सांस के लिए* ।

जब मुझे कोई ऐसी आत्मा मिलती है जो मुझसे प्यार करती है, तो उसकी सांसें मेरे लिए कितनी मीठी होती हैं! मैं कैसे आनन्दित हूँ!

मैं सब खुश महसूस कर रहा हूँ।

उसके और मेरे बीच सुरीली गूँज गूंजती है।

यह आत्मा अन्य सभी प्राणियों से अलग है और इसलिए यह स्वर्ग में होगी।

मेरी बेटी

मैं अपने प्यार को रोक नहीं पाया और मैंने उसे तुम्हारे साथ खुली छूट दे दी।"

आज मैं जीसस के साथ घुल-मिल नहीं सका, क्योंकि उन्होंने मुझे अपनी सांसों में व्यस्त रखा।

मैंने कितनी बातें समझ ली हैं जो मैं व्यक्त नहीं कर सकता। मैं भी यहीं रुकता हूँ।

मेरा हमेशा अच्छा यीशु नहीं आया था और मैं बहुत व्यथित था। जब मैंने प्रार्थना की, तो मेरे मन में निम्न विचार आया:

"क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आप शापित हो सकते हैं?" सच में, मैं इसके बारे में कभी नहीं सोचता।

मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे मन में यह विचार आया।

मेरे अच्छे यीशु, जो हमेशा मुझ पर नज़र रखते हैं, मेरे भीतर चले गए और मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

ये सोच एक अजीब सी है जो मेरे प्यार को बहुत दुखी करती है। अगर कोई लड़की अपने पिता से कहती है:

" मैं तुम्हारी बेटी नहीं हूँ। तुम मुझे अपनी विरासत का एक हिस्सा नहीं दोगे।

तुम मुझे खाना नहीं देना चाहते। तुम मुझे अपने घर में नहीं चाहते।" और अगर वह दुखी होती, तो बेचारा पिता क्या कहता?

उसने कहा, "बेतुका! यह लड़की पागल है!" फिर, प्यार से उसने कहा:

" अगर तुम मेरी बेटी नहीं हो तो तुम कौन हो?

तुम मेरी छत के नीचे रहते हो, तुम मेरी मेज पर खाते हो, मैं तुम्हें अपने काम से कमाए हुए पैसे से कपड़े पहनाता हूं।

यदि आप बीमार हैं, तो मैं आपकी सहायता करता हूं और आपको सभी उपचार प्रदान करता हूं ताकि आप ठीक हो सकें।

फिर क्यों शक करते हो कि तुम मेरी बेटी हो?"

"और भी कई कारणों से, मैं कहूंगा

उन लोगों के लिए जो मेरे प्यार और डर को शापित होने पर संदेह करते हैं: "मैं क्या कह सकता हूं?

मैं तुम्हें अपना मांस खाने को देता हूं, तुम मेरे सब कुछ पर रहते हो; यदि तुम बीमार हो, तो मैं तुम्हें संस्कारों से चंगा करता हूं।

अगर तुम गंदे हो, तो मैं तुम्हें अपने खून से धोता हूं।

क्या मैं हमेशा आपके निपटान में हूं और आपको संदेह है? क्या आप मुझे दुखी करना चाहते हैं? और फिर, मुझे बताओ, क्या तुम किसी और को पसंद करोगे?

क्या आप दूसरे को पिता के रूप में पहचानते हैं? और तुम कहते हो कि तुम मेरी बेटी नहीं हो?"

और अगर यह तुम्हारा मामला नहीं है, तो तुम मुझे क्यों दुखी और दुखी करते हो? क्या वह कड़वाहट पर्याप्त नहीं है जो दूसरे मुझे देते हैं?

क्या तुम मेरे दिल में भी दर्द डालना चाहते हो?"

मेरी सामान्य स्थिति में होने के नाते,

मैं पूरी तरह से अपने प्यारे यीशु में विलीन हो गया।

और मैं ने सब प्राणियोंमें उण्डेल दिया, कि उन्हें उस से भर दें।

मेरे दयालु यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, जब भी मुझमें जीव पिघलता है,

सभी प्राणियों को दैवीय प्रभावों का संचार करता है, जो उनकी आवश्यकताओं के अनुसार निम्न प्रकार से आते हैं:

- जो कमजोर है वह ताकत महसूस करता है;

- जो पाप में हठ करते हैं, वे प्रकाश प्राप्त करते हैं;

- जो पीड़ित हैं उन्हें आराम मिलता है; और इसी तरह।"

उसके बाद, मैंने खुद को अपने शरीर के बाहर कई आत्माओं के बीच पाया।

मुझे ऐसा लग रहा था कि वे शुद्धिकरण और संतों में आत्माएं हैं।

इन आत्माओं ने मुझे हाल ही में एक मृत व्यक्ति के बारे में बताया जिसे मैं जानता था।

उन्होंने मुझे बताया:

«यह कितनी खुशी की बात है कि जो आत्माएं 'आवर्स ऑफ द पैशन' की छाप धारण करती हैं, वे शुद्धिकरण से नहीं गुजरती हैं!

इन घंटों से बचकर, वे अपनी जगह सुरक्षित स्थान पर ले लेते हैं।

इसके अलावा, कोई आत्मा नहीं है जो स्वर्ग में उड़ती है

जो "आवर्स ऑफ द पैशन" के साथ नहीं है।

ये घंटे लगातार स्वर्ग की ओस बिखेरते हैं

-धरती पर,

- शुद्धिकरण ई . में

- स्वर्ग में भी ।"

यह सुनकर मैंने मन ही मन सोचा:

"शायद अपनी बात रखने के लिए

- कहने का तात्पर्य यह है कि "जुनून के घंटे" के हर शब्द के लिए, यीशु एक आत्मा को बचाएगा-

मेरे प्यारे यीशु ने स्वीकार किया कि कोई भी बचाई हुई आत्मा नहीं है जो इन घंटों में नहीं बची है »।

उसके बाद, मैं अपने शरीर में वापस चला गया।

अपने प्यारे यीशु को पाकर मैंने उनसे पूछा कि क्या यह सच है।

उसने मुझसे कहा :

"ये घंटे स्वर्ग और पृथ्वी को सद्भाव में लाते हैं और मुझे दुनिया को नष्ट करने से रोकते हैं।

मुझे अपना खून, मेरे घाव, मेरा प्यार और जो कुछ भी मैंने किया है उसे महसूस करता हूं

- रिलीज और - सब कुछ बचाने के लिए हर चीज पर छिड़कें।

जब हम जुनून के इन घंटों का ध्यान करते हैं,

मैं गतिमान आत्माओं के उद्धार के लिए अपने रक्त, अपने घावों और अपनी चिंताओं को महसूस करता हूं।

मुझे लगता है कि मेरा जीवन खुद को दोहरा रहा है।

इन घंटों के माध्यम से नहीं तो जीव कैसे अच्छे हो सकते हैं?

आपको इसमें संदेह क्यों है?

बात तुम्हारी नहीं मेरी है। आप कमजोर उपकरण थे।"

अपने आप को अपनी सामान्य स्थिति में पाकर, मैंने अपने प्यारे यीशु के अभाव की शिकायत की।

मैंने उससे कहा: "कितना कड़वा अलगाव है! मेरे लिए यह सब खत्म हो गया है! मैं

वहां का सबसे दुखी प्राणी बन गया हूं!"

मुझे बाधित करते हुए **उन्होंने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी, तुम किस अलगाव की बात कर रही हो?

आत्मा केवल मुझसे अलग है

-जब यह किसी ऐसी चीज को प्रवेश करने की अनुमति देता है जो मेरा नहीं है।

जब मैं एक आत्मा में प्रवेश करता हूं और पाता हूं

- उसकी इच्छा, उसकी इच्छाएं, उसके स्नेह, उसके विचार, उसका दिल, आदि। *पूरी तरह से मेरे लिए,*

मैं इसे अपने प्रेम की अग्नि में समाहित कर लेता हूं। मेरा तर्क है कि उसकी वसीयत मेरे साथ इस तरह विलीन हो गई है कि हम **एक** हो गए हैं ।

मैं उनके प्यार, विचारों और इच्छाओं को अपने में मिला लेता हूं। जब मैंने एक एकल तरल बनाया,

मैं इसे आकाशीय ओस की तरह अपनी मानवता पर डालता हूं।

यह ओस की बूंदों के रूप में बदल जाता है क्योंकि मुझे बुरा लगता है।

ये बूंदें

- मुझे भाड़ में जाओ,

-मुझे प्यार करो,

- मुझे इसे ठीक करने दो और

- मैं अपने फिर से खुले घावों को सुगंधित करता हूं।

और चूँकि मैं हमेशा सभी प्राणियों का भला करता हूँ, यह ओस सभी की भलाई के

लिए पड़ती है।

लेकिन अगर मुझे अपनी आत्मा में कुछ ऐसा मिल जाए जो मेरा नहीं है, तो मैं उसकी चीजों को अपने साथ नहीं मिला सकता।

केवल समान चीजें विलय कर सकती हैं और उनका मूल्य समान हो सकता है।

अगर आत्मा में लोहा, काँटा और पत्थर है, तो वे कैसे मिल सकते हैं?

फिर अलगाव है, असंतोष है।

यदि इनमें से कुछ भी तुम्हारे हृदय में नहीं है, तो मैं तुमसे अलग कैसे हो सकता हूँ?"

मेरी सामान्य स्थिति में जारी है,

मैंने अपने दयालु यीशु से भीख माँगी कि मेरे पास आकर मुझसे प्यार करो, प्रार्थना करो और मेरे लिए सुधार करो,

अपने दम पर कुछ भी करने में मेरी असमर्थता को देखते हुए ।

मेरी शून्यता के लिए करुणा में ले जाया गया,

मेरे प्यारे यीशु मेरे साथ प्यार करने, प्रार्थना करने और मरम्मत करने के लिए मेरे पास आए। उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

जितना अधिक आत्मा अपने आप को अलग करती है, उतना ही मैं उसे अपने साथ पहिनाता हूं: और अधिक यह मानता है कि वह अपने आप कुछ नहीं कर सकता,

अधिक काम और मैं उसमें सब कुछ करता हूं।

मुझे लगता है कि मेरे प्यार, मेरी प्रार्थनाओं और मेरी क्षतिपूर्ति का उसके द्वारा सदुपयोग किया गया है।

और, मेरे सम्मान के लिए, मैं देखता हूं कि वह क्या करना चाहता है:

क्या आप प्यार करना चाहते हैं? मैं आता हूं और उससे प्यार करता हूं। क्या आप प्रार्थना करना चाहते हैं? मैं उसके साथ प्रार्थना करता हूं।

संक्षेप में, उसका विनाश और उसका प्रेम, जो मेरा है,

- मुझे इसमें संलग्न करें और

- मुझे उसके साथ वह करने के लिए मजबूर करें जो वह चाहती है;

और मैं उसे अपने प्यार, मेरी प्रार्थनाओं और मेरी क्षतिपूर्ति की योग्यता देता हूं।

अपार संतोष के साथ,

मुझे लगता है कि मेरा जीवन खुद को दोहरा रहा है

मैं अपने कामों का फल सभी की भलाई के लिए उतारता हूं, क्योंकि वे प्राणी की नहीं (मुझमें छिपी हुई) चीजें हैं, बल्कि मेरी हैं »।

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मुझे कुछ दर्द महसूस हुआ।

जैसे ही मैं आया, मेरा प्यारा यीशु मेरे सामने खड़ा हो गया; यह मुझे लग रहा था कि वहाँ था

उसके और मेरे बीच संचार की विभिन्न लाइनें। उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

आत्मा की हर पीड़ा उसके और मेरे बीच एक अतिरिक्त संचार है।

यह है कि सभी कष्ट जो प्राणी जी सकते हैं वे मेरी मानवता में पीड़ित हैं और इस प्रकार एक दिव्य चरित्र के साथ आ गए हैं।

और चूंकि प्राणी उन सभी को एक साथ नहीं जी सकता है, मेरी अच्छाई उन्हें धीरे-धीरे उससे संप्रेषित करती है।

उसके कष्टों से,% o के साथ मिलन बढ़ता है। यह न केवल अपने कष्टों से बढ़ता

है, बल्कि उन सभी के माध्यम से भी बढ़ता है जो आत्मा अच्छा करती है।
इस प्रकार जीव और मेरे बीच के बंधन विकसित होते हैं"।

एक और दिन मैंने सोचा कि अन्य आत्माएं कितनी भाग्यशाली हैं कि वे धन्य संस्कार के सामने सक्षम हो सकें, जबकि मैं, बेचारी ,
यह मुझे मना है।

तब मेरे धन्य यीशु ने मुझसे कहा:
"मेरी बेटी,
जो मेरे विल में रहता है
- मेरे साथ तंबू में रहो e
- शीतलता, अनादर और उन सभी चीजों के लिए मेरे कष्टों में भाग लेता है जो आत्माएं मेरी पवित्र उपस्थिति में करती हैं।

जो कोई मेरी वसीयत में रहता है उसे हर चीज में श्रेष्ठ होना चाहिए।
और सम्मान का स्थान उसके लिए आरक्षित है।

सबसे ज्यादा मुनाफा किसे है:
वह जो मेरे सामने है या जो मेरे साथ है?

जो मेरी वसीयत में रहता है, उसके लिए मैं बर्दाश्त नहीं करता
- उसके और मेरे बीच एक कदम की दूरी भी नहीं,
- दर्द या खुशी में हमारे बीच कोई अंतर नहीं है।
हो सकता है कि मैं इसे क्रूस पर चढ़ा दूं, लेकिन मैं इसे हमेशा अपने पास रखूंगा।

इसके लिए मैं आपको हमेशा अपनी वसीयत में चाहता हूं:

मैं आपको अपने पवित्र हृदय में पहला स्थान देना चाहता हूं।

मैं अपने प्यार और दर्द के साथ अपने दिल की धड़कन को महसूस करना चाहता हूं।

मैं तुम्हारी इच्छा को अपने अंदर महसूस करना चाहता हूं ताकि हर एक में गुणा करके यह मुझे एक सरल कार्य के साथ, सभी का प्रतिशोध और प्यार दे सके ।

मैं अपनी इच्छा को आप में महसूस करना चाहता हूं, अपने गरीब को अपना बनाना।

मानवता इसे पिता के महामहिम के सामने एक सतत शिकार के रूप में प्रस्तुत करती है »।

मैं अपने प्यारे यीशु में विलीन हो गया।

लेकिन मैंने खुद को इतना दुखी देखा कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उससे क्या कहूं। मुझे सांत्वना देने के लिए, मेरे हमेशा दयालु **यीशु ने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी,

जो मेरी वसीयत में रहता है, उसके लिए न तो अतीत है और न ही भविष्य, लेकिन सब कुछ मौजूद है।

मैंने जो कुछ भी किया है या सहा है वह सब वर्तमान है।

इस प्रकार, यदि मैं पिता को संतुष्टि देना चाहता हूं या प्राणियों का भला करना चाहता हूं, तो मैं ऐसा कर सकता हूं जैसे कि मैं अभिनय कर रहा हूं या पीड़ित हूं।

मेरी वसीयत में जो चीजें जीव पीड़ित या कर सकते हैं, वे एकजुट हैं

-मेरे दुख और . के लिए

-मेरे कार्यों के लिए

जिसके साथ मैं एक हूं।

जब कोई आत्मा अपने कष्टों की सहायता से मुझे अपना प्रेम बताना चाहती है, तो वह अपने अतीत के कष्टों - जो अभी भी वर्तमान हैं - को उस प्रेम और संतुष्टि को नवीनीकृत करने के लिए अपील कर सकती है जो वह मुझे प्रदान करता है।

मुझ से,

जब मैं इस प्राणी की सरलता को देखता हूं कि,

-मुझे प्यार और संतुष्टि देने के लिए,

अपने शेयरों और पिछले खराब ऋणों को बैंक में रखता है ताकि उन्हें गुणा किया जा सके और ब्याज अर्जित किया जा सके,

फिर

-इसे और भी समृद्ध करने के लिए e

- मुझे मुझ पर हावी मत होने दो,

मैं अपने कष्टों और कार्यों को तुम्हारे साथ जोड़ता हूं।"

मेरी सामान्य स्थिति में जारी है,

मैंने अपने आप को पूरी तरह से अपने यीशु की पवित्र इच्छा में फेंकने की कोशिश की।

मैंने उससे पूरी तरह से मेरे साथ घुलने-मिलने की भीख माँगी, ताकि मैं अब खुद को नहीं, बल्कि केवल उसे महसूस करूँ।

धन्य यीशु ने आकर **मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी,

जब कोई आत्मा मेरी इच्छा में रहती है और कार्य करती है, तो मैं इसे अपने में हर

जगह महसूस करता हूं। मैं इसे अपनी आत्मा में महसूस करता हूं।
और उसके विचार मेरे साथ जुड़ते हैं।

मैं कैसे **जीवों की बुद्धि में जीवन फैलाता हूँ,**
यह आत्मा मेरे साथ प्राणियों के मन में फैलती है।
जब वह देखता है कि जीव मुझे ठेस पहुँचाते हैं, तो उसे मेरा दर्द महसूस होता है।
मैं इसे अपने दिल की धड़कन में भी महसूस करता हूं।

वास्तव में, मैं अपने दिल में दोहरी धड़कन महसूस करता हूं और,
- जब मेरा प्यार जीवों में बरसता है,
- मेरे साथ डालो।

अगर *मुझे प्यार नहीं है,* तो वह मुझे सभी के लिए प्यार करता है, वह मुझे *दिलासा देता है।*

मैं अपनी ख्वाहिशों में इस आत्मा की ख्वाहिशों को महसूस करता हूं; अपने काम में, मैं उसे महसूस करता हूँ,

और इसी तरह।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि यह आत्मा मेरे खर्च पर रहती है।" मैंने उससे कहा:

"मेरे प्यारे, आप सब कुछ खुद कर सकते हैं। आपको जीवों की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। फिर आप इतना प्यार क्यों करते हैं कि जीव आपकी इच्छा में रहते हैं?"

उसने जवाब दिया:

"यह सच है कि मुझे किसी चीज या किसी की जरूरत नहीं है और मैं खुद सब कुछ कर सकता हूं। हालांकि , **जीने के लिए,** प्यार को आउटलेट की **जरूरत है"** ।

चलो धूप सेंकते हैं: इसे प्रकाश की आवश्यकता नहीं है।

यह आत्मनिर्भर है और दूसरों को इसका लाभ प्रदान करता है। हालांकि, अन्य छोटी रोशनी भी हैं।

और, इस तथ्य पर बिना रुके कि उसे उनकी आवश्यकता नहीं है , वह उन्हें अपने आप में चाहता है

-साथियों और . के रूप में

अपने छोटे से प्रकाश को चौड़ा करने के लिए इसके प्रकाश के आउटलेट की तरह।

अगर वे उसकी रोशनी से इनकार करते हैं तो छोटी रोशनी उसे क्या नुकसान नहीं पहुंचाएगी?

"आह! मेरी बेटी, जब वसीयत अकेली होती है, तो वह बाँझ होती है;

जब प्यार अकेला होता है, तो वह मुरझा जाता है और मुरझा जाता है!

मैं जीवों से इतना प्यार करता हूं कि मैं चाहता हूं कि वे मेरी इच्छा से एकजुट हों ताकि उन्हें उपजाऊ बनाया जा सके और उन्हें प्यार का जीवन दिया जा सके। इस प्रकार, माई लव को एक आउटलेट मिल जाएगा।

मैंने जीवों को केवल इसलिए बनाया कि मेरा प्यार उनमें से कोई रास्ता खोज ले और किसी और चीज के लिए नहीं "।

अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैंने यीशु से शिकायत की कि मैंने उनसे उनकी सजा समाप्त करने के लिए विनती की थी।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, क्या तुम शिकायत कर रही हो?"

फिर भी, आपने अभी तक कुछ नहीं देखा है। बड़ी सजा आती है।

जीव असहनीय हो गए हैं।

दंड के तहत, वे यह स्वीकार करने से ज्यादा विद्रोह करते हैं कि यह मेरा हाथ है

जो हमला करता है!

मेरे पास उन्हें खत्म करने के अलावा कोई चारा नहीं है।

तो मैं ये सब जीवन ले सकता हूँ

-वह पृथ्वी को संक्रमित करता है e

- बढ़ती पीढ़ियों को मार रहा है।

इसलिए हम बुराइयों के अंत की प्रतीक्षा नहीं करते, बल्कि सबसे बुरे का भी इंतजार करते हैं। पृथ्वी का कोई भी भाग ऐसा नहीं होगा जो रक्त से न नहाया होगा।"

इन शब्दों पर मुझे लगा कि मेरा दिल टूट गया है। मुझे दिलासा देने के लिए,

यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, जो मैं करता हूं उसे करने के लिए मेरी इच्छा में आओ। आप सभी प्राणियों की भलाई के लिए कार्य करने में सक्षम होंगे।

मेरी इच्छा की शक्ति से, आप इसे करने में सक्षम होंगे

-उन्हें उस खून से बचाएं जो वे ई . में तैरते हैं

- उन्हें मेरे पास वापस लाओ, उनके ही खून में धोए गए "।

मैने जवाब दिये:

"मेरा जीवन, मैं बहुत बुरा हूँ, मैं यह कैसे कर सकता हूँ?"

उन्होंने जारी रखा :

"तुम्हें जानने की जरूरत है

एक आत्मा जो सबसे उदात्त और वीर कार्य कर सकती है वह है

- जियो और मेरी वसीयत में काम करो।

जब कोई आत्मा मेरी वसीयत में रहने का फैसला करती है, तो हमारी दो इच्छाएं एक में विलीन हो जाती हैं।

अगर आत्मा दागदार है, तो मैं इसे शुद्ध करता हूं।

यदि मनुष्य प्रकृति के कांटों ने उसे घेर लिया है, तो मैं उन्हें नष्ट कर देता हूं। अगर पाप की कीलें उसे चुभती हैं, तो मैं उन्हें स्प्रे करता हूं।

मेरी वसीयत में कुछ भी बुरा प्रवेश नहीं कर सकता।

मेरे सभी गुण आत्मा को निवेश करते हैं और बदलते हैं

- उसकी ताकत की कमजोरी,

- ज्ञान में उनकी अज्ञानता ,

- धन आदि में उसका दुख।

अन्य आत्माओं में हमेशा कुछ न कुछ रहता है,

लेकिन यह आत्मा अपने आप से छीन ली गई है, मैं इसे सब कुछ भर देता हूं »।

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था, मेरा हमेशा दयालु यीशु आया। मुझे कितना दर्द हुआ

-बड़ी सजा के लगातार खतरे के कारण e

- अपनी उपस्थिति से वंचित होने के कारण भी उसने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

हिम्मत करो, हिम्मत मत हारो!

मेरी वसीयत बड़े से बड़े तूफान में भी रूह को खुश कर देती है। आत्मा इतनी ऊंचाई तक पहुंच जाती है कि तूफान उसे देख और सुन भी नहीं सकता।

वह जिस स्थान पर रहता है वह गरज के अधीन नहीं है, लेकिन यह हमेशा शांत रहता है।

सूरज इस आत्मा पर मुस्कुराता है क्योंकि

- इसकी उत्पत्ति स्वर्ग में है,

- भगवान में उनकी दिव्य बड़प्पन और पवित्रता;

-स्वयं भगवान द्वारा संरक्षित है।

इस आत्मा की पवित्रता से ईर्ष्यालु ईश्वर इसे अपने हृदय की गहराइयों में रखता है।

उन्होंने कहा: "मेरे अलावा कोई भी आपको नहीं छूएगा। क्योंकि मेरी इच्छा अमूर्त और पवित्र है। हर किसी को मेरी इच्छा का सम्मान करना चाहिए।"

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था, मेरे प्यारे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, धरती पर, मैंने खुद को केवल पिता की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार

यदि मैं सोचता, तो मैं पिता की आत्मा से सोचता। यदि मैं बोलता, तो मैं पिता के मुंह से बोलता।

अगर मैंने काम किया है, तो मैंने पिता के हाथों से काम किया है। मेरी सांस भी उसमें थी।

मैंने जो कुछ भी किया वह वैसा ही था जैसा वह चाहता था।

ऐसे में मैं कह सकता था कि मेरी पूरी जिंदगी उसी में चल रही थी। उसकी वसीयत में पूरी तरह डूबे हुए, मैंने अपना कुछ नहीं किया।

मेरा एकमात्र विचार उसकी इच्छा थी।

मैं खुद पर ध्यान नहीं दे रहा था।

जो अपराध मुझे दिए गए हैं, उन्होंने मेरी दौड़ को बाधित नहीं किया है। लेकिन मैं अभी भी अपने केंद्र के लिए उड़ान भर रहा था।

मेरा सांसारिक जीवन समाप्त हो गया जब मैंने सभी चीजों में पिता की इच्छा पूरी की।

तो, मेरी बेटी, अगर तुम मेरी इच्छा के आगे समर्पण करो,

तुम्हारे पास मेरे अलावा कोई और विचार नहीं होगा।

मुझ से भी विवशता, जो तुम्हें बहुत सताती है**,**

आप में मेरे जीवन के समर्थन और छिपे हुए चुंबनों को खोजें।

अपने दिल की धड़कन में, आप मेरा, सूजन और पीड़ित महसूस करेंगे।

अगर तुम मुझे नहीं देखोगे तो तुम मुझे सुनोगे। मेरी बाहें तुम्हें चूमेंगी।

कितनी बार तुम मेरी हरकतों को महसूस नहीं करते और मेरी सांसें तुम्हारे दिल को तरोताजा कर देती हैं?

और *जब,* जब आप मुझे नहीं देखते हैं , तो आप जानना चाहते हैं कि कौन आपको इतना कस कर पकड़ता है और आपको उड़ाता है। मैं तुम पर मुस्कुराता हूं, मैं तुम्हें अपनी वसीयत का चुंबन देता हूं

मैं आपको फिर से आश्चर्यचकित करने के लिए और अपनी इच्छा में एक और कदम आगे बढ़ाने के लिए आप में छिपा हूं।

इसलिए **मुझे दु:**ख से दुखी मत करो**,** लेकिन मुझे कार्य करने दो।

मेरी इच्छा की उड़ान तुम में कभी न रुके। नहीं तो तुम अपने भीतर मेरे जीवन में बाधा डालोगे।

अगर मुझे कोई बाधा नहीं आती है,

मैं अपना जीवन आप में विकसित करता हूं और

मैं जिस तरह से चाहता हूं उसका विकास करता हूं"।

ऐसा कहकर, आज्ञाकारिता के कारण, मुझे इसके बारे में कुछ शब्द कहना है

दैवीय इच्छा से इस्तीफा देने और दैवीय इच्छा में जीने के बीच का अंतर ।

मेरी खराब राय में, **ईश्वर की इच्छा** से इस्तीफा देना, हर चीज में खुद को ईश्वर की इच्छा से इस्तीफा देना है,

- उतनी ही समृद्धि में

- कि विपत्ति में,

सब कुछ में परमेश्वर के राज्य को उसकी सृष्टि पर देखते हुए, जिसके अनुसार

- हमारे सिर से एक बाल भी नहीं गिर सकता

- निर्माता की अनुमति के बिना।

आत्मा एक अच्छे पुत्र की तरह व्यवहार करती है

-कौन जाता है जहां उसके पिता चाहते हैं कि वह जाए और

-जो भुगतना चाहता है उसके पिता उसे भुगतना चाहते हैं। अमीर या गरीब होना उसके प्रति उदासीन है।

वह केवल वही करने में प्रसन्न होता है जो उसके पिता चाहते हैं।

यदि उसे व्यवसाय चलाने के लिए कहीं जाने का आदेश दिया जाता है, तो वह केवल इसलिए जाता है क्योंकि उसके पिता उसे चाहते हैं।

हालाँकि, ऐसा करने में,

खुद को तरोताजा कर देता है,

आराम करने, खाने, अन्य लोगों के साथ आदान-प्रदान करने आदि के लिए रुक जाता है। इसलिए वह अपनी मर्जी से बहुत उपयोग करता है ,

हालाँकि, यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि वह वहाँ जाता है क्योंकि उसके पिता उसे वैसे ही चाहते हैं। कई चीजों में, उसे अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर मिलता है।

इस प्रकार, वह अपने पिता से दिन और महीने दूर हो सकता है

उसके पिता की इच्छा के बिना उसे हर चीज में निर्दिष्ट किया गया था।

इस प्रकार , ***जीवित रहने वालों के लिए केवल ईश्वरीय इच्छा से इस्तीफा दे दिया,***

यह लगभग असंभव है कि इसमें स्वयं की इच्छा शामिल न हो /

वह एक अच्छा बेटा है,

लेकिन वह अपने स्वर्गीय पिता के सभी विचारों, शब्दों और जीवन को साझा नहीं करता है। जाते-जाते वह वापस आकर दूसरे लोगों से बातें करता है, उसका प्यार रुक-रुक कर होता है।

उसकी इच्छा पिता के साथ निरंतर संचार में नहीं है। इसलिए वह अपनी मर्जी से काम करने की आदत रखता है।

हालाँकि, मेरा मानना है कि यह पवित्रता की ओर पहला कदम है।

अब यह कहने के लिए **कि ईश्वरीय इच्छा में रहना क्या** है , मैं चाहूंगा कि मेरे जीसस का हाथ मेरा मार्गदर्शन करे।

केवल वही ईश्वरीय इच्छा में जीवन की सारी सुंदरता और पवित्रता कह सकते हैं!

अपने हिस्से के लिए, मैं ऐसा करने में असमर्थ महसूस करता हूं और मेरे मन में कई अवधारणाएं नहीं हैं। मुझे मेरे यीशु के शब्दों की याद आती है, मेरे शब्दों में डाला गया और मैं वही कहूंगा जो मैं कर सकता हूं।

ईश्वरीय इच्छा में रहने का ***अर्थ है अकेले कुछ न करना।***

क्योंकि, ईश्वरीय इच्छा में,

आत्मा अपने आप में कुछ भी करने में असमर्थ महसूस करती है।

वह न तो पूछता है और न ही आदेश प्राप्त करता है। क्योंकि वह अकेले जाने में असमर्थ महसूस करती है।

वह कहती है:

अगर आप चाहते हैं कि मैं कुछ करूं,

आइए इसे एक व्यक्ति के रूप में एक साथ करें। अगर आप चाहते हैं कि मैं कहीं जाऊं,

हम एक व्यक्ति के रूप में एक साथ चलते हैं। "इस प्रकार , आत्मा वह सब **कुछ करती है जो पिता करता है।**

बाप सोचते हैं तो अपने ख्यालों को अपना बना लेते हैं। उसके पास अपने अलावा कोई और विचार नहीं है।

यदि पिता देखता है , *बोलता है,* काम करता है, चलता है, पीड़ित है या प्यार *करता है,*

वह

- देखें कि पिता क्या देख रहा है,

- पिता के शब्दों को दोहराएं,

- पिता के हाथों से काम करो,

- पिता के चरणों से चलो,

- पिता के समान कष्ट भोगते हैं e

-पिता जो प्यार करता है उससे प्यार करें।

वह बाहर नहीं रहता, बल्कि पिता के अंदर रहता है

इसलिए, वह उसकी एक आदर्श प्रतिकृति है।

केवल इस्तीफा देने वालों के साथ ऐसा नहीं है।

इस आत्मा को बिना पिता या पिता के इस आत्मा के बिना खोजना असंभव है। और यह केवल बाहरी नहीं है:

उसका पूरा इंटीरियर पिता के इंटीरियर के साथ जुड़ा हुआ है, उसमें तब्दील हो गया है।ओह! इस आत्मा की तेज उड़ान!

ईश्वरीय इच्छा अपार है।

हर जगह घूमें, सब कुछ ऑर्डर करें और सब कुछ जीवन में लाएं।

आत्मा जो इस विशालता में डुबकी लगाती है,

- हर चीज के लिए उड़ान भरें,

- सब कुछ स्फूर्ति देता है और सब कुछ प्यार करता है;

कार्य करता है और यीशु की तरह प्यार करता है, जो आत्मा द्वारा नहीं किया जा सकता है, जिसे केवल त्याग दिया गया है।

ईश्वरीय इच्छा में रहने वाली आत्मा के लिए,

अकेले कुछ करना असंभव है। उनके मानव श्रम, यहां तक कि पवित्र लोग भी उन्हें मिचली करते हैं।

क्योंकि दैवीय इच्छा की चीजें, यहां तक कि छोटी से छोटी भी, भिन्न लगती हैं।

का अधिग्रहण

-एक दिव्य बड़प्पन,

-एक दिव्य वैभव ई

- यहां तक कि दिव्य पवित्रता

-एक दिव्य शक्ति ई

-एक दिव्य सौंदर्य।

ये दैवीय गुण उसमें अनंत काल तक बढ़ते हैं। और, एक पल में, यह सब कर देता है।

सब कुछ करने के बाद, वह कहता है:

"मैंने कुछ नहीं किया, यीशु ने सब कुछ किया, और यह मेरी खुशी है। यीशु ने मुझे अपनी इच्छा में मुझे प्राप्त करने का सम्मान दिया,

जो मुझे वह करने की अनुमति देता है जो उसने किया था।"

दुश्मन इस आत्मा को परेशान नहीं कर सकता,

- अगर उसने अपना काम अच्छा या बुरा किया,

- जिसने बहुत कम या बहुत कुछ किया हो,

क्योंकि सब कुछ यीशु और उसके द्वारा मिलकर किया गया था।

वह शांत है, चिंता से ग्रस्त नहीं है।

वह विशेष रूप से एक व्यक्ति से प्रेम नहीं करता है, लेकिन वह उन सभी से, ईश्वरीय रूप से प्रेम करता है।

यह कहा जा सकता है कि वह यीशु के जीवन को दोहराता है, जो उसकी आवाज है, उसके दिल की धड़कन, उसकी कृपा का समुद्र।

मेरा मानना है कि केवल इसी में ही सच्ची पवित्रता निहित है।

जो लोग ईश्वरीय इच्छा में रहते हैं, उनके लिए गुण दैवीय क्रम के होते हैं।

अन्यथा, वे स्वभाव से मानव हैं, के अधीन

-आत्म सम्मान,

- घमंड और

- जुनून।

ओह! कितनी आत्माएं अच्छे काम करती हैं और संस्कार प्राप्त करती हैं क्योंकि रोती हैं,

ईश्वरीय इच्छा के साथ निवेशित नहीं होने पर, वे फल नहीं देते हैं!

ओह! अगर हर कोई समझ जाए कि सच्ची पवित्रता क्या है, तो सब कुछ कैसे बदल जाएगा!

कई लोग पवित्रता के झूठे रास्ते पर हैं ।

कई लोग इसे पवित्र प्रथाओं में लगाते हैं।

और उन पर धिक्कार है जो उन्हें बदलना चाहते हैं। ये आत्माएं खुद को धोखा देती हैं। यदि उनकी इच्छा यीशु की इच्छा के साथ संयुक्त नहीं है और उसमें परिवर्तित नहीं हुई है, तो, उनकी सभी पवित्र प्रथाओं के साथ, उनकी पवित्रता झूठी है।

बड़ी सहजता से,

वे पवित्र प्रथाओं से दोषों, विचलनों, कलहों आदि की ओर बढ़ते हैं। ओह! यह झूठी पवित्रता कितनी अप्रिय है!

अन्य आत्माएं अपनी पवित्रता रखती हैं

- अक्सर चर्च जाना , e

- सभी सेवाओं में भाग लेने के लिए,

परन्तु उनकी इच्छा यीशु की इच्छा से बहुत दूर है।

ये आत्माएं अपने कर्तव्यों के बारे में बहुत कम परवाह करती हैं। अगर उन्हें चर्च जाने से रोका जाता है,

वे क्रोधित होते हैं और उनकी पवित्रता फीकी पड़ जाती है।

वे शिकायत करते हैं, वे अवज्ञा करते हैं, और वे अपने परिवारों में बोझिल हैं। ओह! कितनी झूठी पवित्रता है!

अन्य आत्माएं अपनी पवित्रता रखती हैं

- अक्सर कबूल करो,

आध्यात्मिक रूप से सबसे छोटे विवरण के लिए निर्देशित हो e

हर चीज के बारे में शंका रखते हैं।

हालांकि, उन्हें कोई आपत्ति नहीं है

उनकी इच्छा यीशु की इच्छा के साथ भंग नहीं होती है। हाय उन पर जो उनका विरोध करते हैं!

वे फुले हुए गुब्बारों की तरह होते हैं, जो जब एक छोटा सा छेद बनाते हैं, तो डिफ्लेट हो जाते हैं।

इस प्रकार, विरोधाभास के तहत, उनकी पवित्रता गायब हो जाती है। वे शिकायत करते हैं कि वे आसानी से दुखी हो जाते हैं।

वे हमेशा संदेह में रहते हैं और

वे सिर्फ उनके लिए एक आध्यात्मिक निर्देशक रखना पसंद करते हैं,

- उन्हें हर चीज में चेतावनी देना,

- उन्हें समेटना और सांत्वना देना;

हालांकि, वे अभी भी आक्रोशित हैं।

उस की घटिया पवित्रता, कितना मिथ्या*!*

मैं अपने यीशु के आँसू चाहता हूँ

-इन **झूठी पवित्रताओं पर उसके साथ रोना** और

- इसे सभी को बताएं

ईश्वरीय इच्छा में रहना कितनी सच्ची पवित्रता है।

इस पवित्रता की जड़ें इतनी गहरी हैं कि इसके डगमगाने का कोई खतरा नहीं है।

जिस आत्मा में यह पवित्रता है वह है

-खेत,

- विसंगतियों और जानबूझकर किए गए दोषों के अधीन नहीं।

वह अपने कर्तव्यों के प्रति चौकस है।

वह आध्यात्मिक निदेशकों से भी, सब कुछ और हर किसी से बलिदान और अलग *हो जाती है* ।

यह इस हद तक बढ़ता है कि इसके फूल और फल स्वर्ग तक पहुँच जाते हैं!

यह ईश्वर में इतना छिपा है कि पृथ्वी इसे बहुत कम या कुछ भी नहीं देखती है। ईश्वरीय इच्छा ने इसे आत्मसात कर लिया है।

यीशु उसका जीवन है, उसकी आत्मा का शिल्पी और उसका आदर्श है।

इसका अपना कुछ भी नहीं है, सब कुछ यीशु के साथ समान है।

उनका जुनून और चारित्रिक गुण ईश्वरीय इच्छा है।

दूसरी ओर

झूठी पवित्रता का "गुब्बारा" निरंतर विसंगतियों के अधीन है।

आत्मा एक निश्चित ऊंचाई पर उड़ती प्रतीत होती है,

- इतना कि आध्यात्मिक निर्देशकों सहित कई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं।

लेकिन जल्दी ही उनका मोहभंग हो जाता है।

क्योंकि, गुब्बारे को हवा देने के लिए, इतना ही काफी है

- अपमान ओ

-किसी अन्य व्यक्ति के लिए निर्देशक की प्राथमिकता। आत्मा मानती है कि यह चोरी हो गई है, यह विश्वास करते हुए कि इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

यद्यपि उसे बकवास के बारे में संदेह है, वह अवज्ञा करने के लिए आता है।

ईर्ष्या इस आत्मा का परजीवी है।

यह ईर्ष्या अपने गुब्बारे को बाहर निकालती है जो हवा में उड़ जाता है और जमीन पर गिर जाता है।

और अगर हम उस तथाकथित पवित्रता को देखें जो उस गुब्बारे में थी, तो हम पाते हैं

आत्म सम्मान,

नाराजगी ई

जुनून

अच्छे के पहलू के तहत प्रच्छन्न।
यह देखा जा सकता है कि *यह आत्मा दानव का खिलौना थी।*
सभी बुराइयों को केवल यीशु ही जानता है
इस झूठी पवित्रता का,
निराधार भक्ति के इस जीवन का, मिथ्या धर्मपरायणता पर आधारित।

यह झूठी पवित्रता मेल खाती है
- फलहीन आध्यात्मिक जीवन के लिए
कि मैं अपनी तरह के यीशु के रोने का कारण हूं।

जो लोग इनका अभ्यास करते हैं वे हैं
समाज का आक्रोश, उनके परिवार का दर्द।
यह कहा जा सकता है कि वे अशुद्ध वायु छोड़ते हैं जो सभी को हानि पहुँचाती है।

ओह! ईश्वरीय इच्छा में निवास करने वाली आत्मा की पवित्रता कितनी भिन्न है**!**

यह आत्मा यीशु की मुस्कान है।

वह अपने आध्यात्मिक निर्देशकों से भी, हर चीज से अलग रहती है। यीशु उसके *लिए सब कुछ है।*
वह किसी का दर्द नहीं है।
स्वस्थ हवा जो हर चीज की महक देती है।
सभी के लिए आदेश और सद्भाव को प्रेरित करें।
जीसस, इस आत्मा से ईर्ष्या करते हुए, हर चीज में एक अभिनेता और दर्शक बन *जाते हैं।*

उसकी एक भी साँस नहीं, उसका एक भी विचार नहीं

केवल एक दिल की धड़कन जो यीशु द्वारा नियमित नहीं है।

यह आत्मा ईश्वरीय इच्छा में इतनी लीन है कि निर्वासन में रहना लगभग भूल ही जाती है।

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मुझे बहुत कष्ट हुआ क्योंकि, मुझे प्रकट होने के बाद, मेरी स्वर्गीय माता की आँखों में आंसू थे।

मैंने उससे पूछा *: "माँ, तुम क्यों रो रही हो?"*

उसने जवाब दिया:

" मेरी बेटी,

जब ईश्वरीय न्याय की आग सब कुछ भस्म करना चाहती है तो मैं कैसे नहीं रो सकता?

पाप की आग आत्माओं की सभी अच्छाइयों को भस्म कर देती है और न्याय की आग सभी प्राणियों को भस्म कर देती है।

यह देखकर कि आग फैल रही है, मैं रोता हूं। तो, प्रार्थना करो, प्रार्थना करो!"

मैं भी यीशु के अभाव से पीड़ित था।

मुझे ऐसा लग रहा था कि उसके बिना मैं ज्यादा समय तक नहीं रह सकता।

मेरी गरीब आत्मा पर दया करने के लिए, मेरे अच्छे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, धैर्य*!*

अच्छा करने में संगति सब कुछ सुरक्षा में डाल देती है।

जब आप अपने यीशु ई . से वंचित हो जाते हैं

-कि आप जीवन और मृत्यु के बीच लड़ते हैं

दर्द के कारण यह आपको ई . का कारण बनता है

-कि, इसके बावजूद, आप अच्छे में स्थिर रहते हैं और किसी भी चीज की उपेक्षा नहीं करते हैं, आप पूरी लड़ाई में हैं।

इस लड़ाई के माध्यम से,

- आत्म-प्रेम और प्राकृतिक संतुष्टि आपको छोड़ देती है,

-आपका स्वभाव हार के रूप में छोड़ दिया गया है

- तुम्हारी आत्मा मेरे लिए इतना शुद्ध और मीठा रस बन जाती है कि मैं इसे बड़े संतोष के साथ पीता हूं।

तब मैं नरम होकर आप सभी को प्रेम और कोमलता से भरा हुआ देखता हूं, आपके कष्टों को महसूस करता हूं जैसे कि वे मेरे थे।

यदि आप ठंडे, सूखे या कुछ और हैं और आप इधर-उधर चिपके रहते हैं, तो आपको कितने अतिरिक्त बलिदान मिलते हैं।

तुम मेरे भावुक हृदय के लिए और भी रस बनाते हो।

यह एक फल की तरह है

-जिसकी चमड़ी कंटीली और सख्त हो, परंतु

-जिसके भीतर एक नरम और उपयोगी पदार्थ होता है।

यदि व्यक्ति काँटों को दूर करने में लगा रहता है, तो वह फल को निचोड़कर सभी पदार्थों का भोग करता है।

इस प्रकार गरीब फल अपनी सामग्री से खाली हो जाता है और उसके कांटेदार छिलके को त्याग दिया जाता है। इसी प्रकार शीतलता और शुष्कता के द्वारा,

- आत्मा प्राकृतिक संतुष्टि को अस्वीकार करती है e

- खुद को लगातार खाली करता है।

यह उस भलाई के शुद्ध और मीठे फल के साथ है जिससे मैं प्रसन्न हूं।

यदि आप निरंतर हैं, तो सब कुछ आपके अच्छे में योगदान देगा और मैं आपको अपनी कृपा बहुतायत से दूंगा ”।

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

अंधेरा घना है और जीव अधिक से अधिक गिर रहे हैं। इस अँधेरे में वे गड्ढे खोदते हैं जहाँ वे नष्ट हो जाते हैं।

मनुष्य का मन अंधा रह गया है।

उसके पास अब अच्छाई देखने की रोशनी नहीं है, वह केवल बुराई देखता है। यह बुराई उसे भर देगी और उसे नाश कर देगी।

जहां वह सोचता है कि उसे मोक्ष मिलेगा, वहां उसे मृत्यु मिलेगी। काश! मेरी बेटी, अफसोस!"

उसने जोड़ा:

"मेरी वसीयत में किए गए कर्म सूरज की तरह हैं जो सब कुछ रोशन करते हैं। जब तक प्राणी के कर्म मेरी इच्छा में रहते हैं,

-नए सूरज अंधे दिमागों पर चमकते हैं e

-आत्माएं जिनके पास कम से कम अच्छाई है, वे उपजी से बचने के लिए प्रकाश पाएंगे।

बाकी सब नाश हो जाएंगे।

अँधेरे के इन दिनों में इतना घना,

मेरी वसीयत में रहने वाले जीवों का क्या भला!

जीवित रहने वाली आत्माएं इन प्राणियों की बदौलत ही ऐसा करेंगी।"

फिर वह चला गया। बाद में वह लौटा और जोड़ा:

"मैं कह सकता हूँ कि मेरी वसीयत में रहने वाली आत्मा ही मेरा पर्वत है।

घर पर मैं हर चीज की लगाम रखता हूं: - उसकी आत्मा की,

- उनके स्नेह ई

- उसकी इच्छाओं का।

मैं उसके अधिकार में कुछ भी नहीं छोड़ता।

मैं और अधिक सहज होने के लिए उसके दिल पर बैठता हूं। मेरा डोमेन पूरा हो गया है और मैं जो चाहता हूं वह करता हूं।

मैं एक बार अपना माउंट चलाता हूं और दूसरे पर उड़ता हूं।

यह मुझे एक बिंदु पर स्वर्ग में ले जाता है और दूसरा पृथ्वी के चारों ओर। मैं दूसरी बार रुकता हूं।

ओह! मैं कितना गौरवशाली और विजयी हूं; मैं शासन करता हूं और शासन करता हूं!

लेकिन अगर आत्मा मेरी इच्छा नहीं करती है और अपनी मानवीय इच्छा में रहती है, तो मेरा राज्य बर्बाद हो जाता है। आत्मा बागडोर संभालती है।

और मैं निर्धन राजा के समान उसके राज्य से निकाल दिया गया हूं।

दुश्मन मेरी जगह लेता है और लगाम उसके जुनून की दया पर रहती है "।

आज सुबह, मेरे हमेशा दयालु यीशु ने मुझे मेरे शरीर से निकाल दिया। वह मेरी बाहों में था, उसका चेहरा मेरे बहुत करीब था।

बड़ी दयालुता के साथ, उसने मुझे चोद दिया, जैसे कि वह नहीं चाहता कि मैं नोटिस करूं।

जैसे ही उसने अपने चुंबन दोहराया, मैं मदद नहीं कर सका लेकिन पारस्परिकता। जब मैं यह कर रहा था, मेरे मन में उसके पवित्र होठों को चूमने का विचार आया ताकि उसकी कड़वाहट दूर हो जाए।

कौन जानता है कि अगर वह मुझे नहीं देगा!

मैंने उससे पूछा, मैंने कोशिश की, मैंने उससे अपनी कड़वाहट मुझमें उँडेलने की भीख माँगी। मैंने जोर से चूसा, लेकिन कुछ नहीं।

वह मेरे द्वारा किए जा रहे तनाव से पीड़ित लग रहा था।

तीसरी बार कोशिश करने के बाद, मुझे लगा कि उसकी बहुत कड़वी सांस मुझमें प्रवेश कर रही है।

और मैंने देखा कि एक कठोर चीज उसके गले को अवरुद्ध कर रही है, उसकी कड़वाहट को बाहर आने और मुझ में डालने से रोक रही है।

बहुत पीड़ित और लगभग रोते हुए, मेरे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मेरी बेटी, खुद इस्तीफा दे दो!

क्या तुम उस ज़ुल्म को नहीं देखते जिसमें आदमी ने मुझे पाप में डुबो दिया है, मुझे अपनी कड़वाहट को उन लोगों के साथ साझा करने से रोकने के लिए जो मुझसे प्यार करते हैं?

क्या तुम्हें याद नहीं मैंने तुमसे कहा था:

" मुझे ऐसा करने दो, नहीं तो आदमी बुराई में इस हद तक पहुंच जाएगा कि वह खुद बुराई को खत्म कर देगा।"

लेकिन तुम नहीं चाहते थे कि मैं उसे मारूं।

आदमी खराब हो रहा है।

उसमें इतना मवाद जमा हो गया कि युद्ध भी उससे छुटकारा नहीं पा सका।

युद्ध ने उसे नहीं रोका; बल्कि, इसने इसे और अधिक साहसी बना दिया। क्रांतियाँ उसे क्रोधित कर देंगी।

दुख उसे हताश कर देगा और वह अपराध की गिरफ्त में आ जाएगा।

यह सब किसी न किसी रूप में इसे इसके सड़ांध से मुक्त करने का काम करेगा। तब मेरी भलाई उस पर प्रहार करेगी,

- परोक्ष रूप से प्राणियों के माध्यम से नहीं,

-लेकिन सीधे स्वर्ग से।

ये दण्ड उसके लिए लाभकारी ओस के समान होंगे जो उसे मार डालेगी। मेरे हाथ से छुआ,

- उसकी स्थिति से अवगत होंगे,

-पाप की नींद से जागेगा ई

- वह अपने निर्माता को पहचान लेगा।

मेरी बेटी, प्रार्थना करो कि सब कुछ मनुष्य की भलाई के लिए हो। "यीशु अपनी कड़वाहट के साथ रहे।

मैं व्यथित था क्योंकि मैं उसे राहत नहीं दे सका।

मैंने केवल उसकी सांस सुनी, जिसके बाद मैंने खुद को अपने शरीर में पाया।

हालाँकि, मुझे चिंता हुई

यीशु के शब्दों ने मुझे पीड़ा दी। मैंने अपने मन में भयानक भविष्य देखा।

मुझे शांत करने और मुझे विचलित करने के लिए, यीशु वापस आए और मुझसे कहा:

"इतना प्यार, इतना प्यार!

जब मैं पीड़ित था , मैंने कहा:

" मेरी पीड़ा, भागो, मनुष्य की तलाश में जाता है! उसकी मदद करो और उसके कष्टों में उसकी ताकत बनो।"

जैसे ही मैंने अपना खून बहाया , मैंने हर बूंद से कहा: "भागो, भागो, मेरे लिए आदमी को बचाओ!

यदि वह मर गया है, तो उसे जीवन दें, लेकिन एक दिव्य जीवन।

अगर वह भाग जाए तो उसके पीछे भागो, उसे घेर लो, उसे मेरे प्यार से तब तक भ्रमित करो जब तक वह आत्मसमर्पण न कर दे।"

कोड़े लगने के दौरान , जब मेरे शरीर पर घाव बन रहे थे, मैंने दोहराया:

" मेरे घाव, मेरे साथ मत रहो, लेकिन आदमी की तलाश करो।

यदि आप उसे पाप से घायल पाते हैं, तो उसे चंगा करने के लिए पट्टी की तरह बांधें। ”

इसलिए, मैंने जो कुछ भी कहा और किया, मैंने उसे बचाने के लिए उस व्यक्ति को घेर लिया। आप भी

मेरे लिए प्यार से बाहर

अपने लिये कुछ न रखना, वरन मनुष्य को बचाने के लिथे सब कुछ दौड़ा देना।

और मैं खुद आपको दूसरे के रूप में देखूंगा ”।

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और बड़ी पीड़ा के साथ, मेरे अच्छे यीशु ने आकर मुझे बताया।

"मेरी बेटी,

मैंने जो कुछ भी किया है वह शाश्वत है।

मेरी मानवता ने न केवल एक निश्चित समय के लिए पीड़ित किया है, बल्कि इसकी पीड़ा दुनिया के अंत तक जारी है।

चूँकि स्वर्ग में मेरी मानवता पीड़ित नहीं हो सकती,

- मैं प्राणियों की मानवता का उपयोग करता हूं,

- उन्हें मेरी पीड़ा में भाग लेने देना

और इस प्रकार पृथ्वी पर मेरी मानवता का विस्तार कर रहा है।

और यह मैं न्याय के साथ करता हूं। क्योंकि जब मैं धरती पर था,
के उद्देश्य के लिए मैंने सभी प्राणियों की मानवता को अपने में समाहित किया है
- उन्हें सुरक्षित रखने के लिए और
- उनके लिए सब कुछ करें।

अब जबकि मैं स्वर्ग में हूँ, मैंने अपने आप को प्राणियों में फैला लिया है
- मेरी मानवता,
-मेरी पीड़ा ई
- वह सब जो मेरी मानवता ने खोई हुई आत्माओं की भलाई के लिए किया है।

मैं इसे विशेष रूप से उन आत्माओं में करता हूं जो मुझसे प्यार करते हैं ताकि मैं पिता से कह सकूं:

" मेरी मानवता स्वर्ग में है और पृथ्वी पर भी, उन आत्माओं में जो मुझे प्यार करते हैं और पीड़ित हैं"।

इस प्रकार, उन आत्माओं के लिए जो मुझसे प्यार करती हैं और मेरी जगह लेती हैं,
- मेरी संतुष्टि पूर्ण है,
-मेरे कष्ट अभी भी सक्रिय हैं।

जब आप पीड़ित हों तो खुद को सांत्वना दें,
क्योंकि आपको मेरे स्थान पर आपको प्रतिस्थापित करने का सम्मान प्राप्त होता है ».

मेरे यीशु को पवित्र भोज में प्राप्त करने के बाद, मैंने सोचा:
"मैं उसे प्यार के लिए प्यार कैसे दे सकता हूँ, क्योंकि यह मेरी शक्ति में नहीं है?
मेरे प्यार के लिए मेजबान की तरह सिकुड़ने के लिए?"

तब मेरे प्रिय यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

यदि आप एक छोटे मेजबान के रूप में मेरे लिए अपने आप को प्यार से कम नहीं कर सकते हैं, तो आप मेरी इच्छा में खुद को पूरी तरह से कम कर सकते हैं।

- इस प्रकार आपको मेरी वसीयत में अतिथि बना रहा है।

मेरी वसीयत में आप जो भी कार्य करते हैं, उसके साथ,

-आप मेरे लिए अतिथि होंगे और

- मैं तुम्हें वैसे ही खिलाऊंगा जैसे तुम मुझे खिलाओगे।

मेजबान क्या है? क्या वह मेरी जिंदगी नहीं है?

और मेरी वसीयत क्या है? क्या यह मेरे जीवन की समग्रता नहीं है? तुम मेरे प्यार के लिए खुद को मेहमान बना सकते हो /

तुम मेरी वसीयत में कितना भी कर्म करो,

मुझे प्यार का प्यार देने के लिए आप कितना होस्ट बना सकते हैं।"

आज सुबह, यीशु को आशीषित करने के बाद, मैंने उससे कहा:

"यीशु, मेरे जीवन, मुझे बताओ कि यूचरिस्ट की स्थापना करके आपको प्राप्त करने के बाद आपका पहला इशारा क्या था?"

उसने जवाब दिया:

"मेरी बेटी, मेरा पहला कार्य **मेरे जीवन को कई जीवन में गुणा करना था।**

कि पृथ्वी पर मानव जीवन होगा।

तो हर एक के पास अपने लिए केवल मेरा जीवन होगा,

एक ऐसा जीवन जो लगातार प्रार्थना करता है, धन्यवाद देता है**,** संतुष्ट करता है **और प्यार करता है।**

यह, वैसे ही मैंने प्रत्येक आत्मा के लिए अपने कष्टों को कई गुना बढ़ा दिया, जैसे कि मैंने अकेले उसके लिए दुख उठाया हो!

इस परम क्षण में मुझे पवित्र रूप में ग्रहण करने के लिए,

मैंने इसे जीतने के लिए अपने जुनून को हर दिल में सहने के लिए खुद को हर एक को दे दिया

बल द्वारा

-पीड़ित ई

-इश्क़ वाला।

अपने देवत्व को पूर्ण रूप से देकर, मैंने सब कुछ अपने कब्जे में ले लिया है।

काश! मेरे प्यार को बहुतों ने निराश किया है।

मैं उन प्यार करने वाली आत्माओं की प्रतीक्षा करता हूं, जो मुझे प्राप्त करने पर, मेरे साथ जुड़ेंगी

- सभी ई . में गुणा करें

- मुझे वह सब कुछ चाहिए जो मैं चाहता हूं।

मुझे इन आत्माओं से वह मिलेगा जो दूसरे मुझे नहीं देते।

मुझे मेरी इच्छा और मेरी इच्छा के अनुसार आत्माएं होने का संतोष होगा।

इसलिए, मेरी बेटी, जब तुम मुझे ग्रहण करो, तो वही करो जो मैंने किया है।

और मुझे खुशी होगी कि कम से कम एक आत्मा है जो मेरे जैसा ही चाहती है ”।

यह कहते हुए, वह बहुत व्यथित लग रहा था। मैंने उससे कहा: "यीशु, तुम्हें इतनी तकलीफ क्या है?"

उसने उत्तर दिया: "आह! क्या बाढ़ होगी! क्या बुराइयाँ, क्या बुराई! इटली बहुत

दुखद समय की ओर बढ़ रहा है।

मेरे करीब आओ और प्रार्थना करो कि बुराइयां बदतर न हों।"

मैंने जारी रखा: "आह! मेरे यीशु! मेरे देश का क्या होगा?

तो तुम मुझे पहले की तरह प्यार नहीं करते

मेरे प्यार के लिए दूसरों को नहीं बख्शा? "

लगभग सिसकते हुए उसने उत्तर दिया:

"नहीं, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।"

मैंने बहुत सारी बुराइयों के बारे में सुना है, विशेषकर इटली में विदेशियों के प्रवेश के कारण मैं अभाव, पीड़ा और कड़वाहट में जारी रहा।

मैंने अपने अच्छे यीशु से शत्रुओं को रोकने के लिए प्रार्थना की और मैंने उनसे कहा: "क्या यह जलप्रलय है जो आपने मुझे कुछ दिन पहले बताया था?"

अच्छे **यीशु ने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी, यह वह बाढ़ है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था और यह जारी रहेगा। विदेशी इटली पर आक्रमण करना जारी रखेंगे।

क्या यह योग्य नहीं है?

मैंने अपने दूसरे यरूशलेम के रूप में इटली को चुना था।

हालांकि, उसने मेरे कानूनों की अनदेखी की और मुझे मेरा हक देने से इनकार कर दिया।

आह! मैं कह सकता हूं कि वह इंसानों की तरह नहीं, बल्कि जानवरों की तरह व्यवहार करता है!

युद्ध के भयंकर संकट में भी मेरी पहचान नहीं है और वह मेरे दुश्मन की तरह काम करना जारी रखना चाहती है। यह सही है कि उसे हार का सामना करना पड़ा।

मैं उसे धूल में मिलाना जारी रखूंगा।"

मैंने उसे यह कहकर बाधित किया: "यीशु, मेरे देश के बारे में क्या? मेरे गरीब देश, तुम कैसे टूट जाओगे! यीशु, दया करो, विदेशियों की इस नदी को रोको!"

उन्होंने जारी रखा : "मेरी बेटी, मेरे महान दुःख के लिए, मुझे विदेशियों की उन्नति की अनुमति देनी चाहिए।

तुम, क्योंकि तुम मेरे जैसी आत्माओं से प्यार नहीं करते, जीत चाहते हो। अगर इटली जीत जाता तो यह आत्माओं की बर्बादी होती।

उनका गौरव इस हद तक होगा कि राष्ट्र में जो कुछ भी अच्छा है, उसे नष्ट कर दें। यह खुद को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में दिखाएगा जो ईश्वर के बिना कर सकता है।

आह! हे मेरी बेटी, विपत्तियां चलती रहेंगी, नगर तबाह हो जाएंगे!

मैं उन्हें हर चीज से वंचित कर दूंगा। गरीब और अमीर बराबरी पर होंगे। वे मेरे कानूनों को मान्यता नहीं देना चाहते थे। उन सभी ने अपने आप को पृथ्वी का देवता बना लिया है। उनके कपड़े उतारकर, मैं उन्हें दिखाऊंगा कि पृथ्वी क्या है।

मैं इस पृथ्वी को आग से शुद्ध करूंगा, क्योंकि इससे निकलने वाली बदबू मेरे लिए असहनीय है। बहुत से लोग आग से जल जाएंगे, और इसलिथे मैं तुम्हारा देश उसी को लौटा दूंगा।

यह ज़रूरी है। आत्माओं के उद्धार की आवश्यकता है। मैं लंबे समय से आपसे इन अभिशापों के बारे में बात कर रहा हूं। समय आ गया है, लेकिन काफी नहीं।

अन्य बुराइयाँ आएंगी; मैं पृथ्वी को उसके होश में वापस लाऊंगा, मैं उसे उसके होश में वापस लाऊंगा!"

मैंने उससे कहा: "मेरे यीशु, शांत हो जाओ। अभी के लिए बहुत हो गया!"

उसने फिर से कहा: "आह! नहीं! तुम प्रार्थना करो और मैं दुश्मन को कम क्रूर बना दूंगा।"

मैं अपने दुख की स्थिति में जारी रहा

मेरा अच्छा यीशु आया और तुरंत प्रकाश की गति से उड़ गया, यहां तक कि मुझे उससे पीड़ित बुराइयों के लिए प्रार्थना करने का समय भी नहीं दिया।

गरीब मानवता, खासकर मेरी प्यारी मातृभूमि।

हमारे घर में अजनबियों के इस आक्रमण से दिल को कितना गहरा धक्का लगा! यीशु ने मुझसे पहले मुझसे प्रार्थना करने को कहा था।

लेकिन जब मैं प्रार्थना करता हूं, तो वह मुझसे कहता है: "मैं कठोर हो जाऊंगा।"

इस बार मैंने जोर देकर कहा: "यीशु, क्या तुम दया नहीं करना चाहते?

क्या तुम नहीं देख सकते कि शहर नष्ट हो गए हैं और लोग नंगे और भूखे हैं?

हे यीशु, तुम कितने कठोर हो गए हो!"

उसने उत्तर दिया: "मेरी बेटी, नगरों और पृथ्वी के आकार में मेरी रुचि नहीं है;

यह आत्माएं हैं जो मेरे लिए मायने रखती हैं।

नष्ट होने के बाद, शहरों, चर्चों और अन्य चीजों को फिर से बनाया जा सकता है। क्या मैंने बाढ़ में सब कुछ नष्ट नहीं किया?

क्या इसे बाद में नहीं बनाया गया था?

लेकिन आत्माएं, अगर वे खो गई हैं, तो हमेशा के लिए हैं; कोई उन्हें मुझे वापस नहीं दे सकता; मैं उन पर रोता हूं।

स्वर्ग ने हमें केवल पृथ्वी से जोड़कर छोड़ दिया है: मैं पृथ्वी को नष्ट कर दूंगा। मैं उसकी सबसे खूबसूरत चीजें गायब कर दूंगा, जो जाल की तरह आदमी को पकड़ लेती है "।

मैंने उससे कहा: "यीशु, तुम क्या कह रहे हो?" उसने जवाब दिया: "चलो! उदास मत हो! मैं आगे बढ़ूंगा।

और तुम मेरी इच्छा में आते हो और उसमें रहते हो; पृथ्वी अब तेरा घर नहीं, वरन

केवल मैं है;

इस प्रकार, आप पूरी तरह से सुरक्षित रहेंगे।

मेरी वसीयत में आत्मा को पारदर्शी बनाने की शक्ति है। और जब यह होता है, तो मैं जो कुछ भी करता हूं वह उसके भीतर विकीर्ण हो जाता है।

अगर मैं सोचूं तो मेरा विचार उसके दिमाग में फैल जाता है और वहां वह प्रकाश बन जाता है, और प्रकाश की तरह, उसका विचार मेरे दिमाग में फैल जाता है।

अगर मैं देखता हूं, बोलता हूं, प्यार करता हूं, आदि। इतने सारे प्रकाशों की तरह, ये कार्य आत्मा में और वहाँ से मुझ में विकीर्ण होते हैं।

इस प्रकार, हम लगातार प्रबुद्ध होते हैं, हम आपसी प्रेम के सतत संचार में हैं।

इसके अलावा, जैसा कि मैं हर जगह हूं, मेरी इच्छा में रहने वाली आत्माओं का वैभव मुझे स्वर्ग में, पृथ्वी पर, संस्कारी यजमान में और प्राणियों के दिलों में पहुंचता है।

जहाँ भी और हमेशा, मैं उन्हें अपना प्रकाश देता हूँ और वे मुझे वह प्रकाश वापस देते हैं;

मैं उन्हें प्यार देता हूं और वे मुझे प्यार देते हैं।

वे मेरे सांसारिक निवास हैं जहां मैं अन्य प्राणियों द्वारा मुझे दी जाने वाली मतली से बचने के लिए शरण लेता हूं।

"ओह! मेरी वसीयत में रहना कितना खूबसूरत है!

मुझे यह इतना पसंद है कि, आने वाली पीढ़ियों में, मैं पवित्रता के अन्य सभी रूपों को गायब कर दूंगा, चाहे उनके गुण कुछ भी हों।

मैं अपनी इच्छा में पवित्रता को भड़काऊंगा जो मानव पवित्रता नहीं है, बल्कि दिव्य पवित्रता है।

यह पवित्रता इतनी अधिक होगी कि, सूर्य के रूप में, इसमें रहने वाली आत्माएं उन सितारों को ग्रहण करेंगी जो पिछली पीढ़ियों के संत थे।

इसके लिए मैं पृथ्वी को शुद्ध करना चाहता हूं: यह इन चमत्कारों के योग्य नहीं है »।

मैं इन लेखन को आज्ञाकारिता से जारी रखता हूं।

मुझे ऐसा लगता है कि जब यीशु मुझसे अपनी सबसे पवित्र इच्छा के बारे में बात करते हैं, तो वह बाकी सब भूल जाते हैं और मुझे बाकी सब कुछ भी भूल जाते हैं: यदि ईश्वरीय इच्छा में नहीं रहना है, तो आत्मा को कुछ भी आवश्यक नहीं लगता है।

पिछले बीस दिनों में मैंने उसकी वसीयत के बारे में जो लिखा है, उससे असंतुष्ट,

यीशु ने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, तुमने सब कुछ नहीं कहा है।

मैं चाहता हूं कि आप वह सब कुछ लिखें जो मैं आपको अपनी वसीयत के बारे में बताता हूं, यहां तक कि छोटी-छोटी बातें भी। आने वाली पीढ़ियों की जरूरत होगी।

पवित्रता के हर रूप की शुरुआत उन संतों से हुई जिन्होंने इसकी शुरुआत की थी। ऐशे ही

-एक संत तपस्या की पवित्रता के सर्जक थे,

- आज्ञाकारिता की पवित्रता का एक और,

- विनम्रता की एक और पवित्रता, और इसी तरह। जैसे आपके लिए,

मैं चाहता हूं कि आप मेरी इच्छा में पवित्रता के सर्जक बनें।

मेरी बेटी, पवित्रता के अन्य सभी रूपों को व्यक्तिगत हित की खोज या समय की बर्बादी से छूट नहीं है।

उदाहरण के लिए , उन आत्माओं के लिए जो आज्ञाकारिता के प्रति पूरी तरह *से चौकस रहती हैं* ,

बहुत समय की बर्बादी होती है।

लगातार बात *करने से वे मुझसे विचलित हो जाते हैं और मेरे स्थान पर गुणों को रख देते हैं* । आदेश मिलने पर ही उन्हें आराम मिलता है।

अन्य आत्माएं प्रलोभनों पर बहुत रुकती हैं । ओह! वे कितना समय बर्बाद करते हैं!

वे अपने सभी परीक्षणों का वर्णन करते नहीं थकते, इस प्रकार मेरे स्थान पर गुणों को रखते हैं।

पवित्रता के ये विभिन्न रूप अक्सर बिखर जाते हैं।

दूसरी ओर, मेरी इच्छा में पवित्रता मुक्त है।

- व्यक्तिगत हितों की खोज e

-समय की बर्बादी।

इस पवित्रता में रहने वाली आत्मा मेरे लिए गुणों का आदान-प्रदान करेगी, इसमें कोई खतरा नहीं है।

ईश्वरीय इच्छा में पवित्रता पृथ्वी पर मेरी मानवता की पवित्रता थी।

मैंने स्वार्थ के थोड़े से भी संकेत के बिना सबके लिए सब कुछ किया है ।
व्यक्तिगत रुचि दिव्य पवित्रता की छाप को मिटा देती है।

जो आत्मा अपना हित चाहती है, वह सूर्य नहीं हो सकती । सबसे अच्छा, वह एक स्टार होगा।

इस दुख की घड़ी में जीवों को चाहिए इन सूरज

- कि उन्हें गर्म,

- उन्हें प्रकाश और

- उन्हें खाद दें।

इन सांसारिक स्वर्गदूतों की उदारता,

-जो दूसरों की भलाई के लिए सब कुछ करते हैं

- व्यक्तिगत हित की छाया के बिना,

मेरे अनुग्रह के मार्ग को हृदयों में खोल देता है।

चर्च कम हैं। हालांकि, कई नष्ट हो जाएंगे।

अक्सर मुझे ऐसे पुजारी नहीं मिलते जो मुझे यूचरिस्टिक रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। कुछ अयोग्य आत्माओं को मुझे ग्रहण करने देते हैं। कुछ आत्माएं मुझे प्राप्त करने की परवाह नहीं करती हैं

और अन्य नहीं करते हैं। इस प्रकार मेरा प्यार बाधित है। इसके लिए मैं अपनी इच्छा में पवित्रता चाहता हूं।

उन आत्माओं के लिए जो इसे जीएंगी, मुझे इसकी आवश्यकता नहीं होगी

पुजारियों की मुझे पवित्र करने के लिए

या पूछा,

न ही तम्बू

न ही मेजबान।

क्योंकि ये सभी आत्माएं एक साथ होंगी

पुजारियों

तम्बू ई

मेहमानों

मेरा प्यार मुक्त हो जाएगा।

जब मैं स्वयं को समर्पित करना चाहता हूँ, तो मैं यह कर सकता हूँ

किसी भी समय,

दिन और रात, ई

ये आत्माएं कहीं भी हों ।

ओह! माई लव को अपना पूरा आउटलेट कैसे मिलेगा!

"आह! मेरी बेटी

वर्तमान पीढ़ी पूरी तरह से नष्ट होने के योग्य है!

अगर मैं कुछ लोगों को रहने दूं,

यह मेरी इच्छा में पवित्रता के सूर्यों का निर्माण करेगा जो मेरे लिए वह सब कुछ करेंगे जो अन्य प्राणी करते हैं,

-अतीत,

- वर्तमान और

- भविष्य, तुम मुझ पर एहसान करते हो।

इसलिए

- पृथ्वी मुझे सच्ची महिमा देगी और

- मेरी 'फिएट वॉलंटस तुआ' धरती पर जैसे स्वर्ग में है, उसकी कुल पूर्ति जान जाएगी।"

यीशु को धन्य संस्कार में ग्रहण करने के बाद, मैंने उससे कहा:

"मैं तुम्हारी वसीयत के चुंबन से तुम्हें चोदता हूं।

अगर मैं तुम्हें अपना चुंबन दे दूं तो तुम खुश नहीं हो। आप भी सभी प्राणियों का चुंबन चाहते हैं।

इसलिए **मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा का चुंबन देता हूं क्योंकि सभी प्राणी हैं।**

तेरी मर्जी के पंखों पर,

मैं सभी प्राणियों के मुंह लेता हूं और मैं आप सभी को चूमता हूं।

मैं तुम्हें अपने प्यार से नहीं, बल्कि अपने ही प्यार से चोदता हूँ।

इस तरह आप सभी प्राणियों के होठों पर अपने स्वयं के प्रेम की संतुष्टि, मिठास और दया को महसूस करेंगे।

और आप सभी को अपना किस करने को मजबूर हो जाओगे"।

अन्य सभी बकवास कौन बता सकता है जो मैंने अपने दयालु यीशु को बताया था?

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, मेरी वसीयत में एक आत्मा को देखना और महसूस करना मेरे लिए कितना प्यारा है!

उस पर ध्यान दिए बिना, वह खुद को मेरे कार्यों और प्रार्थनाओं के स्तर पर रखती है जैसा कि मैंने तब किया था जब मैं पृथ्वी पर था।

यह मुझे लगभग मेरे स्तर पर रखता है।

मैं अपने छोटे से छोटे कर्मों में भूत, वर्तमान और भविष्य के सभी प्राणियों को सबके नाम से पिता के सामने प्रस्तुत करने के लिए लाया हूं।

जीवों की एक भी सांस मुझसे नहीं बची।

अन्यथा पिता को अपवाद मिल जाते और वे सभी प्राणियों या उनके सभी कार्यों को नहीं पहचानते।

वह मुझसे कह सकता था: "आपने हर प्राणी के लिए सब कुछ नहीं किया है, आपका काम पूरा नहीं हुआ है।

मैं सभी प्राणियों को नहीं पहचान सकता क्योंकि आपने उन सभी को अपने में शामिल नहीं किया है और मैं सिर्फ यह पहचानना चाहता हूं कि आपने क्या किया है।"

इस प्रकार मैंने अपनी इच्छा, प्रेम और शक्ति की विशालता में प्रत्येक प्राणी के लिए सब कुछ किया है।

*"*जो कार्य मेरी वसीयत में नहीं किए गए हैं*,* वे मुझे खुश नहीं कर सकते*,* चाहे वे *कितने ही सुंदर क्यों न हों। वे नीच,* मानवीय और सीमित हैं।

इसके बजाय मेरी इच्छा में किए गए कार्य मेरी इच्छा की तरह महान, दिव्य और अनंत हैं।

वे मेरे जैसे ही हैं और मैं उन्हें उसी मूल्य, प्रेम और शक्ति के साथ तैयार करता हूं।

मैं उन्हें सभी में गुणा करता हूं और उन्हें सभी पीढ़ियों तक बढ़ाता हूं। मुझे परवाह नहीं है अगर वे छोटे हैं।

वे मेरी हरकतें हैं जो बस खुद को दोहराती हैं।

तब आत्मा स्वयं को उसकी वास्तविक शून्यता में स्थान देती है।

नम्रता के भाव में नहीं

जहां वह हमेशा अपने बारे में कुछ महसूस करती है।

लेकिन, *कुछ भी नहीं की तरह,* यह उस सब में प्रवेश करता है जो मैं हूं और *मेरे साथ,* मुझमें और मेरे रूप में कार्य करता है।

खुद से पूरी तरह छीन लिया,

यह उसके गुणों या उसके निजी हित पर नहीं रुकता।

बल्कि, मुझे खुश करने के लिए सभी सावधान,

मुझे उसके सभी कार्यों पर पूर्ण अधिकार देता है,

यह पता लगाने की कोशिश किए बिना कि मैं इसके साथ क्या कर रहा हूं।

केवल एक ही विचार उसे घेरता है: मेरी इच्छा में रहने के लिए **, मुझे यह सम्मान देने के लिए याचना।**

इसलिए मैं उससे बहुत प्यार करता हूं।

मेरी सारी तरकीबें और मेरा सारा प्यार उसके लिए है।

और अगर मैं दूसरों से प्यार करता हूं, तो प्यार के कारण ही मैं इस आत्मा को लाता हूं। उनके लिए मेरा प्यार उसके माध्यम से गुजरता है।

उसी प्रकार पिता भी प्राणियों से प्रेम करता है उस प्रेम के कारण जो वह मुझ पर लाता है »।

मैंने उससे कहा:

"कितना सच है कि तेरी वसीयत में रूह

-यह आपके कार्यों को दोहराने की प्रबल इच्छा से बसा हुआ है और

-मैं और कुछ नहीं चाह सकता!

बाकी सब कुछ गायब हो जाता है और वह और कुछ नहीं करना चाहती!"

यीशु जारी है:

"और मैं उससे सब कुछ करवाता हूँ और मैं उसे सब कुछ देता हूँ।"

मेरी सामान्य स्थिति में जारी है,

मैं अपने प्यारे यीशु की पवित्र इच्छा में विलीन हो रहा था। मैंने प्रार्थना की, प्यार किया और मरम्मत की।

यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, क्या आप मेरी वसीयत में किए गए कृत्यों की तुलना करना चाहती हैं?

आसमान को देखो। **आपको वहां सूरज** मिलेगा :

प्रकाश की एक गेंद जिसकी अपनी सीमाएँ और उसका आकार होता है। हालाँकि, जो प्रकाश अपनी सीमा से आता है, वह सारी पृथ्वी और सारे स्थान को भर देता है,

- सीमित स्थान नहीं,

-लेकिन हर जगह जमीन, पहाड़ और समुद्र हैं,

अपने राजसी प्रकाश और इसकी लाभकारी गर्मी के साथ उन्हें निवेश करना।

वह ग्रहों का राजा है।

सभी निर्मित चीजों पर इसका वर्चस्व है।

ये मेरी वसीयत में किए गए कार्य हैं, और इससे भी अधिक।

अपनी मर्जी से अपने कार्यों को करते हुए,

-जीव गरीब और सीमित तरीके से कार्य करता है। लेकिन अगर वह मेरी वसीयत में प्रवेश करता है,

- उसकी हरकतें अपार अनुपात में होती हैं। वे सब कुछ निवेश करते हैं

वे हर चीज को रोशनी और गर्मी देते हैं।

वे सब कुछ पर शासन करते हैं और

वे प्राणियों के सभी कृत्यों पर प्रधानता प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार आत्मा शासन करती है, आज्ञा देती है और जीतती है। हालाँकि अपने आप में छोटा है, मेरे वसीयत में किए गए कृत्य

- एक अविश्वसनीय परिवर्तन से गुजरना।

यह तो फ़रिश्तों को भी समझने के लिए नहीं दिया गया है।

केवल मैं ही अपनी वसीयत में किए गए कार्यों के सही मूल्य को माप सकता हूं। मैं हूँ

मेरी महिमा की विजय ,

मेरे प्यार की बहार,

सृष्टि की पूर्ति ।

वे मुझे सृष्टि के लिए ही पुरस्कृत करते हैं।

इसलिए मेरी बेटी, मेरी वसीयत में यह हमेशा आगे जाती है».

अपनी सामान्य अवस्था में होने और थोड़ा कष्ट सहने के कारण, मेरे विचार इस प्रकार थे:

"मुझे दिन हो या रात आराम क्यों नहीं मिल रहा है? मैं जितना कमजोर और बीमार हूं, मेरा दिमाग उतना ही जागता है और आराम करने में असमर्थ है।"

मेरे प्यारे यीशु मुझसे कहते हैं :

"मेरी बेटी,

आप नहीं जानते क्यों, लेकिन मैं आपको बता रहा हूं।

मेरी मानवता को कोई आराम नहीं था।

नींद में भी मुझे चैन नहीं आया। मैं काम पर जोर से था।

क्योंकि हर चीज को जीवन देने के लिए मेरे लिए अथक परिश्रम करना जरूरी था।

जिसे जीवन देना है उसे निरंतर कर्म में रहना चाहिए।

अगर मैं आराम करना चाहता, तो कितने जन्म नहीं पैदा हो सकते थे? मेरी निरंतर कार्रवाई के बिना कितना,

क्या यह विकसित नहीं हो सकता था और शोषित रह सकता था?

कितनों ने मुझ में प्रवेश नहीं किया होगा

जो अकेला जीवन दे सकता है, उसके महत्वपूर्ण कार्य से वंचित क्यों?

मेरी बेटी

आपको मेरी वसीयत में चाहते हुए, मैं चाहता हूं कि आप निरंतर कार्रवाई में रहें।

आपका पूर्ण जागृत मन ही क्रिया है,

आपकी प्रार्थना की फुसफुसाहट क्रिया है,

तेरे हाथों की हलचल, तेरे दिल की धड़कन,

आपकी पलकों की चमक क्रिया है।

आपके इशारे छोटे हो सकते हैं, मुझे परवाह नहीं है। जब तक आप चलते हैं, जब तक आप बोते हैं,

-मैं आपके कार्यों को अपने साथ जोड़ता हूं और

- मैं उन्हें महान बनाता हूं।

मैं उन्हें जीवन उत्पन्न करने का गुण देता हूं।

मेरी कई हरकतें जाहिर तौर पर छोटी थीं। उदाहरण के लिए, जब मैं छोटा था,

"मैं रो रहा था, अपनी माँ का दूध चूस रहा था,

-मुझे उसे चोदना, उसे सहलाना, अपने नन्हे हाथों को उसके साथ मिलाना अच्छा लगा।

थोडा सा बड़ा,

-मैं उसके लिए फूल चुन रहा था,

- मैंने पानी खींचा, और इसी तरह। वे छोटी-छोटी हरकतें थीं।

लेकिन, क्योंकि वे मेरी दिव्यता की इच्छा से जुड़े हुए थे, वे लाखों जीवन बना सकते थे।

"जब मैं रोया, मेरे आंसुओं से जीवों का जीवन आया।

-जब मैंने चूसा, चुदाई की, स्ट्रोक किया, ये मेरे द्वारा बनाए गए जीवन थे।

"मेरी उंगलियों में मेरी माँ की उंगलियों के साथ, आत्माएं बहती थीं।

-जब मैंने फूल उठाए और पानी खींचा,

प्यार में मेरे दिल की धड़कन से आत्माएं निकलीं।

मैं लगातार अभिनय कर रहा हूं। यही कारण है कि आपके वशीकरण का। जब मैं अपनी वसीयत में तुम्हारी घड़ियाँ और तुम्हारे कर्म देखता हूँ,

-कभी-कभी मेरी तरफ से,

-कभी-कभी यह मेरे हाथों में, मेरी आवाज में, मेरी आत्मा में या मेरे दिल में बहती है,

मैं उन्हें अच्छे और सभी के उद्धार के लिए प्रवाहित करता हूं। मैं उन्हें अपने कर्मों का पुण्य देता हूं।"

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था और मेरा हमेशा दयालु यीशु बहुत व्यथित था।

उसने उन लोगों से शिकायत की जो आत्माओं में उसका स्थान लेकर उससे

प्राणियों का स्नेह चुरा लेते हैं।

मैंने उससे कहा: "मेरे प्रिय, क्या यह दोष इतना बुरा है कि यह आपको पीड़ित करता है?"

उसने जवाब दिया:

"मेरी बेटी,

यह बुरा से ज्यादा है, यह भयानक है!

यह सृष्टिकर्ता द्वारा इच्छा किए गए आदेश को उलट देना है। जीव अपने आप को सृष्टिकर्ता के ऊपर रखता है।

यह कहने के बराबर है: "मैं भगवान के समान अच्छा हूं"।

वह कैसे होगा जो दूसरे से दस लाख डॉलर चुराता है और उसे गरीबी और दुख में डुबो देता है?"

मैंने उत्तर दिया: "उसे चुराए गए धन को सौंप देना चाहिए या सजा सुनाई जानी चाहिए।"

यीशु जारी है:

"हालांकि, जब मुझसे प्राणियों का स्नेह चुराया जाता है, तो यह मुझसे लाखों चुराने से कहीं अधिक होता है।

धन भौतिक और निम्न है जबकि सृष्टि का स्नेह आध्यात्मिक और महान है। पैसा लौटाया जा सकता है, लेकिन बनाने वालों का स्नेह कभी नहीं!

यह एक अपूरणीय चोरी है।

भले ही शुद्धिकरण की आग इस उड़ान को शुद्ध कर दे,

वह मेरे द्वारा चुराए गए एक भी स्नेह से शून्य को कभी नहीं भर सकता।

इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

इसके विपरीत, ऐसे लोग हैं जो अपना स्नेह बेचते हैं। वे इसे खरीदने के लिए किसी को पाकर खुश हैं।

वे मुझे बिना जांच-पड़ताल के चुरा लेते हैं।

उन्हें दूसरे प्राणी को चुराने में कोई गुरेज नहीं है।

लेकिन खुद से चोरी करने से उन्हें कोई परेशानी नहीं होती है।

आह! मेरी बेटी, मैंने प्राणियों को सब कुछ दिया है, उनसे कह रहा है:

" जो तुम चाहते हो ले लो, लेकिन बस मुझे अपना दिल छोड़ दो।"

वे न केवल मुझे अपने दिल से इनकार करते हैं, बल्कि वे मुझे दूसरों के स्नेह से वंचित करते हैं।

इसके अलावा, यह न केवल धर्मनिरपेक्ष लोगों से आता है, बल्कि पवित्र आत्माओं, पवित्र आत्माओं से भी आता है।

गुलाब जल से एक निश्चित आध्यात्मिक दिशा कितनी हानिकारक है,

कुछ कृपालुता के लिए,

इतनी भावुकता से,

प्रलोभन के उपयोग के साथ !

आत्माओं का भला करने के बजाय, हम उन्हें भूलभुलैया में विसर्जित करते हैं।

जब मुझे इन आत्मसंतुष्ट हृदयों में विवश होकर प्रभु-रूप में प्रवेश करना पड़ता है, तो मैं यह देखकर भाग जाना चाहता हूँ

-कि उनका स्नेह मेरे लिए नहीं है,

-कि उनका दिल मेरा नहीं है।

और यह, किसके द्वारा?

उन लोगों में से जो मेरी ओर आत्माओं की अगुवाई करें! बल्कि, उन्होंने मेरी जगह ले ली।

मुझे ऐसा मिचली आ रही है कि मैं उनके दिलों में रहकर नहीं जी सकता। हालांकि मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है जब तक कि मेजबान की दुर्घटनाएं समाप्त नहीं हो जातीं।

आत्माओं का क्या कत्लेआम है! ये मेरे चर्च के असली घाव हैं! यही कारण है कि मेरे बहुत से मंत्री गिरजे से कटे हुए हैं!

तमाम दुआओं के बावजूद वे मुझसे करते हैं, मैं उनकी एक नहीं सुनता। उनके लिए कोई कृपा नहीं है।

मैं दुखी मन से उनसे कहता हूँ:

" चोरों, जाओ, मेरे अभयारण्य को छोड़ दो क्योंकि मैं अब तुम्हारे सामने नहीं खड़ा हो सकता!"

भयभीत, मैंने उससे कहा: "शांत हो जाओ, यीशु।

हमें अपने खून और अपने घावों के फल के रूप में देखें। दंड को अनुग्रह में बदल दें! "

यीशु जारी है:

"ये सजा जारी रहेगी।

मैं मनुष्य को मिट्टी में मिला दूंगा।

अप्रत्याशित दुर्घटनाएं उसे भ्रमित करती रहेंगी। जहाँ वह भागने की आशा रखता है, वहाँ उसे एक जाल मिलेगा;

जहां वह जीत की प्रतीक्षा करता है, वह हार पाएगा;

जहाँ वह उजियाले की बाट जोहता है, वहां उसे अन्धकार मिलेगा।

तब वह कहेगा: "मैं अंधा हूँ और मुझे नहीं पता कि अब क्या करना है!"

विनाशकारी तलवार अपना काम तब तक जारी रखेगी जब तक कि सब कुछ शुद्ध न हो जाए।"

मेरे लिए दिन बहुत कड़वे हैं। मीठे यीशु अब शायद ही कभी आते हैं।

जब वह आता है, तो वह इसे बिजली की तरह कुछ समय के लिए करता है और

खुद को अपने आँसू पोंछते हुए दिखाता है।
फिर बिना कारण बताए वह चला जाता है। अंत में, कई अभावों के बाद ,

उसने मुझे बताया:
"मेरी बेटी, लंबे समय तक मेरा इलाज करने के बाद, क्या आपको मेरे अभिनय के तरीके और मेरी अनुपस्थिति का कारण नहीं पता था?
फिर भी मैं आपको कई बार बता चुका हूं। आपके लिए भूलना कितना आसान है!
हालात और बिगड़ेंगे। मुझे आपको बस इतना ही बताना है।"

फिर, जब मैंने खुद को अपने शरीर से बाहर पाया, तो मैंने देखा कि लोग कहते हैं
- कि दो या तीन राष्ट्र अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो जाएंगे, e
-कि इतना दुख और बर्बादी पीछा करेगी
क्योंकि अन्य राष्ट्रों ने उन्हें लेने के लिए उन पर अत्याचार किया होगा!

मैंने पूरी तरह से यीशु के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है।
उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, मुझ में पिघल जाओ।
मेरे साथ अपनी प्रार्थना को वित्तपोषित करें
हमारी प्रार्थना एक हो सकती है और
कि हम नहीं जान सकते कि कौन तुम्हारा है और कौन मेरा है।

तुम्हारे कष्ट, तुम्हारे कर्म, तुम्हारी इच्छा और तुम्हारा प्रेम,
उन्हें मेरे कष्टों में, मेरे कर्मों में, मेरी इच्छा में और मेरे प्रेम में मिला दो।

उन्हें इस तरह से वित्तपोषित करें कि आप कह सकें: "जो यीशु का है वह मेरा है"

और मैं कह सकता हूं: "जो लुइसा का है वह मेरा है"।

मान लीजिए हम पानी के एक बड़े टब में एक गिलास पानी डालते हैं।

इस तथ्य के बाद, क्या आप गिलास से आने वाले पानी को टैंक में मौजूद पानी से अलग कर पाएंगे? हरगिज नहीं!

इसलिए, अपने अधिक अच्छे और संतोष के लिए, आप जो कुछ भी करते हैं उसे अक्सर दोहराएं:

" **यीशु,** मैं आपकी इच्छा को पूरा करने के लिए इसे आप में डालता हूं।

मेरे बजाय। ""

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था, मेरा हमेशा दयालु यीशु बहुत व्यथित था और मैंने उससे कहा: "मेरे प्यार, तुम्हें इतना क्या सताता है?"

उसने उत्तर दिया :

"काश! मेरी बेटी

जब मैंने चर्चों को वीरान होने दिया, मंत्री तितर-बितर हो गए और जनता कम हो गई,

इस का मतलब है कि

बलिदानों ने मुझे आहत किया है ,

अपमान की प्रार्थना,

अनादर की पूजा ,

फलहीन शौक की स्वीकारोक्ति।

अपनी महिमा को फिर न पाकर, वरन उन आशीषों के बदले जो मैं देता हूं, अपराध करता हूं,

बाद वाले को रोकें।

मेरे मंत्रियों के ये प्रस्थान भी संकेत देते हैं कि चीजें चरम पर पहुंच गई हैं। सजा कई गुना बढ़ जाएगी।

मनुष्य कितना कठोर है, मनुष्य कितना कठोर है!"

मैं थोड़ा विचलित महसूस कर रहा था क्योंकि मैंने खुद को भगवान की पवित्र इच्छा में विसर्जित करने की कोशिश की और यीशु से मेरे विकर्षणों के लिए क्षमा माँगने की कोशिश की।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

सूरज अपनी गर्मी से पौधों को खाद देने के लिए जमीन पर बिखरे उर्वरक से निकलने वाले जहरीले वाष्पों को नष्ट कर देता है।

अन्यथा, पौधे सड़ जाएंगे और अंततः सूख जाएंगे।

जैसे ही आत्मा मेरी इच्छा में प्रवेश करती है, वह अपनी गर्मी से उन संक्रमणों को नष्ट कर देती है जिन्हें आत्मा ने अपने विकर्षणों से अनुबंधित किया है।

इसलिए, जैसे ही आप अपने भीतर की व्याकुलता को नोटिस करते हैं,

अपने आप में मत रहो, बल्कि मेरी इच्छा में तुरंत प्रवेश करो, ताकि मेरी गर्मी तुम्हें शुद्ध करे और तुम्हें मुरझाने से रोके »।

अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैंने अपनी खराब स्थिति के बारे में यीशु से शिकायत की।

उसने मुझसे कहा: "मेरी बेटी, हिम्मत! कुछ नहीं बदलता! दृढ़ता सबसे बड़ा गुण है।

यह वीरता पैदा करता है और जिनके पास यह गुण है उनके लिए महान संत नहीं बनना लगभग असंभव है। पुण्य कार्यों की पुनरावृत्ति आत्मा में प्रेम के एक नए और बढ़ते स्रोत को जन्म देती है।

दृढ़ता आत्मा को मजबूत करती है और उस पर अंतिम दृढ़ता की मुहर लगाती है। आपका यीशु इस बात से नहीं डरता कि उसकी कृपा स्थिर आत्माओं में बिना प्रभाव के रहेगी। वह उन्हें धार के माध्यम से उन्हें वितरित करता है।

आत्मा में ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती

-जो एक बार काम करता है और फिर कुछ नहीं करता,

- जो एक समय में एक काम करता है और दूसरी बार अगली बार।

इसका कोई समर्थन बिंदु नहीं है:

- एक दिन एक तरफ फेंक दिया जाता है और,

- परसों, दूसरे दिन।

वह भूखा रहेगा क्योंकि उसके पास वह दृढ़ता नहीं है जिससे प्रेम बढ़ता है। मेरी कृपा ऐसी आत्मा में डालने से डरती है क्योंकि वह इसका दुरुपयोग कर सकती है या इसका इस्तेमाल मुझे ठेस पहुंचाने के लिए कर सकती है »।

मैंने बहुत जरूरतमंद महसूस किया और यीशु से शिकायत की। अच्छा, वह शानदार हीरे से सजे हुए वस्त्र पहने हुए भीतर से आया था।

ऐसा लग रहा था कि वह गहरी नींद से बाहर आ रहा है। उसने बड़ी कोमलता *से मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, तुम क्या चाहती हो?"

तुम्हारे कराहने से मेरा दिल दुखा और मैं उठा और तुरंत आकर तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करने लगा।

तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं तुम्हारे दिल में था और वह,

-जब आप अपने कर्म, प्रार्थना और मरम्मत कर रहे थे,

- जब तुमने मेरी वसीयत में डाल दिया और तुमने मुझसे प्यार किया, तो मैंने सब कुछ अपने लिए ले लिया और

मैंने इसका इस्तेमाल खुद को खिलाने और अपने परिधान को कीमती हीरों से सजाने के लिए किया।

जबकि तुमने मुझसे प्यार किया, मुझसे प्रार्थना की और इसी तरह, मैंने उपवास नहीं किया जैसे कि मैंने कुछ किया ही नहीं।

मैंने यह सब तब से लिया है जब आपने मुझे पूरी आजादी दी है। जब आत्मा ऐसा करती है,

जब उसे इसकी आवश्यकता होती है तो मैं आराम नहीं कर सकता। मैं उसके लिए सब कुछ करता हूं। फिर बताओ तुम क्या चाहते हो!"

जब तक मैं उनके पावन हाथों को गीला नहीं करता, तब तक मैं बहुत आंसू बहाता रहा, मैंने उन्हें अपनी चरम जरूरतों के बारे में बताया।

फिर मीठे यीशु ने मुझे अपने दिल से दबाया और अपने दिल से एक बहुत ही मीठा पानी डाला जिसने मुझे तरोताजा कर दिया।

उसने जारी रखा:

"मेरी बेटी, डरो मत, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ बनूंगा। यदि तुम्हारे पास प्राणियों की कमी है, तो मैं सब कुछ करूंगा।

मैं तुम्हें अपने साथ बांधूंगा और तुम्हें मुक्त करूंगा। आपको कभी नहीं छोड़ेंगे।

तुम मुझे बहुत प्रिय हो।

मैंने तुम्हें अपनी वसीयत में विकसित किया और तुम मेरे हिस्से हो। मैं तुम्हें पकड़ कर सबको बताऊंगा: "कोई नहीं लेकिन मैं इसे छूता हूं"। इसलिए शांत हो जाओ, क्योंकि तुम्हारा यीशु तुम्हें कभी नहीं छोड़ता »।

मेरी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मेरा हमेशा अच्छा यीशु सभी पीड़ित था , *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

याजकों के बीच फूट के कारण मुझे कैसा मिचली आ रही है। यह मेरे लिए असहनीय है।

उनका अव्यवस्थित जीवन यही कारण है कि मेरी धार्मिकता मेरे शत्रुओं को उनके साथ दुर्व्यवहार करने की अनुमति देगी।

दुष्ट हमला करने के लिए तैयार हैं और इटली सबसे बड़ा पाप करने वाला है,

- मेरे चर्च को सताने और निर्दोषों का खून बहाने का ».

यह कहते हुए उसने मुझे दिखाया

-हमारे सहयोगी राष्ट्र तबाह हो गए,

-कई जगह मुंडा ई

- उनका कुचला हुआ अभिमान।

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और अपने आप को ईश्वरीय इच्छा में विलीन करने की कोशिश कर रहा था, मेरे प्यारे **यीशु ने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी,

हर बार जब आत्मा मेरी इच्छा में प्रवेश करती है और प्रार्थना करती है, काम करती है, पीड़ित होती है, आदि।

नई दिव्य सुंदरियों को प्राप्त करता है।

मेरी वसीयत में किए गए प्रत्येक अतिरिक्त कार्य के लिए,

आत्मा अधिक शक्ति, ज्ञान, प्रेम और दिव्य पवित्रता प्राप्त करती है।

"साथ ही, जैसे ही आत्मा दैवीय गुणों को प्राप्त करती है, वह मानवीय गुणों को छोड़ देती है।

जब आत्मा मेरी वसीयत में काम करती है, तो मनुष्य निलम्बित रहता है। ईश्वरीय जीवन कार्य करता है और उसका स्थान लेता है।

और माई लव को अपने व्यवहार को प्राणी में जमा करने की स्वतंत्रता है »।

मैंने यीशु से शिकायत की कि मैं पवित्र मास में भी शामिल नहीं हो सका।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी,

फिर कौन करता है दिव्य यज्ञ? वो मैं नहीं?

जब मुझे मास में बलि दी जाती है, तो मेरी इच्छा में रहने वाली आत्मा मेरे साथ बलिदान हो जाती है,

सिर्फ एक द्रव्यमान पर नहीं,

लेकिन सभी जनसमुदाय में।

वह सभी यजमानों में मेरे साथ प्रतिष्ठित है।

मेरी वसीयत को कभी मत छोड़ो और मैं तुम्हें जहाँ चाहूँगा वहाँ पहुँचा दूँगा।

आपके और मेरे बीच संचार का ऐसा प्रवाह होगा कि आप मेरे बिना कोई कार्य नहीं करेंगे और मैं आपके बिना कोई कार्य नहीं करूंगा।

इसलिए, जब आप कुछ खो रहे हैं,

मेरी इच्छा दर्ज करें ई

आप जो चाहते हैं वह जल्दी से मिल जाएगा:

आप कितने जन, भोज और प्रेम चाहते हैं।

मेरी वसीयत में कुछ भी गायब नहीं है।

आप सब कुछ अनंत और दिव्य रूप में पाते हैं।"

ईश्वरीय इच्छा में जीने का क्या अर्थ है, इस पर चर्चा करते हुए, किसी ने राय व्यक्त की कि यह ईश्वर के साथ रहना है।

अपने आप को मुझे दिखाते हुए, मेरे हमेशा दयालु यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, इसमें बहुत अंतर है

-जियो बस मेरे साथ एक हो जाओ और

- मेरी वसीयत में जियो।"

इतना कहकर उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया और कहा:

"मेरी वसीयत में एक पल आओ और तुम बहुत अंतर देखोगे।" मैंने खुद को यीशु में पाया।

मेरा छोटा परमाणु शाश्वत इच्छा में तैर गया।

चूंकि यह वसीयत एक साधारण कार्य है जिसमें अन्य सभी कार्य (अतीत, वर्तमान और भविष्य) शामिल हैं, मैंने इस सरल कार्य में भाग लिया,

जहाँ तक यह किसी प्राणी के लिए संभव है। मैंने कृत्यों में भी भाग लिया है

-जो अभी तक मौजूद नहीं है e

- यह सदियों के अंत में मौजूद रहेगा और जब तक ईश्वर ईश्वर है। इस सब के लिए मैंने उससे प्यार किया है, उसे धन्यवाद दिया है, उसे आशीर्वाद दिया है, और इसी तरह।

ऐसा कोई काम नहीं था जो मुझसे बच गया हो।

मैं अपने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के प्यार को बनाने में सक्षम था, क्योंकि उनकी इच्छा मेरी थी।

मैंने उन्हें यह प्यार अपने रूप में दिया। मैं कितना खुश था!

उन्होंने मुझ से अपना प्रेम प्राप्त करने में पूर्ण संतोष पाया।

लेकिन सब कुछ कौन बता सकता है? शब्द मुझे असफल करते हैं

धन्य यीशु ने मुझसे कहा:

"क्या आपने देखा है कि मेरी वसीयत में जीने का क्या मतलब है? यह गायब हो रहा है।

और, जहां तक प्राणी के लिए संभव है, वह प्रवेश करता है

-अनंत काल के क्षेत्र में,

- प्रभु के सर्वशक्तिमान में,

-सृजित आत्मा में, ई

हर दिव्य कार्य में भाग लें।

यह पृथ्वी पर रहते हुए भी सभी दिव्य गुणों का आनंद ले रहा है। यह दैवीय तरीके से बुराई से घृणा करता है।

यह बिना थके सब कुछ ढक रहा है, क्योंकि आत्मा को चेतन करने वाली इच्छा दिव्य है। वह पवित्रता है जो अब तक पृथ्वी पर ज्ञात नहीं हुई है, और जिसे मैं प्रगट करूंगा,

- सबसे सुंदर और सबसे चमकीला,

जो अन्य सभी पवित्रता का मुकुट और पूर्ति होगी।

दूसरी ओर, जो केवल मेरे साथ रहते हैं, वे मिटते नहीं हैं। दो प्राणी एक साथ हैं, एक में विलीन नहीं। जो भी गायब नहीं होता है वह सभी दिव्य कार्यों में भाग लेने के लिए अनंत काल के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता है। ध्यान से सोचें और आपको बड़ा अंतर दिखाई देगा।"

अपने आप को अपनी सामान्य अवस्था में पाकर, मुझे यीशु के साथ रहने, उनमें विश्राम करने की अत्यधिक आवश्यकता महसूस हुई।

मेरे प्यारे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मुझ में आराम करो।

तुम मुझे हमेशा अपने निपटान में पाओगे; मैं तुम्हें कभी शर्मिंदा नहीं करूंगा। जितना अधिक तुम मुझ में विश्राम करोगे, उतना ही अधिक मैं तुम में डालूंगा।

अक्सर, आराम करने की आवश्यकता महसूस करते हुए, मैं आपके पास आऊंगा और आप में आराम करूंगा, जो बाकी मैं आपको देता हूं, उसकी सेवा करता हूं "।

फिर उन्होंने जोड़ा:

"जब आत्माएं मुझे खुश करने के लिए सब कुछ करती हैं, मुझसे प्यार करती हैं और मेरी इच्छा की कीमत पर रहती हैं,

वे मेरी देह के अंग के समान हो जाते हैं, जिन में मैं ऐसा महिमा करता हूं मानो वे मेरे अपने हों।

नहीं तो वे उखड़े हुए अंगों की तरह हैं जो मुझे पीड़ित करते हैं; वे न केवल मुझे, वरन स्वयं को और अपने संगी मनुष्यों को भी दु:ख देते हैं। वे अंग हैं जो शुद्ध सामग्री का उत्सर्जन करते हैं, यहां तक कि वे जो अच्छा करते हैं उसे भी दूषित करते हैं "।

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मुझे लगा कि मेरा गरीब दिल बहुत दर्द में है, मैं यह शिकायत करने के लिए नहीं कह रहा हूँ।

मेरा हमेशा दयालु यीशु आया और *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

मैं जीवों को उनके माध्यम से मुझे खोजने के लिए पीड़ा भेजता हूं।

मैं मानो इन कष्टों से आच्छादित हूं। यदि आत्मा धैर्य और प्रेम से पीड़ित है,

- वह मुझे ढकने वाले लिफाफे को तोड़ती है और मुझे ढूंढती है । नहीं तो इन दुखों में छिपा रहता हूँ,

आत्मा मुझे नहीं खोजती और मैं स्वयं को उसमें प्रकट नहीं कर सकता।"

उन्होंने जोड़ा :

"मैं अपने आप को प्राणियों में फैलाने की एक अदम्य इच्छा महसूस करता हूं।

मैं उन सभी को बहुत सुंदर बनाने के लिए अपनी सुंदरता वहां जमा करना चाहता हूं। लेकिन, पाप के माध्यम से, वे मेरी दिव्य सुंदरता को अस्वीकार करते हैं और खुद को कुरूपता से ढक लेते हैं।

-मैं उन्हें अपने प्यार से भरना चाहूंगा। लेकिन, जो मुझसे नहीं, उससे प्यार करना,

वे ठंड से कांपते हैं और इस प्रेम को अस्वीकार करते हैं।

-मैं उन्हें अपने गुणों के साथ कवर करने के लिए अपने बारे में सब कुछ बताना चाहता हूं। लेकिन उन्होंने मुझे मना कर दिया।

वे मुझे अस्वीकार करते हैं, वे मेरे और उनके बीच एक दीवार बनाते हैं,

निर्माता और उसके प्राणी के बीच किसी भी संचार को रोकना।

इन सबके बावजूद, मैं अपना प्रयास जारी रखता हूं,

कम से कम एक आत्मा को खोजने की आशा करना जो मेरे गुणों को प्राप्त करना चाहता है। उसे पाकर, मैं उस में अपनी कृपा बढ़ाता हूं, उन्हें एक हजार से गुणा करता हूं। मैं अपने आप को पूरी तरह से उसे सौंप देता हूं कि वह उसे अनुग्रह की विलक्षणता बनाए।

तो इस जुल्म को अपने दिल से निकाल दो। मुझ में डालो और मैं तुम में डालूंगा।

यीशु ने आपको बताया और वह काफी है।

किसी बात की चिंता मत करो। मैं सब कुछ संभाल लूंगा।"

मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:

"मेरा जीवन, मैं कितना *बुरा* हूँ ! (इतालवी में *बुरा* का अर्थ है बुरा, कमजोर), लेकिन मुझे पता है कि तुम मुझसे वही प्यार करते हो।"

तब मेरे प्रिय यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरे छोटे से बुरे, आप निस्संदेह बुरे हैं, लेकिन आपने [3] मेरी वसीयत पर कब्जा कर लिया है।

मेरे प्यार, मेरी शक्ति, मेरी बुद्धि, आदि को आकर्षित करके, आपने मेरे एक हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

लेकिन मेरी इच्छा पर कब्जा करने के बाद, आपने मेरे होने के सभी सार को पकड़ लिया है,

तुमने मुझे पूर्ण रूप से जीत लिया है। इसलिए मैं अक्सर आपसे अपनी वसीयत के बारे में ही नहीं, बल्कि उसे जीने के तरीके के बारे में भी बोलता हूं।

"मैं चाहता हूं कि आप इन दो पहलुओं को अच्छी तरह से जान लें ताकि आपका जीवन पूरी तरह से मेरे साथ एकीकृत हो जाए। और फिर, मेरी इच्छा के रहस्यों को जानकर, क्या आप अभी भी दुष्ट हो सकते हैं?"

मैंने कहा: "मेरे यीशु, तुम मेरे साथ मजाक कर रहे हो।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं वास्तव में बुरा हूं और मैं चाहता हूं कि आप मुझे अच्छा बनने में मदद करें!"

उसने उत्तर दिया: "हाँ, हाँ!" और गायब हो गया।

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, अगर कुछ दिनों के लिए तुम मुझे हमेशा की तरह नहीं देखते हो, तो शोक मत करो। परेशानियां बढ़ जाएंगी।

मनुष्य पर प्रहार करने के लिए स्वर्ग और पृथ्वी एक हो जाएंगे।

और मैं आपको इतनी सारी बुराइयां दिखाकर आपको दुखी नहीं करना चाहता"।

मैंने उत्तर दिया: "मेरे अच्छे यीशु, मेरे लिए सबसे बड़ी पीड़ा तुमसे वंचित होना है।

यह बिना मरे मृत्यु है, यह एक अवर्णनीय और असीम पीड़ा है! यीशु, यीशु, आप

क्या कहते हैं? मैं तुम्हारे बिना, जीवन के बिना? मुझे फिर कभी मत बताना !"

यीशु ने आगे कहा: "मेरी बेटी, घबराओ मत।

मैंने यह नहीं कहा कि मैं बिल्कुल नहीं आऊंगा, लेकिन अक्सर नहीं। मैं आपको पहले ही बता देता हूं कि चिंता न करें।

मेरी इच्छा आपको उसमें दृढ़ रहने के लिए सब कुछ देगी। एक फल के छिलके की तरह, मैं तुम से मनुष्य को हटा दूंगा।

मेरी वसीयत की मशीन तुम्हें पीस ले ताकि तुम में कुछ भी इंसान न रह जाए।"

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:

"मैं आपकी इच्छाओं, आपके प्यार, आपके स्नेह, आपके दिल आदि को कैसे प्राप्त करना चाहूंगा, ताकि आप की तरह इच्छा और प्यार कर सकूं!"

तब मेरे हमेशा दयालु यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मेरी न तो इच्छा है और न ही स्नेह, सब कुछ मेरी इच्छा में केंद्रित है।

मेरी इच्छा मेरे लिए सब कुछ है।

अगर आपके पास कुछ नहीं है तो आप कुछ चाहते हैं। हालाँकि, अपनी वसीयत में, मैं सब कुछ कर सकता हूँ। जिसके पास प्रेम नहीं है वह प्रेम की इच्छा कर सकता है।

लेकिन मेरी वसीयत में परिपूर्णता है, प्रेम का स्रोत है।

अनंत होने के नाते, मैं अपनी इच्छा के एक सरल कार्य के साथ, सभी सामानों का निपटान कर सकता हूं और उन्हें हर चीज में वितरित कर सकता हूं।

अगर मेरी इच्छा होती, तो मैं पूरी तरह से खुश नहीं होता।

मुझे कुछ याद होगा। मैं एक सीमित प्राणी होगा। मेरे पास सब कुछ है। इसलिए मैं खुश हूं और सभी को खुश कर सकता हूं।

अनंत होने का अर्थ है सक्षम होना

- यह सब करो, - सब कुछ अपनाओ और - सबको खुश करो।

चूंकि यह समाप्त हो गया है, प्राणी के पास सब कुछ नहीं है और वह हर चीज को गले नहीं लगा सकता है। उसके पास इच्छाएं, चिंताएं, स्नेह आदि हैं।

जिसे वह अपने निर्माता के पास चढ़ने के लिए कदमों के रूप में उपयोग कर सकता है,

- दैवीय गुणों को आकर्षित करना और फिर, दूसरों पर हावी होना।

अगर आत्मा पूरी तरह से मेरी इच्छा में विलीन हो जाती है,

-न केवल मेरे गुणों को लुभाता है।

लेकिन, एक घूंट में, यह मुझे पूरी तरह से अवशोषित कर लेता है।

आपकी अपनी इच्छाएं या स्नेह

- गायब और

- वे मेरी वसीयत के द्वारा प्रतिस्थापित किए जाते हैं।

आज सुबह, मेरा प्यारा जीसस नहीं आया और मैंने वह दिन आहें, चिंता और कड़वाहट के बीच बिताया।

हालाँकि, मैं सब उसकी इच्छा में डूबा हुआ था।

जब रात हुई, तो मैं और विरोध नहीं कर सका और यीशु को ज़ोर से पुकारा। मैं अपनी आँखें बंद नहीं कर सका और बेचैन था।

मैं इसे हर कीमत पर चाहता था।

अंत में वह आया और मुझसे कहा:

"मेरी कबूतर, कौन कह सकता है

मेरी वसीयत में तुम जो उड़ान भरते हो,

जिस स्थान पर आप चलते हैं,
जिस हवा में आप सांस लेते हैं ?

कोई नहीं बता सकता, तुम भी नहीं! केवल मैं ही यह कह सकता हूं, मैं
-जो आपके तंतुओं को मापता है,
-जो आपके विचारों और आपके दिल की धड़कन को गिनता है।

जैसे ही आप उड़ते हैं, मैं उन दिलों को देखता हूं जिन्हें आप छूते हैं। रोक नहीं है!
दूसरे दिलों में उड़ो, दस्तक दो और फिर उड़ जाओ।

अपने पंखों पर, मुझे प्यार करने के लिए मेरे " **आई लव यू"** को दूसरे दिलों में ले जाओ। तो मेरे दिल में आराम करने के लिए आओ ताकि, बाद में,
आप और भी तेज उड़ानों के साथ शुरुआत कर सकते हैं।

मैं अपने नन्हे कबूतर के साथ मस्ती करता हूं और अपने साथ मस्ती करने के लिए स्वर्गदूतों और अपनी मां को आमंत्रित करता हूं।
और मैं आपको सब कुछ नहीं बताता! बाकी मैं तुम्हें स्वर्ग में बताऊंगा। इतनी सारी हैरान करने वाली बातें जो मैं आपको बताऊंगा!"

फिर उसने मेरे माथे पर हाथ रखा, और कहा:
"मैं तुम्हें अपनी इच्छा की सांस छोड़ देता हूं। सो जाओ।" और मैं सो गया।

अपनी सामान्य अवस्था में स्वयं को पाते हुए, मैंने अपने प्रिय यीशु से कहा:

"यीशु, मुझे प्यार करो। मुझे तुमसे प्यार करने का अधिकार किसी और से ज्यादा है, क्योंकि मैंने कभी किसी से प्यार नहीं किया, लेकिन तुम और कोई भी मुझसे प्यार नहीं करता।

और अगर कोई मुझे प्यार करने लगता है, तो यह मेरे लिए नहीं बल्कि मेरे लिए है।

संक्षेप में, मेरे लिए आपके और मेरे लिए आपके प्यार के बीच, कोई दूसरा प्यार नहीं मिलता। ”

मेरे प्यारे यीशु ने मुझे उत्तर दिया:

"मेरी बेटी, तुम्हें अपने लिए मेरे सबसे शक्तिशाली प्रेम के अलावा और कुछ नहीं देखना चाहिए; यह इतना महान है कि इसकी ईर्ष्या आपको हर चीज से दूर रखती है।

मेरी ईर्ष्या ऐसी है कि मैं सतर्क रहता हूं कि प्राणियों के प्रेम की छाया भी तुम्हें छूने न पाए।

अधिक से अधिक मैं किसी को अपने अंदर प्यार करने के लिए सहन करता हूं, लेकिन मेरे बाहर नहीं। नहीं तो मैं उसे भगा देता।

तो तुमने किसी और दिल में प्रवेश नहीं किया और किसी और दिल में प्रवेश नहीं किया »।

शाम को, यीशु रानी माँ के साथ लौटे।

उन्होंने मुझे नाम से बुलाया जैसे वे चाहते थे कि मैं उनकी बात सुनूं। यीशु और उसकी माँ को एक साथ बात करते हुए देखना कितना सुन्दर था!

स्वर्गीय माँ ने कहा : "मेरे बेटे, तुम क्या कर रहे हो? बस!

एक माँ के रूप में मेरे पास मेरे अधिकार हैं और मैं अपने बच्चों को इतना पीड़ित देखकर दुखी हूँ। क्या आप जीवों और उनके भोजन को नष्ट करने की सजा में शामिल होना चाहते हैं?

क्या आप उन्हें छूत की बीमारियों से नहलाना चाहते हैं? वे क्या करेंगे?

तुम कहते हो कि तुम इस लड़की से प्यार करते हो; यदि आप करते हैं, तो उसे कितना कष्ट नहीं होगा? उसे कड़वा न करने के लिए, ऐसा मत करो!"

इतना कहकर उसने यीशु को अपनी ओर खींच लिया।

लेकिन यीशु ने दृढ़ता से उत्तर दिया: "मैं नहीं कर सकता!

मैं उसकी वजह से बहुत सी बुराइयों को दूर रखता हूँ, लेकिन सब कुछ, नहीं!

मेरी मां

आइए हम मानवता पर कयामत का एक बवंडर उतारें ताकि वह आत्मसमर्पण कर दे।"

और भी बहुत सी बातें कही गईं, लेकिन मुझे ठीक से समझ नहीं आया। मैं घबरा गया था और उम्मीद कर रहा था कि यीशु शांत हो जाएगा।

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मैंने अपने प्रिय यीशु से कहा:

"मेरी प्रार्थनाओं का तिरस्कार मत करो।

मैं आपके अपने शब्दों को दोहराता हूं, आपके वही इरादे हैं जो मैं ले जाता हूं। मैं आपकी तरह, आपकी इच्छा से आत्माओं को जीतना चाहता हूं।"

तब धन्य यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, <

जब मैं सुनता हूं कि आप मेरे शब्दों, मेरी प्रार्थनाओं को दोहराते हैं और मुझे वह चाहिए जो मैं चाहता हूं, तो मैं आपकी ओर आकर्षित होता हूं जैसे कि एक शक्तिशाली चुंबक द्वारा।

मेरे दिल में क्या खुशी है! मैं कह सकता हूं कि मेरे लिए यह एक पार्टी है।

और जब मैं आनन्दित होता हूं, तो मुझे अपने लिए आपके प्यार के लिए कमजोर महसूस होता है और मुझमें प्राणियों को मारने की ताकत नहीं होती है।

तुम मुझे उसी जंजीर से बाँधते हो जो मैंने पिता के साथ मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप करने के लिए उपयोग की थी।

ओह हां! मैंने जो किया उसे दोहराएं ।

ऐसा हमेशा करें यदि आप चाहते हैं कि आपका यीशु, जो इतनी कड़वाहट में रहता है, प्राणियों से आनंद प्राप्त करे »।

उन्होंने जोड़ा :

"यदि आप सुरक्षित रहना चाहते हैं, तो हमेशा मरम्मत करें और उन्हें मेरे साथ करें/ अपने आप को मुझमें विसर्जित कर दें ताकि आपके और मेरे पास से केवल एक ही प्रायश्चित का भजन निकल सके।

जब आत्मा की मरम्मत होती है, तो उसे आश्रय दिया जाता है, उसे ठंड से, ओलों से और हर चीज से बचाया जाता है।

अगर यह ठीक नहीं होता है,

- वह किसी ऐसे व्यक्ति की तरह है जो गली के बीच में है,

- बिजली, ओलों और सभी गड़बड़ी के संपर्क में।

समय बहुत दुखद है

यदि क्षतिपूर्ति का दायरा विस्तृत नहीं होता है, तो यह खतरा है कि जो लोग **संरक्षित नहीं हैं वे दैवीय न्याय की चकाचौंध से प्रभावित होंगे।"**

अपने आप को मेरी सामान्य अवस्था में पाते हुए, मैंने अपने हमेशा दयालु यीशु से कहा:

"यह कैसे संभव है? आपने हमारे लिए सब कुछ किया है;

-आप सभी के लिए संतुष्ट हैं; सभी चीजों में,

-आपने प्राणियों के नाम पर पिता की महिमा को बहाल किया है ताकि सब कुछ ढंका हुआ हो

- प्यार, धन्यवाद और आशीर्वाद का मंत्र।

हालाँकि, सजाएँ गिरती रहती हैं

आपने हमें ढके हुए सुरक्षात्मक लबादे को लगभग नष्ट कर दिया है।"

मुझे बाधित करते हुए, मेरे प्यारे **यीशु ने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी, आप जो कहते हैं वह सच है। मैंने प्राणियों के लिए सब कुछ किया है।

उन्हें सुरक्षित रखने के लिए, मैं उन्हें अपने प्यार के आवरण में एक रक्षा कवच के रूप में लपेटना चाहता था।

लेकिन, जानबूझकर किए गए पापों के माध्यम से, कृतघ्न प्राणी इस कवच को तोड़ देते हैं। इस प्रकार वे मेरे अनुग्रह और मेरे प्रेम से बच जाते हैं।

उन्हें बिना किसी आश्रय के बाहर रखा गया है।

इस प्रकार वे ईश्वरीय न्याय की चमक से प्रभावित होते हैं। मैं वह नहीं हूं जो पुरुषों को मारता है।

वे वही हैं जो अपने पापों के लिए,

मेरा विरोध करो और प्रहार प्राप्त करो।

प्रार्थना करो, जीवों के महान अंधेपन के विपरीत प्रार्थना करो »।

एक शाम, जब मैंने लिखना समाप्त किया, तो मेरे प्यारे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, जब भी तुम लिखती हो, मेरा प्यार महसूस होता है

- एक नया भुगतान,

- एक नई पूर्ति।

और मैं अपने अनुग्रह को आप तक पहुँचाने के लिए अधिक इच्छुक महसूस करता हूँ।

लेकिन जान लें कि मैं खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहा हूं

-जब आप सब कुछ नहीं लिखते हैं,

-कि तुम बोलते नहीं हो

तुम्हारे साथ मेरी घनिष्ठता और प्रेम के मेरे प्रदर्शनों के बारे में।

क्या प्यार की इन अभिव्यक्तियों में,

मैं न केवल आपको मुझे जानने और मुझे और अधिक प्यार करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करता हूं।

लेकिन मुझे उन लोगों में भी दिलचस्पी है जो इन ग्रंथों को पढ़ेंगे और जिनसे मुझे और अधिक प्यार मिलेगा।

यदि आप ये बातें नहीं लिखते हैं,

-मुझे यह प्यार नहीं मिलेगा और

"मैं विश्वासघात महसूस करूंगा।"

मैंने उत्तर दिया: "आह! मेरे यीशु, आपके और मेरे बीच के रहस्यों और अंतरंगता को कागज पर उतारने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है!

मुझे ऐसा लगता है कि आप दूसरों के साथ सामान्य तरीके से उपयोग करने के लिए मुझ पर एहसान करते हैं।"

उसने उत्तर दिया: "आह! यह बहुतों की कमजोरी है।

नम्रता या भय से, वे मेरे लिए उनके प्रति प्रेम को छिपाते हैं। और ऐसा करके वे मुझ से छिप जाते हैं।

इसके विपरीत, उन्हें मुझे प्यार करने के लिए यह प्यार दिखाना चाहिए। इस प्रकार, मुझे प्यार में धोखा दिया जाता है, यहां तक कि अच्छे से भी "।

मुझे मेरी सामान्य अवस्था में पाकर, मेरा प्यारा यीशु ध्यान से भरा हुआ दिखाई दिया। वह हर चीज में मुझ पर नजर रखता था।

उसके हृदय से एक रस्सी निकली और मेरी ओर चल पड़ी।

अगर मैं सावधान होता, तो यह रस्सी मेरे दिल से जुड़ी रहती और मेरे प्यारे यीशु ने इसे घुमाया और इसका मज़ा लिया।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी, मैं सभी आत्माओं के प्रति चौकस हूं। यदि वे भी मेरी ओर ध्यान देते हैं,

मेरे प्रेम की डोरी उनके हृदय में स्थिर रहती है। मैं अपना ध्यान कई गुना बढ़ाता हूं और आनंद लेता हूं।

नहीं तो रस्सी ढीली रह जाती है और मेरा प्यार ठुकरा दिया और दुखी हो जाता है"।

उसने जोड़ा:

उन आत्माओं में जो मेरी इच्छा करते हैं और उसमें रहते हैं, मेरे प्रेम में कोई बाधा नहीं है।

मैं उन्हें प्यार करता हूँ और मैं उन्हें बहुत पसंद करता हूँ

कि मैं उन सभी चीजों से सीधे निपटता हूं जो उनसे संबंधित हैं। मैं उन्हें अप्रत्याशित धन्यवाद देता हूं।

और अगर कोई और उनके लिए कुछ करता है तो मुझे जलन होती है। मैं यह सब अपने आप करना चाहता हूं।

मुहब्बत की इतनी जलन मुझ तक पहुँचती है कि,

उस पुजारी की तरह जिसे मैं शक्ति देता हूं

- अपने आप को पवित्र यजमान में समर्पित करें,

मैं खुद को इन आत्माओं को समर्पित करने का सौभाग्य देता हूं

जो मेरी इच्छा के अनुसार अपने कर्म करते हैं, अपने मानव को गिराने देते हैं ताकि ईश्वरीय इच्छा पूरी हो जाए।

जो याजक यजमान के लिए करता है, वह मैं इन आत्माओं के लिए करता हूं,

- सिर्फ एक बार नहीं,

- लेकिन हर बार वे मेरी वसीयत में अपने कार्यों को दोहराते हैं।

वे मुझे शक्तिशाली चुम्बकों की तरह आकर्षित करते हैं

और मैं उन्हें विशेष अतिथि के रूप में पवित्रा करता हूं,

उन पर अभिषेक के शब्दों को दोहराते हुए ।

मैं इसे न्याय के साथ करता हूं।

क्योंकि मेरी वसीयत में रहने वाली आत्माएं खुद को अधिक बलिदान करती हैं

वे आत्माएं जो साम्य प्राप्त करती हैं, लेकिन मेरी इच्छा में नहीं रहती हैं।

मेरी वसीयत में रहने वाली आत्माएं खुद को खाली कर देती हैं ताकि मुझे उनमें अपना पूरा स्थान दे सकें।

वे मुझे पूरी दिशा देते हैं

और, यदि आवश्यक हो, तो वे मेरी इच्छा में जीने के लिए किसी भी पीड़ा को सहने के लिए तैयार हैं।

इसलिए मेरा प्यार पुजारी के लिए यह इंतजार नहीं कर सकता कि वह मुझे संस्कारी मेजबान के माध्यम से उन्हें देने के लिए उपयुक्त समझे।

मैं यह सब अपने आप करता हूं।

ओह! इससे पहले कि पुजारी को पता चले कि इन आत्माओं को खुद को देने का समय आ गया है, मैं कितनी बार खुद को एकता में देता हूं!

अगर नहीं,

मेरा प्रेम ऐसा रहेगा मानो संस्कारों से बंधा हो।

नहीं, नहीं, मैं आज़ाद हूँ!

मेरे हृदय में संस्कार हैं।

मैं उनका मालिक हूं और मैं जब चाहूं उनका अभ्यास कर सकता हूं।"

जब वह यह कह रहा था, तो ऐसा लग रहा था कि वह हर जगह देख रहा है कि क्या उसे अपनी वसीयत में उसे समर्पित करने के लिए कोई जीवित आत्मा नहीं मिल रही है।

कितनी ख़ूबसूरत थी

- मेरी तरह यीशु को देखने के लिए जल्दी से पुजारी के कार्यालय को पूरा करने के लिए यात्रा करें e

- उसे सुनने के लिए उसकी इच्छा पूरी करने वाली और वहां रहने वाली आत्माओं पर अभिषेक के शब्दों को दोहराएं!

ओह! वे धन्य आत्माएँ कितनी सुंदर हैं जो इस प्रकार यीशु का अभिषेक प्राप्त करती हैं! ».

मैंने अपने दयालु यीशु से कहा:

"मैं आपसे प्यार करती हूँ।

लेकिन, चूंकि मेरा प्यार छोटा है, मैं तुम्हें अपने ही प्यार से प्यार करता हूँ। मैं आपकी पूजा से आपकी पूजा करता हूं, मैं आपकी प्रार्थनाओं से प्रार्थना करता हूं,

मैं आपके धन्यवाद के साथ आपका धन्यवाद करता हूँ"।

जब मैं इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

- जब तुम मेरे प्यार से प्यार करते हो,

-जब आप मेरी पूजा के साथ पूजा करते हैं,

-जब आप मेरी प्रार्थना के साथ प्रार्थना करते हैं और

-जब आप मेरे धन्यवाद के साथ धन्यवाद देंगे,

ये कृत्य मेरे में स्थिर हैं जहां वे बढ़े हुए हैं।

मुझे लगता है कि मैं प्यार करता हूं, प्यार करता हूं, प्रार्थना करता हूं और धन्यवाद देता हूं जैसे मैं चाहता हूं कि जीव करें।

आह! मेरी बेटी, मेरे ***लिए एक महान समर्पण आवश्यक है!***

जब आत्मा खुद को मुझे देती है, तो मैं उसे आत्मसमर्पण करता हूं। उसे मेरे साथ भरकर, मैं उसके लिए वही करता हूं जो उसे मेरे लिए करना चाहिए।

दूसरी ओर, यदि प्राणी मेरे सामने आत्मसमर्पण नहीं करता है, तो वह जो करता है वह मुझमें नहीं बल्कि अपने आप में स्थिर रहता है। उनकी हरकतें अपूर्णताओं और दुखों से भरी हैं, जो मुझे पसंद नहीं हैं।"

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था, मेरे प्यारे *यीशु ने* आकर *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

मैं सब प्यार हूँ।

मैं प्यार के फव्वारे की तरह हूँ

ऐसा कि जो कुछ भी उसमें प्रवेश करता है वह प्रेम में परिवर्तित हो जाता है।

मेरे न्याय, ज्ञान***,*** भलाई***,*** भाग्य , आदि में ,

केवल प्रेम है ।

लेकिन प्यार के इस फव्वारे को कौन नियंत्रित करता है? यह **मेरी मर्जी** है ।

माई विल हावी है, शासन करता है और आदेश देता है।

मेरे सभी गुणों में मेरी इच्छा की छाप है।

आत्मा

- जो खुद को मेरी वसीयत पर हावी होने देता है,

-वहां कौन रहता है,

मेरे प्रेम आधार में रहता है।

वह मुझसे अविभाज्य है।

और, उसके लिए, सब कुछ प्यार में बदल जाता है।

इस प्रकार, उसके विचार, शब्द, हृदय की धड़कन, क्रिया, कदम, आदि। मैं प्यार कर रहा हूँ।

उसके लिए यह हमेशा स्पष्ट होता है।

इसके बजाय, मेरी इच्छा से अलग हुई आत्मा के लिए रात है।

दुख, जुनून और कमजोरियां उस पर आक्रमण करती हैं और वे अपना काम करते हैं, एक ऐसा काम जो लोगों को रुला देता है "।

मैंने कुछ डर और चिंता के साथ एक मरती हुई आत्मा के लिए प्रार्थना की।

मेरे अच्छे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, तुम क्यों डरती हो?"

जब एक आत्मा मेरे जुनून पर ध्यान करती है,

- मेरे कष्टों को याद करना

-करुणा और प्रतिशोध के विचारों को धारण करके, उसके और मेरे बीच के रास्ते खुलते हैं

और विभिन्न सुंदरियां उसकी आत्मा को सुशोभित करने के लिए आती हैं।

इस आत्मा ने "मेरे जुनून के घंटे" बनाए।

और मैं उसे अपने जुनून की बेटी के रूप में प्राप्त करूंगा, मेरे खून से लथपथ और मेरे घावों से सुशोभित।

यह फूल आपके दिल में उग आया है

और मैं उसे आशीर्वाद देता हूं और मैं उसे अपने दिल में पूर्वाभास के फूल के रूप

में प्राप्त करता हूं »। जब वह यह कह रहा था, मेरे हृदय से एक फूल निकला और यीशु के पास उड़ गया।

आज सुबह मेरे प्यारे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, अपने आप में, अपनी इच्छा में मत रहो, बल्कि मुझ में, मेरी इच्छा में प्रवेश करो।

मैं विशाल हूँ।

केवल वही जो अपार है वह अपने कार्यों को जितना चाहे उतना बढ़ा सकता है। जो ऊपर रहते हैं वे नीचे प्रकाश भेज सकते हैं।

सूर्य को देखो, क्योंकि वह ऊपर है, वह सबके लिए प्रकाश है। प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने निपटान में सूर्य होता है जैसे कि वह उसकी निजी संपत्ति हो।

दूसरी ओर, और नीचे, पौधे, पेड़, नदियाँ और समुद्र सभी के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

मैं सूरज की तरह नहीं हूं जो कह सकता है कि वह बोल सकता है:

"मैं चाहूं तो सब कुछ अपने कब्जे में ले सकता हूं,

जो किसी भी तरह से दूसरों को मेरा फायदा उठाने से नहीं रोकता है।"

दरअसल, सूर्य से नीचे दी गई सभी चीजों को फायदा होता है:

- इसके प्रकाश का हिस्सा,

- इसकी गर्मी के अन्य,

- इसकी उर्वरता के अन्य,

-इसके अन्य रंग।

मैं अनन्त प्रकाश हूँ। मैं शीर्ष पर हूँ

इसलिए मैं हर जगह हूँ,

सबसे बड़ी गहराई में भी।

मैं सबका जीवन हूं और हर कोई मुझे ऐसे ग्रहण करता है जैसे मैं केवल उसके लिए ही अस्तित्व में हूं।

जहाँ तक आपकी बात है, यदि आप सभी का भला करना चाहते हैं,

- मेरी विशालता में प्रवेश करता है e

-खुद सहित, हर चीज से अलग, ऊंचाइयों को छूएं। अन्यथा, आप पृथ्वी से घिरे रहेंगे।

तुम पौधे हो सकते हो, पेड़ हो सकते हो, लेकिन सूरज कभी नहीं हो सकते।

देने के बजाय, आप केवल प्राप्त करेंगे और

आप जो अच्छा करेंगे वह इतना सीमित होगा कि इसे मापा जा सकता है।"

मैंने यीशु की चिंता और अभाव का अनुभव किया और अक्सर उससे शिकायत की। वह आया और मुझे अपने दिल से कस कर पकड़ कर उसने मुझसे कहा:

"मेरी तरफ लकड़ी।"

मैंने उसके हृदय के घाव से निकला परमपवित्र लहू पी लिया। मैं कितना खुश था!

हालाँकि, इस तथ्य से असंतुष्ट कि मैंने केवल एक बार पिया,

वह मुझसे कहता है कि मैं दूसरी बार पी सकता हूं, फिर तीसरी बार। मैं हैरान था कि, उससे पूछे बिना,

उसने मुझे अपना खून पीने की पेशकश की।

उसने जोड़ा:

"मेरी बेटी, जब तुम मुझसे वंचित हो जाते हो, तो तुम्हारा हृदय एक दिव्य घाव से घायल हो जाता है जो मेरे हृदय पर प्रतिबिम्बित होता है और उसे घाव देता है।

यह घाव मेरे लिए मीठा है और यह मेरे दिल के लिए एक बाम है।

इसमें जीवों की उदासीनता, उनकी अवमानना और यहां तक कि उनके पूर्ण विस्मरण से मेरे पास आने वाले क्रूर घावों को नरम करने का गुण है।

जब आत्मा ठंडी, शुष्क और विचलित महसूस करती है और मेरे लिए अपने प्यार के कारण पीड़ित होती है, तो उसे दर्द होता है और मुझे सांत्वना मिलती है "।

मैं यीशु के निजीकरण के लिए विलाप किया और मैंने सोचा:

"यह सब खत्म हो गया! क्या कड़वे दिन!

मेरा यीशु गायब हो गया है। वह मुझसे हट गया। मैं अब से कैसे जी सकता हूँ?"

जब मैं अपने आप को ये और कई अन्य बकवास बता रहा था, मेरे दयालु यीशु ने मुझे अपनी ओर से एक बौद्धिक प्रकाश में बताया:

"मेरी बेटी, क्रूस पर मेरा आत्मदाह अभी भी आत्माओं में जारी है। जब एक आत्मा अच्छी तरह से व्यवस्थित होती है और मेरा स्वागत करती है,

- मैं उसी में रहता हूँ जैसे मेरी अपनी मानवता में।, मेरे प्यार की लपटें मुझे जलाती हैं और

मैं इसे अन्य प्राणियों को साबित करने के लिए इंतजार नहीं कर सकता।

मैंने उनसे कहा: "देखो मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ।

क्रूस पर मेरा आत्मदाह मेरे प्रेम के लिए पर्याप्त नहीं है।

मैं भी इस आत्मा में आपके लिए प्यार का उपभोग करना चाहता हूं जो मेरा स्वागत करती है »।

और मैं इस आत्मा को आत्मदाह का एहसास कराता हूं। वह कुचला हुआ और पीड़ा में महसूस करती है।

अपने जीसस के जीवन को अब महसूस नहीं कर रही है, वह भस्म महसूस कर

रही है।

उसमें मेरी मौजूदगी का एहसास
उसे साथ रहने की आदत है, उसे याद आती है,
वह लड़ती है और कांपती है
क्रॉस पर मेरी मानवता की तरह एक सा
जबकि मेरी दिव्यता, उसे उसकी ताकत से वंचित कर, उसे मरने दो।

आत्मा का यह आत्मदाह मानव नहीं, पूर्णतः दिव्य है।
और उससे मुझे दिव्य संतुष्टि मिलती है
मानो एक और दिव्य जीवन मेरे प्यार के लिए भस्म हो गया।

वास्तव में
यह इस आत्मा का जीवन नहीं है जो भस्म हो गया है, बल्कि मेरा अपना जीवन है। यह मेरा जीवन है जिसे आत्मा अब महसूस नहीं करती है और न ही देखती है।
उसे ऐसा लगता है कि मैं उसके लिए मरा।
इस प्रकार मैं अन्य प्राणियों के लिए अपने बलिदान के प्रभावों को नवीनीकृत करता हूं। और, इस आत्मा के लिए, दोहरी कृपा और महिमा।
मैं जो चाहता था उसे करने के लिए मैं अपनी मानवता में एक मीठा आकर्षण महसूस करता हूं।

इसलिए मुझे वह करने दो जो मैं तुममें चाहता हूं और मेरे जीवन का विकास तुममें होगा ।"

एक और दिन जब मैं शिकायत कर रहा था, मैंने उससे कहा:
"तुमने मुझे कभी कैसे छोड़ा?" फिर, गंभीर और प्रभावशाली स्वर में उसने मुझसे कहा:

"शांत रहो और बकवास मत करो। मैंने तुम्हें नहीं छोड़ा। मैं तुम्हारी आत्मा में गहरे रहता हूं।

इसलिए तुम मुझे नहीं देखते।

जब आप मुझे देखते हैं, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मैं आपकी आत्मा की सतह पर हूं। विचलित न हों।

मैं तुम्हें चाहता हूँ

-सभी मेरे प्रति चौकस हैं**,**

-हमेशा सभी की भलाई के लिए उपलब्ध।**"**

अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैंने अपने आप से कहा कि अगर प्रभु मुझसे कुछ चाहते हैं, तो उन्हें केवल मुझे एक संकेत देना होगा, बिना किसी पुजारी का सहारा लिए।

फिर, धन्य यीशु ने अपने हाथ में एक गेंद के साथ खुद को मेरे इंटीरियर में दिखाया, इसे जमीन पर फेंकने में सक्षम।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी, तुम्हारी इच्छा है कि मैं तुम्हें उस शर्मिंदगी से मुक्त कर दूं जहां मेरी इच्छा ने तुम्हें रखा है।

मैंने आपको इस स्थिति में पूरी दुनिया के विचार में रखा है ताकि इसे निराश न करें और

कि मैं इसे पूरी तरह से नष्ट नहीं करता।

अगर मैं तुम्हें इस स्थिति से मुक्त कर दूं,

- आप जो अच्छा कर सकते हैं वह बहुत कम होगा।"

मैने जवाब दिये:

"मेरे यीशु, मैं तुम्हें नहीं समझता!

आप मुझे बिना कष्ट के छोड़ देते हैं और मुझे ऐसा लगता है कि आपने मुझे इस स्थिति से मुक्त कर दिया है

पीड़ित। बाद में, मुझे बताओ कि तुम दुनिया को नष्ट होने से बचाने के लिए मेरा इस्तेमाल कर रहे हो!"

उसने बोला:

"यह गलत है कि आप पीड़ित नहीं हैं।

अधिक से अधिक तुम उन पीड़ाओं से पीड़ित न हो जो मैं पूरी तरह से निहत्था कर दूंगा। यदि, कभी-कभी, आप दुख से वंचित हैं, तो यह आपकी इच्छा के अनुसार नहीं है; अन्यथा, आपकी इच्छा चलन में आ जाएगी।

आह! भूल जाने का अहसास होने पर तुम मेरे साथ जो मीठी हिंसा करते हो, उसे तुम समझ नहीं सकते और कि मुझे पहले की तरह न देखकर, बिना किसी बात को नज़रअंदाज किए जारी रखते हो!

वैसे भी, मैं तुम्हारे साथ मुक्त होना चाहता हूँ:

- जब मैं इसे पसंद करता हूं, तो मैं तुम्हें छोड़ देता हूं।

- जब मुझे यह पसंद आएगा, तो मैं तुम्हें बांध दूंगा।

मैं चाहता हूं कि आप मेरी इच्छा की दया के बिना खेल में आएं। "एक और बार मैं अपनी लगातार उल्टी से बीमार था।

बस आज्ञा मानने के लिए मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:

"मुझे अब और खाने की आवश्यकता महसूस न करने की अनुमति देकर आप क्या खो देंगे, क्योंकि मुझे इसे फेंकने के लिए मजबूर किया जाता है?"

मेरे दयालु *यीशु ने उत्तर दिया* :

"मेरी बेटी, तुम क्या कहती हो? शांत रहो, शांत रहो, फिर कभी मत कहो! तुम्हें पता होना चाहिए कि अगर आपको कभी किसी चीज की जरूरत नहीं है,

मैं लोगों को भूखा रखूंगा।

हालाँकि, आपकी सेवा करने की आवश्यकता को छोड़कर, मैं आपके और आपके लिए प्यार से प्राणियों को देता हूं।

इसलिए, अगर मैं आपकी बात सुनता, तो मैं दूसरों की उपेक्षा करता।

भोजन लेकर और फिर उसे फेंक कर आप दूसरों का भला कर रहे हैं। और, इसके अलावा, आपकी पीड़ा मुझे गौरवान्वित करती है।

जब आप खाना फेंकते हैं, तो आप पीड़ित होते हैं। और तुम मेरी वसीयत में कैसे पीड़ित हो,

-मैं आपकी पीड़ा लेता हूं और

-मैं इसे गुणा करता हूं और

-मैंने इसे प्राणियों की भलाई के लिए फैलाया।

मैं इससे खुश हूं और मैं खुद से कहता हूं: 'यह मेरी बेटी की रोटी है जो मैं अपने बच्चों को देता हूं'"।

अपने आप को मेरी सामान्य स्थिति में पाकर, मेरे हमेशा प्यारे यीशु ने मुझमें स्वयं को प्रकाश के एक चक्र के रूप में दिखाया।

मेरी ओर देखते हुए उन्होंने कहा: "देखते हैं आज हमने क्या अच्छा किया।" और उसने चारों ओर देखा।

मेरा मानना है कि प्रकाश का चक्र उसकी सबसे पवित्र इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है और यह उसके साथ मेरे मिलन के माध्यम से था कि उसने मुझसे बात की।

उसने जारी रखा:

"हालांकि, मैं पुजारियों की कायरता से थक गया हूं। मैं इसे और नहीं ले सकता, मैं इसे समाप्त करना चाहता हूं।

ओह! कितनी तबाह, विकृत आत्माएं, कितनी मूर्तिपूजाएं!

मुझे ठेस पहुँचाने के लिए पवित्र वस्तुओं का प्रयोग करने से मेरी कटु पीड़ा होती है। यह सबसे घिनौना पाप है, कुल विनाश का संकेत।

बीमार सबसे बड़े शाप को आकर्षित करता है और स्वर्ग और पृथ्वी के बीच संचार को बाधित करता है। मैं इन प्राणियों को पृथ्वी से मिटा देना चाहता हूं।

इसके लिए सजा जारी रहेगी और कई गुना बढ़ जाएगी।

मौत शहरों को तबाह कर देगी और कई घर और गलियां गायब हो जाएंगी। अब उनमें रहने वाला कोई नहीं रहेगा।

हर जगह शोक और वीरानी राज करेगी! "

मैंने उससे बहुत विनती की।

वह रात का एक अच्छा हिस्सा मेरे साथ रही और मुझे इतना दर्द हुआ कि मुझे लगा कि मेरा दिल दर्द से टूट गया है।

मुझे आशा है कि मेरा यीशु शांत हो जाएगा।

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था,

मेरे दयालु यीशु ने संक्षेप में आकर *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, जीव झुकना नहीं चाहते, वे मेरे न्याय को चुनौती देते हैं। नतीजतन, मेरा न्याय उनके खिलाफ है।

अपराध सभी वर्ग के लोगों से आते हैं,

-जिनमें वे भी शामिल हैं जो खुद को मेरे मंत्री कहते हैं।

शायद उनमें से कई अन्य लोगों की तुलना में अधिक। वे क्या जहर लाते हैं!

अपने करीब आने वालों को जहर दे देते हैं!

उन्होंने मुझे आत्माओं में जमा करने के बजाय खुद को वहीं रखा।

वे खुद को घेरने की कोशिश करते हैं, खुद को बताने के लिए और मुझे एक तरफ रख देते हैं।

उनके जहरीले संपर्कों से,

वे आत्माओं को मेरी ओर ले जाने के बजाय उनका ध्यान भटकाते हैं।

वे उन्हें गंभीर चीजों के लिए निर्देशित करने के बजाय उन्हें विलुप्त कर देते हैं। इसलिए, जिनका उनसे कोई संपर्क नहीं है, वे बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

मैं उन पर भरोसा नहीं कर सकता।

मुझे लोगों को चर्चों और संस्कारों को छोड़ने की अनुमति देने के लिए मजबूर किया जाता है

ताकि इन मंत्रियों से संपर्क उन्हें मुझसे और दूर न कर दे।

मेरा दर्द बड़ा है।

मेरे दिल के ज़ख्म गहरे हैं।

प्रार्थना करें और जो अच्छे बचे हैं उनमें शामिल हों। मेरे दर्द के साथ एकजुटता से रहो।"

मैं बहुत व्यथित था और मुझमें अपनी सामान्य स्थिति (पीड़ित की स्थिति) से बाहर निकलने की एक बड़ी इच्छा महसूस हुई।

हे भगवान, क्या कष्ट है! मैं नश्वर पीड़ा का अनुभव कर रहा था।

मेरी आत्मा की इस पीड़ा को केवल यीशु ही जानता है। इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। जब मैं इस कड़वाहट में तैर रहा था, तो मेरी तरह यीशु आया। सब पीड़ित, उसने मेरे मुंह पर एक उंगली रखी और *मुझसे* कहा :

"मैंने तुम्हें संतुष्ट किया, शांत रहो!

क्या आपको याद नहीं है कि मैंने आपको कितनी बार बड़े अपराध, निर्जन और लगभग निर्जन शहर दिखाए?

तो आप कहेंगे, "नहीं, नहीं।

यदि आप इसे करना चाहते हैं, तो कम से कम उन्हें संस्कार प्राप्त करने का समय दें »।

जैसा आपने मुझसे पूछा, मैं वैसा ही करता हूं। आप और क्या चाहते हैं? मनुष्य का हृदय कठोर होता है।

उसके लिए यह सब काफी नहीं है!

इसने अभी तक सभी बुराइयों की गहराई को नहीं छुआ है। और इसलिए, वह भरा नहीं है, वह हार नहीं मानता।

यह फैल रही महामारी के प्रति उदासीनता से देखता है।

लेकिन ये सिर्फ शुरुआत हैं।

वह समय आएगा जब मैं इस दुष्ट और विकृत पीढ़ी को पृथ्वी से लगभग गायब कर दूंगा।"

ये शब्द सुनकर मैं काँप उठा और प्रार्थना की। मैं यीशु से पूछना चाहता था:

"और मैं, मुझे क्या करना चाहिए?" लेकिन मेरी हिम्मत नहीं हुई।

यीशु ने जोड़ा :

"मैं जो चाहता हूं वह यह है कि आप अपने राज्य को अकेला न छोड़ें। हालांकि, स्वतंत्र होने के नाते, आप यह कर सकते हैं।

मैं तुम्हें अपनी इच्छा की दया पर चाहता हूं।

इन दिनों मैं ही था जिसने तुम्हें अपनी सामान्य स्थिति छोड़ने के लिए मजबूर

किया।

मैं महामारी का प्रकोप फैलाना चाहता था और मैं आपको इस स्थिति में नहीं रखना चाहता था कि आप कार्य करने के लिए और अधिक स्वतंत्र हों ”।

मैंने अपने धन्य यीशु से शांत होने की विनती की। वह कुछ देर के लिए आया और मैंने उससे कहा:

"यीशु, मेरे प्यार, इन समयों में जीना दर्दनाक है। हर जगह हम आँसू और पीड़ा देखते हैं। मेरा दिल खून बह रहा है।

यदि आपकी पवित्र इच्छा मुझे सम्भालती नहीं, तो मैं जीवित नहीं रह पाता। ओह! मौत कितनी प्यारी होगी मेरे लिए!"

मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मेरा न्याय संतुलित है। मुझमें सब कुछ संतुलित है। मृत्यु का संकट लगातार प्राणियों को छूता है

- मेरी कृपा की संगत के साथ।

ऐसे में लगभग सभी लोग अंतिम संस्कार मांगते हैं।

मनुष्य ऐसा है कि वह अकेला है

- जब वह अपनी त्वचा को प्रभावित देखता है और - पीटा महसूस करता है तो वह जाग जाता है।

उनमें से कई जो प्रभावित नहीं हैं

उदासीनता में रहते हैं और अपने पाप के जीवन को जारी रखते हैं।

मौत के लिए अपनी फसल काटना जरूरी है

उन लोगों को छूने के लिए जो केवल अपने पैरों के नीचे काँटे रखते हैं। और यह, धार्मिक और सामान्य दोनों के बीच।

आह! मेरी बेटी, ये ऐसे समय हैं जिनमें धैर्य की आवश्यकता है! चिंता मत करो।

प्रार्थना करें कि सब कुछ मेरी महिमा और सभी की भलाई में योगदान करे »।

मैंने खुद को अपनी सामान्य स्थिति में पाया, कड़वाहट और अभाव से भरा हुआ। मेरे प्यारे यीशु ने आकर मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, सरकारों को लगता है कि उनके पैरों तले से जमीन खिसक रही है। मैं उन्हें लाने के लिए हर तरह का इस्तेमाल करूंगा

-सबमिट करें, -खुद को डालें, ई

-इसे केवल मुझसे समझने के लिए

वे सच्ची और स्थायी शांति प्राप्त कर सकते हैं।

इसलिए मैं एक को कभी, कभी दूसरे को नीचा दिखाता हूं;

मैं उन्हें कभी दोस्त, कभी दुश्मन बना लेता हूं। मैं उन्हें हथियारों से बाहर कर दूंगा।

मैं अप्रत्याशित चीजें करूंगा

-उन्हें भ्रमित करें और उन्हें मानवीय मामलों की अस्थिरता के बारे में समझाएं। मैं उसे समझाऊंगा

-कि केवल भगवान स्थिर है और

-कि केवल उसके माध्यम से वे सभी वस्तुओं की आशा कर सकते हैं।

अगर वे न्याय और शांति चाहते हैं,

उन्हें सच्चे न्याय और सच्ची शांति के स्रोत पर आना चाहिए। नहीं तो वे कहीं नहीं जाएंगे और लड़ते रहेंगे।

जाहिर है कि वे हंगामा करते रहेंगे।

और अगर वे शांति पर सहमत हो सकते हैं, तो यह टिकेगा नहीं।

बाद में, वे अपनी लड़ाई फिर से शुरू करेंगे, और इससे भी अधिक उग्र रूप से।

मेरी बेटी, केवल मेरी सर्वशक्तिमान उंगली ही चीजों को ठीक कर सकती है। और,

नियत समय में, मैं करूंगा।

लेकिन, अग्रिम में, महत्वपूर्ण परीक्षणों की उम्मीद की जानी चाहिए। और दुनिया में कई होंगे।

इसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता है"।

उन्होंने भावनात्मक स्वर में जोड़ा:

"मेरी बेटी, सबसे बड़ी सजा अपराधियों की कार्रवाई के परिणामस्वरूप होगी। शुद्धिकरण अभी भी आवश्यक है।

और, उनकी जीत में, दुष्ट मेरे चर्च को शुद्ध करेंगे। बाद में

मैं इन दुष्टों को छिड़कूंगा और उन्हें हवा में धूल की तरह बिखेर दूंगा।

इसलिए, उनकी जीत से प्रभावित न हों। बल्कि, मेरे साथ उस दुखद भाग्य के लिए रोओ जो उनका इंतजार कर रहा है "।

मैं अपनी तरह के यीशु के अभाव से बहुत व्यथित महसूस कर रहा था। मेरे दिमाग में इस विचार से गहरा बादल छा गया था कि मुझमें जो कुछ भी है वह मेरी कल्पना और दुश्मन का काम है।

इटली में शांति और विजय की अफवाहें थीं

और मुझे याद आया कि मेरे प्यारे जीसस ने मुझसे कहा था कि इटली का अपमान होगा।

क्या दर्द, किस पीड़ा ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि मेरा पूरा जीवन एक निरंतर धोखा रहा है!

मुझे लगा कि यीशु मुझसे बात करना चाहते हैं।

लेकिन मैं इसे सुनना नहीं चाहता था और मैंने मना कर दिया। मैं तीन दिनों तक यीशु के विरुद्ध लड़ा।

कभी-कभी मैं इतना थक जाता था कि मुझमें अब उसे अस्वीकार करने की ताकत

नहीं रह जाती थी और वह मुझसे बात करने लगता था। उनके शब्दों से शक्ति प्राप्त करते हुए, मैंने उनसे कहा: "मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता!"

अंत में, यीशु ने मेरे हृदय को अपनी बाहों से घेर लिया और *मुझसे कहा* :

"शांत हो जाओ, शांत हो जाओ। यह मैं हूं, मेरी बात सुनो।

क्या आपको याद है कि हाल के महीनों में, जब आप मेरे साथ गरीब इटली के बारे में रो रहे थे, तो मैं आपसे कहूंगा:

"मेरी बेटी, *जो हारता है वह जीतता है और जो जीतता है वह हारता है*"।

इटली और फ्रांस पहले ही अपमानित हो चुके हैं और इस साल तक अपमानित होते रहेंगे।

-कि शुद्ध कर रहे हैं ई

-कि वे स्वतंत्र रूप से, स्वेच्छा से और शांति से मेरे पास वापस आएं।

जिस प्रत्यक्ष विजय का वे आनंद लेते हैं, उसमें वे अपमान सहते हैं।

-कि वे नहीं, बल्कि विदेशी - यहां तक कि यूरोपीय भी नहीं - दुश्मन को खदेड़ने आए थे।

इसके अलावा, अगर इसे विजय कहा जा सकता है, जो विजय नहीं है, तो यह विदेशियों का है।

लेकिन यह कुछ भी नहीं है। मैं पहले से कहीं ज्यादा माफ कर देता हूं,

- दोनों आध्यात्मिक क्षेत्र में

-केवल समय क्षेत्र में।

क्योंकि इन घटनाओं ने उन्हें

- बड़े अपराध करना,

क्रूर आंतरिक क्रांतियों के रहते हैं,

युद्ध की त्रासदी पर भी काबू पाने की हद तक।

मैं आपको जो बता रहा हूं वह न केवल वर्तमान समय के बारे में है, बल्कि भविष्य के बारे में भी है। जो अभी नहीं होगा वह बाद में होगा।

अगर किसी को यह मुश्किल या संदिग्ध लगता है,

- इसका मतलब है कि वह मेरे बोलने के तरीके को नहीं समझता है।

मेरा वचन शाश्वत है, जैसा मैं स्वयं हूं।

अब मैं आपको कुछ सांत्वना देना चाहता हूं। इटली और फ्रांस हार रहे हैं और जर्मनी जीत रहा है।

सभी राष्ट्रों के अपने अंधेरे क्षेत्र हैं। और हर कोई अपमानित और कुचले जाने का पात्र है।

हर जगह सामान्य अशांति और भ्रम की स्थिति होगी। मैं तलवार, आग और जल से जगत का नवीनीकरण करूंगा,

-अचानक मौतों और संक्रामक रोगों के साथ।

मैं नई चीजें करूंगा।

राष्ट्र बाबुल का एक प्रकार का गुम्मट बन जाएंगे।

वे अब एक-दूसरे को समझ भी नहीं पाएंगे। लोग आपस में बगावत करेंगे।

उन्हें अब राजा नहीं चाहिए।

सबका अपमान होगा। सच्ची शांति केवल मुझ से ही आएगी।

और यदि आप उन्हें शांति की बात करते हुए सुनते हैं, तो यह सच्ची शांति नहीं होगी, बल्कि केवल प्रत्यक्ष शांति होगी।

जब मैंने सब कुछ शुद्ध कर लिया है,

मैं अपनी उंगली आश्चर्यजनक रूप से गिराऊंगा और सच्ची शांति दूंगा। खांसी जिन्हें अपमानित किया गया है वे मेरे पास वापस आएंगे।

जर्मनी कैथोलिक होगा; मेरे पास आपके लिए बड़ी योजनाएँ हैं।

इंग्लैंड, रूस और सभी देश जहां खून बहाया गया है, विश्वास हासिल करेंगे और मेरे चर्च में शामिल हो जाएंगे।

यह एक महान विजय और लोगों के बीच एक महान मिलन होगा। इसलिए प्रार्थना करें।

हमें धैर्य की आवश्यकता है क्योंकि यह जल्दी नहीं आएगा, लेकिन इसमें समय लगेगा "।

मैं अपने प्यारे यीशु को यूखरिस्त के संस्कार में ग्रहण करने की तैयारी कर रहा था और उनसे मेरे महान दुख को दूर करने के लिए कह रहा था।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

ताकि जीव के पास यूचरिस्ट में मुझे प्राप्त करने के लिए सभी साधन हों, मैंने अपने जीवन के अंत में इस संस्कार की स्थापना की।

ताकि *मेरा पूरा जीवन*

-प्रत्येक होस्ट में पाया जाता है *e*

- हर प्राणी के लिए *तैयारी के रूप में काम कर सकता* है जो मेरा स्वागत करेगा।

जीव मुझे कभी प्राप्त नहीं कर सकता था

- अगर उसे तैयार करने के लिए उसके पास भगवान नहीं होता।

मेरे अत्यधिक प्यार ने मुझे कैसे लाया है

- अपने आप को प्राणी को दे दो और

क्योंकि वह मुझे ग्रहण करने के योग्य नहीं थी,

इस अत्यधिक प्रेम ने मुझे इसे *तैयार करने के लिए अपना पूरा जीवन देने* के लिए प्रेरित किया है ।

इसलिए मैंने अपने काम, अपने कदम और अपना प्यार उसमें रखा । *मैंने उसे अपने आसन्न जुनून के कष्टों में भी डाल दिया।*

- उसे मेजबान में मुझे प्राप्त करने के लिए तैयार करने के लिए।

इसलिए

- मुझे डाल दो,
- मेरे प्रत्येक कृत्य से अपने आप को ढँक लो और
- आओ और मुझे प्राप्त करो।"

फिर मैंने यीशु से शिकायत की कि उसने मुझे पहले की तरह दुख नहीं दिया।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

मैं आत्मा की पीड़ा को इतना नहीं देखता

परन्तु ***मैं उसकी भलाई और उस प्रेम को देखता हूं जिस से वह सहता है।***

प्यार से,

- छोटी से छोटी पीड़ा बड़ी हो जाती है,
- पूरे जीवन में कुछ भी नहीं आता है और
- आपके शेयरों का मूल्य बढ़ता है।

कभी-कभी दुख न उठाना स्वयं दुख से अधिक कठिन होता है।

जब वह मेरे प्यार के लिए पीड़ित होना चाहती है तो प्राणी मेरे साथ कितनी मीठी हिंसा करता है!

मेरे लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि जब मैं उसे देखूं तो उसे कष्ट न हो

-कि दुख नहीं आपके लिए खुद दुख से ज्यादा तीखी कील है?

दूसरी ओर

-सद्भावना की कमी,

- बलपूर्वक और बिना प्रेम के किए गए कार्य,

वे कितने ही बड़े क्यों न लगें,

- वे मेरी नजर में छोटे हैं। मैं उनकी तरफ नहीं देखता।

बल्कि वे मुझ पर भारी पड़ते हैं।"

अपने आप को मेरी सामान्य अवस्था में पाकर, मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:

"यदि आप चाहते हैं कि मैं अपनी सामान्य अवस्था को छोड़ दूं, तो इतने लंबे समय के बाद ऐसा क्यों नहीं होता?"

उसने उत्तर दिया : "लड़की, वह आत्मा जो मेरी इच्छा करती है और उसमें रहती है।

न केवल थोड़े समय के लिए, बल्कि अपने जीवन की अवधि के लिए वह मेरे लिए अपने दिल में एक जेल बना देता है।

मेरी इच्छा पूरी करके और उसमें रहने की कोशिश करके, वह इस दिव्य और दिव्य जेल की दीवारों को खड़ा करती है।

और, मेरी सबसे बड़ी संतुष्टि के लिए, मैं उसका कैदी बना रहता हूं।

चूंकि यह मुझे इसमें समाहित करता है, इसलिए मैं इसे अपने में समा लेता हूं।

संक्षेप में, वह मुझमें कैद है और मैं उसमें।

और जब वह कुछ चाहती है, तो मैं उससे कहता हूं: "तुमने हमेशा मेरी इच्छा की है, बस कभी-कभी मैं तुम्हारी इच्छा करता हूं"।

इस तथ्य के कारण कि वह मेरी वसीयत पर जीती है, वह जो चाहती है वह मेरी वसीयत से परिणाम चाहती है जो उसमें रहती है। अतः चिंता न करें। जब आवश्यक होगा, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगा।"

मैं सोच रहा था कि क्या बेहतर है: पवित्रता का ध्यान रखना या केवल यीशु के बगल में आत्माओं की मरम्मत और उन्हें बचाने के लिए चिंतित होना।

धन्य यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

आत्मा जो कुछ भी नहीं करती है

-पापों की मरम्मत करने के लिए ई

-मेरे पावन की कीमत पर जीवित आत्माओं के उद्धार के लिए काम करना।

मेरी जलती हुई दिल की धड़कन गूँजती है।

और मैं इसमें अपनी मानवता की विशेषताओं का अनुभव करता हूं।

उसके प्यार में पागल, मैं उसे काँटों से ज़िंदा रखता हूँ

- मेरी पवित्रता का,

-मेरी चाहतों का,

- मेरे प्यार का,

- मेरी ताकत का,

- मेरे खून का,

-मेरे घाव, आदि।

मैं कह सकता हूं कि मैंने परम पावन को आपके अधिकार में रखा है, यह जानते

हुए कि वे जो चाहते हैं उससे अधिक कुछ नहीं चाहते हैं।

दूसरी ओर, आत्मा जो मुख्य रूप से खुद को पवित्र करने से संबंधित है, की कीमत पर रहता है

- उसकी अपनी पवित्रता,

- खुद की ताकत ई

- किसी के प्यार का।

ओह! यह कैसे बुरी तरह बढ़ता है!

वह अपने दुख का पूरा भार महसूस करता है

और लगातार अपने आप से लड़ता रहता है।

लेकिन जो आत्मा मेरी पवित्रता से चिपकी रहती है, वह अपने साथ और मेरे साथ ***शांति से रहती है।***

उसका मार्ग असमान है।

मैं उनके विचारों और उनके दिल के हर तंतु पर नजर रखता हूं। मैं ईर्ष्या से विश्वास दिलाता हूं कि इसके प्रत्येक तंतु

- केवल आत्माओं की परवाह करता है और

-या हमेशा मुझमें डूबे रहते हैं।

क्या तुम्हें मुझमें तुम्हारे प्रति जो ईर्ष्या है, वह महसूस नहीं होती?"

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और मेरी प्यारी जीसस थोड़ी देर के लिए आ गईं। ऐसा लग रहा था कि वह अपने दिल में एक महान दर्द से पीड़ित है।

मेरी मदद माँगते *हुए उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, इन दिनों क्या अपराधों की बाढ़ आ गई है! क्या शैतानी विजय है!

दुष्टों की समृद्धि इसका सबसे बुरा संकेत है।

उन राष्ट्रों से विश्वास गायब हो गया है जो एक अंधेरी जेल के अंदर कैदी के रूप में रहते हैं।

हालाँकि, दुष्टों के कारण हुए अपमान इस प्रकार हैं

- कई दरारें जिनसे होकर प्रकाश गुजरता है, राष्ट्रों को ले जाता है

- स्वयं में प्रवेश करें

- विश्वास वापस पाने के लिए।

अपमान उन्हें बेहतर बना देगा,

- किसी भी जीत या विजय से अधिक।

वे कितने महत्वपूर्ण क्षणों से गुज़रेंगे!

नरक और दुष्ट क्रोध से भस्म हो जाते हैं

-अपने भूखंडों को जारी रखने के लिए e

- अपने विकृत कृत्यों को अंजाम देना ।

मेरे गरीब बच्चे! मेरे गरीब चर्च!"

मेरी सामान्य स्थिति में होने के नाते,

मैंने अपने हमेशा दयालु यीशु को मुझमें महसूस करने के लिए कहा

जो उन्होंने पहले मुझे उन आत्माओं के बारे में बताया था जो हमेशा उनकी इच्छा करते हैं, यानी कभी-कभी उनकी इच्छा पूरी करते हैं।

मैंने कहा, "तुम्हें आज मेरी इच्छा पूरी करनी चाहिए।"

यीशु ने आकर *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

तुम्हें पता है कि मेरी इच्छा से बाहर जाना आत्मा के लिए एक दिन के समान है

- बिना सूरज के, बिना गर्मी के,

-उसमें दैवीय कृत्यों के जीवन के बिना?"

मैंने जारी रखा: "मेरे प्यार, स्वर्ग मुझे ऐसा करने से बचाए। मैं आपकी इच्छा से बाहर जाने के बजाय मर जाऊंगा।

इसलिए अपनी वसीयत मुझमें रखो और फिर मुझे बताओ:

" यह मेरी इच्छा है कि मैं आज तुम्हारी इच्छा पूरी करता हूं।"

यीशु ने कहा, "आह! बुरी लड़की, बहुत अच्छी लड़की, मैं तुम्हें संतुष्ट करूंगा! मैं जब तक चाहूं तुम्हें अपने पास रखूंगा।

फिर मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।"

ओह! मैं कितना खुश था।

क्योंकि, जब वह अपनी इच्छा पूरी कर रहा था, यीशु मेरी इच्छा पूरी करने वाला था! इसलिए मेरे दयालु यीशु ने मेरे साथ कुछ समय बिताया।

मुझे ऐसा लग रहा था कि उसने अपनी उंगलियों को अपने कीमती खून में डुबो दिया है और मेरे माथे, मेरी आंखों, मेरे मुंह और मेरे दिल को चिह्नित कर लिया है।

फिर उसने मुझे किस किया।

उसे इतना स्नेही और इतना दयालु देखकर, मैं उसके हृदय की कड़वाहट को उसके मुख से निकालना चाहता था, जैसा कि मैं पहले ही कर चुका था।

लेकिन यीशु थोड़ा हट गया है।

और उसने मुझे अपने हाथ में घावों का एक बंडल दिखाया।

उसने मुझे बताया:

"देख, ये तो विपत्तियां हैं, जो पृथ्वी पर उण्डेलने को तैयार हैं। इसलिथे मैं तुझ पर अपनी कटुता न उण्डेलूंगा। शत्रुओं ने क्रान्ति की युक्ति की है।

उन्हें बस इतना करना है कि उन्हें हरकत में लाना है।

मेरी बेटी, मेरा दिल कितना दुखी है!

मेरे पास अपना दर्द उतारने वाला कोई नहीं है।

यही कारण है कि मैं इसे आप पर डाउनलोड करना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि आप धैर्य रखें

- अक्सर मुझे आपसे दुखद बातों के बारे में बात करते हुए सुनना।

मुझे पता है कि यह आपको पीड़ित करता है, लेकिन यह प्यार ही है जो मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। प्यार अपनों को अपना दर्द बताना चाहता है।

मैं मदद नहीं कर सकता, लेकिन खुद को आप में डाल सकता हूं।"

यीशु को इतना कड़वा देखकर मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने उसका दर्द अपने दिल में महसूस किया।

मुझे दिलासा देने के लिए उन्होंने मुझे बहुत ही मीठे दूध का स्वाद चखाया। फिर उसने मुझसे कहा: "मैं पीछे हटता हूं और तुम्हें स्वतंत्र छोड़ देता हूं"।

मैंने वह रात जेल में यीशु के साथ बिताई।

मैंने उसके लिए खेद महसूस किया। मैंने उसे आराम देने के लिए उसके घुटने टेक दिए।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, मेरे जुनून के दौरान,

मैं जीवों को पाप की कैद से मुक्त करने के लिए जेल में पीड़ित होना चाहता था। ओह! मनुष्य के लिए कितना भयानक जेल पाप है!

उसके जुनून उसका पीछा करते हैं जैसे कि वह एक नीच गुलाम था। मेरी जेल और मेरी जंजीरों ने उसे मुक्त कर दिया।

मेरी जेल ने ***प्यार करने वाली आत्माओं के लिए प्यार का कारागार बना दिया***
जहां उन्हें हर चीज और हर किसी से बचाया जा सकता है।
मैं ने उन्हें ***जीवित कारागारों और तम्बूओं में अलग कर दिया,***
मुझे गर्म करने में सक्षम
-पत्थर के तम्बू की शीतलता e
- प्राणियों की शीतलता और भी अधिक जो,
मुझे उनमें बन्दी बनाकर, मुझे ठंड और भूख से मरने दो।

इसके लिए मैं अक्सर तंबू के कारागारों को छोड़ देता हूँ और
मैं आपके दिल में आपके प्यार से मुझे गर्म करने और पोषित करने के लिए आता हूं।

जब मैं तुम्हें कलीसियाओं के तम्बुओं में से मुझे ढूंढते हुए देखता हूं, तो मैं तुम से कहता हूं:
" ***क्या तुम मेरे सच्चे प्यार की जेल नहीं हो*** ? ***अपने दिल में मुझे ढूंढो और*** मुझे प्यार करो !"

मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:
"आप देखिए, मैं कुछ भी करना नहीं जानता और मेरे पास आपको देने के लिए कुछ नहीं है। हालांकि, मैं आपको अपना कुछ नहीं देता।
मैं इस शून्य को समग्रता से जोड़ता हूं कि आप हैं और मैं आपसे आत्माओं के लिए कहता हूं:
-जब मैं सांस लेता हूं, तो मेरी सांसें आपसे रूह मांगती हैं। लगातार आंसुओं के साथ,
- मेरे दिल की धड़कन तुमसे रूह मांगती है;
- मेरी बाहों की हरकत,

- खून जो मेरी रगों में घूमता है,

- मेरी आँखों का झपकना e

- मेरे होठों की हरकतें तुमसे रूह मांगती हैं।

और मैं तुमसे यह बिनती करता हूं कि तुम्हारे साथ, तुम्हारे प्रेम से, तुम्हारी इच्छा में एक हो जाओ। "जब मैं यह कह रहा था, मेरा यीशु मेरे भीतर चला गया और मुझसे *कहा* :

"मेरी बेटी,

कितने मीठे और मेरे कानों को भाते हैं

- आत्माओं की प्रार्थना मेरे लिए अंतरंग है!

मैंने उन्हें नासरत के अपने छिपे हुए जीवन को दोहराते हुए सुना है,

- उपस्थिति के बिना,

- भीड़ से दूर, बिना घंटियों की आवाज के,

- थोड़ा सा जानना।

मैं स्वर्ग और पृथ्वी के बीच उठा और आत्माओं के लिए कहा। मेरी हर धड़कन, मेरी हर सांस को रूह कहते हैं।

इस प्रकार मेरी आवाज़ स्वर्ग में गूँज उठी और मुझे आत्मा देने के लिए पिता के प्रेम का मार्गदर्शन किया।

मैंने अपने छिपे हुए जीवन में कितने अजूबे पूरे नहीं किए हैं!

वे जाने जाते थे

केवल मेरे स्वर्गीय पिता और पृथ्वी पर मेरी माता का। तो यह मेरी अंतरंग आत्माओं के साथ है जब वे प्रार्थना करते हैं।

भले ही पृथ्वी पर कोई आवाज न हो,

उनकी प्रार्थना स्वर्ग में घंटियों की तरह बजती है,

वे पृथ्वी पर प्रकट होने के लिए ईश्वरीय दया की याचना करने के लिए स्वर्ग के सभी लोगों को उनके साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं ताकि आत्माओं को परिवर्तित किया जा सके »।

जब मैं अपनी सामान्य स्थिति में था, मुझे विभिन्न कारणों से व्यथित महसूस हुआ। मुझ पर दया करो, *धन्य यीशु ने मुझसे कहा:*

"मेरी बेटी, इतना उदास मत हो।

साहस, मैं तुम्हारे साथ हूं और मैं तुममें अपना जीवन जारी रखता हूं। किसी बिंदु पर आप ईश्वरीय न्याय का भार महसूस करते हैं

- वर्तमान में मामला कैसा है और आप किस चीज से डिलीवर करना चाहते हैं।

एक और समय में, आप खोई हुई आत्माओं से फटे हुए महसूस करते हैं।

एक और क्षण में आप मुझे हर किसी के लिए प्यार करने की आवश्यकता से पीड़ित महसूस करते हैं और यह देखते हुए कि आप में पर्याप्त प्यार नहीं है, आप अपने आप को मेरे प्यार में विसर्जित कर देते हैं और जो कुछ आपको मुझे देना है उसे सभी को प्रदान करने के लिए पर्याप्त आकर्षित करते हैं।

आप मुझे सभी के लिए प्यार करते हैं।

इन सब बातों में क्या आप मानते हैं कि आप ही अभिनय कर रहे हैं? बिल्कुल भी! यह मैं ही हूं। यह मैं ही हूं जो तुममें अपने जीवन को दोहराता हूं।

मैं तुमसे प्यार करने के लिए जलता हूं, किसी प्राणी के प्यार से नहीं, बल्कि अपने प्यार से। नतीजतन, मैं तुम्हें बदल देता हूं।

मैं आपको अपनी वसीयत में चाहता हूं ताकि आप दूसरों को मुआवजा दे सकें। मैं चाहता हूं कि आप एक ऐसे अंग के रूप में हों जो मेरी मनचाही आवाज निकालने में सक्षम हो।"

मैंने उत्तर दिया: "मेरे प्रिय, कई बार मेरा जीवन विशेष रूप से उन परिस्थितियों के कारण कड़वा हो जाता है जिनमें आपने मुझे रखा है।"

मेरा मतलब समझते हुए, यीशु ने आगे कहा:

"तुम किससे डरते हो? मैं सब कुछ संभाल लूंगा।

जब मैं आपको मार्गदर्शन करने के लिए कोई देता हूं, तो मैं उसे वह अनुग्रह देता हूं जो मैं चाहता हूं। यह आप नहीं हैं जो सेवा करते हैं, यह मैं हूं।

जिस हद तक वह मेरे कार्यों, मेरे शब्दों और मेरी शिक्षाओं की सराहना करता है, मैं उसके साथ उदार हूं"।

मैं दोहराता हूँ:

«मेरे यीशु, विश्वासपात्र ने जो कुछ भी मुझसे कहा, उसकी बहुत सराहना की। इतना कि उन्होंने जोर देकर कहा कि मैं इसे लिखता हूं।

आप उसे क्या देंगे?"

उसने जवाब दिया:

"मैं उसे इनाम के तौर पर स्वर्ग दूंगा।

मैं इसे संत जोसेफ और मेरी माता के पद को पूरा करने पर विचार करूंगा, जिन्होंने,

- पृथ्वी पर मेरे जीवन के लिए प्रदान करने के लिए,

उन्हें अपने मिशन में निहित कठिनाइयों को सहना पड़ा।

अब जबकि मेरा जीवन आप में है, मैं आपके विश्वासपात्र की सहायता और बलिदानों को मानो मेरी माता और संत जोसेफ मुझ पर देख रहा था।

क्या तुम खुश नहीं हो?"

"धन्यवाद, हे जीसस", मैंने जोड़ा।

इन दिनों में जो कुछ यीशु ने मुझ से कहा, उसके विषय में मैं ने कुछ नहीं लिखा। मैं ऐसा करने के लिए विशेष रूप से तैयार नहीं था।

यीशु ने आकर *मुझसे कहा:*

"मेरी बेटी, तुम लिखती क्यों नहीं? मेरे शब्द हल्के हैं।

जिस प्रकार सूर्य सबकी आँखों को प्रकाशित करता है जिससे सभी को अपनी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त प्रकाश प्राप्त हो,

मेरे शब्द हर मन को प्रबुद्ध कर सकते हैं और हर दिल को गर्म कर सकते हैं। हर एक शब्द जो मैं तुमसे कहता हूं वह एक सूरज है जो मुझसे निकलता है।

वर्तमान में वे आपकी सेवा करते हैं लेकिन उन्हें लिखना दूसरों की भी सेवा करेगा।

लिख नहीं रहा,

-इन सूर्यों को पीड़ित करना,

- तुम मेरे प्यार को खुद को प्रकट करने से रोकते हो

- दूसरों को उन सभी लाभों से वंचित करें जो ये अकेले दे सकते हैं।"

मैने जवाब दिये:

"मेरे यीशु, फिर तुम्हारे इन शब्दों पर जो मैंने कागज पर लिखे हैं, कौन ध्यान करेगा?"

उन्होंने जारी रखा : "यह आपके किसी काम का नहीं है, यह मेरा है।

और भले ही दूसरों द्वारा उनका ध्यान न किया गया हो - जो इतने सारे सूर्यों की तरह नहीं होगा, वे भव्य रूप से उदय होंगे।

सभी के लिए सुलभ हो ।

यदि आप उन्हें नहीं लिखेंगे, तो आप उन सूर्यों को उगने से रोकेंगे और आप बहुत नुकसान करेंगे।

अगर कोई प्राकृतिक सूर्य को नीले आकाश में उगने से रोक सकता है, तो पृथ्वी पर कितनी बुराइयाँ होंगी!

प्रकृति को जो नुकसान होगा, वह आप न लिखकर आत्माओं को करते हैं।

यह सूर्य की महिमा है

- शानदार ढंग से चमकें और

-पृथ्वी को और जो कुछ उसमें है, उसे उसके प्रकाश से स्नान कराओ।

बुराई उनके लिए है जो इसका फायदा नहीं उठाते। तो यह मेरे शब्दों में से केवल एक के लिए है। मेरे द्वारा कहे गए प्रत्येक शब्द के लिए एक करामाती सूरज को उगाना मेरी महिमा है। बुराई उनके लिए है जो इसका फायदा नहीं उठाते"।

उसने अपनी प्यारी निगाह से मेरी ओर देखा और मुझसे मदद और शरण मांगी। मैं उसकी ओर दौड़ा

- उसे इन प्रहारों से दूर ले जाएँ e

- इसे मेरे दिल में समेटने के लिए।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी, *मेरी मानवता प्रहार के तहत मूक बनी रही* ।

-न केवल मेरा मुंह खामोश था,

- बल्कि प्राणियों, महिमा, शक्ति, सम्मान आदि का सम्मान भी।

- मेरा धैर्य,

- मैंने जो अपमान सहे हैं,

- मेरे घाव, मेरा खून और

- मेरे पूरे अस्तित्व के विनाश ने वाक्पटुता से बात की।

आत्माओं के प्रति मेरे प्रबल प्रेम ने मुझे इन सभी कष्टों को गले लगाने के लिए प्रेरित किया।

"आत्मा में सब कुछ शांत होना चाहिए:

दूसरों का सम्मान, महिमा, सुख, सम्मान, महानता, व्यक्तिगत इच्छा, जीव, आदि।

और अगर इनमें से कोई भी चीज वहां है, तो उन्हें वहां होना चाहिए जैसे कि वे वहां नहीं थे।

इसके बजाय, आत्मा को अपने भीतर रखना चाहिए

- मेरा धैर्य,

- मेरी महिमा,

-मेरे और . का सम्मान

-मेरे कष्ट।

वह जो कुछ भी करता है और सोचता है वह नहीं होना चाहिए

- वह प्यार - मेरे प्यार से पहचाना जाता है - ई

- आत्माओं का उद्धार।

मैं आत्माओं की तलाश में हूँ

-जो मुझसे प्यार करता है और

-जो, मेरे अपने प्यार के पागलपन से ग्रस्त है, पीड़ित है और आत्माओं का दावा करता है।

काश! इस भाषा को सुनने वालों की संख्या कितनी कम है!"

अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैं अपने प्यारे यीशु के अभाव से अत्यधिक पीड़ित था।

हालांकि, मैंने ध्यान लगाकर उनके साथ जुड़े रहने की पूरी कोशिश की

" *जुनून के घंटे*"।

मैं ***क्रूस पर यीशु के स्थान पर था***

जब मैंने यीशु को हाथ जोड़कर देखा और स्पष्ट स्वर में कहा:

"मेरे पिता, इस लड़की के बलिदान और मेरे अभाव के लिए वह जो दर्द महसूस

करती है, उसे स्वीकार करें। क्या आप नहीं देखते कि वह कितना पीड़ित है?

उसकी पीड़ा उसे लगभग बेजान छोड़ देती है, यहाँ तक कि मैं उसे शक्ति देने के लिए उसके साथ सहने को मजबूर हूँ।

नहीं तो झुक जाएगा।

हे पिता, जब मैं पूरी तरह से त्याग दिया गया था, तब भी मेरे द्वारा क्रूस पर महसूस की गई पीड़ा के साथ उसकी पीड़ा को स्वीकार करें।

मेरी उपस्थिति के अभाव को वह आत्माओं के लिए हल्का और दिव्य जीवन मानती है और उन्हें वह सब प्रदान करती है जिसके मैं अपने परित्याग के योग्य थी! "यह कहकर वह गायब हो गई।

मैं दर्द से डर गया और रोते हुए मैंने यीशु से कहा:

"यीशु, मेरे जीवन, ओह! हाँ, मुझे आत्मा दो!

आपको जो कष्टदायी दर्द देता है वह मुझे आपको आत्मा देने के लिए मजबूर करे। जब तक मैं इस पीड़ा को आपकी मर्जी में जी रहा हूं, सभी मेरे दर्द को महसूस करें, मेरी पुकार सुनें और आत्मसमर्पण करें "।

शाम को मेरे घायल यीशु लौट आए और *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी और मेरी शरण, तुम्हारी पीड़ा ने आज मेरी वसीयत में कितना मधुर सामंजस्य बिठाया!

मेरी इच्छा स्वर्ग में है और आपका दर्द, मेरी इच्छा में होने के कारण, स्वर्ग में इसकी प्रतिध्वनि थी और परम पवित्र त्रिमूर्ति से आत्माओं का दावा किया।

इसके अलावा, चूंकि मेरी इच्छा सभी स्वर्गदूतों और संतों में रहती है, सभी ने मिलकर आत्माओं का दावा किया, चिल्लाया: "आत्मा, आत्माएं!"

मेरी इच्छा भी सभी प्राणियों में प्रवाहित हुई।

और तेरी पीड़ा ने सबके दिलों को छू लिया और सब से कहा: “अपने आप को बचाओ, अपने को बचाओ!”

एक चमकते सूरज की तरह, मेरी इच्छा, आप पर केंद्रित, उन्हें बदलने के लिए हर

चीज पर झुक गई।

देख मेरी वसीयत में रहकर तेरे कष्टों से क्या बड़ा भला हुआ है!"

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था और अपने प्यारे यीशु की अनुपस्थिति से बहुत दुखी था। वह अप्रत्याशित रूप से आया, थका हुआ और पीड़ित, मेरे दिल में शरण लेना चाहता था, जो उसके साथ किए गए गंभीर अपराधों को भूल गया था। आहें भरते हुए उसने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मुझे छुपाओ। क्या तुम नहीं देखते कि वे मुझे कितना सताते हैं? वे मुझे दूर भगाना चाहते हैं या मुझे अंतिम स्थान देना चाहते हैं!

मुझे आप में डालने दो।

कई दिन हो गए हैं जब मैंने आपको दुनिया के भाग्य के बारे में बताया या उन दंडों के बारे में बताया जो जीव अपनी दुष्टता से मुझसे फाड़ते हैं।

मेरा दिल दर्द से भरा है। मैं आपको इसे करने के बारे में बताना चाहता हूं

-कि आप भाग लेते हैं,

- कि हम प्राणियों के भाग्य को एक साथ सहन करते हैं,

-कि हम प्रार्थना करते हैं, पीड़ित होते हैं और उनकी भलाई के लिए एक साथ रोते हैं।

आह! मेरी बेटी, बहुत झगड़े होंगे!

मौत कई जिंदगियों को काटेगी और यहां तक कि याजकों को भी! ओह! उनमें से कितने सिर्फ पुजारियों के सिमुलाक्रा हैं!

मैं अपने चर्च के उत्पीड़न और क्रांति शुरू होने से पहले उन्हें हटाना चाहता हूं।

कौन जानता है कि वे अपनी मृत्यु के क्षण में परिवर्तित नहीं होंगे?

अन्यथा, यदि मैं उन्हें छोड़ दूं, तो जो लोग याजक का वेश धारण करते हैं, वे सताव में अपने मुखौटों को उतार देंगे।

वे संप्रदायों में शामिल हो जाएंगे, वे चर्च के क्रूर दुश्मन बन जाएंगे और उनका उद्धार और भी कठिन हो जाएगा »।

बहुत व्यथित, मैंने उससे कहा:

"माई जीसस, आपको इस तरह बोलते हुए सुनने में क्या दर्द होता है! लोग, वे याजकों के बिना क्या करेंगे?

वे पहले से ही बहुत कम हैं और आप और अधिक प्राप्त करना चाहते हैं? तो संस्कारों का संचालन कौन करेगा? आपके कानून कौन सिखाएगा?"

यीशु ने जारी रखा :

"मेरी बेटी, ज्यादा शोक मत करो। छोटी संख्या कुछ भी नहीं है।

मैं एक को वह अनुग्रह और शक्ति दूंगा जो मैं दस को देता हूं, बीस को देता हूं। मैं हर चीज की भरपाई कर सकता हूं।

इसके अलावा, अच्छा नहीं होने के कारण, कई पुजारी लोगों के जहर हैं। वे अच्छा करने के बजाय बुराई कर रहे हैं।

मैं लोगों को जहर देने वाले तत्वों को हटाने के अलावा कुछ नहीं करूंगा।"

फिर वह गायब हो गया और मेरे दिल में एक कील के साथ रह गया: मैं अपने प्यारे यीशु के कष्टों और गरीब प्राणियों के भाग्य के बारे में सोचकर चिंतित था।

बाद में वह वापस आया और मेरे गले में हाथ फेरते हुए,

उसने मुझसे कहा: "मेरे प्रिय, हिम्मत करो!

मुझ में प्रवेश करो और अपने आप को मेरी इच्छा और मेरे प्रेम के विशाल समुद्र में फेंक दो। अपने रचयिता की बनाई हुई वसीयत और प्रेम में छुप जाओ।

मेरी इच्छा में हर उस चीज को अनंत बनाने की शक्ति है जो उसमें प्रवेश करती है और प्राणियों के कृत्यों को शाश्वत कृत्यों में बदल देती है।

मेरी इच्छा में प्रवेश करने वाली हर चीज अपार, शाश्वत और अनंत हो जाती है,

यह छोटा होने, आरंभ होने और समाप्त होने की अपनी विशेषताओं को खो देता है।

क्या होगा यदि आप जोर से चिल्लाते हैं "आई लव यू!",

-मैं इस रोने में अपने शाश्वत प्रेम का संगीत सुनूंगा और

- मैं बिना सृजित प्रेम में छिपे हुए प्रेम को महसूस करूंगा;

-मैं एक अपार, शाश्वत और अनंत प्रेम से प्यार महसूस करूंगा, इसलिए मेरे योग्य प्रेम से, जो सभी के प्यार से खुद को संतुष्ट करने में सक्षम है ”।

मैं हैरान और प्रसन्न हुआ और टिप्पणी की:

"यीशु, आप क्या कह रहे हैं?" उसने जारी रखा:

"मेरे प्रिय, आश्चर्य मत करो। मुझमें सब कुछ शाश्वत है:

कुछ भी शुरू नहीं हुआ है और कुछ भी खत्म नहीं होगा।

मेरी रचनात्मक सोच में आप और अन्य सभी प्राणी शाश्वत थे। जिस प्रेम से मैंने सृष्टि की रचना की है, और जिस प्रेम से मैंने प्रत्येक हृदय को दिया है, वह शाश्वत है। आपको आश्चर्य क्यों?

-जो अपनी मर्जी छोड़ रहा है,

क्या जीव मेरे अंदर प्रवेश कर सकता है?

या कि उस प्रेम से जुड़कर जिसने उसे अनंत काल से चाहा और प्रेम किया,

क्या यह अपना मूल्य और अपनी शाश्वत, अनंत शक्ति प्राप्त कर सकता है?

ओह! मेरी वसीयत के बारे में कितना कम जाना जाता है! यहाँ क्योंकि

-जिसे न तो प्यार किया जाता है और न ही सराहा जाता है, e

-वह प्राणी

यह इतने कम से संतुष्ट है और कार्य करता है जैसे कि इसकी केवल एक अस्थायी शुरुआत थी »।

मुझे नहीं पता कि मैं बाएं हाथ से बोलता हूं या नहीं।

मेरा अच्छा यीशु मेरे मन में अपनी सबसे पवित्र इच्छा को उतना ही प्रकाशित करता है जितना

न केवल मैं इस ज्ञान को ग्रहण करने में असमर्थ हूँ,

लेकिन मेरे पास खुद को व्यक्त करने के लिए शब्दों की कमी है ।

जैसे ही मेरा मन इस प्रकाश में खो गया, धन्य यीशु ने मुझे एक उदाहरण देकर मुझे बताया:

"जो कुछ मैंने अभी तुमसे कहा है, उसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, सूर्य की कल्पना करें। वह छोटी-छोटी रोशनी की एक बड़ी बहुतायत को विकीर्ण करता है, जिसे वह पूरी सृष्टि में फैलाता है, उन्हें सृष्टि में बिखरे हुए रहने या उसमें रहने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

ऐसा नहीं है कि धूप में रहने वाली छोटी-छोटी बत्तियाँ-

-उनके कार्यों और उनके प्यार के साथ

सूर्य की गर्मी, प्रेम, शक्ति और विशालता प्राप्त करने के लिए?

उसमें तितर-बितर होकर, वे उसका हिस्सा हैं, उसके खर्च पर जीते हैं और उसके जैसा ही जीवन जीते हैं।

किसी भी तरह से छोटी रोशनी सूर्य से जोड़ती या घटती नहीं है, क्योंकि जो अपार है वह बढ़ने या घटने के अधीन नहीं है।

सूर्य उस महिमा और सम्मान को प्राप्त करता है जो छोटी रोशनी उसे एक साथ जीवन जीने से देती है।

और यह सब सूर्य की तृप्ति और संतुष्टि है। सूरज मैं हूँ।

सूर्य से जो छोटी ज्योतियाँ निकलती हैं, वे जीव हैं;

सूरज में रहने वाली रोशनी मेरी वसीयत में रहने वाली आत्माएं हैं। अब आपको समझ में आता है? "

मैंने कहा: "मुझे ऐसा लगता है"। लेकिन जो मैं वास्तव में समझता हूं वह कौन कह सकता है? मैं चुप रहना पसंद करता, लेकिन यीशु का फिएट ऐसा नहीं चाहता था।

तो, उनकी वसीयत में, मैंने लिखा। यीशु हमेशा के लिए धन्य हो!

मेरे प्यारे जीसस, माई लाइफ, माई ऑल, माई गरीब दिल के अभाव में बिताए सबसे कड़वे दिनों के बाद अब इसे सहन नहीं किया जा सका।

मैंने सोचा: "यह मेरे साथ कितना कठिन जादू हो रहा है! इतने वादों के बाद, उसने मुझे छोड़ दिया।

उसका प्यार कहाँ है? कौन जानता है कि मैं उसके त्याग का कारण नहीं हूं, मैंने खुद को उसके योग्य बना दिया है!

आह! यह उस रात का परिणाम हो सकता है

-जहाँ वह मुझसे दुनिया की परेशानियों के बारे में बात करना चाहता था,

-जहां उसने मुझसे कहा था

कि आदमी का दिल खून का प्यासा है,

कि युद्ध समाप्त न हों, क्योंकि मनुष्यों के मन में लोहू की प्यास नहीं बुझी,

- और मैंने उससे कहा:

"यीशु, आप हमेशा मुझसे इन परेशानियों के बारे में बात करना चाहते हैं। आइए उन्हें एक तरफ रख दें और कुछ और बात करें।"

जबकि वह पीड़ित, चुप रहा।

शायद मैंने उसे नाराज़ कर दिया!

"मेरी जिंदगी, मुझे माफ कर दो, मैं इसे फिर कभी नहीं करूंगा। लेकिन आओ!"

जब मैं ऐसे मूर्खतापूर्ण विचारों को पनाह दे रहा था,

-मैं होश खोना चाहता था और

-मैंने अपने भीतर अपने प्यारे यीशु को देखा, अकेला और मौन, एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलते हुए, इधर-उधर ठोकर खाते हुए।

मैं पूरी तरह से भ्रमित था, कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं हुई और सोचा:
"कौन जानता है कि मुझ में कितने पाप हैं जो यीशु को ठोकर खिलाते हैं!"

परन्तु दया से भरे हुए उसने मेरी ओर देखा। वह थका हुआ और पसीने से तर दिख रहा था।

उसने मुझसे कहा :
"मेरी बेटी, बेचारी शहीद, आस्था की शहीद नहीं, बल्कि प्यार की शहादत,
- इंसान की शहादत नहीं, दैवीय शहादत!

तेरी सबसे क्रूर शहादत है मुझ पर, जो दैवीय शहादत की मुहर आप पर लगाती है!

तुम क्यों डरते हो और मेरे प्यार पर शक करते हो? मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता था?
मैं आप में रहता हूं जैसे मेरी मानवता में।
और जैसे मुझ में सारा संसार समाया हुआ है, वैसे ही सारा संसार तुम में है।

क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जब मैं चल रहा था,
-मैं एक बिंदु पर ट्रिपिंग कर रहा था और
- क्या मैं दूसरे पर गिर रहा था?
यह उन पापों और बुरी आत्माओं के कारण था जिनसे मैं मिला था।

मेरे दिल में क्या दर्द है!
आपके भीतर से ही मैं दुनिया का भाग्य तय करता हूं ।

आपकी मानवता मेरे लिए एक आश्रय के रूप में कार्य करती है
कैसे मेरी अपनी मानवता ने मेरी दिव्यता की शरणस्थली के रूप में कार्य किया।

यदि मेरे देवत्व के पास मेरी मानवता का आश्रय नहीं होता, तो गरीब प्राणियों को समय और अनंत काल में कोई पलायन नहीं होता।

इसके अलावा, ईश्वरीय न्याय प्राणी को नहीं देख सकता था

-उसके ई की तरह

- संरक्षित करने के योग्य के रूप में,

लेकिन विनाश के योग्य दुश्मन के रूप में।

अब जबकि मेरी मानवता की महिमा हुई है, मुझे एक सक्षम मानवता की आवश्यकता है

-मेरे दर्द और पीड़ा को साझा करने के लिए,

-प्रेम आत्माएं मेरे साथ और

- उन्हें बचाने के लिए अपने जीवन को बेनकाब करें।

मैंने तुम्हें चुना है। क्या आप खुश नहीं हैं?

इसलिए मैं आपको अपने कष्टों और प्राणियों के दंड के बारे में सब कुछ बताना चाहता हूं, ताकि आप हर चीज में हिस्सा ले सकें और मेरे साथ एक हो सकें।

मैं तुम्हें अपनी वसीयत की ऊंचाइयों पर चाहता हूं ताकि

- जो आप स्वयं से प्राप्त नहीं कर सकते, वह आप मेरी इच्छा से प्राप्त कर सकते हैं,

और ताकि मेरे पास मनुष्यता का भार पूरा करने के लिए जो कुछ आवश्यक है, वह तुम्हारे पास हो।

तो डरो मत कि मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। मेरे पास अन्य प्राणियों के साथ इनमें से पर्याप्त चीजें हैं। क्या आप मेरी पीड़ा में जोड़ना चाहते हैं?

नौवां! सुनिश्चित करें कि आपका यीशु आपको कभी नहीं छोड़ेगा।"

बाद में वह एक सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति के रूप में लौट आया।

मुझे अपने आप में बदलना और मुझे अपने कष्टों का एहसास कराना, उन्होंने *आगे कहा* :

"मेरी बेटी,

मेरी इच्छा प्रकाश है

उसमें रहने वाली आत्मा प्रकाश बन जाती है।

जब तक प्रकाश है, वह आसानी से मेरे शुद्धतम प्रकाश में प्रवेश कर जाता है। और वह जो चाहती है उसे पाने की कुंजी उसके पास है।

हालांकि, ठीक से काम करने के लिए, कुंजी को जंग लगी या गंदी नहीं होनी चाहिए।

इसके अलावा, ताला लोहे का होना चाहिए।

मेरी वसीयत की चाबी से खोलने के लिए आत्मा गंदी नहीं होनी चाहिए

- अपनी मर्जी से जंग या

- सांसारिक चीजों की कीचड़।

इस तरह से ही हम एक साथ जुड़ सकते हैं, ताकि

कि तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो और

कि मैं तुम्हारे साथ जो चाहूं वह कर सकूं ।"

तब मैंने अपनी माँ और अपने एक विश्वासपात्र को देखा जो मर चुका था। मैं उन्हें अपनी स्थिति के बारे में बताना चाहता था जब उन्होंने मुझे बताया:

"इन दिनों एक बड़ा खतरा है कि प्रभु आपको आपके शिकार की स्थिति से निलंबित कर देगा।

और हम, सभी स्वर्ग और शुद्धिकरण की तरह, इतना हस्तक्षेप किया है कि

भगवान आपको निलंबित नहीं करते हैं।

इससे हम समझ सकते हैं कि न्याय गंभीर दंड को कम करने वाला है।

इसलिए धैर्य रखें और थकें नहीं।"

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था। मेरा हमेशा दयालु यीशु आया है। उसने मुझे खून बहने वाले घावों से ढका अपना प्यारा दिल दिखाया।

दर्द से भरकर *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, मेरे दिल के तमाम जख्मों के बीच,

तीन ऐसे हैं जिनका दर्द एक साथ सभी के दर्द से अधिक है।

सबसे पहले, मेरी प्यारी आत्माओं के कष्ट हैं ।

जब मैं एक आत्मा को देखता हूं तो मेरी वजह से मेरे सारे कष्ट होते हैं,

- अत्याचार, रौंदा और मेरे लिए मरे हुओं में से सबसे दर्दनाक, मैं उसके कष्टों को महसूस करता हूं जैसे कि वे मेरे थे,

और शायद अधिक।

आह! प्रेम उन गहरे आँसुओं को जन्म दे सकता है जो अन्य सभी दर्द को दबा देते हैं!

इस पहली चोट में,

मेरी प्यारी माँ पहला स्थान लेती है ।

ओह! कैसे उसने मेरे कष्टों के कारण अपने हृदय को छेद दिया, यह मेरे अंदर बह गया और मेरे हृदय ने इसके सभी कष्टों को कितना महसूस किया!

अपनी मौत के लिए उसे मरता देख, मरते नहीं, उसकी शहादत की कड़वाहट मुझे अपने दिल में महसूस हुई।

मैंने अपनी मौत के दर्द को महसूस किया और मेरा दिल उसके साथ मर गया।

मेरी पीड़ा, मेरी मां के साथ मिलकर**,** सब कुछ दूर कर दिया है।

यह सही था कि मेरे दिव्य मामा का मेरे हृदय में प्रथम स्थान था,

दोनों दुख की दृष्टि से और

प्रेम की दृष्टि से।

क्योंकि मेरे लिए अपने प्यार के कारण उसने जो भी दर्द महसूस किया, उसने उसके दिल से प्यार के सागर को बहा दिया।

तुम भी मेरे दिल के इस घाव में प्रवेश करो

सभी आत्माएं जो मेरे लिए और केवल मेरे लिए पीड़ित हैं ।

आप इस घाव में इस तरह प्रवेश करें

-अगर हर कोई मुझे नाराज करता है और मुझसे प्यार नहीं करना चाहता,

-मैं आप सभी के लिए प्रतिपूरक प्रेम ढूंढूंगा। जब जीव मेरा पीछा करते हैं,

मैं शीघ्र ही अपने छिपने के स्थान की भाँति तुम्हारी शरण लेने आता हूँ। वहां अपना प्यार पाकर, एक ऐसा प्यार जो केवल मेरे लिए ही सहता है, मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं है कि मैंने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया और इतना कष्ट सहा।

एक आत्मा जो मेरे लिए प्यार करती है और पीड़ित है

मेरा आराम,

मेरी खुशी और

- मैंने जो कुछ भी किया है उसके लिए मेरा इनाम।

लगभग सब कुछ भूलकर, मैं उसके साथ आनन्दित और आनन्दित होता हूँ।

मेरे दिल के प्यार का यह घाव, जो सबसे दर्दनाक है, उसके दो एक साथ प्रभाव हैं:

मुझे दोनों देता है

अत्यधिक दर्द और तीव्र आनंद,

एक अजेय कड़वाहट और एक अवर्णनीय मिठास ,

एक दर्दनाक मौत और एक शानदार जीवन।

ये मेरे प्रेम की ज्यादतियाँ हैं, जो सृजित मन के लिए समझ से बाहर हैं।

न जाने कितनी तृप्ति मेरे हृदय को मेरी छेदी हुई माँ की पीड़ा में नहीं मिली!

मेरे दिल का दूसरा नश्वर घाव कृतघ्नता है ।

कृतघ्नता के लिए, प्राणी

-मेरे दिल के प्रवेश द्वार को बंद करो,

- कुंजी लेता है और

- डबल टावर वाला फार्महाउस।

तब मेरा दिल दर्द से भर जाता है क्योंकि वह अपनी कृपा और अपने प्यार को उँडेलना चाहेगा और नहीं कर सकता।

वह पागल हो जाता है और आशा खो देता है कि उसका घाव ठीक हो जाएगा। आत्माओं की कृतघ्नता मुझे नश्वर पीड़ा का कारण बनती है।

मेरे दिल का तीसरा नश्वर घाव हठ है ।

जिद मेरे द्वारा प्राणी के लिए किए गए सभी अच्छे कामों को नष्ट कर देती है।

इसके माध्यम से प्राणी घोषणा करता है कि वह अब मुझे नहीं पहचानती है और अब मेरी नहीं है। यह नरक की कुंजी है जिस पर आत्मा दौड़ती है।

ज़िद्दी रूह के आगे दिल टूट जाता है

मुझे ऐसा लग रहा है कि इनमें से कोई एक टुकड़ा मुझे अलग कर रहा है। मेरे दिल के लिए हठ क्या एक नश्वर घाव है!

मेरी बेटी, मेरे दिल में प्रवेश करो और इन तीन घावों को मेरे साथ साझा करो। मेरे फटे हुए दिल को सांत्वना दो और साथ में हम पीड़ित और प्रार्थना करते हैं »।

मैं उनके हृदय में प्रवेश कर गया।

यीशु के साथ दुख सहना और प्रार्थना करना कितना दर्दनाक और सुंदर था!

मैंने अपने धन्य यीशु के घावों को सराहा।

अंत में मैंने ईश्वरीय इच्छा की विशालता में प्रवेश करने के इरादे से पंथ का पाठ किया।

- भूत, वर्तमान और भविष्य के प्राणियों की क्रियाएं कहां हैं,

- साथ ही वे कार्य जो उन्हें करने चाहिए थे, लेकिन जो लापरवाही या जानबूझकर किए गए कदाचार के कारण उन्होंने नहीं किए।

मैंने यीशु से कहा:

"मेरे यीशु, मेरे प्यार, मैं तुम्हारी इच्छा में प्रवेश करता हूं। मैं चाहता हूं, इसके लिए मुझे विश्वास है,

-विश्वास के ऐसे कार्य करें जो प्राणियों ने नहीं किए हैं,

-उनके संदेह के लिए मरम्मत e

- भगवान को निर्माता के रूप में उनके कारण पूजा देने के लिए "।

जैसा कि मैंने यह कहा और कई अन्य बातें, मुझे लगा

मेरी बुद्धि ईश्वरीय इच्छा में खो जाती है

एक प्रकाश मेरी बुद्धि का निवेश करता है, जिसमें मैं अपने प्यारे यीशु को देख पा रहा था। इस प्रकाश ने मुझसे बहुत कुछ कहा। लेकिन सब कुछ कौन कह सकता था?

मुझे लगता है कि मैं खुद को भ्रमित तरीके से व्यक्त करूंगा और मैं ऐसा करने के लिए बेहद उत्सुक हूं। अगर आज्ञाकारिता अधिक उदार होती, तो वह मुझ पर इस तरह के बलिदान नहीं थोपती।

"लेकिन तुम, मेरे जीवन, मुझे शक्ति दो और गरीब अज्ञानी को मत छोड़ो जो अकेले हैं!"

मुझे ऐसा लगता है कि *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी प्यारी बेटी,

मैं आपको अपने प्रोविडेंस के आदेश से परिचित कराना चाहता हूं।

हर दो हजार साल में मैंने दुनिया का नवीनीकरण किया है।

पहले दो हज़ार वर्षों के अंत में मैंने इसे बाढ़ के साथ नवीनीकृत किया।

दूसरे दो हज़ार वर्षों के अंत में मैंने उस धरती पर आकर उसका नवीनीकरण किया जहाँ मैंने अपनी मानवता को प्रकट किया।

उसके माध्यम से, जैसे कि एक जाली के माध्यम से, मेरी दिव्यता ने खुद को अनुमान लगाने की अनुमति दी। इसके बाद आने वाले दो हज़ार वर्षों का सबसे अच्छा और सबसे पवित्र

- मैं अपनी मानवता के फल से जिया हूं

-मैंने अपनी दिव्यता का थोड़ा आनंद लिया।

वर्तमान में

हम दो हजार साल की तीसरी अवधि के अंत के करीब हैं।

तीसरा जागरण होगा ।

यही वर्तमान सामान्य भ्रम का कारण है, जो तीसरे नवीनीकरण की तैयारी के अलावा और कुछ नहीं है।

दूसरे में मैंने साबित किया

- मेरी मानवता ने क्या किया और झेला है,

-लेकिन मैंने बहुत कम जाना कि मेरे देवत्व ने वहां क्या किया।

इस तीसरे नवीनीकरण पर,

- पृथ्वी के शुद्ध होने के बाद **e**

-वर्तमान पीढ़ी के एक बड़े हिस्से को नष्ट कर दिया**,** मैं प्राणियों के साथ और भी **उदार बनूंगा** ।

प्रदर्शन कर नवीनीकरण करवा लूंगा

- मेरी दिव्यता ने मेरी मानवता में क्या किया है,

- मेरी ईश्वरीय इच्छा ने मेरी मानवीय इच्छा के अनुरूप कैसे काम किया,

- सब कुछ मुझमें कैसे जुड़ा है,

-कैसे मैंने फिर से सब कुछ किया,

- कैसे जीवों के हर विचार को मेरे द्वारा पुनर्निर्मित किया गया और मेरी दिव्य इच्छा से सील कर दिया गया।

मेरा प्यार जान कर फैलाना चाहता है

मेरी दिव्यता ने मेरी मानवता में प्राणियों के पक्ष में जो ज्यादती की है, वह ज्यादती जो बाहरी लग सकती है उससे कहीं आगे जाती है।

इसलिए मैंने तुमसे अपनी वसीयत में जीवन के बारे में इतना कुछ कहा है, जो मैंने पहले किसी को नहीं बताया था।

ज्यादा से ज्यादा, वे जानते थे

- मेरी इच्छा की छाया,

- अनुग्रह और मिठास का एक सिंहावलोकन जो इसे पूरा करने में महसूस होता है। परंतु

- इसे घुसाना,

- इसकी विशालता को गले लगाओ,

- मेरे साथ गुणा करें और हर जगह प्रवेश करें,

दोनों पृथ्वी पर और स्वर्ग में और दिलों में,

- मानव मार्ग का परित्याग करना और दैवीय तरीके से काम करना, यह अभी तक ज्ञात नहीं है।

इसके अलावा, यह कई लोगों को अजीब लगेगा।

जिनके पास सत्य के प्रकाश में खुला दिमाग नहीं है वे कुछ भी नहीं समझेंगे। हालाँकि, धीरे-धीरे मैं आपके लिए रास्ता खोलूंगा,

-सत्य को एक बार, दूसरी बार प्रकट करें,

-ताकि हम कुछ समझ सकें।

मेरी इच्छा में जीवन की पहली अभिव्यक्ति मेरी मानवता के माध्यम से हुई थी ।

यह, मेरी दिव्यता के साथ,

शाश्वत इच्छा में विसर्जित

उसने प्राणियों के सभी कार्यों को ग्रहण किया है

पिता को उनके नाम पर, दिव्य महिमा देने के लिए और उनके प्रत्येक कार्य को मूल्य, प्रेम और शाश्वत इच्छा का चुंबन देने के लिए।

शाश्वत इच्छा के क्षेत्र में, मैंने देखा है

- वे सभी कार्य जो प्राणी कर सकते थे, लेकिन नहीं किए,

- साथ ही उनके अच्छे कामों ने गलत किया; मैंने वो काम किया जो छूट गए थे और

जो गलत तरीके से किए गए थे, उन्हें मैंने भुनाया।

कृत्यों ने उतना अच्छा प्रदर्शन नहीं किया जो सिर्फ मेरे लिए नहीं किया गया था

मेरी इच्छा में निलंबित रहो

मेरी वसीयत में रहने वाले प्राणियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वे मेरे द्वारा किए गए सभी कार्यों को दोहराएं।

और मैंने तुम्हें अपनी मानवता के साथ एक कड़ी के रूप में चुना है

ताकि तेरी इच्छा मेरे साथ एक होकर मेरे कामों को दोहराए।

इसके बिना मेरा प्यार पूरी तरह से उंडेला नहीं जा सकता।

और जो कुछ मेरी दिव्यता ने मेरी मानवता के माध्यम से पूरा किया है, उसके लिए मैं प्राणियों से महिमा प्राप्त नहीं कर सका।

नतीजतन, सृष्टि का पहला लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता था।

- यह अंत जो मेरी वसीयत में पाया जाता है और जिसे वहां अपनी पूर्णता तक पहुंचना चाहिए।

यह ऐसा होगा जैसे मैंने बिना किसी को जाने अपना सारा खून बहा दिया हो। तो कौन मुझसे प्यार करेगा?

कौन सा दिल हिलाया होगा? कोई नहीं!

किसी भी दिल में मेरी मानवता को उसका फल नहीं मिलता »।

इन शब्दों के साथ मैंने उसे यह कहकर बाधित किया:

"मेरे प्यार, अगर आपकी दिव्य इच्छा में रहना इतना अच्छा लाता है, तो आपने इस सत्य को पहले क्यों नहीं दिखाया?"

उसने जारी रखा:

"मेरी बेटी,

मुझे पहले यह कहना था

- मेरी मानवता ने बाहरी रूप से क्या किया और झेला है

मेरी दिव्यता ने आंतरिक रूप से क्या किया है, यह जानने के लिए आत्माओं को तैयार करने के लिए।

प्राणी मेरे कार्यों का अर्थ एक झटके में नहीं समझ पा रहा है। इसलिए मैं खुद को थोड़ा-थोड़ा करके प्रकट करता हूं।

अन्य प्राणियों के बंधन मेरे साथ बंधन के बंधन से जुड़ेंगे जो आप हैं।

इस प्रकार मेरी इच्छा में जीवित आत्माओं का एक समूह होगा जो प्राणियों के सभी कृत्यों को दोहराएगा।

मेरी महिमा होगी

- केवल मेरे द्वारा किए गए सभी असाधारण कार्यों में से,

-साथ ही प्राणियों द्वारा बनाए गए,

यह महिमा सभी श्रेणियों के प्राणियों से आती है: कुंवारी, पुजारी, साधारण लोग, प्रत्येक अपने राज्य के अनुसार।

ये आत्माएं अब मानवीय रूप से काम नहीं करेंगी। लेकिन मेरी मर्जी में डूबे,

उनके कार्य सभी के लिए पूरी तरह से दैवीय तरीके से गुणा करेंगे।

मुझे प्रशासित और प्राप्त किए गए इतने सारे संस्कारों के लिए प्राणियों से दिव्य महिमा प्राप्त होगी।

- एक मानवीय तरीके से,

-या अपवित्र,

-या निजी स्वार्थों के कीचड़ में ढँका हुआ, वैसे ही

-कि इतने सारे तथाकथित अच्छे कामों के लिए जो मेरा सम्मान करने से ज्यादा मेरा अपमान करते हैं।

मैं इस समय के बाद बहुत कुछ चाहता हूं। आप स्वयं प्रार्थना करते हैं और मेरे साथ तड़पते हैं।

मेरे साथ अपने संबंध के संबंध को अलग मत करो, तुम, पहले।"

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और लगभग तीन दिनों तक मैंने महसूस किया कि मेरा मन ईश्वर में लीन है।

अच्छे यीशु ने मुझे कई बार उनकी सबसे पवित्र मानवता तक पहुँचाया है जहाँ मैं उनकी दिव्यता के विशाल महासागर में तैरने में सक्षम था।

ओह! मैं कितनी चीजें देख पाया हूँ!

उनकी दिव्यता ने उनकी मानवता में जो कुछ किया है, वह सब मैंने कितनी स्पष्ट रूप से देखा है! कई बार, मेरे आश्चर्य के बीच, **यीशु ने मुझसे बात की** । अन्य बातों के अलावा, उन्होंने मुझसे कहा:

"क्या तुम देखती हो, मेरी बेटी, मैंने **किस अति प्रेम से प्राणियों से प्रेम किया है** ?

मेरी दिव्यता एक प्राणी को छुटकारे की पूर्ति को सौंपने के लिए बहुत ईर्ष्यालु थी; इसलिए मैंने खुद पर जुनून डाला।

कोई प्राणी नहीं मर सकता

- हर समय जो था और होना ही था

सृष्टि के प्रकाश को जानने के लिए प्राणियों की,

उनके द्वारा किए गए प्रत्येक नश्वर पाप के लिए।

मेरी दिव्यता एक जीवन चाहती थी

- एक प्राणी के हर जीवन के लिए e

- एक नश्वर पाप के कारण उनमें हुई हर मृत्यु के लिए।

अगर मेरी दिव्यता नहीं होती तो मुझे इतनी मौत देने के लिए कौन शक्तिशाली हो सकता था?

मेरी दिव्यता नहीं तो मुझे इतनी बार मरते देखने के लिए पर्याप्त शक्ति, प्रेम और

दृढ़ता किसके पास हो सकती थी?

एक प्राणी थक जाएगा और हार मान लेगा।

और मैं यह नहीं सोचूंगा कि मेरी दिव्यता की यह गतिविधि मेरे सांसारिक जीवन में देर से शुरू हुई।

यह मेरी माँ के गर्भ में मेरे गर्भाधान के क्षण से शुरू हुआ, जो कई बार, मेरे कष्टों से अवगत हुई और मेरी शहादत और मेरी मृत्यु को महसूस किया।

इस प्रकार, मेरी माँ के गर्भ में भी, मेरी दिव्यता ने प्रेम के जल्लाद की भूमिका निभाई।

उनके प्यार के लिए मेरी दिव्यता इस हद तक अनम्य थी कि मेरी मानवता के लिए कांटों, कीलों और प्रहारों को नहीं बख्शा गया।

इसके बजाय ये कांटे, कीलें और प्रहार उन जैसे नहीं थे जो प्राणियों ने मुझे मेरे जुनून के दौरान दिए थे, जो गुणा नहीं करते थे।

मेरे देवत्व द्वारा दिए गए कष्ट सभी अपराधों को ढँकने के लिए कई गुना बढ़ गए: जितने कांटों के रूप में बुरे विचार, उतने ही नाखून जितने अयोग्य कर्म, उतने ही बुरे सुख, उतने ही कष्ट जितने अपराध।

वे दुख, कांटों, कीलों और प्रहारों के सागर थे। इस जुनून से पहले जो मेरी दिव्यता ने मुझ पर थोपी थी

-मेरे जीवन में,

मेरे जीवन के अंतिम दिनों में प्राणियों ने मुझे जिस जुनून के अधीन किया, वह केवल एक छाया थी, केवल एक छवि थी।

मैं आत्माओं से कितना प्यार करता हूँ! यह उस जीवन के लिए था जिसके लिए मैं भुगतान कर रहा था।

मेरे कष्ट एक सृजित मन के लिए अकल्पनीय हैं।

मेरे देवत्व में प्रवेश करो, देखो और अपने हाथों से स्पर्श करो जो मैंने झेला है »।

उस पल में, मैं नहीं जानता कि कैसे, मैंने खुद को दिव्य विशालता के अंदर पाया। धार्मिकता के सिंहासन खड़े किए गए,

प्रत्येक प्राणी के लिए एक, जिसके पहले मीठे यीशु को प्राणियों के कार्यों के लिए उत्तर देना था, प्रत्येक के लिए मृत्यु का भुगतान और पीड़ा।

एक प्यारे छोटे मेमने की तरह, यीशु को दैवीय हाथों से मार दिया गया और फिर वह जीवित हो गया और अधिक मौतों का सामना किया।

हे भगवान, हे भगवान! क्या अथाह पीड़ा है!

जीवन में वापस आने के लिए मरो और एक और भी क्रूर मौत से फिर से मरने के लिए जीवन में वापस आओ!

मुझे लगा जैसे मैं मर रहा था

मेरे प्यारे यीशु को इतनी बार मारते देखने के लिए।

जो मुझसे इतना प्यार करते हैं उनके लिए मैं एक मौत भी बख्शना पसंद करता! ओह! जैसा कि मैं समझ गया था कि केवल देवत्व ही कर सकता है

- मीठा यीशु को इतना कष्ट सहना e

- इस तरह के कष्टों के माध्यम से पुरुषों को इतना प्यार करने का दावा करना! इस वीरता को प्रेम करने की क्षमता न तो स्वर्गदूतों में होगी और न ही मनुष्य में। केवल एक भगवान ही कर सकता था। लेकिन सब कुछ कौन कह सकता था?

मेरी बेचारी आत्मा प्रकाश, प्रेम और पीड़ा के इस सागर में ऐसे ही तैर रही थी, और मुझे छोड़ दिया गया था जैसे कि गूंगा रह गया था, न जाने कैसे।

अगर मेरे प्यारे यीशु ने मुझे अपनी सबसे पवित्र मानवता में नहीं खींचा होता, जिसमें मेरी आत्मा थोड़ी कम डूबी हुई थी, तो मैं सब कुछ करने में असमर्थ होता।

फिर मेरे प्यारे *यीशु ने जोड़ा* :

" प्यारी बेटी, मेरे जीवन की नवजात,

मेरी वसीयत में आओ और मेरे कृत्यों की संख्या देखें

-कौन इंतजार कर रहे हैं और

- प्राणियों के लाभ की प्रतीक्षा में।

मेरी इच्छा घड़ी के मुख्य पहिये की तरह आप में होनी चाहिए।

यदि यह मुड़ता है, तो अन्य सभी मुड़ जाते हैं और घड़ी घंटे और मिनटों पर प्रहार करती है।

सब कुछ मुख्य पहिये की गति का परिणाम है;

यदि यह पहिया नहीं चलता है, तो घड़ी की गति समाप्त हो जाती है। आप में मुख्य पहिया मेरी इच्छा होनी चाहिए,

जो आपके विचारों को, आपके हृदय को, आपकी इच्छाओं को, हर चीज को गति प्रदान करे।

चूंकि मेरी इच्छा केंद्र है

- मेरे अस्तित्व की, सृष्टि की और हर चीज की, तुम्हारी गति, जो इस केंद्र से निकलती है,

-सभी प्राणियों की गतिविधियों को प्रतिस्थापित कर सकता है।

सब से गुणा करके, वह हर एक की जगह, मेरे सिंहासन के सामने सभी के कार्यों को लाएगा।

इसलिए सावधान रहें।

आपका मिशन महान और पूरी तरह से दिव्य है"।

मैं पूरी तरह से अपने प्यारे यीशु में विलीन हो गया

मैंने उनकी ईश्वरीय इच्छा में प्रवेश करने के उद्देश्य से सब कुछ किया

- अपने आप को मेरे शाश्वत प्रेम से जोड़ो

- उसे मेरी आत्माओं की निरंतर पुकार सुनने के लिए।

मैं अपने छोटे और लौकिक प्रेम को उनके अनंत और शाश्वत प्रेम के साथ जोड़ना चाहता था।

- उसे अनंत प्यार, अनंत मरम्मत और

- सब कुछ बदलने के लिए, जैसा उसने मुझे सिखाया।

जब मैं यह कर रहा था, मेरा प्यारा **यीशु** जल्दी आया और **मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी, मुझे बहुत भूख लगी है!"

फिर उसे लगा कि मेरे मुंह में कुछ सफेद गेंदें लेकर खा रहा हूं।

फिर, जैसे वह अपनी भूख को पूरी तरह से संतुष्ट करना चाहता था, उसने मेरे दिल में प्रवेश किया।

और, दोनों हाथों से, उसने बड़े और छोटे कई टुकड़े लिए, और उन्हें लालच से खा लिया।

फिर, मानो उसने पर्याप्त खा लिया हो, वह मेरे बिस्तर पर झुक गया और मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, जब आत्मा मेरी इच्छा में डूब जाती है और मुझसे प्यार करती है, तो यह मुझे अपनी आत्मा में कैद कर लेती है।

उसके प्यार के लिए,

- उन तत्वों को खींचता है जो मुझे कैद करते हैं ई

- वह मेरे लिए एक अतिथि बनाती है।

कष्ट सहना, मरम्मत करना आदि अतिथि बनते हैं

-मुझे भोज देने के लिए ई

- ताकि मैं अपने आप को एक दिव्य तरीके से पोषण कर सकूं, मेरे योग्य।

जैसे ही मैं उसमें यजमानों को बनते देखूंगा, मैं उन्हें ले लूंगा

-इस पर फ़ीड करने के लिए e

- मेरी अतृप्त भूख को संतुष्ट करने के लिए, प्राणियों के प्यार के लिए प्यार पाने की मेरी भूख।

इस प्रकार आत्मा मुझे बता सकती है: 'आप मुझसे संवाद करते हैं और मैं भी आपसे संवाद करता हूं'"।

मैंने उससे कहा:

"यीशु, मेरे मेहमान आपके हैं। इसलिए मैं अभी भी आपके कर्ज में हूँ।"

उसने उत्तर दिया :

"उन लोगों के लिए जो वास्तव में मुझसे प्यार करते हैं, मैं नहीं जानता या हिसाब रखना चाहता हूं। मेरे यूचरिस्टिक मेजबानों के माध्यम से, यह यीशु है जो मैं आपको देता हूं।

अपने मेजबानों के माध्यम से, यह यीशु है जो आप मुझे देते हैं। क्या आप इसे देखना चाहते हैं?"

मैने हां कह दिया।"

इसलिए उसने अपना हाथ मेरे दिल में फैलाया और उसमें से एक सफेद गेंद ले ली। उसने उसे खोलने के लिए उसे तोड़ा और अंदर से,

एक और यीशु बाहर आया।

तब उसने कहा:

"क्या तुमने देखा है? मैं कितना खुश हूँ जब जीव मेरे साथ संगति में है! मुझे बहुत से मेजबान बनाओ और मैं तुम्हें खिलाने के लिए आऊंगा।

आप मुझे संतोष, महिमा और प्रेम का नवीनीकरण करेंगे

-जिसे मैंने यूचरिस्ट की संस्था में अनुभव किया, जब मैंने संचार किया »।

मैंने 29 जनवरी को जो लिखा, उसे जारी रखूंगा। मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:

"यह कैसे संभव है कि मैं आपकी मानवता के साथ दूसरी कड़ी हूँ?

ऐसी आत्माएं हैं जो आपको बहुत प्रिय हैं

कि मैं उनके चरणों के नीचे रहने के भी योग्य नहीं हूँ।

सबसे पहले आपकी अविभाज्य माँ है

जो हर दृष्टि से प्रथम स्थान पर है।

ऐसा लगता है, मेरे प्यारे प्यार, कि तुम मेरे साथ मजाक करना चाहते हो।

जो भी हो, मेरी आत्मा के क्रूरतम घाव के लिए, मुझे इसे कागज पर रखने के लिए पवित्र आज्ञाकारिता द्वारा मजबूर किया गया है। मेरे जीसस, मेरी शहादत को देखो!"

जब मैं यह कह रहा था, मेरे हमेशा दयालु *यीशु ने मुझे* दुलारते हुए मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, चिंता क्यों? क्या यह मेरी आदत नहीं है?

- धूल इकट्ठा करने के लिए

-अनुग्रह के महान चमत्कार बनाने के लिए? सारा सम्मान मेरे लिए है।

विषय जितना कमजोर और छोटा होता है, मैं उतना ही अधिक गौरवान्वित होता हूँ।

दूसरी ओर, मेरी माँ की दूसरी भूमिका नहीं है

- मेरे प्यार में**,** मेरी इच्छा में**,**

लेकिन यह मेरे साथ एक ही बंधन बनाता है।

सभी आत्माएं मुझे बहुत प्रिय हैं। लेकिन यह बहिष्कृत नहीं है

-कि मैं एक उच्च कार्य के लिए एक या दूसरे को चुनता हूं ई

- जिन्हें मैं अपनी वसीयत में रहने के लिए जरूरी पवित्रता देना चाहता हूं।

धन्यवाद जो दूसरों के लिए आवश्यक नहीं थे

कि मैंने अपनी इच्छा की पवित्रता में जीने के लिए नहीं बुलाया है, आपके लिए आवश्यक हैं जिन्हें मैंने इस उद्देश्य के लिए अनंत काल से चुना है।

इस दुख की घड़ी में मैंने तुम्हें इसलिए चुना है कि, मेरी इच्छा में रहकर, तुम मुझे दे सको

-एक दिव्य प्रेम,

- दिव्य मरम्मत और संतुष्टि, कहीं नहीं मिली

मेरी इच्छा में रहने वाली आत्माओं की तुलना में।

इन समयों में, मेरा प्यार और मेरी इच्छा चाहते हैं कि मैं मुझे प्यार में और अधिक फैलाऊं। क्या मैं वह करने के लिए स्वतंत्र नहीं हूँ जो मैं चाहता हूँ?

क्या कोई मुझे रोक सकता है? नौवां!

इसलिए शांत हो जाओ और मेरे प्रति विश्वासयोग्य बनो।"

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था, मेरा हमेशा दयालु यीशु आया।

उसने मेरे हाथों को कस कर पकड़ लिया, उसने राजसी मिलन के साथ मुझसे कहा:

" मेरी बेटी,

मुझे बताओ, क्या तुम मेरी वसीयत में जीना चाहते हो?

क्या आप मेरी मानवता के साथ दूसरी कड़ी बनना स्वीकार करते हैं? क्या तुम मेरे प्यार को अपना, मेरी वसीयत को जीवन के रूप में स्वीकार करते हो?

आप मेरी दिव्यता द्वारा मेरी मानवता पर किए गए कष्टों को साझा करने के लिए

सहमत हैं, जिसकी मुझे अप्रतिरोध्य आवश्यकता है

केवल ज्ञात करने के लिए नहीं,

लेकिन यह भी एक प्राणी के साथ साझा करने के लिए - जितना संभव हो?

मैं केवल इन बातों से अवगत करा सकता हूं और उन्हें एक व्यक्ति के साथ साझा कर सकता हूं

जो मेरी मर्जी में रहता है,

जो पूरी तरह से मेरे प्यार पर रहता है।

मेरी बेटी

मेरी आदत है कि मैं प्राणी की 'हां' पूछूं ताकि उसके साथ स्वतंत्र रूप से काम कर *सकूं।"*

फिर वह चुप हो गया मानो मेरे "फिएट" का इंतजार कर रहा हो।

मुझे आश्चर्य हुआ और उसने उससे कहा: "यीशु, मेरा जीवन, तुम्हारी इच्छा मेरी है। आप अकेले ही हमारी दो इच्छाओं को मिलाते हैं और उसमें से एक वसीयत बनाते हैं।

इसके अलावा, आपके साथ एकजुट होकर, मैं "हां" कहता हूं। कृपया मुझ पर दया करें।

मेरा दुख महान है और सिर्फ इसलिए कि आप इसे चाहते हैं, मैं कहता हूं: 'फिएट, फिएट'"।

ओह! कैसे मैंने महसूस किया कि मेरी शून्यता की गहराई में नष्ट और कुचला हुआ है, खासकर तब से

- यह कुछ भी नहीं मैं

-जो है, उसमें रहने के लिए बुलाया गया है!

मेरे प्यारे यीशु ने हमारी दो वसीयतों को एक किया और फिएट शब्द को उकेरा। मेरी "हां" ईश्वरीय इच्छा में प्रवेश कर गई है।

चूँकि यह उसमें उच्चारित किया गया था, यह प्रकट हुआ

-एक इंसान की तरह नहीं हाँ,

- लेकिन एक दिव्य हाँ।

इसे से गुणा किया जाता है

- सभी प्राणियों में शामिल हों,

- उन सभी को यीशु के पास लाओ और

- वे मेरे प्यारे यीशु की ओर मुड़ने वाले इनकारों की पूरी तरह से मरम्मत करते हैं।

यह ईश्वरीय इच्छा की मुहर और शक्ति द्वारा चिह्नित किया गया था, जिसका उच्चारण भय या व्यक्तिगत पवित्रता में रुचि के कारण नहीं किया गया था,

लेकिन सिर्फ

-यीशु की इच्छा में स्वयं को शामिल करें,

-हर प्राणी की भलाई के लिए काम करें e

- यीशु को देने के लिए, हर एक के नाम पर,

दिव्य महिमा, दिव्य प्रेम और दिव्य प्रतिपूर्ति। मेरे दयालु यीशु इस "हाँ" से इतने खुश लग रहे थे *कि उन्होंने मुझसे कहा* :

"अब मैं तुम्हें सजाना चाहता हूं और तुम्हें अपने जैसा तैयार करना चाहता हूं

-ताकि आपकी "हां" मेरी से जुड़ जाए

-अनन्त महामहिम के समक्ष अपना कार्य करने के लिए।"

इसलिए उन्होंने मुझे ऐसे कपड़े पहनाए जैसे कि मैं अपनी मानवता के साथ मेरी पहचान कर सकूं, और साथ में हमने खुद को शाश्वत महामहिम के सामने पेश किया।

लेकिन यह महामहिम मुझे एक दुर्गम प्रकाश, अपार और अकल्पनीय सुंदरता की तरह लग रहा था, जिस पर सब कुछ निर्भर था।

मैं उसमें खो गया था और इसकी तुलना में, मेरे यीशु की मानवता मुझे छोटी लग

रही थी।

इस प्रकाश में प्रवेश करने का सरल कार्य व्यक्ति को प्रसन्न और अलंकृत करता है। मुझे नहीं पता कि मैं इसके बारे में कैसे लिख सकता हूं।

मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी इच्छा की विशालता में मेरे साथ अकृत्रिम शक्ति की पूजा करें। इस प्रकार, केवल मैं ही नहीं,

लेकिन एक अन्य व्यक्ति, एक मानव प्राणी,

वह ईश्वरीय तरीके से उसकी पूजा करेगा जिसने सब कुछ बनाया और जिस पर सब कुछ निर्भर करता है। और यह, सभी पीढ़ियों के सभी भाइयों और बहनों के नाम पर »।

यीशु के साथ उपासना करना कितना आनंददायक था! हमने सभी के लिए गुणा किया है।

हमने अपने आप को यहोवा के सिंहासन के सामने रखा है

-उन लोगों से इसका बचाव कैसे करें जो शाश्वत महिमा को नहीं पहचानते हैं या इसका अपमान भी नहीं करते हैं।

हमने अपना दृष्टिकोण बनाया

- सभी की भलाई के लिए ई

- सभी सर्वोच्च महामहिम को ज्ञात करने के लिए।

मैंने यीशु के साथ और भी काम किए, लेकिन मैं नहीं जानता कि उनका वर्णन कैसे किया जाए।

मेरा दिमाग लड़खड़ाता है और मुझे शब्द नहीं दे सकता। इसलिए, मैं जारी नहीं रखता।

यदि जीसस चाहते हैं, तो मैं इस विषय पर लौटूंगा।

तब मेरे प्यारे यीशु ने मुझे मेरे शरीर में वापस लाया। लेकिन मेरा मन एक शाश्वत बिंदु के रूप में जुड़ा रहा, जिससे मैं नहीं जा सकता था।

"यीशु, मुझे आपकी कृपा के अनुरूप होने में मदद करें, अपनी बेटी की मदद करें, आपकी छोटी सी चिंगारी!"

मेरी सामान्य स्थिति में जारी है,

मैं अपने हमेशा दयालु यीशु की प्रतीक्षा कर रहा था

वह आया और, अच्छाई से भरा, मुझसे कहा:

"मेरी वसीयत की प्यारी बेटी, तुम मेरी वसीयत में आओगे"

- दिव्य तरीके से करने के लिए, आपके भाइयों द्वारा छोड़े गए कई कार्य,

साथ ही ईश्वरीय आदेश में परिवर्तित होने वाले कई अन्य जो मानव रूप से बनाए गए हैं, यहां तक कि तथाकथित संत भी।

मैंने सब कुछ ईश्वरीय क्रम में किया है, लेकिन मैं अभी भी संतुष्ट नहीं हूं।

मुझे चाहिए

कि जीव मेरी इच्छा में प्रवेश करता है और वह, एक दैवीय तरीके से,

-वह मेरे कार्यों से शादी करती है और

- यह सब कुछ बदल देता है, जैसे मैंने किया।

आओ आओ! मुझे इसकी बड़ी ज़रूरत थी!

मैं जब देखता हूं तो जश्न मनाता हूं

एक प्राणी दिव्य वातावरण में प्रवेश करता है, जहां मेरे साथ,

- अपने सभी भाइयों को दैवीय तरीके से प्रतिस्थापित करता है e

-कि वह सभी की ओर से प्यार करती है और मरम्मत करती है।

तब मैं अब उसमें मानवीय चीजों को नहीं, बल्कि अपनी खुद की चीजों को पहचानता हूं।

अपने से,

- मेरा प्यार बढ़ता और बढ़ता है,

-मरम्मत अनिश्चित काल के लिए गुणा करें e

- प्रतिस्थापन दिव्य हैं।

क्या खुशी है! क्या पार्टी थी!

संत भी मेरे साथ जुड़ते हैं और मनाते हैं। मैं इसे करने के लिए तत्पर हूँ

उनमें से एक अपने कार्यों को ईश्वरीय आदेश में परिवर्तित करता है,

-मानव क्रम में संत,

-लेकिन अभी तक दैवीय क्रम में नहीं।

वे प्रार्थना करते हैं कि मैं जीवों को तुरंत इस दिव्य वातावरण में लाऊं

कि इस प्रकार उनके सभी कार्य हैं

ईश्वरीय इच्छा में विसर्जित ई

प्रभु की छाप द्वारा चिह्नित ।

मैंने सबके लिए किया। अब मैं चाहता हूं कि आप इसे सभी के लिए करें।" यह कहकर, मैंने उससे कहा:

"मेरे यीशु, आपके शब्द मुझे भ्रमित करते हैं।

मुझे पता है कि आप हर चीज के लिए काफी हैं और सब कुछ आपका है।"

उन्होंने जारी रखा: "बेशक यह मेरे लिए हर चीज और सभी के लिए पर्याप्त है। लेकिन मैं स्वतंत्र नहीं हूं

- एक प्राणी चुनें और

- उसे मेरी तरफ से यह भूमिका देने के लिए ,

- इसे सभी के लिए पर्याप्त बनाने के लिए?

इसके अलावा, अगर सब कुछ मेरा है तो आपको क्या परवाह है? क्या मैं तुम्हें वह नहीं दे सकता जो मेरा है?

मैं आपको अपनी पूर्ण संतुष्टि के लिए सब कुछ देता हूं।

यदि आप मेल नहीं खाते और स्वीकार नहीं करते हैं,

तुम मुझे पसंद नहीं करते

अनुग्रह की इस श्रृंखला के साथ विश्वासघात करें जो मैंने इस उद्देश्य के लिए आप में जमा किया है »।

सो मैं यीशु के पास गया और वही किया जो वह कर रहा था।

ओह! यीशु ने अभी-अभी जो कुछ मुझे बताया था, वह सब मैंने कितनी स्पष्ट रूप से देखा! उसके साथ मैं सब में, यहाँ तक कि संतों में भी गुणा किया।

लेकिन, एक बार मेरे शरीर में, मेरे अंदर संदेह पैदा हो गया।

यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी इच्छा का एक एकल कार्य, यहां तक कि एक संक्षिप्त क्षण के लिए, रचनात्मक जीवन से भरा है।

और जिसके पास मेरी वसीयत है, वह पल भर में,

सब कुछ जीवन दे

सब कुछ रखो ।

मेरी इच्छा से वह सूर्य प्राप्त करता है

- अस्तित्व, - प्रकाश, - पृथ्वी का संरक्षण,

- जीवों का जीवन।

तो फिर तुम शक क्यों करते हो?

मेरा स्वर्ग में मेरा दरबार है और मुझे पृथ्वी पर एक और दरबार चाहिए।

क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यह कोर्ट कौन बनाएगा?"

मैंने उत्तर दिया: "आपकी इच्छा में रहने वाली आत्माएं"।

उसने बोला:

"खूब कहा है।

वे आत्माएं हैं, जो व्यक्तिगत पवित्रता की खोज की छाया के बिना, लेकिन पूरी तरह से दिव्य हैं, भाइयों के लाभ के लिए जीवित रहेंगी।

ये आत्माएं स्वर्ग के साथ एक ही कोरस बनाती हैं"।

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और यीशु मेरे साथ थे।

एक बिंदु पर उन्होंने खुद को एक बच्चे के रूप में और दूसरे पर, एक क्रूस के रूप में दिखाया।

मुझे अपने आप में बदल कर **उन्होंने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी,

मेरी दिव्यता में प्रवेश करो और मेरी शाश्वत इच्छा में तैरो। आप ब्रह्मांड की महान मशीन को गति में स्थापित करने के कार्य में ही रचनात्मक शक्ति पाएंगे।

सब कुछ बनाया जाना था

- प्यार का बंधन,

- सर्वोच्च महिमा और प्राणियों के बीच अनुग्रह का एक चैनल।

"लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया होगा।

-प्यार के इन बंधनों के लिए और

- अनुग्रह के इन चैनलों के लिए।

नतीजतन, भगवान को सृष्टि को निलंबित करना पड़ा होगा जिसे प्राणियों द्वारा सराहा नहीं गया होगा।

हालाँकि, चूंकि मेरी मानवता ने इसकी इतनी अच्छी तरह से सराहना की होगी और,

-कि सब सृष्ट वस्तुओं और सब मनुष्यों के नाम पर,

वह प्रभु को सभी कृतज्ञता और सभी अपेक्षित प्रेम प्रस्तुत करने वाला था,

-उन्होंने खुद को अपने अन्य बच्चों के बुरे पक्षों से नहीं रुकने दिया।

इस प्रकार, अपनी सबसे बड़ी संतुष्टि के लिए, उन्होंने आकाश को खोल दिया,

असंख्य, सुशोभित और विभिन्न सितारों के साथ इसे सुशोभित करना

जो मेरी मानवता और सर्वोच्च व्यक्ति के बीच प्रेम के चैनलों की तरह होगा।

प्रभु ने आकाश की ओर देखा।

वह अपनी परी सामंजस्य और प्रेम के संचार को देखकर प्रसन्न होता है जिसे वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच बनाए रखेगा।

उसने जारी रखा

एक साधारण शब्द के साथ सूर्य को सर्वोच्च सत्ता के स्थायी मुखपत्र के रूप में बनाना,

- इसे प्रकाश और गर्मी से लैस करना,

- इसे स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रखना

हावी होने, उर्वरित करने, गर्म करने और सब कुछ रोशन करने में सक्षम।

अपनी चमकीली और खोजी आँख के साथ, ऐसा लगता है कि सूर्य हर किसी से कहता है: "मैं ईश्वरीय सत्ता का सबसे सिद्ध उपदेशक हूं।

मुझे देखें और आप इसे पहचान लेंगे:

वह सर्वोच्च प्रकाश और अनंत प्रेम है। यह सब कुछ जीवन देता है;

इसे कुछ भी नहीं चाहिए; इसे कोई छू नहीं सकता।

मुझे देखो और तुम इसे पहचान जाओगे।

मैं उनकी छाया हूं, उनकी महिमा का प्रतिबिंब और उनका शाश्वत प्रवक्ता हूं।"

ओह! मेरी मानवता और सर्वोच्च महामहिम के बीच प्रेम और संबंधों के कौन से सागर खुल गए हैं!

इस प्रकार, जो कुछ भी आप देखते हैं, यहां तक कि खेतों में सबसे छोटा फूल, प्राणी और निर्माता के बीच प्रेम का बंधन है।

इसलिए यह सही था कि बाद वाले को प्राणियों से कृतज्ञता और बहुत प्यार की उम्मीद थी।

मेरी मानवता ने सब कुछ अपने ऊपर ले लिया है।

उन्होंने सभी की ओर से रचनात्मक शक्ति को पहचाना और पूजा की। लेकिन, इतनी अच्छाई के सामने, मेरा प्यार संतुष्ट नहीं है।

मुझे अन्य जीव भी चाहिए

-पहचानना,

-कैसा है

-प्यार

यह रचनात्मक शक्ति

और जहाँ तक संभव हो एक प्राणी के लिए,

-इन रिश्तों में भाग लें जो यहोवा ने पूरे ब्रह्मांड में फैलाया है e

- सभी की ओर से क्रिएटिव पावर को श्रद्धांजलि।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन टैक्सों का भुगतान कौन कर सकता है? आत्माएं जो मेरी वसीयत में रहती हैं।

जैसे ही वे मेरी इच्छा में प्रवेश करते हैं, वे इसमें सर्वोच्च महामहिम के सभी कार्य पाते हैं।

और चूंकि मेरी इच्छा हर चीज में और हर चीज में पाई जाती है, इसलिए ये कार्य

-हर चीज में और हर चीज में गुणा किया जाता है और

- वह सबके नाम पर महिमा, सम्मान, आराधना और प्रेम दे सकता है »।

यह कहने में सक्षम हुए बिना कि यह कैसे किया जा सकता है, मैंने इस दिव्य इच्छा में प्रवेश किया। हमेशा अपने प्यारे जीसस के साथ, मैंने सृजन के कार्य में सर्वोच्च महामहिम को देखा।

हे भगवान, क्या प्यार!

बनाई गई हर चीज प्राप्त हुई है

- प्यार की छाप,

- निर्माता के साथ संवाद करने की कुंजी e

- भगवान के बारे में बोलने के लिए मूक भाषा। लेकिन किससे बात करें?

कृतघ्न प्राणी को!

मेरी छोटी सी बुद्धि खो गई जब मैंने देखा

- निर्माता के साथ संचार के कई साधन,

- इससे निकलने वाला अपार प्रेम

वह प्राणी जो इन सब वस्तुओं को विदेशी मानता है।

यीशु और मैं, हर एक में बढ़ते हुए,

- हमने सभी की ओर से रचनात्मक शक्ति की पूजा, धन्यवाद और मान्यता दी।

इस प्रकार यहोवा ने सृष्टि के लिए उसके कारण महिमा प्राप्त की। तब यीशु गायब हो गए और मैंने अपने शरीर को फिर से भर दिया।

मैंने अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखा। धन्य यीशु ने आकर **मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी,

तुमने अभी तक मनुष्य की सृष्टि के बारे में कुछ नहीं कहा है,

वह, सृष्टि की उत्कृष्ट कृति

जिसमें यहोवा ने उसका सारा प्रेम, उसकी शोभा और उसका ज्ञान बूँद-बूँद नहीं, बल्कि नदियों में बहा दिया है।

अपने प्रेम के अतिरेक में उसने स्वयं को मनुष्य के केंद्र में रखा। हालाँकि, वह अपने योग्य घर खोजना चाहता था।

तब उन्होंने क्या किया।

अपनी सर्वशक्तिमान सांस के साथ, उन्होंने उसे " *अपनी छवि और समानता में*" बनाया।

(जीएन, 1,26),

इसे उसके सभी गुणों से संपन्न, प्राणियों के अनुकूल,

उसे थोड़ा भगवान बना रहे हैं।

आप सृष्टि में जो कुछ भी देखते हैं वह मनुष्य की तुलना में कुछ भी नहीं है।

ओह! उसने अपनी आत्मा को कितने सुंदर आकाश, तारे और सूर्य दिए हैं! कई अलग-अलग सुंदरियां और सामंजस्य!

उसे वह आदमी इतना सुंदर लगा कि उसे उससे प्यार हो गया।

इस कौतुक से ईर्ष्या जो उसने अभी पैदा की थी, वह उसका रक्षक बन गया और यह कहकर अपने अधिकार में ले लिया:

" मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ बनाया है।

मैं तुम्हें हर चीज की सरकार देता हूं
सब कुछ तुम्हारा होगा और तुम मेरे हो।

हालाँकि, आप सब कुछ नहीं समझ पाएंगे:
- प्रेम के समुद्र जिनमें से आप वस्तु हैं,
- अपने निर्माता के साथ आपका अनन्य और अंतरंग संबंध e
- आपके निर्माता के लिए आपकी समानता।"

आह! मेरे दिल की बेटी,
*अगर प्राणी (*मनुष्य*)* इसे जानता था
- उसकी आत्मा कितनी सुंदर है,
- इसमें कितने दैवीय गुण हैं *e*
- यह सुंदरता, शक्ति और प्रकाश में सभी निर्मित चीजों को कैसे पार करता है*!*

यह कहा जा सकता है कि उनकी आत्मा एक छोटा भगवान और एक छोटा ब्रह्मांड है। ओह! अगर वो समझ गई,
- आप कितना अधिक सराहना करेंगे e
वह पाप से लथपथ नहीं होगी,
- ऐसी दुर्लभ सुंदरता,
-एक विलक्षण तो रचनात्मक शक्ति का प्रतिनिधि!

परंतु
- लगभग अज्ञानी जहाँ तक वह इसे देखता है e
जीव हजार घिनौनी चीजों से गंदा होता रहता है,
- इस प्रकार अपने निर्माता के काम को दर्शाते हुए,
- इतना कि इसे शायद ही पहचाना जा सके।

सोचो मेरा दर्द क्या है।

मेरी इच्छा में प्रवेश करो और मेरे साथ यहोवा के सिंहासन के सामने आओ

-अपने सभी भाइयों को इतना कृतघ्न और

- उनके स्थान पर मान्यता के कृत्यों को लेने के लिए जिन्हें उन्हें अपने निर्माता *को संबोधित करना चाहिए "*।

इस प्रकार, एक पल में, हमने खुद को सर्वोच्च महामहिम के सामने पाया। सभी की ओर से हमने उनसे व्यक्त किया है

- हमारा प्यार, हमारा धन्यवाद और हमारी आराधना,

टोही पर

- हमें इस तरह के अतिरिक्त प्यार के साथ बनाया है और

- हमें इतने सारे गुणों से संपन्न करने के लिए।

जब यह आता है,

धन्य यीशु लगभग हमेशा मुझे बुलाते हैं

- मरम्मत करने के लिए या

- प्राणियों के कृत्यों के लिए दैवीय कृत्यों को प्रतिस्थापित करना।

आज उसने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

पृथ्वी से कैसी दुर्गन्ध निकलती है! वह मुझे उससे दूर भागने के लिए मजबूर करती है।

हालाँकि, आप मुझे ताजी हवा दे सकते हैं। तुम्हे पता है कैसै?

मेरी वसीयत में अभिनय।

जब तुम मेरी वसीयत में काम करते हो,

-आप मुझे एक दिव्य वातावरण देते हैं जहां मैं सांस ले सकता हूं, इस प्रकार पृथ्वी पर जगह ढूंढ सकता हूं।

और चूंकि मेरी वसीयत *हर जगह घूमती है,* मुझे लगता है कि आप हर जगह *मेरे लिए जो हवा बनाते हैं । उस बुरी हवा को दूर करो जो जीव मुझे देते हैं "*।

थोड़ी देर बाद वह लौटा और जोड़ा:

"मेरी बेटी, *क्या अंधेरा है!*

पृथ्वी मुझे एक काले लबादे से ढकी हुई प्रतीत होती है। इतना अंधेरा है कि जीव नहीं देखते:

-या अंधे हैं

-या देखने के लिए रोशनी नहीं है।

मुझे अपने लिए केवल दिव्य वायु ही नहीं, बल्कि प्रकाश भी चाहिए।

तदनुसार

मेरे वसीयतनामे में आपके कार्यों को लगातार किया जा सकता है। न केवल वे आपके यीशु के लिए एरिया बनाएंगे,

लेकिन प्रकाश का भी।

तुम मेरी प्रतिध्वनि हो,

-मेरे प्यार और मेरे अपने प्रकाश का प्रतिबिंब।

वास्तव में, मेरी इच्छा में अभिनय,

तुम मेरे लिए तम्बू खड़ा करोगे।

आपके विचारों, आपकी इच्छाओं, आपके शब्दों, आपकी क्षतिपूर्ति और आपके

प्यार के कृत्यों के लिए, मेरी इच्छा से पवित्रा, आपके द्वारा कई यजमान जारी किए *जाएंगे।*

ओह! मेरे प्यार को इस तरह क्या पुतला मिलेगा!

अब मैं बिना किसी रुकावट के सभी चीजों पर पूरी तरह से लगाम लगाऊंगा। मेरे पास वे सभी तम्बू होंगे जो मुझे चाहिए।

मेजबान असंख्य होंगे।

हर समय हम एक साथ संवाद करेंगे और मैं चिल्लाऊंगा: "आजादी, आजादी!

सच्ची स्वतंत्रता का स्वाद लेने के लिए मेरी इच्छा से आओ!"

मेरी मर्जी से कितनी विघ्नों से रूबरू नहीं होती रूह ! मेरी वसीयत में, दूसरी ओर, *वह स्वतंत्रता पाता है।*

आत्मा मुझसे जितना चाहे प्यार कर सकती है और मैं उससे कहता हूं:

" जो तुम्हारे लिए मानव रह गया है उसे छोड़ दो, जो परमात्मा है उसे ले लो।

मैं अपनी संपत्ति से मतलबी या ईर्ष्यालु नहीं हूं, मैं चाहता हूं कि आप सब कुछ ले लें। मुझे बेतहाशा प्यार करो। मेरा सारा प्यार ले लो।

मेरी शक्ति और मेरी सुंदरता को बनाए रखें।

आप जितना अधिक लेंगे, आपका यीशु उतना ही अधिक प्रसन्न होगा »।

पृथ्वी मुझे कुछ तम्बू प्रदान करती है। मेजबानों की गिनती लगभग की जा सकती है। अपवित्रता भी है, बेअदबी भी हैं।

ओह! मेरा प्यार कैसे आहत और बाधित है! मेरी वसीयत में, हालांकि, कुछ भी बाधित नहीं है।

अपराध की छाया नहीं होती और जीव मुझे देता है

-दिव्य प्रेम,

-दिव्य मरम्मत ई

- कुल मैच।

इसके अलावा, वह मेरे साथ, मानव परिवार की सभी बुराइयों को ठीक करने के लिए प्राणियों के स्थान पर दैवीय कार्यों को करता है।

इसलिए सावधान रहो और उस जगह (जगह) को मत छोड़ो जहां मैं तुम्हें चाहता हूं।"

अपनी सामान्य अवस्था में जारी रखते हुए, मैं पूरी तरह से ईश्वरीय इच्छा में डूबा हुआ था।

मेरा हमेशा अच्छा यीशु आया और उसने मुझे अपने दिल से दबाते हुए मुझसे कहा:

"तुम मेरी इच्छा की जेठा बेटी हो। तुम मेरे लिए कितने कीमती हो! इतना अधिक कि *मैंने तुम्हारे लिए एक दिव्य ईडन तैयार किया है* ,

- इसके विपरीत यह आपके पहले माता-पिता के लिए था जिन्हें एक सांसारिक ईडन में रखा गया था।

इस सांसारिक ईडन में, पूर्वजों के बीच मिलन मानवीय था। वे मज़े कर सकते थे

- पृथ्वी की सबसे खूबसूरत प्रसन्नता और,

-कुछ क्षणों में, मेरी उपस्थिति के।

दिव्य ईडन में, मिलन दिव्य है । क्या आपको पसंद है

- सबसे सुंदर स्वर्गीय प्रसन्नता ई

- मेरी उपस्थिति के बारे में जितना आप चाहते हैं।

मैं तुम्हारा जीवन हूं और हम एक साथ साझा करेंगे

-मीठा,

-खुशी और,

- यदि आवश्यक हो, पीड़ा।

स्थलीय ईडन में,

- दुश्मन सेंध लगाने में सक्षम था और पहला पाप किया गया था। दिव्य ईडन में, प्रवेश द्वार बंद है

जुनून और कमजोरियों के साथ नरक में।

शैतान खुद को वहां नहीं दिखाना चाहता, यह जानते हुए कि मेरी इच्छा उसे नरक की आग से ज्यादा जला देगी। मेरी इच्छा की अनुभूति ही उसे अस्त-व्यस्त कर देती है।

आगे

मेरी इच्छा में किए गए कार्य अपार, अनंत और शाश्वत हैं। वे सब कुछ और सभी को गले लगाते हैं!"

मैंने यह कहकर बाधित किया:

"मेरा प्यार,

जितना अधिक तुम मुझसे ईश्वरीय इच्छा के बारे में बात करते हो, मैं उतना ही अधिक भ्रमित और भयभीत महसूस करता हूँ। मैं इस तरह के विनाश का अनुभव कर रहा हूं कि मैं नष्ट हो गया हूं और आपकी योजनाओं से मेल खाने में पूरी तरह असमर्थ हूं।"

दया से भरे हुए, उन्होंने फिर से शुरू किया:

« *यह मेरी इच्छा है जो आप में मानव को नष्ट कर देती है।*

आपको डरने के बजाय खुद को इसकी विशालता में झोंकना होगा। तुम्हारे लिए मेरी योजनाएँ महान, महान और दिव्य हैं।

मेरी वसीयत में जीवन के बाद सृष्टि का काम है। यह जीवन मानव नहीं दिव्य है।

यह मेरे प्यार का सबसे बड़ा प्रकोप है,

-यह प्यार कि मैं उन लोगों पर बरसता हूं जो मुझसे प्यार करते हैं।

मैं तुम्हें अपनी वसीयत में बुलाता हूँ

ताकि न तो तुम और न ही तुम्हारा जो पूरी तृप्ति के बिना रहे।

मेरी बेटी

-अपने डर से अपने यीशु की कार्रवाई को बाधित न करें। अपनी उड़ानें जारी रखें जहाँ मैं आपको बुलाता हूँ।"

मेरे प्यारे यीशु ने मुझे अपनी दिव्य इच्छा के बारे में जो बताया उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ और मैंने सोचा:

"यह कैसे संभव है कि आत्मा पृथ्वी से अधिक स्वर्ग में रहने के लिए आए?"

यीशु ने आकर *मुझसे कहा:*

"मेरी बेटी, जो प्राणी के लिए असंभव है वह मेरे लिए बहुत संभव है। यह सच है कि यह मेरी सर्वशक्तिमानता और मेरे प्यार की सबसे बड़ी विलक्षणता है, लेकिन जब मुझे कुछ चाहिए, तो मैं इसे कर सकता हूं।

जो मुश्किल लग सकता है वह मेरे लिए आसान है।

हालांकि

-मुझे प्राणी की "हां" चाहिए और

- मैं इसके साथ जो कुछ भी करना चाहता हूं, उसे खुद को एक नरम मोम की तरह उधार देना चाहिए।

मेरी वसीयत में निश्चित रूप से रहने के लिए किसी प्राणी को बुलाने से पहले आपको पता होना चाहिए कि,

- *मैं इसे पहले रुक-रुक* कर कहता हूं,

-मैं उससे सब कुछ छीन लेता हूं, ई

- मैं उसे किसी तरह का निर्णय भुगतना पड़ता हूं।

वास्तव में, मेरे विल में

- निर्णय के लिए कोई जगह नहीं है,

- मुझमें सभी अपरिवर्तनीय हैं।

मेरी वसीयत में प्रवेश करने वाली हर चीज निर्णय के अधीन नहीं है। मैं खुद को कभी जज नहीं करता।

अक्सर *मैं जीव को शारीरिक रूप से मरवा देता हूं और फिर उसे वापस जीवन में लाता हूं* ।

वह ऐसे रहता है जैसे वह रहता ही नहीं।

उनका दिल स्वर्ग में है और धरती पर रहना उनकी सबसे बड़ी शहादत है।

कितनी बार मैंने तुम्हारे साथ ऐसा नहीं किया।

मेरे अनुग्रह की श्रृंखला भी है, मेरे बार-बार आने की (जैसे कि मैंने तुम्हें बहुत कुछ दिया है)।

सब कुछ तुम्हें मेरी इच्छा के विशाल सागर में रहने के लिए तैयार करने के लिए था। इसलिए झिझकने की कोशिश न करें, बल्कि *आगे बढ़ें* ।"

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था,

मेरे हमेशा दयालु यीशु ने मुझे दृढ़ता से आकर्षित किया

- उसकी इच्छा के अथाह रसातल में।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी, देखो

- कैसे मेरी मानवता दिव्य इच्छा में नहाया था e

-तुम्हें मेरी नकल कैसे करनी चाहिए।"

उस पल मुझे ऐसा लगा कि मैंने अपने क्षितिज पर चमकते सूरज की तरह एक सूरज देखा है, लेकिन इतना बड़ा है कि पृथ्वी की पूरी सतह को पार कर सकता है।

यह कहां खत्म हुआ, कुछ नहीं कहा जा सकता। उसकी किरणें ऊपर-नीचे होती रहीं।

उन्होंने एक अद्भुत सद्भाव पैदा किया और हर जगह घुस गए।

इस सूर्य के केंद्र में, मैंने अपने भगवान की मानवता को देखा। उन्होंने इस सूरज पर भोजन किया, जो उनका पूरा जीवन था।

उसने उससे सब कुछ प्राप्त किया और उसे सब कुछ वापस दे दिया। लाभकारी बारिश की तरह,

यह सूर्य पूरे मानव परिवार पर बरसा है। क्या मनमोहक दृश्य है!

उसके बाद, मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा* :

"क्या तुमने देखा है कि मैं तुम्हें कैसे चाहता हूँ?"

सूरज मेरी इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है

जिसमें मेरी मानवता अपने सार रूप में नहाती है। मुझे अपनी वसीयत से सब कुछ मिलता है

कोई भोजन मुझ में प्रवेश नहीं करता है

- एक विचार, एक शब्द या एक सांस भी नहीं जो मेरी इच्छा से नहीं आती है ।

इसलिए यह सही है कि वह उसे सब कुछ वापस दे देता है।

इसलिए मैं तुम्हें अपनी इच्छा के केंद्र में चाहता हूं,
जिसे तुम ही खिलाओगे।

सावधान रहें कि अन्य खाद्य पदार्थ न खाएं। आप अपना बड़प्पन खो देंगे।
तुम अपने आप को एक रानी की तरह नीचा दिखाओगे जो झुक जाएगी
- गंदा भोजन करना, उसके योग्य नहीं।

इसके अलावा, जो कुछ आप लेते हैं, आपको तुरंत वापस लौटना चाहिए, ताकि
आप केवल मुझसे प्राप्त करें और मुझे वापस कर दें।

इस तरह आपके और मेरे बीच एक आकर्षक तालमेल बन जाएगा।"

मैं अपनी गरीब अवस्था में था जब मेरा प्यारा यीशु कुछ समय के लिए दिखाई दिया। उन्होंने मुझे अपने दिल के बहुत करीब रखा और मुझसे कहा:
"मेरी बेटी,
यदि पृथ्वी न हिलती और न पहाड़ होते,
वह सूरज का अधिक आनंद लेती थी, क्योंकि वह हमेशा दिन के उजाले में रहती थी।

इसकी गर्मी हर जगह समान होगी और इसलिए यह अधिक फलदायी होगी।
चूंकि यह लगातार गतिमान है और उच्च और निम्न स्थानों से बनता है, इसलिए इसे सूर्य का प्रकाश और गर्मी समान रूप से प्राप्त नहीं होती है।

इसके फर्श का एक हिस्सा एक बार और दूसरा हिस्सा फिर से काला पड़ जाता है। कुछ भागों को बहुत कम प्रकाश प्राप्त होता है।

पहाड़ों के कारण कई खेत शुष्क रहते हैं जो सूर्य की रोशनी और गर्मी को गहराई से प्रवेश करने से रोकते हैं।

और कितने नुकसान!

मेरी बेटी

मेरी वसीयत में नहीं रहने वाली आत्मा स्थलीय सतह की छवि में है। उसके मानवीय कार्य उसे निरंतर गति में रखते हैं।

इसकी कमजोरियां, जुनून और खामियां हैं

-पहाड़ ई

- डूबना

जहां वाइस की मांद बनती है।

इसकी हलचलें इसके क्षेत्रों में अंधेरे और ठंडक का कारण बनती हैं।

प्रकाश की एक छोटी सी मात्रा ही उस तक पहुँचती है क्योंकि उसके जुनून के पहाड़ उसे अवरुद्ध कर देते हैं।

कितने दुख हैं!

इसके बजाय मेरी वसीयत में रहने वाली आत्मा गतिहीन रहती है।

माई विल अपने जुनून के पहाड़ों को समतल कर देता है ताकि यह पूरी तरह से समतल हो जाए।

इस प्रकार मेरी वसीयत का सूरज उस पर चमकता है जैसा वह चाहती है। कोई छिपा हुआ स्थान नहीं है जहां इसकी रोशनी नहीं चमकती है।

फिर आपको आश्चर्य क्यों होना चाहिए कि मैं अपनी वसीयत में रहने वाली आत्मा को वापस देता हूं?

-संतो एक दिन में

केवल सौ साल के लिए उस आत्मा के लिए जो वहां नहीं रहती?"

जब मैं अपनी सामान्य अवस्था में था,

मैंने खुद को अपने शरीर से बाहर पाया और एक मृतक पूर्व विश्वासपात्र को देखा।

निम्नलिखित विचार मेरे दिमाग को पार कर गया:

"इस बात के बारे में कि आपने विश्वासपात्र को नहीं बताया, उससे पूछें कि क्या आप इसे कहने के लिए बाध्य हैं या नहीं और इसे लिख लें"।

तो मैंने उससे सवाल किया।

उसने उत्तर दिया: "ज़रूर, आपको करना होगा!" बाद में, उन्होंने जोड़ा:

"एक बार, आपने मेरे लिए एक सुंदर हिमायत की। यदि आप केवल जानते थे

- तुमने मेरे साथ जो अच्छा किया,

- ताजगी मैंने महसूस की ई

- जितने साल तुमने मुझे छीन लिया!"

मैंने कहा: "मुझे याद नहीं है।

मुझे याद दिलाएं कि मेरे लिए इसे फिर से करना कैसा था।"

यह कहता है: "आपने अपने आप को ईश्वरीय इच्छा में डुबो दिया है और आपने ले लिया है

उसकी शक्ति,

उसके प्रेम की विशालता ,

परमेश्वर के पुत्र के कष्टों का अपार मूल्य e

दिव्य गुण,

और मुझ पर उंडेल दिया।

मैं तब डूब गया था

-परमात्मा के प्रेम के स्नान में,

-उसकी सुंदरता के बाथरूम में,

-यीशु के लहू के स्नान में e

-सभी दिव्य गुणों के स्नानघर में।

मेरे लिए जो अच्छा हुआ वह कौन कह सकता है? मेरे लिए फिर से करो, मेरे लिए फिर से करो!"

जैसे ही उसने मुझे यह बताया, मैं अपने शरीर में वापस चला गया। अभी इस वक्त

पवित्र आज्ञाकारिता के अनुरूप ई

पूरी उलझन और विरोध में, मैं वही कहूंगा जो मैंने नहीं कहा और लिखा है।

मुझे याद है एक दिन मुझसे बात करते हुए

- उसकी सबसे पवित्र इच्छा ई

- उन कष्टों के बारे में जो उनकी दिव्यता ने उनकी सबसे पवित्र मानवता के अधीन किया है, मेरे प्यारे यीशु ने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

जैसा कि आप मेरी वसीयत में रहने वाले पहले व्यक्ति हैं,

मैं चाहता हूं कि आप दुख में भाग लें

जो मेरी वसीयत में मेरी मानवता ने मेरी दिव्यता से प्राप्त की है।

हर बार जब तुम मेरी वसीयत दर्ज करते हो,

मेरी दिव्यता ने मुझे जो कष्ट दिए हैं, वे तुम पाओगे

वे नहीं जो मुझे प्राणियों द्वारा दिए गए हैं,

भले ही वे भी शाश्वत इच्छा से इच्छा रखते हों।

इस तथ्य के कारण कि वे मुझे प्राणियों द्वारा दिए गए थे, ये कष्ट समाप्त हो गए थे।

इसलिए, मैं तुम्हें अपनी वसीयत में चाहता हूं,

जिसमें तुम दुख पाओगे

अनगिनत ई

अनंत।

तुम्हारे पास होगा

- नाखूनों की अनंतता,

- कांटों के कई ताज, बार-बार मौत,

- मेरे, दिव्य और अपार के समान असीमित कष्ट, जो सभी भूत, वर्तमान और भविष्य के प्राणियों तक फैलेंगे।

आप सबसे पहले मेरे साथ पिता के हाथों बलि किए गए मेमने होंगे

फिर से जीना

फिर से बलिदान हो

उन लोगों की तरह सीमित संख्या में नहीं जिन्होंने मेरी मानवता के घावों को साझा किया है,

लेकिन जितनी बार मेरी दिव्यता ने मेरे लिए इच्छा की।

तुम मेरे साथ अनन्त हाथों से क्रूस पर चढ़ाए जाओगे,

मेरे अपार, शाश्वत और दिव्य कष्टों की छाप प्राप्त करना।

हम अपने आप को प्रभु के सिंहासन के सामने, माथे पर अमिट अक्षरों में लिखे हुए प्रस्तुत करेंगे:

"हम अपने भाइयों को जीवन देने के लिए मरना चाहते हैं।

हम उन्हें अनन्त पीड़ा से मुक्त करने के लिए पीड़ित होना चाहते हैं। "क्या आप खुश नहीं हैं?"

मैंने उससे कहा: "मेरे यीशु,

-मैं बहुत अयोग्य महसूस करता हूँ और

-मुझे लगता है कि आप मुझे चुनने में बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं, मुझे बेचारा। आप जो कर रहे हैं उसके बारे में ध्यान से सोचें"।

मुझे बाधित करते *हुए उन्होंने कहा* :

"आप क्यों डरते हैं?

हाँ, हाँ, मैंने उन बत्तीस वर्षों से तुम्हारा ख्याल रखा है, जिन्हें मैंने तुम्हें बिस्तर पर रखा है।

मैंने तुम्हें कई परीक्षाओं से अवगत कराया है, यहाँ तक कि मृत्यु भी। मैंने सब कुछ तौला।

अगर मैं गलत हूं, तो यह आपके जीसस की गलती होगी जो आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते बल्कि केवल बहुत अच्छा कर सकते हैं।

बल्कि, जान लें कि मेरे पास यह होगा

- सम्मान और

-वैभव

मेरी वसीयत में कलंकित पहली आत्मा की ».

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था,

मेरे हमेशा दयालु यीशु ने मुझे अपनी सबसे पवित्र इच्छा की विशालता में आकर्षित किया।

वहाँ वह अपनी स्वर्गीय माता के गर्भ में उनके गर्भाधान के समय देखा गया था। हे भगवान, प्रेम का क्या रस है!

उसने मुझे बताया:

"मेरी इच्छा की बेटी, आओ और भाग लो

पहली पीड़ा ई

पहली मौत के लिए

कि मेरी छोटी सी मानवता को मेरे गर्भाधान के क्षण से ही मेरी दिव्यता से प्राप्त हुआ है।

उस पल में *मैंने गर्भधारण किया*

सभी भूत, वर्तमान और भविष्य की आत्माओं के साथ- साथ

कष्टों और मौतों के लिए मुझे उनके लिए सहना होगा।

मुझे सब कुछ अपने आप में समाहित करना था:

आत्माएं,

पीड़ा और

मौत जिससे हर एक को गुजरना होगा।

मैं अपने पिता को बताना चाहता था:

" पिताजी, प्राणियों को मत देखो, बस मुझे देखो। मुझ में तुम उन सभी को पाओगे। मैं प्रत्येक के लिए कृपया करूँगा। मैं तुम्हें वह सब कष्ट दूंगा जो तुम चाहोगे।

यदि तुम चाहते हो कि मैं हर एक के लिए मृत्यु भोगूं, तो मैं लूंगा। मैं सब कुछ स्वीकार करता हूं, जब तक आप सभी को जीवन देते हैं ।"

और कैसे मेरी इच्छा में सभी आत्माएं और सभी चीजें शामिल हैं

न केवल अमूर्त रूप से या जानबूझकर, बल्कि वास्तव में - प्रत्येक मुझ में मौजूद था और मेरे साथ पहचाना गया था ।

मैं प्रत्येक के लिए मर गया।

और मैंने हर एक के कष्ट सहे हैं।

मुझे इतनी पीड़ा और मृत्यु का अनुभव करने के लिए एक दिव्य शक्ति और इच्छा की आवश्यकता थी।

तो, जिस क्षण यह कल्पना की गई थी,

मेरी नन्ही मानवता को दर्द और मौत का सामना करना पड़ा।

सभी आत्माएं मुझमें तैरती हैं जैसे कि एक विशाल महासागर में, स्वयं को बनाते हुए

-मेरे सदस्यों के सदस्य,

- मेरे खून का खून,

- मेरे दिल का दिल।

कितनी बार मेरी माँ ने महसूस नहीं किया

-मेरी पीड़ा ई

-मेरे मृत और

मेरे साथ नहीं मरा,

जिसने मेरी मानवता में प्रथम स्थान प्राप्त किया!

अपनी माँ की ममता में अपनी प्रतिध्वनि ढूंढ़ना मेरे लिए कितना प्यारा था! वे गहरे रहस्य हैं, जहां उन्हें समझने में असमर्थ, मानव बुद्धि खो जाती है।

इसलिए भाग लेने के लिए मेरी वसीयत में आएं

-पीड़ित ई

-मृतकों को

कि मैं अपने गर्भाधान के क्षण से सहन कर रहा हूं। इस तरह आप जो मैं आपको बता रहा हूं उसे बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।"

मैं कैसे समझा नहीं सकता।

लेकिन मैंने खुद को अपनी रानी माँ के गर्भ में पाया।

वहाँ मैं बच्चे को यीशु को इतना छोटा और फिर भी सब कुछ युक्त देख पा रहा था।

उसके हृदय से प्रकाश का एक डंक उतरा और मेरे पास पहुंचा।

"जब इस डंक ने मुझमें प्रवेश किया, तो मुझे लगा कि यह मुझे मार रहा है और,

-जब वह सेवानिवृत्त हुए, तो जीवन मेरे पास वापस आ गया।

इस डंक के हर स्पर्श ने मुझे इतना तेज दर्द दिया कि मैंने महसूस किया

- नष्ट

- आप वास्तव में मर जाते हैं।

फिर, उसी स्पर्श से, मैं पुनर्जीवित महसूस कर रहा था।

मेरे पास वास्तव में इन बातों को समझाने के लिए सही शब्द नहीं हैं। इसलिए मैं यहीं रुकता हूं।

मुझे लगा कि मेरा गरीब दिमाग डूबा हुआ है

मेरी तरह यीशु के कष्टों में।

चूँकि मुझे बताया गया था कि उसके लिए इतना दर्द और मृत्यु सहना असंभव है, मेरे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

मेरी इच्छा सब कुछ कर सकती है।

यह काफी है कि मैं चाहता हूं कि एक बात सच हो जाए।

यदि ऐसा नहीं होता, तो मेरी इच्छा शक्ति सीमित होती, इस तथ्य के विपरीत कि मुझमें सब कुछ अनंत है।

मैं जो चाहता हूं, करता हूं।

आह! मुझे प्राणियों द्वारा कितना कम समझा जाता है और, परिणामस्वरूप, प्यार नहीं किया जाता है! मेरी मानवता में आओ और मैं तुम्हें अपने हाथों से देखूंगा और छूऊंगा जो मैं तुमसे कहता हूं »।

तब मैंने खुद को यीशु की मानवता में पाया, उनकी दिव्यता और उनकी शाश्वत इच्छा से अविभाज्य। उसकी वसीयत ने खुद को बहुत दोहराया है

-मौत का,

-कष्ट,

- पलकें और पलकें ई

- बिना कांटों के बड़ी आसानी से चुभता है,

जिस तरह उसने एक फिएट से लाखों सितारे बनाए,

-उसे सितारों के रूप में कई फिएट उच्चारण करने की आवश्यकता के बिना।

एक फिएट ही काफी थी और आकाश लाखों तारों से सुशोभित था।

तो यह हमारे प्रभु की परम पवित्र मानवता के आकाश में था, जहां एक फिएट का, ईश्वरीय इच्छा ने जितनी बार चाहा जीवन और मृत्यु की रचना की।

इसलिए मैंने खुद को यीशु में उस समय पाया जब उन्होंने **दिव्य हाथों से कोड़े मारे** ।

इतना ही काफी था कि दैवीय इच्छा उसे इसके लिए चाहती थी,

- अत्याचारी ई

- बिना पलकों के,

उसकी पवित्र मानवता का मांस

- अलग हो जाता है और गहरे आँसू झेलता है।

उनकी इंसानियत को इस हद तक चकनाचूर कर दिया गया है

जिस कोड़े से यहूदियों ने उसे वश में किया

- अपेक्षाकृत सिर्फ एक छाया थी।

इसके अलावा, क्योंकि ईश्वरीय इच्छा यह चाहती थी, उसकी मानवता ने धीरे-धीरे खुद को फिर से संगठित कर लिया।

मैंने यीशु के इन कष्टों में भाग लिया।

ओह, मैंने इसे कैसे ठीक किया

ईश्वरीय इच्छा हमें मरने के लिए मजबूर कर सकती है और फिर जितनी बार चाहे उतनी बार जी सकती है!

हे भगवान, ये हैं

- अकथनीय बातें,

- प्यार की अधिकता ई

- निर्मित दिमागों के लिए लगभग अकल्पनीय रहस्य!

इन कष्टों को सहने के बाद,

मैंने महसूस किया कि मैं जीवन में लौटने और अपनी इंद्रियों के उपयोग में असमर्थ हूं।

मेरे **धन्य यीशु ने मुझसे कहा** :

"मेरी इच्छा की बेटी,

मेरी इच्छा ने तुम्हें पीड़ा और मृत्यु दी है

और आपको वापस जीवन और फिर से चलने की क्षमता में लाया।

मैं अक्सर आपको अपनी दिव्यता में बुलाऊंगा ताकि आप इसमें भाग ले सकें

कई मौतों और कष्टों के लिए जो मैंने वास्तव में आत्माओं के लिए सहे हैं।

आत्माओं के लिए मेरे कष्ट वास्तविक थे, जो कोई सोच सकता है उसके विपरीत।

वे नहीं हो रहे थे

- केवल मेरे विल में

-या सभी को जीवन देने के मेरे इरादे में।

ऐसा कौन सोचेगा पता नहीं

- मेरा प्यार नहीं

- न ही मेरी इच्छा की शक्ति।

आप जो सभी के लिए झेली गई इतनी सारी मौतों की वास्तविकता को देख पाए हैं, कोई संदेह नहीं है। बल्कि ***मुझे प्यार करो,***

- सब कुछ के लिए आभारी रहें e

- तैयार रहो जब मेरी वसीयत तुम्हें बुलाएगी।"

अपनी सामान्य अवस्था में होने के कारण, मैंने अपने आप को अपने शरीर के बाहर पाया और सृजित वस्तुओं का क्रम देखा।

मेरे प्यारे **यीशु ने मुझसे कहा:**

"मेरी बेटी", आप देखिए

- सृष्टि में क्या क्रम है, क्या सामंजस्य है और

- कैसे सभी चीजें एक फिएट ऑफ द इटरनल से पैदा होती हैं!

सब कुछ एक फिएट से पैदा हुआ था,

सबसे छोटे तारे से लेकर तेज धूप तक,

सबसे छोटे पौधे से लेकर सबसे बड़े पेड़ तक,

सबसे छोटे कीट से लेकर सबसे बड़े जानवर तक। ये सब बातें एक दूसरे से कहती प्रतीत होती हैं :

" *हम महान प्राणी हैं,*

चूंकि हमारा मूल शाश्वत इच्छा है।

हम सभी एक दिव्य फिएट की मुहर द्वारा चिह्नित हैं। यह सच है

-कि हम एक दूसरे से अलग हैं,

-कि हमारे कार्य अलग हैं,

-कि हम प्रकाश और गर्मी में भिन्न हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

हमारा मूल्य समान है क्योंकि हम सभी एक दिव्य फिएट से प्राप्त होते हैं

-हमारे अस्तित्व और संरक्षण का कारण,

एक फिएट ऑफ इटरनल मैजेस्टी "।

ओह! कितनी रचना

- मेरी इच्छा की शक्ति के बारे में वाक्पटु बोलो e

- सिखाता है कि सबसे बड़ी से लेकर छोटी तक सभी चीजों का एक ही मूल्य है, क्योंकि वे सभी ईश्वरीय इच्छा से उत्पन्न होते हैं!

इस प्रकार, एक तारा सूर्य से कह सकता है:

" यह सच है

-कि आपके पास बहुत रोशनी और गर्मी है,

-कि आपका कार्य उत्कृष्ट है,

-कि आपकी संपत्ति अपार है,

-कि पृथ्वी लगभग पूरी तरह आप पर निर्भर है,

ताकि मैं आपकी तुलना में लगभग कुछ भी न करूं।

यह वही है जो परमेश्वर के फिएट ने तुम्हारे साथ किया था, लेकिन चूंकि हमारे पास एक ही मूल्य है,

हम अपने निर्माता को जो महिमा देते हैं वह वही है "।

बाद में, यीशु ने मुझसे पीड़ित स्वर में कहा:

“ मनुष्य की रचना के साथ ऐसा नहीं था।

यह भी एक दिव्य फिएट का परिणाम है, लेकिन उसके लिए यह विशेष था।

प्यार से भरपूर, मैंने उस पर सांस ली, उसे अपने जीवन से भर दिया। मैंने उसे एक कारण दिया।

मैंने उसे स्वतंत्र किया और उसे सारी सृष्टि का राजा बनाया। आपने इस सब पर क्या प्रतिक्रिया दी?

सारी सृष्टि में,

यह केवल मेरे दिल में उदासी लाया ,

केवल वह एक अप्रिय नोट बन गया।

"और आत्माओं के पवित्रीकरण के बारे में क्या? मैंने इसे पुरुषों के लिए उपलब्ध कराया

- सिर्फ मेरी सांस नहीं,

- लेकिन मेरा अपना जीवन, मेरी बुद्धि और मेरा वही प्यार। लेकिन मेरे प्यार के लिए क्या मना करता है और क्या हराता है!

मेरी बेटी, मेरी वसीयत में आओ मेरी कठिन पीड़ा को कम करने के लिए। हर इंसान के लिए खुद को प्रतिस्थापित करें

मुझे हर एक का प्यार दो

मेरे छिदे हुए दिल को ऊपर उठाओ! "

जब मेरा प्यारा जीसस आया तो मैं अपनी सामान्य अवस्था में था। बहुत थके हुए, उसने मुझसे मदद मांगी। अपने दिल को मेरे करीब लाकर उन्होंने मुझे अपने दुखों का एहसास कराया।

मुझे कोई भी मार सकता था।

लेकिन यीशु ने मुझे न मरने की ताकत दी।

मुझे देखते हुए उन्होंने कहा:

"मेरी बेटी, धैर्य!

कुछ दिनों *में,* आपके कष्ट मेरे लिए विशेष रूप से आवश्यक हैं ताकि दुनिया में *आग न लगे* ।

अभी, मैं तुम्हें और अधिक कष्ट पहुँचाना चाहता हूँ।"

तब उसने भाले से मेरा हृदय चीर डाला।

मैंने बहुत कुछ सहा, लेकिन सोच कर मुझे खुशी हुई

-कि मेरे यीशु ने मेरे साथ अपने कष्टों को साझा किया और

-कि, उसे मिली राहत के लिए,

यह लोगों को होने वाली आसन्न और भयानक विपत्तियों से बचाएगा।

इन तीव्र दर्द के कुछ घंटों के बाद, उन्होंने मुझसे कहा:

"मेरी प्यारी बेटी, तुम बहुत पीड़ित हो!

आओ और मेरी इच्छा में आराम करो; हम गरीब मानवता के लिए एक साथ प्रार्थना करेंगे ».

तो, पता नहीं कैसे, मैंने खुद को पाया

- ईश्वरीय इच्छा की विशालता में, यीशु की बाहों में, उसके पीछे वह सब कुछ दोहराते हुए जो उसने मुझसे धीमी आवाज में कहा था।

उन्होंने जो मुझसे कहा, मैं उसका अंदाजा लगाऊंगा, क्योंकि मेरे लिए सब कुछ दोहराना असंभव है। मुझे याद है कि उसकी वसीयत में मैं देख सकता था

- उसके सभी विचार,

- उसने अपनी बुद्धि से हमारे साथ जो भी अच्छा किया और

-कैसे, उसकी आत्मा से, सभी बुद्धि की कल्पना की गई थी।

लेकिन, हे भगवान, उनकी आत्माओं के जीवों ने क्या गालियां दी हैं! कितने अपराध!

मैंने उससे कहा:

"यीशु, मैं आपके विचारों में से प्रत्येक को आपके विचारों को देने के लिए आपकी इच्छा में गुणा करता हूं

एक दिव्य विचार का चुंबन,

पूजा का एक कार्य ,

दैवीय प्रेम से ओतप्रोत एक दैवीय क्षतिपूर्ति ,

मानो मैं भी एक और यीशु था

और मैं इसे सभी मनुष्यों की ओर से करना चाहता हूं,

- उनके सभी विचारों, भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए।

मैं चाहता हूं, आपकी वसीयत में, एकीकृत करने के लिए

- किन प्राणियों ने करने की उपेक्षा की और

- खोई हुई आत्माओं के विचारों के लिए भी।

मैं चाहता हूं कि प्राणियों से आपको जो महिमा मिले, वह पूरी हो, कि कुछ भी गायब नहीं है "।

उसके बाद, यीशु ने मुझे समझाया कि वह इसके लिए **हर्जाना चाहता है** ***<u>उसकी आँखें</u>*** । मैंने उससे कहा:

"यीशु,

मैं आपकी आँखों में डूबता हूँ ताकि आपको दिव्य प्रेम की उतनी ही झलकियाँ प्रदान करूँ, जितनी आपने प्राणियों के लिए की हैं।

-मैं तुम्हारे आँसुओं में पिघलता हूँ, तुम्हारे साथ प्राणियों के पापों पर रोने के लिए, तुम्हें प्रत्येक दिव्य आँसू के नाम पर देने के लिए।

मैं तुम्हें महिमा देना चाहता हूं और सभी प्राणियों की आंखों के लिए पूर्ण प्रतिशोध देना चाहता हूं।"

तब यीशु चाहता था कि मैं **मरम्मत करना जारी रखूँ**

- ***उसके मुंह,*** उसके दिल**,** उसकी इच्छाओं **आदि** के संबंध में, मुझे उसकी इच्छा में गुणा करना।

इन सबका वर्णन करने में बहुत समय लगेगा। मैं भी यहीं रुकता हूँ।

तब *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

जैसा कि आपने मेरी इच्छा में अपने प्रेम और प्रतिशोध के कार्य किए, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच इतने सारे सूर्य बन गए।

मैं केवल इन सूर्यों के माध्यम से पृथ्वी को देख सकता हूं, अन्यथा, पृथ्वी पर इतनी सारी चीजें मुझे घृणा करती हैं कि मैं इसे अब और नहीं देख सकता।

वैसे भी,

पृथ्वी अपने महान अंधकार को देखते हुए इन सूर्यों से थोड़ी रोशनी और थोड़ी गर्मी प्राप्त करती है।

तब यीशु ने मुझे प्राणियों के बीच ले लिया। मैंने वहां जो कुछ देखा, वह सब कौन कह सकता था?

उसने कड़वे स्वर में *मुझसे कहा* :

"दुनिया में क्या गड़बड़ है!

यह विकार चर्च के नेताओं के साथ-साथ नागरिक नेताओं से आता है।

उनका जीवन भ्रष्ट हितों से भरा है,

उनके पास अपने विषयों को ठीक करने की ताकत नहीं है।

वे अपने कुकर्मों से आंखें मूंद लेते हैं, क्योंकि वास्तव में, वे अपने ही कुकर्मों के लिए उन्हें ही दोषी ठहराते हैं।

यदि वे अपने विषयों को लेते हैं, तो यह केवल सतही रूप से होता है। वे स्वयं अच्छे से बसे हुए नहीं हैं।

वे इसे दूसरों में कैसे डाल सकते हैं? कितनी बार उन्होंने बुराई को अच्छाई की जगह प्राथमिकता नहीं दी है? साथ ही मैं उन्हें खास तरीके से मारूंगा।"

मैंने यीशु से कहा:

"यीशु, गिरजे के अगुवों को बख्श दो, वे पहले से ही बहुत कम हैं। यदि आप उन्हें मारते हैं, तो हमारे पास अगुवे समाप्त हो जाएंगे।"

उसने उत्तर दिया :

«क्या आपको याद नहीं है कि मैंने बारह प्रेरितों के साथ चर्च की स्थापना की थी? इसी तरह, जो बचे रहेंगे वे दुनिया को सुधारने के लिए पर्याप्त संख्या में होंगे।

दुश्मन पहले से ही उनके दरवाजे पर है,

- क्रांतियाँ पहले से ही काम कर रही हैं,

- राष्ट्र खून में तैरेंगे और उनके नेता तितर-बितर हो जाएंगे।

प्रार्थना करो और पीड़ित रहो कि दुश्मन को सब कुछ बर्बाद करने की स्वतंत्रता नहीं है "।

मैंने अपने हमेशा प्यार करने वाले यीशु की पवित्र इच्छा में खुद को विसर्जित कर दिया और उनकी कंपनी में, मेरी बुद्धि ने सृजन के कार्य पर ध्यान केंद्रित किया, हर चीज के लिए और हर चीज के लिए सर्वोच्च महामहिम को धन्यवाद और धन्यवाद दिया।

सब ढह गया, **मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:**

"मेरी बेटी, स्वर्ग बना रही है,

मैंने पहले छोटे ल्यूमिनेयर और फिर सूरज को एक बड़े ल्यूमिनेयर के रूप में बनाया, इसे एक प्रकाश दिया कि

- सभी सितारों को ग्रहण करता है और

- वह सितारों और सभी प्रकृति का राजा है।

यह मेरा रिवाज है कि मैं पहले छोटी-छोटी चीजें करता हूं और फिर प्रमुख चीजों को पूर्व की ताजपोशी के रूप में करता हूं।

सूर्य, मेरे प्रवक्ता, उन आत्माओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनकी पवित्रता मेरी इच्छा में होगी।

संत जो रहते थे

- मेरी मानवता के प्रतिबिंब में,

- मेरी वसीयत की छाया में, सितारे होंगे।

हालांकि यह बाद में आता है,

- जिन्होंने मेरी वसीयत में अपनी पवित्रता बनाई है, वे ही होंगे।

मैं छुटकारे के संबंध में इस तरह आगे बढ़ा हूं ।

मेरा जन्म बिना धूमधाम के हुआ था।

पुरुषों से पहले, मेरे बचपन में महान चीजों का वैभव नहीं था।

नासरत में मेरा जीवन इतना छिपा हुआ था कि सभी ने मेरी उपेक्षा की।

मैं सांसारिक जीवन की सबसे छोटी और सबसे सामान्य चीजों से जुड़ गया।

मेरे सार्वजनिक जीवन में एक निश्चित भव्यता थी।

हालाँकि, *मेरी दिव्यता को कौन जानता था?* कोई नहीं । सभी प्रेरितों को भी नहीं! मैं एक आम आदमी की तरह भीड़ के बीच से गुजरा,

इतना कि हर कोई कर सकता है

- मेरे करीब आओ,

- मुझसे बात करो और

- जैसा हुआ वैसा ही तुम भी मेरा तिरस्कार करते हो।"

मैंने यीशु को यह कहकर बाधित किया:

"यीशु, मेरे प्यार, ये समय कितना खुशनुमा रहा है! कितने भाग्यशाली लोग रहे हैं, जो अगर चाहते तो आपसे संपर्क कर सकते थे, आपसे बात कर सकते थे, आपके साथ रह सकते थे!"

यीशु जारी है :

"आह! मेरी बेटी, *केवल मेरी इच्छा ही सच्ची खुशी लाती है।*

वह अकेले ही आत्मा को सभी सामान प्रदान करती है, जिससे वह सच्चे सुख की रानी बन जाती है। केवल मेरी वसीयत में रहने वाली आत्माएं मेरे सिंहासन के साथ रानी होंगी क्योंकि वे मेरी इच्छा से पैदा होंगी।

मुझे यह बताना चाहिए कि मेरे आस-पास के लोग आमतौर पर खुश नहीं थे।

बहुतों ने मुझे बिना जाने मुझे देखा है

क्योंकि मेरी वसीयत उनके जीवन का केंद्र नहीं थी। केवल वही जिन्हें सुख मिला है

- मेरी इच्छा के बीज को अपने दिलों में प्राप्त करने के लिए वे मुझे उठे हुए देखने के आनंद के लिए तैयार थे।

छुटकारे का शीर्ष मेरा पुनरुत्थान था।

एक चमकते सूरज से ज्यादा, मेरे पुनरुत्थान ने मेरी मानवता का ताज पहनाया,

मेरे सभी कार्यों को चमकाता है, यहाँ तक कि सबसे छोटे को भी।

यह ऐसी भव्यता का चमत्कार था कि इसने स्वर्ग और पृथ्वी को स्तब्ध कर दिया।

पुनरुत्थान सभी वस्तुओं की नींव और पूर्णता है।

यह सभी संतों का मुकुट और महिमा होगी।

मेरा पुनरुत्थान सच्चा सूर्य है जो मेरी मानवता की महिमा करता है।

यह कैथोलिक धर्म का सूर्य है, सभी ईसाइयों की महिमा है । इसके बिना धर्म स्वर्ग के समान होता।

- बिना सूरज के, बिना गर्मी के और बिना जीवन के।

मेरा पुनरुत्थान

यह उन आत्माओं का प्रतीक है जो मेरी इच्छा में अपनी पवित्रता बनाएंगे ।

पिछली शताब्दियों के संत मेरी मानवता के प्रतीक हैं। हालांकि मेरी मर्जी पर छोड़ दिया गया,

उन्होंने उसमें लगातार अभिनय नहीं किया।

इस प्रकार उन्हें मेरे पुनरुत्थान के सूर्य की छाप नहीं मिली, बल्कि पुनरुत्थान से पहले मेरी मानवता के कार्यों की छाप मिली।

ये संत असंख्य हैं। सितारों की तरह,

वे मेरी मानवता के आकाश में एक सुंदर आभूषण बनाएंगे।

मेरी वसीयत में संत, मेरी बढ़ी हुई मानवता के प्रतीक, कम होंगे।

मेरी मौत से पहले मेरी इंसानियत को भीड़ ने देखा था। लेकिन मेरी बढ़ी हुई मानवता को बहुत कम लोगों ने देखा है,

केवल सबसे इच्छुक विश्वासी और, मैं कह सकता हूँ,

केवल वे लोग जिनके पास मेरी वसीयत में जीवन का बीज है ।

यदि उनके पास यह रोगाणु नहीं होता, तो उनके पास आवश्यक दृष्टि नहीं होती।

- मेरी गौरवशाली और बढ़ी हुई मानवता को देखें और फलस्वरूप,

-स्वर्ग में मेरे स्वर्गारोहण के दर्शक बनें।

मेरा पुनरुत्थान उन संतों का प्रतीक है जो मेरी वसीयत में रहते हैं

- क्योंकि हर क्रिया, हर शब्द, हर कदम, आदि, जो वे मेरी वसीयत में करते हैं

-एक दिव्य पुनरुत्थान,

- गौरव की छाप,

- स्वयं से बाहर निकलें ई

- देवत्व में प्रवेश।

ये आत्माएं बन जाएं तो आश्चर्य क्यों?

मेरी महिमा के सूर्य से कैसे उठे और प्रकाशित हुए? दुर्भाग्य से, कुछ ही इसके लिए तैयार होते हैं, क्योंकि पवित्रता में भी, आत्माएं स्वयं से माल चाहती हैं।

मेरी इच्छा में पवित्रता

-आत्मा का कुछ भी नहीं है, लेकिन सब कुछ भगवान से आता है।

हर चीज से छुटकारा पाने के लिए तैयार रहना बहुत चुनौतीपूर्ण है।

नतीजतन, इसे बनाने वाली कई आत्माएं नहीं होंगी ।

आप कुछ लोगों के पक्ष में हैं।

हमेशा मेरी कॉल्स के प्रति चौकस रहें और निरंतर उड़ान में रहें।"

अपनी सामान्य अवस्था में होने के कारण, मैं बहुत व्यथित था। मेरा हमेशा दयालु यीशु आया, उसने मुझे चूमा।

और, अपनी बाहों को मेरे गले में लपेटते हुए, *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, क्या बात है?

तेरी वेदना का भार मेरे हृदय पर मेरी पीड़ा से अधिक है।

बेचारी, तुमने कई बार मुझे दिलासा दिया है और मेरे कष्टों को अपने ऊपर ले लिया है। अब मैं तुम्हें सांत्वना देना चाहता हूं और तुम्हारे कष्टों को अपने ऊपर लेना चाहता हूं।"

उन्होंने मुझे अपने दिल पर पकड़ लिया और मुझे अपना शरीर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया , उन्होंने कहा :

"साहस, मेरी बेटी।

मेरी मानवता ने प्राणियों के लिए क्या किया है, यह देखने और समझने के लिए मेरी दिव्यता में आओ।"

मुझे नहीं पता कि मैं जो समझता हूं उसे कैसे समझाऊं। शब्द मुझे असफल करते हैं

मैं वही कहूंगा जो मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा था* :

"मेरी बेटी,

मेरी मानवता साधन थी

जो निर्माता और प्राणियों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। मैंने इसे हर प्राणी के नाम पर किया

उसे अपने निर्माता के प्रति जो कुछ करना था,

खोई हुई आत्माओं को छोड़े बिना, क्योंकि, हर सृजित वस्तु के लिए,

मुझे पिता को महिमा, प्रेम और पूर्ण संतुष्टि देनी थी।

कुछ आत्माएं विधाता का कर्ज चुकाने आती हैं

-हालांकि, हालांकि, कोई भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं है। ये आत्माएं अपनी महिमा को मेरे साथ जोड़ती हैं।

और वे जो कुछ भी करते हैं वह मेरी महिमा पर अंकित है।

दूसरी ओर, खोई हुई आत्माएं शुष्क अंगों के रूप में रहती हैं, जो महत्वपूर्ण तरल

पदार्थ से वंचित होती हैं, प्रत्यारोपण को स्वीकार करने में असमर्थ होती हैं।

-कि मैं उनके लिए चाहता था।

वे केवल शाश्वत अग्नि में जलने के लिए अच्छे हैं।

यही है मेरी मानवता

निर्माता और प्राणियों के बीच सामंजस्य बहाल,

अनसुने कष्टों के द्वारा उसे अपने लहू से सील कर दिया।"

मैं अभाव और कड़वाहट में डूबा हुआ महसूस कर रहा था।

केवल मेरे यीशु की इच्छा, जो मेरी ताकत और मेरा जीवन है, ने मुझे जीवित रहने की अनुमति दी है।

एक पल के लिए मेरे प्यारे यीशु ने मुझमें खुद को दिखाया।

वह बहुत व्यथित और विचारशील था और उसने अपना माथा अपने हाथों में पकड़ रखा था।

मैंने उससे कहा, "यीशु, क्या गलत है जो आपको इतना परेशान और विचारशील बनाता है?"

उसने मुझे देखते हुए *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

तुम्हारे दिल से, मैं दुनिया का भाग्य तय कर रहा हूं। पृथ्वी पर मेरा सिंहासन तुम्हारे हृदय में है।

इस सिंहासन से, मैं देखता हूं

-दुनिया, प्राणियों का पागलपन, वे खाई खोद रहे हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मैं अकेला रह गया हूं जैसे मैं उनके लिए कुछ भी नहीं हूं।

इसलिए मैं उनसे न केवल अपनी कृपा का प्रकाश, बल्कि उनके प्राकृतिक कारण का प्रकाश भी छीनने के लिए मजबूर हूं।

उन्हें भ्रमित करने के लिए और उन्हें अपनी उंगली छूने के लिए

-आदमी क्या है और

- यह क्या कर सकता है।

मैं तुम्हारे हृदय से कृतघ्न व्यक्ति को देखता हूं और मैं उसके लिए रोता और प्रार्थना करता हूं।

मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ मुझे सांत्वना दें और मेरे आंसुओं, प्रार्थनाओं और कष्टों में मेरा साथ दें।"

मैंने उससे कहा:

"बेचारे यीशु, मुझे तुमसे कितनी सहानुभूति है! ओह! हाँ! मैं रोऊँगा और तुम्हारे साथ प्रार्थना करूँगा।

परन्तु मुझे बताओ, मेरे प्रिय, यह कैसे संभव है कि मेरा हृदय पृथ्वी पर तुम्हारे सिंहासन का स्थान है,

जब इतनी अच्छी आत्माएँ हैं जिनमें तुम रहते हो और मैं इतना बुरा हूँ?"

यीशु ने जारी रखा :

"मैंने आपको केंद्र बिंदु के रूप में चुना है

क्योंकि मैंने तुम्हें अपनी वसीयत में जीने के लिए बुलाया है।

जो मेरी वसीयत में रहता है वह मुझे पूरी तरह से समाहित कर सकता है क्योंकि वह मेरे अस्तित्व के केंद्र में रहता है और मैं उसके केंद्र में रहता हूं।

मैं उसके अस्तित्व में ऐसे रहता हूं जैसे वह मेरा हो।

दूसरी ओर, जो मेरी वसीयत में नहीं रहता, वह मेरे बारे में सब कुछ स्वीकार नहीं कर सकता।

अधिक से अधिक, मैं वहाँ अपना सिंहासन बनाए बिना उसमें निवास करता हूँ।

आह! ***अगर हर कोई मेरी वसीयत में जीने के महान अच्छे को समझेगा,*** तो वे इसे

साकार करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे!

लेकिन अफसोस! इतने कम लोग इसे समझते हैं।

वे मुझसे ज्यादा अपने आप में जीते हैं"।

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था।

मैं अपने आराध्य यीशु के कष्टों के बारे में सोच रहा था, विशेषकर उन कष्टों के बारे में जो उनकी सबसे पवित्र मानवता ने अपने सांसारिक जीवन के दौरान उनकी दिव्यता के हाथों झेली थी।

मैंने अपने यीशु के हृदय की ओर आकर्षित महसूस किया

मैंने उन कष्टों में भाग लिया जो उनके दिव्यता ने उनके परम पवित्र हृदय को उनके सांसारिक जीवन के दौरान पीड़ित किया।

ये कष्ट उन कष्टों से बहुत भिन्न हैं जो उसने अपने जुनून के दौरान यहूदियों के हाथों झेले थे। वे अवर्णनीय दंड हैं।

जिस छोटे से मैंने भाग लिया, उसके लिए मैं कह सकता हूं कि मैंने एक तीव्र और कड़वी पीड़ा का अनुभव किया जिसके साथ एक दिल टूट गया जिसने वास्तव में मुझे मरने के लिए मजबूर कर दिया।

लेकिन, अपने प्रेम की विलक्षणता के द्वारा, यीशु ने मुझे फिर से जीवित कर दिया।

तब मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरे कष्टों की बेटी, यह जान लो कि यहूदियों ने मुझे जो कष्ट दिए थे, वे केवल उनकी छाया थे जो ईश्वर ने मुझे दिए थे।

इस प्रकार यह था कि देवत्व को पूर्ण संतुष्टि प्राप्त हुई।

जो व्यक्ति पाप करता है वह सर्वोच्च महामहिम का अपमान करता है,

- न केवल बाहरी रूप से,

- लेकिन आंतरिक रूप से भी।

जब वह बनाया गया था तो यह उसमें निहित दिव्य भाग को विकृत कर देता है।

पाप बनता है

-सबसे पहले इसके अंदर और,

-फिर, इसके बाहरी हिस्से में।

बहुत बार यह

- सबसे छोटा हिस्सा जो बाहरी है,

- इसमें से अधिकांश अंदर है।

जीव अक्षम थे

-मेरे इंटीरियर में प्रवेश करने के लिए e

-मुझे उनके आंतरिक पापों से पिता को किए गए अपराधों को संतुष्ट करने की अनुमति दें।

ये अपराध उनके होने के सबसे महान हिस्से को चोट पहुँचाते हैं।

- *उनकी बुद्धि,* उनकी स्मृति और उनकी इच्छा, जहां दिव्य छवि अंकित है।

फिर, इस कर्ज को कौन चुका सकता था, क्योंकि प्राणी इसके लिए अक्षम था? स्वयं देवत्व।

इसके लिए यह आवश्यक था

क्या वह मेरी मानवता के प्यार में जल्लाद बन सकता है।

देवत्व चाहते थे कि संतुष्टि पूर्ण हो,

दोनों प्राणियों के आंतरिक पापों के लिए

उनके बाहरी दोषों की तुलना में।

उस जुनून के लिए जो यहूदियों ने मुझे पीड़ित किया,

मैं पिता को बाहरी महिमा बहाल करने में सक्षम था जिससे प्राणियों ने उन्हें अपने बाहरी पापों के लिए वंचित कर दिया था।

इस जुनून के माध्यम से कि दिव्यता ने मुझे अपने पूरे सांसारिक जीवन में आंतरिक रूप से पीड़ित किया है, मैंने मनुष्य के आंतरिक पापों के लिए संतुष्ट किया है।

देवत्व के हाथों मैंने जो कष्ट सहे हैं, वे उन कष्टों से कहीं अधिक हैं जो प्राणियों ने मुझे सहे हैं।

इसे समझना मानव मन के लिए आसान नहीं है।

मनुष्य के भीतर और उसके बाहर में बहुत बड़ा अंतर है। हालाँकि, अंतर बहुत अधिक है

दिव्यता द्वारा मुझ पर किए गए कष्ट, e

मेरे पार्थिव जीवन के अन्तिम दिन उन प्राणियों ने मुझे दु:ख दिया ।

देवत्व द्वारा मुझे जो कष्ट दिए गए थे, वे थे

- क्रूर घाव,

- अलौकिक पीड़ा

मुझे मेरी आत्मा के साथ-साथ मेरे शरीर में भी बार-बार मौत दे रहा है। मेरे अस्तित्व का एक भी तंतु नहीं बचा।

यहूदियों ने मुझे जो कष्ट दिए, वे अवश्य ही कड़वे कष्ट थे, लेकिन वे घाव नहीं थे जो मुझे किसी भी क्षण मृत्यु दे सकें। केवल देवत्व में ही शक्ति और इच्छाशक्ति थी वो करें।

आह! उस आदमी ने मुझे कितना खर्च किया!

हालांकि, वह उदासीन रहता है और यह पता लगाने की कोशिश नहीं करता कि

कितना

मुझे यह पसंद आया और

मैंने उसके लिए कष्ट सहा।

कोई भी प्राणी वह सब कुछ नहीं समझ सकता जो मैंने उस जुनून में झेला जिसके लिए यहूदियों ने मुझे अधीन किया था।

एक गढ़वाली, कोई भी नहीं समझ सकता है कि मैंने दिव्यता के हाथों कितनी बड़ी पीड़ा झेली है।

इसलिए मैं बाद वाले को प्रकट करने में इतना धीमा रहा हूं।

मेरा प्यार मनुष्य में एक रास्ता खोजना चाहता है और प्यार की वापसी प्राप्त करना चाहता है।

इसलिए मैं आपको अपनी इच्छा में खुद को विसर्जित करने के लिए आमंत्रित करता हूं जहां मेरे सभी कष्ट सक्रिय हैं।

मैं आपको न केवल मेरे कष्टों में भाग लेने के लिए, बल्कि पूरे मानव परिवार के नाम पर, उनका सम्मान करने और मुझे अपना प्यार वापस देने के लिए आमंत्रित करता हूं।

मेरे साथ, प्राणियों के सभी दायित्वों के लिए, भले ही,

भगवान के महान दर्द के साथ ई

उनके सबसे बड़े दुर्भाग्य के लिए,

जीव हमें एक विचार भी नहीं देते।"

मैं अपनी खराब स्थिति को लेकर बहुत व्यथित और थोड़ा चिंतित था।

मेरे विचारों से खुद को विचलित करना चाहते हुए, *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, तुम क्या कर रही हो?"

आपके द्वारा निर्देशित आपके विचार आपको मेरी इच्छा से बाहर ले जाते हैं।

जब तक मेरी इच्छा तुममें है, दिव्य जीवन भी तुममें है।

अगर मेरी चाहत तुम में न रह जाए,

-ईश्वरीय जीवन ई के साथ ऐसा ही है

-अपने मानव जीवन में वापस। क्या बदलाव है!"

फिर, आहें भरते हुए उन्होंने *कहा* :

"आह! आप दुनिया में आने वाले विनाश को नहीं जानते हैं।

अब तक जो कुछ भी हुआ है, उसे आने वाली सजा के संबंध में एक खेल माना जा सकता है।

मैं तुम्हें सब कुछ देखने नहीं देता ताकि अपने आप पर बहुत अधिक अत्याचार न करें।

मनुष्यों के हठ को देखकर मैं मानो तुम में छिपा रहता हूं। और तुम, *मेरे साथ प्रार्थना करो और अपने विचारों को अपने आप में निर्देशित करने से इनकार करो* »।

मैंने सोचा: "यह कैसे हो सकता है कि ईश्वरीय इच्छा में किया गया एक भी कार्य सभी का भला करने की हद तक बढ़ जाता है?"

फिर, मेरे भीतर चलते हुए, यीशु ने मेरे मन को प्रबुद्ध *किया और मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, तुम सूरज को देखकर उसकी एक छवि पाओगी ।

यह अद्वितीय है और, हालांकि, यह जानता है कि कैसे गुणा करना है ताकि इसकी रोशनी और गर्मी हर चीज और सभी के लिए उपलब्ध हो।

उदाहरण के लिए, यह मनुष्य के कार्यों और चरणों को प्रकाशित करता है।

यदि वह क्रिया या पथ बदलता है, तो सूर्य का प्रकाश उसका पीछा करता है।

यह पूरे प्रकृति में भी गुणा करता है,

परिस्थितियों के अनुसार अपने लाभों को विभिन्न वस्तुओं में बांटना। जब उगता है,

- प्रकृति के सभी अलंकृत e

- रात की ठंडक पर काम करके सभी पौधों पर चाँदी की चादर की तरह फैली ओस का निर्माण करती है,

इस प्रकृति को एक ऐसा पहलू और सुंदरता प्रदान करना जो मानव टकटकी को चकित और मंत्रमुग्ध कर दे।

मनुष्य, अपनी सारी सरलता के साथ,

इसमें एक साधारण ओस की बूंद बनाने की शक्ति नहीं है।

सूरज अपनी यात्रा जारी रखता है और फूलों को उनका रंग और सुगंध देता है।

यह एक अनूठा रंग और सुगंध नहीं देता है, लेकिन प्रत्येक फूल को अपना विशेष रंग और सुगंध देता है।

इसकी गर्मी और प्रकाश के साथ, यह फलों को उनकी परिपक्वता और स्वाद देता है, प्रत्येक फल के लिए एक अलग स्वाद।

सभी पौधों को खाद और उगाएं।

इतना सब करने के बाद भी ऐसा ही रहता है।

यह इसलिए है क्योंकि यह ऊंचाइयों में रहता है कि सूर्य नीचे के सभी प्राणियों का जीवन हो सकता है।

*मेरी वसीयत में*किए गए कृत्यों का यही मामला है :

आत्मा तब मेरी इच्छा की ऊंचाइयों पर कार्य करती है ।

वहाँ से, सूर्य से अधिक, यह प्राणियों पर नज़र रखता है और उनमें जीवन का संचार करता है। यद्यपि इसकी क्रिया एक है, यह प्राणियों पर सूर्य की तरह चमकती है:

- कुछ अलंकृत करता है,

- कृपा से दूसरों को निषेचित करें,

- उनमें से कुछ को ठंड से मुक्त करें,

- कुछ के दिलों को नरम करता है,

- दूसरों के अंधेरे को दूर करता है ,

- दूसरों को प्रज्वलित और शुद्ध करता है,

प्रत्येक व्यक्ति को उसके व्यक्तिगत स्वभाव के अनुपात में आवश्यक सहायता प्रदान करना।

आपके क्षितिज पर उगता सूरज वही करता है:

- यदि मिट्टी बाँझ है, तो यह पौधों को बहुत कम विकास देती है;

- अगर फूल का बीज गायब है,

सूरज अपने पूरे प्रकाश और गर्मी के साथ कुछ भी नहीं उठा सकता। अगर आदमी काम पर न उठे तो सूरज उसे कमाने के लिए कुछ नहीं कर सकता।

संक्षेप में, सूर्य पृथ्वी की उर्वरता और मनुष्य के स्वभाव के अनुसार सृष्टि में वस्तुओं का उत्पादन करता है।

इस प्रकार, हालांकि मेरे विल में किए गए कृत्यों

- यह सभी के लिए फायदेमंद हो सकता है, वे काम करते हैं

- प्रत्येक के प्रावधानों के साथ-साथ

- मेरी इच्छा में कार्य करने वाली आत्मा के अच्छे स्वभाव के अनुपात में।

हालाँकि, मेरी इच्छा में किया गया प्रत्येक कार्य एक और सूर्य है जो सभी प्राणियों के लिए चमकता है।

तब मैंने अपने यीशु में, उसकी इच्छा में, खुद को विसर्जित करने की कोशिश की,

- इस उद्देश्य के लिए मेरे विचारों को आप में गुणा करना

-मरम्मत और

- सभी निर्मित, भूत, वर्तमान और भविष्य की बुद्धिमत्ता के लिए एकीकृत करें।

मैंने पूरे मन से यीशु से कहा:

"मैं तुम्हें अपनी आत्मा के साथ पूरे मानव परिवार के नाम पर सारी महिमा, सम्मान और क्षतिपूर्ति कैसे देना चाहता हूं,

यहां तक कि खोई हुई आत्माएं जो, अफसोस! उन्होंने तुम्हें अपनी बुद्धि नहीं दी »।

खुशी से भरे हुए, यीशु ने मेरे माथे को चूमते हुए कहा:

"इस चुंबन के साथ, मैं आपके सभी विचारों को अपने साथ सील कर देता हूं, ताकि मैं हमेशा कर सकूं

आप में सभी निर्मित आत्माओं को खोजें

उनके नाम, महिमा, सम्मान और क्षतिपूर्ति में लगातार आपसे प्राप्त करने के लिए »।

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और मेरा छोटा मन परमेश्वर की पवित्र इच्छा में खो गया था।

बिना जाने कैसे, मैं समझ गया कि मनुष्य ईश्वर को वह महिमा नहीं देता जो उसे देनी चाहिए और इसके लिए मुझे बहुत कड़वा लगा।

मुझे निर्देश देना और सांत्वना देना चाहते हैं, मेरे प्यारे यीशु ने मुझे एक बौद्धिक प्रकाश के साथ कहा:

"मेरी बेटी, मेरे सभी काम पूरे होने चाहिए। नतीजतन

अन्तिम दिन तब तक नहीं आएगा जब तक मैं प्राणियों को प्राप्त नहीं कर लेता

सभी अपेक्षित सम्मान और महिमा, जैसा कि मूल रूप से इरादा था।

जो कुछ जीव मुझे नहीं देते, दूसरे मुझे देंगे।

दूसरे में मैं उन अनुग्रहों को दुगना कर दूंगा जिन्हें पहले ने अस्वीकार कर दिया

था।

ताकि वे ऐसा कर सकें

मुझे महिमा और प्रेम का दोहरा भाग देने के लिए।

कुछ के लिए, उनके स्वभाव के अनुसार,

-मैं धन्यवाद दूंगा कि मैं आमतौर पर दस को दूंगा। दूसरों को वह अनुग्रह जो मैं सौ को दूंगा।

दूसरों को वह अनुग्रह जो मैं एक हजार को दूंगा।

दूसरों के लिए मैं एक शहर, या यहां तक कि एक प्रांत या यहां तक कि एक पूरे राज्य को अनुग्रह देता हूं।

और ये प्राणी मुझ से प्रेम रखेंगे, और दस, एक सौ, एक हजार, आदि के बदले में मेरी महिमा करेंगे। इस प्रकार सृष्टि के पक्ष में मेरी महिमा पूरी होगी।

जब मैं देखता हूं कि उसकी अच्छी इच्छा के बावजूद,

- एक प्राणी वह नहीं कर सकता जो मैं उससे उम्मीद करता हूं, मैं उसे अपनी वसीयत में खींचता हूं

वहां वह एक साधारण क्रिया को जितनी बार चाहे गुणा करने का गुण खोजता है।

यह मुझे वह सारी महिमा, सम्मान और प्रेम देने की अनुमति देता है जो अन्य प्राणियों ने मुझे देने से परहेज किया है।

इस प्रकार **मैं अपनी वसीयत में जीवन के युग के लिए स्वयं को तैयार करता हूँ।**

इस युग में सब कुछ साकार हो जाएगा

- जो पिछली पीढ़ियों ने नहीं किया है

उस प्रेम, महिमा और सम्मान के बारे में जो सृष्टि का मुझ पर बकाया है। मैं जीवों को अविश्वसनीय कृपा दूंगा।

और आपको, जिन्हें मैं अपनी इच्छा में जीने के लिए बुलाता हूं, मैं निम्नलिखित *प्रार्थना का सुझाव देता हूं* :

" यीशु,

मैं आपके चरणों में पूरे मानव परिवार की आराधना और अधीनता रखता हूं;

मैं आपके दिल में सभी का " **आई लव** यू" रखता हूं ;

मैंने अपना चुंबन तुम्हारे होठों पर रख दिया

सब पीढ़ी के सब प्राणियों के चुम्बन पर मुहर लगाने के लिथे;

मैं तुम्हे गले लगाता हूं

ताकि आप सभी पीढ़ियों के सभी प्राणियों की बाहों से झुक सकें।

मैं चाहता हूं कि सभी प्राणियों के सभी कार्यों की महिमा आपको मिले »।

इस प्रार्थना के परिणामस्वरूप, मैं खुद को आप में महसूस करूंगा

-पंथ,

- "मैं तुमसे प्यार करता हूँ",

- चुंबन, आदि।

पूरे मानव परिवार की।

फिर कैसे न दें

- प्यार, चुंबन और दूसरों के लिए धन्यवाद!

जानिए, मेरी बेटी, पृथ्वी पर प्राणी क्या करता है

- वह स्वर्ग के लिए जमा की गई पूंजी का गठन करता है। अगर वह थोड़ा करता है, तो उसके पास थोड़ा होगा।

अगर वह बहुत कुछ करता है, तो उसके पास बहुत कुछ होगा।

यदि कोई प्राणी मुझ से प्रेम रखता है और दस वर्ष तक मेरी महिमा करता है,

-उसके पास दस गुना अधिक संतोष और महिमा होगी

- और वह मुझसे दस गुना अधिक प्यार करेगी।

यदि कोई मुझ से प्रेम करे और एक सौ या एक हजार में मेरी महिमा करे,

वह एक सौ या एक हजार के लिए संतोष, प्रेम और महिमा का स्वाद चखेगा।

इस तरह से

-मैं सृष्टि को वह सब दूंगा जो मैंने देने की योजना बनाई थी और वह, पारस्परिक रूप से,

सृष्टि मुझे वह सब कुछ देगी जो मैंने उससे प्राप्त करने की योजना बनाई थी। इसलिए मेरी महिमा पूरी होगी »।

मैंने अपने प्यारे यीशु के अभाव से बहुत पीड़ित और पीड़ित महसूस किया और मैंने उससे पूरे मन से कहा:

"आओ, मेरी जान! तुम्हारे बिना मुझे ऐसा लगता है कि मैं मर रहा हूँ, सिर्फ एक बार नहीं, बल्कि लगातार। आओ! मैं इसे और नहीं ले सकता, मैं इसे और नहीं ले सकता!"

मेरे प्यारे यीशु मेरे अंदर चले गए और मुझे लगा कि वह मेरे दिल को चोद रहे हैं।

दिखाते हुए *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

मैं आपके लिए अपने प्यार पर पूरी तरह से लगाम लगाने की एक अदम्य आवश्यकता महसूस करता हूं।"

मैंने तुरंत उत्तर दिया: "यीशु, तुम मुझे कैसे पीड़ित करते हो!

तुम्हारा अभाव मुझे मारता है! मेरे अन्य सभी कष्ट केवल आपकी मुस्कान और चुंबन हैं, लेकिन आपका अभाव एक निर्दयी मृत्यु है। आह! यीशु, यीशु! तुम कैसे बदल गए!"

मुझे बाधित करते हुए, *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरे प्यार की बेटी, क्या तुम खुद को मना नहीं सकती?

कि मैं तुम्हारे माध्यम से दुनिया को देखता हूं

और जब तक मैं तुम में रहता हूँ,

आपको यह महसूस करने के लिए मजबूर किया जाता है कि दुनिया मुझे क्या भेजती है: कठोरता, अंधेरा, पाप, मेरे न्याय का रोष, आदि।

इसलिए मुझे वंचित करने पर अपना ध्यान केंद्रित करने के बजाय सोचें

- मुझे उन बुराइयों से बचाने के लिए जो जीव मुझे भेजते हैं e

-मेरे न्याय के रोष को कम करने के लिए।

मैं तुम में सुरक्षित रहूंगा और प्राणियों को कम ताड़ना दी जाएगी।"

मैंने अपने हमेशा अच्छे यीशु के जुनून पर ध्यान दिया, विशेष रूप से कोड़े मारने के दौरान उन पर गिरने वाले कोड़ों के हिमस्खलन पर।

मैं सोच रहा था:

"यीशु के कौन से कष्ट सबसे बड़े थे:

- वो जो देवत्व ने उसे जीवन भर दिया है

- या जो उसके सांसारिक जीवन के अंत में यहूदियों के हाथों से प्राप्त हुए थे?"

मेरी बुद्धि की रोशनी के माध्यम से, मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

ईश्वर ने मुझे जो कष्ट दिए हैं, वे जीवों द्वारा मुझे दिए गए कष्टों से कहीं अधिक हैं,

- जितनी तीव्रता में संख्या और अवधि में।

और यह पीड़ा घृणा और अन्याय से नहीं भरी थी। बल्कि उनके साथ थे

-एक अपार प्यार और

जटिलता

तीन दिव्य व्यक्तियों में से

ताकि मेरी मानवता को इतनी मौतें झेलनी पड़े

-कि सृष्टि के प्रकाश को देखने के लिए जीव होंगे,

- ये जीव जो पिता ने मुझे इतने प्रेम से सौंपे थे।

देवत्व में अन्याय और घृणा का कोई अस्तित्व नहीं है, हालांकि, मनुष्य इन और इसी तरह के अन्य पापों से गंभीर रूप से दूषित हो गया है।

इसलिए मुझे इन गलतियों के लिए संशोधन करने के लिए अन्याय, घृणा, उपहास आदि का बोझ उठाना पड़ा।

इस प्रकार, अपने सांसारिक जीवन के अंतिम घंटों में, मैंने प्राणियों के जुनून का सामना किया।

पुरुषों ने जो अन्याय, घृणा, उपहास, बदला, अपमान, आदि मेरे अधीन किए हैं, वे इतने महान हैं,

-कि मेरी बेचारी मानवता सबका अपमान और बर्बादी बन गई है, बहुत कुछ

-कि मैं अब एक आदमी की तरह नहीं दिखती थी और

-कि मेरे जल्लाद खुद भयभीत थे।

संक्षेप में, **मैं दो अलग-**अलग जुनून जी रहा था । जीव मी में कष्टों और मौतों को गुणा नहीं कर पाए हैं

- पापियों के रूप में कई मृत।

इस प्रकार दिव्यता ने मेरे सांसारिक जीवन में मेरी मानवता को इन चीजों के अधीन कर दिया है।

और यह, एक अपार प्रेम में और

तीन दिव्य व्यक्तियों के अनुसार।

चूंकि, दूसरी ओर, देवत्व अन्याय आदि के लिए अक्षम था,

मेरे सांसारिक जीवन के अंतिम घंटों में प्राणियों ने मुझे मेरे जुनून को भुगतने के लिए अपनी भूमिका निभाई।

इस प्रकार, मोचन पूरी तरह से पूरा किया गया था।

मुझे कितनी आत्माओं की कीमत चुकानी पड़ी! इसलिए मैं उनसे बहुत प्यार करता हूँ!"

एक और दिन, मैंने मन ही मन सोचा:

“ मेरे प्रिय यीशु ने मुझे बहुत सी बातें बताई हैं; जो उसने मुझे सिखाया क्या मैं वास्तव में उसे करने के लिए सावधान था? ओह! मैं उसे खुश करने की कितनी कम कोशिश करता हूँ!

मैं किसी भी चीज़ में कितना अक्षम हूँ!

तो उसकी शिक्षा मेरी निंदा होगी ”। मेरे भीतर चलते हुए, मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा* :

" बेटी, तुम शोक क्यों करती हो?

आपके यीशु की शिक्षाओं का उपयोग कभी भी आपकी निंदा करने के लिए नहीं किया जाएगा।

यहां तक कि अगर आपने केवल उन चीजों में से एक किया होता जो मैंने आपको सिखाया था, तो आप अपनी आत्मा के आकाश में एक तारे को देखते।

मैं ने आकाश को तेरे सिरों और अपने फिएट पर फैलाया, मैं ने उसे तारों से सजाया।

इसलिए मैंने तुम्हारी आत्मा में गहरे आकाश को खोल दिया। और आपके द्वारा उत्पादित अच्छे का "फिएट",

- क्योंकि हर अच्छाई मेरी इच्छा का फल है, इसे सितारों से सजाना आता है।

यदि आत्मा दस अच्छे कर्म करती है, तो वह दस तारे, एक हजार अच्छे कर्मों के लिए, एक हजार तारे लगाता है।

नतीजतन, ऐसा करने के लिए जितना संभव हो सके मेरी शिक्षाओं को दोहराएं

-अपनी आत्मा के आकाश को सितारों से सजाएं e

- इस आकाश को अपने सिर के ऊपर फैले आकाश से नीच न बनाएं। इन सितारों में से प्रत्येक पर आपके यीशु के उपदेश की छाप होगी। आप मुझे क्या सम्मान देंगे! "

मैंने मन ही मन सोचा: "मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे वादा किया था कि कष्ट कहाँ हैं, जब मैं मुश्किल से पीड़ित हूँ?"

मेरे हमेशा दयालु *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, तुम अपने लिए फैसला क्यों करती हो?"

तुम शरीर के दुखों की गणना करते हो और मैं शरीर के दुखों और नैतिक दुखों की गणना करता हूं।

जब भी तुम मुझसे वंचित होते हो, यह एक मृत्यु है जिसे तुम अनुभव करते हो।

और इसलिए तुम मरे हुओं की मरम्मत करते हो जो आत्माएं मुझे उनके पापों के साथ देती हैं। जब आप ठंड से पीड़ित होते हैं, तो यह एक और छोटी सी मौत होती है जिसे आप महसूस करते हैं

और तुम मेरे प्यार के सामने प्राणियों की शीतलता की मरम्मत करते हो। वही आपके अन्य सभी कष्टों के लिए जाता है:

अपने नन्हे मुर्दों के लिए, तुम मेरी मृत्यु में सहभागी हो।

क्या तुम नहीं जानते कि जब मेरी धार्मिकता मनुष्यों के पापों के कारण नई विपत्तियों को बहाने के लिए मजबूर हो जाती है, तो मैं तुम्हारे कष्टों को स्थगित कर देता हूं?

बुराई इतनी बड़ी होगी कि वह भयानक रूप ले लेगी।

मुझे पता है कि यह आपके लिए दुखदायी है। लेकिन मैंने भी इस पीड़ा का अनुभव किया है।

मैं समय और अनंत काल दोनों में सभी दुखों से प्राणियों को मुक्त करना चाहता था, लेकिन यह मुझे पिता की बुद्धि से नहीं दिया गया था।

आह! मेरी बेटी, वहाँ नहीं है

क्रूस के बिना कोई पवित्रता नहीं है ,

दुख के साथ मिलन के बिना कोई पुण्य नहीं !

परन्तु यह जान ले कि मैं तुझे बहुतायत से प्रतिफल दूंगा।

-मेरी उपस्थिति के उन सभी कष्टों के लिए जिनसे आप पीड़ित हैं, साथ ही

- उन कष्टों के लिए जो आप चाहते हैं, लेकिन आपके पास नहीं है "।

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और, मुझे अपने सबसे पवित्र हृदय को दिखाने के लिए, यीशु ने मुझसे कहा:

«मेरी बेटी, मेरे दिल द्वारा अभ्यास किए गए हर गुण के लिए एक वसंत निकलता है। यह स्रोत असंख्य धाराओं में विभाजित है जो स्वर्ग तक पहुँचती हैं, जहाँ वे योग्य रूप से सभी के नाम पर पिता की महिमा करते हैं।

इसलिए वे प्राणियों के लिए धरती पर उतर आए। सद्गुणों का अभ्यास,

जीव भी अपने दिलों में छोटे-छोटे झरने बनाते हैं, जो धाराओं में भी विभाजित होते हैं।

ये मेरे साथ जुड़ते हैं और एक साथ जुड़े हुए हैं,

- वे स्वर्ग में पहुँचते हैं जहाँ वे स्वर्गीय पिता की महिमा करते हैं,

और फिर सब की भलाई के लिये पृथ्वी पर उतर आओ ।

यह सामंजस्य इस प्रकार स्वर्ग और पृथ्वी के बीच बनता है।

कि देवदूत स्वयं इस मनमोहक दृष्टि से चकित हैं।

इसलिए मेरे हृदय के गुणों का अभ्यास करने में चौकस रहो ताकि मैं अपनी कृपा के स्रोत खोल सकूं »।

मैं बहुत कड़वे दिन जी रहा हूं।

मेरा अच्छा यीशु अपने आप को कम या बिल्कुल नहीं, या बिजली के एक बोल्ट की तरह दिखने देता है।

मुझे याद है कि एक रात वह मुझे थका हुआ लग रहा था। वह अपनी बाहों में आत्माओं के बंडल की तरह था।

उसने मुझे देखते हुए मुझसे कहा:

"आह! मेरी बेटी, वे जो हत्याएँ करेंगे, वे ऐसी होंगी

कि मेरे हाथ में प्राणों की यह गठरी बच जाएगी!

पुरुष किस पागलपन में आ गए हैं? परेशान मत हो! मेरी अनुपस्थिति में वफादार रहो।

और तूफान के बाद,

मैं तुम्हारे सारे कष्टों के लिए तुम्हें भरपूर भुगतान करूंगा,

- मेरी यात्राओं को दोगुना करना और मेरा धन्यवाद "।

फिर, लगभग रोते हुए, वह गायब हो गई।

कहने की जरूरत नहीं है, मेरे गरीब दिल की यातना!

एक और दिन, मेरे दिमाग की एक त्वरित रोशनी ने मुझे एहसास कराया कि जब यीशु ने आशीर्वाद दिया तो आकाश को हमारे सिर के ऊपर रखा,

उसने हमारी आत्मा में एक आकाश भी डाला, वास्तव में, कई आकाश।

हमारी बुद्धि एक आकाश है, हमारी दृष्टि एक आकाश है,

हमारा भाषण,

हमारा कर्म, हमारी इच्छाएं, हमारा स्नेह, हमारा हृदय आकाश है, इस अंतर के साथ कि बाहरी आकाश नहीं बदलता है

तारे न उठते हैं न गिरते हैं

जबकि हमारे भीतर का आकाश परिवर्तन के अधीन है।

यदि हमारे मन का आकाश पवित्र समझता है , तो जैसे-जैसे वे बनते हैं, वैसे-वैसे हमारे विचार बहुत सुंदर तारे, सूर्य और धूमकेतु बनाते हैं।

और जब हमारा दूत उन्हें देखता है,
वह उन्हें लेता है और हमारी बुद्धि के आकाश में रखता है।

यदि हमारी आत्मा का स्वर्ग पवित्र है,

-तो यह हमारी टकटकी, हमारे शब्दों, हमारी इच्छाओं और हमारे दिल की धड़कन के साथ है।

ऐशे ही

- हमारी आंखें तारे बन जाती हैं,

- हमारे शब्द प्रकाश में बदल जाते हैं,

-हमारी इच्छाएं धूमकेतु हैं,

- हमारे दिल की धड़कन एक सूरज बनाती है। हमारी प्रत्येक इंद्रिय अपने आकाश को सुशोभित करती है।

दूसरी ओर

अगर हमारा मन बुरा है , तो कुछ भी सुंदर नहीं बनता है।

बल्कि एक बड़ा अँधेरा फैल जाता है और हमारे दूसरे आसमान को धुंधला कर देता है।

ऐशे ही

- हमारी टकटकी अधीरता से चमकती है,

-हमारा भाषण शाप देता है,

- हमारी इच्छाएं क्रूर जुनून की चमक बिखेरती हैं,

- हमारा हृदय प्राणियों के कार्यों पर विनाशकारी ओलावृष्टि करता है। बेचारा आसमान, वे दयनीय रूप से अंधेरे हैं!

मैं बहुत कड़वे दिन जी रहा हूं।

मेरा बेचारा दिल लकवा मार गया है

जो मेरा जीवन और मेरा सब कुछ है, उसके अभाव के लिए पीड़ित। हालांकि इस्तीफा दे दिया, मैं मदद नहीं कर सकता लेकिन अपने प्यारे यीशु से शिकायत कर सकता हूं।

जब वह मेरे सामने से तेज़ी से गुज़रता है या मेरे अंदर चला जाता है।

मुझे एक दिन याद है, जब मैं शिकायत कर रहा था, उसने मुझसे कहा:

"मेरे हाथों में त्याग दो धाराओं की तरह है जो बड़ी ताकत से एकजुट होते हैं।

उनके सम्मिलित जल इतनी ऊँची लहरें बनाते हैं कि वे स्वर्ग तक पहुँच जाते हैं,

नतीजतन, उनके बिस्तर खाली हो जाते हैं।

स्वर्ग तक पहुँचने वाले इन जलों की बड़बड़ाहट इतनी सुंदर और सामंजस्यपूर्ण है कि स्वर्ग एक नई सुंदरता के साथ सम्मानित और निवेशित महसूस करता है।

और संत कोरस में कहते हैं:

" यह रमणीय सद्भाव एक आत्मा से आता है जिसने भगवान को आत्मसमर्पण कर दिया है। कितना सुंदर, कितना सुंदर है!" "

एक और दिन, **उसने मुझसे कहा** :

"आप किस बात से भयभीत हैं?

मुझे समर्पण करो और तुम एक घेरे की तरह मुझसे घिरे रहोगे। इस तरह से कि

यदि शत्रु, अवसर या संकट उत्पन्न होते हैं, तो उन्हें मेरे साथ संघर्ष करना होगा, तुमसे नहीं: मैं तुम्हारे लिए जवाब दूंगा ।

मेरे प्रति सच्चा समर्पण आत्मा के लिए आराम और मेरे लिए नौकरी में तब्दील हो जाता है ।

अगर आत्मा घबराई हुई है, तो इसका मतलब है कि यह मेरे लिए नहीं छोड़ी गई है। जो लोग अकेले रहना चाहते हैं, उनके लिए उनका आंदोलन ही उनका सही दर्द है। इससे मुझे बहुत दर्द होता है और बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाता है।"

एक और दिन जब मैंने और अधिक बलपूर्वक शिकायत की, मेरे दयालु *यीशु ने* बड़ी भलाई के साथ मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, शांत हो जाओ!

आप जो अनुभव कर रहे हैं वह आने वाली नई सजाओं से आगे है।

ध्यान से पढ़ो मैंने तुम्हें क्या लिखा और तुम पाओगे कि सभी दंड नहीं हुए।

और भी बहुत से नगर तबाह हो जाएँगे!

राष्ट्र एक दूसरे का विरोध करते रहेंगे।

यह इटली है? उसके मित्र राष्ट्र उसके घोर शत्रु बन जाएंगे।

फिर धैर्य, मेरी बेटी!

जब सब कुछ उस आदमी को आदेश देने के लिए तैयार हो जाएगा, तो मैं पहले की तरह तुम्हारे पास आऊंगा और हम कृतघ्न आदमी के लिए एक साथ रोएंगे और प्रार्थना करेंगे।

जहाँ तक तुम्हारी बात है, मेरी वसीयत को कभी मत छोड़ो। चूंकि मेरी इच्छा शाश्वत है,

वहां जो कुछ भी बनाया जाता है वह शाश्वत और अनंत मूल्य प्राप्त करता है।

यह एक मुद्रा की तरह है जो मूल्य में वृद्धि जारी रखती है और कभी गिरती नहीं है।

मेरी वसीयत में किए गए छोटे से छोटे कार्य स्वर्ग में अंकित हैं

-अमिट पात्रों में

- खुद से कह रहे हैं:

"हम शाश्वत कार्य हैं क्योंकि एक शाश्वत इच्छा ने हमें बनाया है"।

"ऐसा लगता है जैसे मिट्टी के फूलदान में तरल सोना डाला गया हो और एक सुनार ने उस सोने से सोने की वस्तुएं बनाई हों।

हम कह सकते हैं कि यह सोना सोना नहीं है

इसे मिट्टी के घड़े में क्यों डाला गया? हरगिज नहीं!

सोना हमेशा सोना होता है, चाहे वह किसी भी कंटेनर में क्यों न हो।

इस उदाहरण में मिट्टी का फूलदान आत्मा और सोने, मेरी इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है।

मेरे विल में कार्य करने वाले प्राणी के कार्य

मैं अपनी वसीयत को उससे बांधता हूं और दोनों एक साथ पिघल जाते हैं।

इस तरल की मदद से मैं, दिव्य सुनार,

इस प्रकार मैं आत्मा के कार्यों को शाश्वत स्वर्ण में बदल देता हूँ

-कि मैं कह सकता हूं कि ये कृत्य मेरे हैं और

- ताकि आत्मा भी कह सके कि वे उसके हैं »।

मैंने अपने प्यारे जीसस से अपनी दयनीय स्थिति के बारे में शिकायत की और इस तथ्य के बारे में भी कि मैं एक बेकार प्राणी हूं और अच्छा करने में असमर्थ हूं।

और मैं सोच रहा था कि मेरे जीवन का उद्देश्य क्या था।

मेरे दयालु *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

आपके जीवन का उद्देश्य कुछ ऐसा है जो मेरा है न कि आपका। हालांकि, जान लें कि साधारण तथ्य

- *दिन में कई बार मुझमें विलीन होना*

संतुलन बनाए रखने का जोखिम

- देवत्व के विरुद्ध आवश्यक क्षतिपूर्ति के संबंध में।

वास्तव में, केवल वह व्यक्ति जो जानता है

- मुझ में विलीन हो जाओ और

- मुझे अपने सभी कार्यों का सिद्धांत मानकर, वह हर चीज के नाम पर संतुलन बनाए रख सकता है

- पिता की महिमा और सभी आवश्यक क्षतिपूर्ति के संबंध में।

क्या यह आपको तुच्छ लगता है? आपको नहीं लगता

-कि आप इसे करना बंद नहीं कर सकते

-कि मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक तुम मेरे प्रत्येक सदस्य को बदल नहीं देते

उनकी ओर से आवश्यक मरम्मत करें?

जितना हो सके सभी के लिए ठीक करने का प्रयास करें।

यदि आप वह सब अच्छा जानते हैं जो दुनिया को एक आत्मा के रूप में प्राप्त होता है,

- स्वार्थ की छाया के बिना e

-केवल मेरे प्यार के लिए यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच उगता है। और, मेरे साथ

संयुक्त,

सभी की ओर से आवश्यक मरम्मत करें!"

मेरी कड़वाहट बढ़ गई और मैंने अपने हमेशा अच्छे यीशु से शिकायत की, उनसे कहा: "दया करो, मेरे प्यार, दया करो! क्या तुम नहीं देखते कि मैं कितना तबाह हो गया हूं?

मुझे ऐसा लगता है कि मेरे पास यह नहीं है

- अब जीवन नहीं, कोई इच्छा नहीं, कोई स्नेह नहीं, कोई प्रेम नहीं; मेरे भीतर सब कुछ मरा हुआ सा है।

आह! यीशु! तेरी सारी शिक्षाओं का फल मुझ में कहाँ है?”

जब मैं यह कह रहा था, मैं यीशु के बहुत करीब महसूस कर रहा था जिन्होंने मुझे बांध दिया और मुझे मजबूत जंजीरों से बांध दिया **। उसने मुझसे कहा** :

"मेरी बेटी,

सबसे पक्का संकेत है कि मेरी शिक्षाओं ने आप में फल पैदा किया है कि अब आप अपने बारे में कुछ भी महसूस नहीं करते हैं।

क्या मेरी वसीयत में जीवन शायद मुझमें घुल नहीं रहा है? फिर आप अपनी इच्छाओं, स्नेह आदि की तलाश क्यों करते हैं, अगर आपने उन्हें मेरी इच्छा में भंग कर दिया है?

मेरी इच्छा अपार है और इसे पहचानने के लिए बहुत अधिक प्रयास करना पड़ता है। मुझमें जीने के लिए बेहतर है कि अपना जीवन खुद न जीएं।

नहीं तो हम दिखा देते हैं कि हम खुश नहीं हैं

-मेरे जीवन का जीना e

- मुझमें पूर्णतया विलीन हो जाना"।

मैंने अपने दयालु यीशु से बहुत शिकायत की। उसने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, आत्मा की शिकार"

- दिव्य न्याय के सभी प्रहारों को प्राप्त करने के लिए उजागर किया गया है और

-दूसरों के दुख को महसूस करना ।

ओह! कैसे मेरी मानवता एक शिकार होने की कठोरता के तहत कराह उठी!
अपने अभाव की स्थिति के परिणामस्वरूप, आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं

-जीव मेरे संबंध में कैसे व्यवहार करते हैं e

- कैसे दिव्य न्याय उन्हें भयानक विपत्तियों से दंडित करने के लिए तैयार करता है।

मनुष्य पूर्ण पागलपन की स्थिति में पहुंच गया है

मूर्खों के साथ, आपको सख्त पलकों की आवश्यकता होती है। जहाँ तक आपकी बात है, कुछ भी न बदलें।

आप देखेंगे कि यीशु आपके लिए क्या करेगा »।

दुख और अभाव की अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैंने अपना समय अपने प्यारे यीशु के साथ बिताया, पूरी तरह से उनके लिए त्याग दिया और लगभग चुप, एक बच्चे की तरह। मेरे अंदर खुद को दिखाते हुए **उसने** मुझसे कहा :

"मेरी बेटी,

मुझ पर भरोसा प्रकाश के बादल के समान है

जिसमें आत्मा इतनी अच्छी तरह लिपटी रहती है,

कि सभी भय, संदेह और कमजोरी गायब हो गई हैं।

यह ट्रस्ट

-आत्मा को शुद्ध प्रेम से भर देता है e

- इसे इतना बोल्ड बनाता है कि यह मेरे स्तनों से चिपक जाता है और मेरे दूध से

पीता है। उसे और खाना नहीं चाहिए।

अगर मेरे सीने से कुछ भी नहीं निकलता है, जिसे मैं आत्मविश्वास को अधिकतम करने की अनुमति देता हूं, तो आत्मा निराश नहीं होगी।

इसके विपरीत, वह अथक है, मेरे सीने के खिलाफ अपना सिर पीट रही है क्योंकि मैं अंदर मुस्कुराता हूं और उसे ऐसा करने देता हूं।

पक्की आत्मा मेरी मुस्कान और मेरी मस्ती है।

जो मुझ पर भरोसा करता है वह मुझसे प्यार करता है और मानता है कि मैं अमीर, शक्तिशाली और महान हूं।

दूसरी ओर, जो मुझ पर विश्वास नहीं करते, वे वास्तव में मुझसे प्रेम नहीं करते। वह मेरा अपमान करता है और मानता है कि मैं गरीब, कमजोर और छोटा हूं।

यह मेरे लिए क्या अपमान है!"

अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैंने सोचा:

"आप इसे कैसे करते हैं? मैं बहुत बुरा हूँ, कुछ भी नहीं के लिए बहुत अच्छा!

मेरे यीशु के अभाव ने मुझे ऐसी स्थिति में डाल दिया है कि, अगर हम उसे देख सकते हैं, तो वह भी पत्थर का रोना रोएगा और, निस्संदेह, बिना किसी निर्णय या नरक के डर के। मैं कितनी भयानक स्थिति में हूँ!"

जब मैं इस तरह के विचारों को पनाह दे रहा था, मेरे दयालु यीशु मेरे भीतर चले गए और मुझसे **कहा** :

"मेरी बेटी, जैसे ही आत्मा मेरी इच्छा में रहने का फैसला करती है, सभी संदेह और भय गायब हो जाते हैं।

यह आत्मा एक राजा की बेटी के सदृश है,

-हालांकि कई लोग उसे कहते हैं कि वह राजा की बेटी नहीं है, वह इन शब्दों पर ध्यान नहीं देती है

इसके विपरीत, वह गर्व से सभी से कहता है:

" मेरे अंदर संदेह और भय बोने की कोशिश करना बेकार है। मैं वास्तव में राजा की बेटी हूं।

राजा मेरे पिता हैं।

मैं उसके साथ रहता हूं और उसका राज्य मेरा है।"

मेरी वसीयत में जीवन से आत्मा को जितने लाभ मिलते हैं, उनमें सुरक्षा भी है।

जब आत्मा अपना सब कुछ अपना बनाती है, तो वह अपने माल के लिए कैसे डर सकता है?

इस प्रकार, भय, संदेह और नरक का भय अनुपस्थित है।

उन्हें न तो चाबी मिलती है, न द्वार, न ही इस आत्मा में प्रवेश करने का मार्ग।

जब आत्मा ईश्वरीय इच्छा में प्रवेश करती है, तो वह अपने आप को अलग कर लेती है, मैं इसे अपने साथ और शाही वस्त्रों के साथ पहनता हूं।

ये उसके लिए मुहर हैं

कि वह मेरी बेटी है और

कि मेरा राज्य उतना ही उसका है जितना मेरा।

इसके अलावा, हमारे अधिकारों की रक्षा करके, वह दूसरों के मुकदमे और सजा में भाग लेती है। तो डर के मारे मछली पकड़ने क्यों जाते हो?"

मैं अपनी खराब हालत के बारे में सोच रहा था।

यीशु के निजीकरण की पीड़ा ने मुझे पंगु बना दिया।

लेकिन मैं शांत रहा और अपने प्यारे यीशु के लिए पूरी तरह से त्याग दिया।स्वर्ग

मुझे बंद लग रहा था।

जहां तक पृथ्वी का संबंध है, मेरा इससे संपर्क टूटे हुए काफी समय हो गया था। और चूंकि मेरे लिए यह अस्तित्वहीन था,

- मैं मदद की उम्मीद कैसे कर सकता हूं? तो मुझे उम्मीद भी नहीं थी

- इस गरीब दुनिया के लोगों से मदद लें।

यदि मुझे अपने यीशु में मीठी आशा न होती,

-मेरा जीवन, मेरा सब कुछ, मेरा एकमात्र सहारा, मुझे नहीं पता कि मैंने क्या किया होता।

यह देखकर कि मैं इसे और नहीं ले सकता, मेरा हमेशा अच्छा यीशु आया, उसने मुझे शक्ति देने के लिए मेरे माथे पर अपना पवित्र हाथ रखा , उसने मुझसे *कहा* :

"बेचारी, मेरे दिल की बेटी और मेरे कष्टों की, हिम्मत मत हारो!

आपके लिए कुछ भी खत्म नहीं हुआ है।

इसके विपरीत, जब सब कुछ खत्म हो गया लगता है, तभी यह सब शुरू होता है। आप जो कुछ भी सोचते हैं, उसमें से कुछ भी सच नहीं है।

आपकी वर्तमान स्थिति यह है कि पीड़िता का एक पहलू यह है कि मेरी मानवता अनुभव कर रही थी। ओह! वह कितनी बार इतनी दर्दनाक स्थिति में रही है!

मेरी दिव्यता, जिसके पास सारी शक्तियाँ थीं और चाहती थीं कि मैं पूरे मानव परिवार का प्रायश्चित करूँ, ने मुझे अस्वीकृति, विस्मरण और सभी सुधारों का एहसास कराया कि

मानव प्रकृति ने इसे अर्जित किया था।

वे मेरे लिए बड़े कष्ट थे। मैं दिव्यता के साथ कैसे एक हो गया

- मेरी मानवता और मेरी दिव्यता एक के रूप में,

तुमसे बिछड़ना मेरे लिए एक सच्चा शहीद था।

प्यार किया जा रहा है और एक ही समय में भुला दिया जा रहा है, सम्मानित किया जा रहा है और साथ ही साथ विश्वासघात महसूस किया जा रहा है,

पवित्र होने के लिए और साथ ही अपने आप को सभी पापों से ढके हुए देखने के लिए,

-क्या भयावह विरोधाभास,

-क्या अत्यधिक पीड़ा!

इन सभी कष्टों को सहने के लिए मेरे लिए मेरी सर्वशक्तिमानता का चमत्कार आवश्यक था।

वर्तमान में मेरा न्याय चाहता है कि इन कष्टों का नवीनीकरण किया जाए। और इस नवीनीकरण के लिए खुद को कौन उधार दे सकता है, यदि नहीं तो

- जिसने मुझे पहचाना है,

- जिसे मेरी वसीयत की ऊंचाई में रहने के लिए चुने जाने का सम्मान मिला, जहां से, जैसे इसके केंद्र से, it

मुझे मरम्मत करता है और

मुझे सभी प्राणियों के नाम पर प्यार करता है ?

इस प्रकार वह उस व्यक्ति से विस्मृति, अस्वीकृति और अलगाव महसूस करता है जो उसका सारा जीवन है!

ये ऐसे कष्ट हैं जिनका मूल्यांकन केवल आपका यीशु ही कर सकता है।

"इसके अलावा, शांत हो जाओ।

यह अवस्था समाप्त हो जाएगी ताकि आप मेरी मानवता के अन्य चरणों में जा सकें।

जब आप अधिक लेने में असमर्थ महसूस करते हैं,

- अपने आप को मेरे लिए और भी अधिक त्याग दें और

-आप अपने यीशु को प्रार्थना, कष्ट और मरम्मत करते हुए सुनेंगे

जब आप इसे देखते हैं: मैं अभिनेता बनूंगा और आप दर्शक होंगे।

जब आप बहाल हो जाएंगे, तो आप अभिनेत्री की भूमिका निभाएंगे और मैं दर्शक बनूंगा।

हम दोनों के बीच अदला-बदली होगी"।

मुझसे जो पूछा जाता है उसे लिखने की ताकत मुझे महसूस नहीं होती।

मैं बस कुछ शब्द कहूंगा जिसे मैंने कागज पर डालने के बारे में सोचा भी नहीं था और मेरे प्यारे यीशु ने मुझे याद दिलाया।

एक शाम मैंने अपने सूली पर चढ़ाये हुए यीशु को प्रणाम किया, उनसे कहा:

"मेरा प्यार,

तेरी वसीयत में और पूरे मानव परिवार के नाम पर मैं तुझे मानता हूँ,

मैं तुम्हें गले लगाता हूं और संकल्प करता हूं।

मैं तुम्हारे घाव और तुम्हारा खून सभी को देता हूं ताकि सभी को बचाया जा सके।

और चूंकि खोई हुई आत्माएं अब आपके कीमती रक्त का आनंद नहीं ले सकतीं और आपसे प्यार नहीं कर सकतीं,

मैं उनके लिए करता हूं।

मैं चाहता हूं कि आपका प्यार किसी भी तरह से जीवों से धोखा न खाए।

मैं आपसे प्यार करना चाहता हूं और पहली से आखिरी तक सभी की ओर से

क्षतिपूर्ति करना चाहता हूं।

जब मैं यह और कई अन्य बातें कह रहा था, मेरे प्यारे यीशु ने मेरे गले में अपनी बाहें फैला दीं और मुझे यह कहते हुए गले लगा लिया:

" *मेरी बेटी,* मेरे जीवन की प्रतिध्वनि,

जब आप प्रार्थना कर रहे थे, मेरी दया पुनर्जीवित हो गई और मेरे न्याय ने अपनी *गंभीरता खो दी* ।

और यह, अभी के लिए नहीं,

लेकिन आने वाले समय के लिए भी: मेरी इच्छा में आपकी प्रार्थना सक्रिय रहेगी।

खोई हुयी रूहों के नाम से तेरा प्यार महसूस किया

परिणामस्वरूप, मेरे हृदय को आपके प्रति एक विशेष कोमलता का अनुभव हुआ। तुम में वह प्रेम पाकर जो इन आत्माओं का मुझ पर बकाया है,

मैंने आपको वह अनुग्रह दिया है जिसकी मैंने उनके लिए योजना बनाई थी।"

दूसरी बार *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, मैं मनुष्य से इतना प्यार करता हूं कि उसे बनाने में मैंने उसे स्वतंत्रता दी, जो मैंने आकाश, सितारों, सूर्य और पूरी प्रकृति के लिए किया था।

- आकाश को न तो जोड़ा जा सकता है और न ही तारों से हटाया जा सकता है,

-सूर्य न तो प्रकाश जोड़ सकता है और न ही हटा सकता है।

इससे भी अधिक, मैं चाहता था कि मनुष्य मेरे साथ रहे, ताकि वह अच्छा काम करके और अपने गुणों का प्रयोग करके, अपने सितारों और सूर्यों का निर्माण कर सके।

उसकी आत्मा के आकाश के आभूषण के लिए।

यह जितना अच्छा होगा, उतने ही अधिक सितारे बनेंगे।

कितना बड़ा है उसका प्रेम और उसका बलिदान,

उसके सूर्यों में और अधिक तेज और प्रकाश बढ़ जाएगा।

उसकी आत्मा के आकाश में उपस्थित, *मैं उससे कहता हूं* :

" मेरे बेटे, तुम जितनी खूबसूरत बनोगी, तुम मुझे उतना ही खुश करोगी।

मैं आपकी सुंदरता से इतना प्यार करता हूं कि मैं आपसे व्यापार में उतरने का आग्रह करता हूं।

जैसे ही आप शुरू करेंगे, मैं आपकी रचनात्मक क्षमता को चलाऊंगा और नवीनीकृत करूंगा, जिससे आपको वह सब कुछ करने की शक्ति मिलेगी जो आप चाहते हैं।

मैं तुमसे तब तक प्यार करता हूँ जब तक मैंने तुम्हें गुलाम नहीं बनाया, लेकिन एक स्वतंत्र आदमी »।

काश! इस शक्ति के संबंध में मैंने मनुष्य को क्या गालियाँ दी हैं!

और उसके पास अपने पतन के लिए और अपने निर्माता को अपमानित करने के लिए इसका इस्तेमाल करने का दुस्साहस है! "

मैंने अपने हमेशा दयालु यीशु से कहा:

"चूंकि आप मुझे कुछ नहीं बताना चाहते हैं, कम से कम मुझे बताएं कि अगर मैंने आपको नाराज किया है तो आप मुझे माफ कर दें।"

उसने जवाब दिया:

"आपको क्षमा की आवश्यकता कैसे है?

जो आत्मा मेरी इच्छा को पूरा करती है और उसमें रहती है, उसके पास अब अपने आप में बुराई का स्रोत नहीं है, क्योंकि मेरी इच्छा ही स्रोत है।

-शास्वत,

-अपरिवर्तनीय ई

- सभी अच्छे और पवित्रता का उल्लंघन।

जो कोई इस फव्वारे से पीता है वह पवित्र है और उस पर बुराई की कोई पकड़ नहीं है। अगर बुराई खुद को प्रकट करने की कोशिश करती है, तो वह जड़ नहीं लेती

क्योंकि जिस सोते से वह पीता है वह पवित्र है।

जब मेरा न्याय मुझे प्राणियों पर प्रहार करने के लिए विवश करता है, तो ऐसा लगता है कि वह उन्हें नुकसान पहुँचा रहा है। हम यह कहने की हद तक पहुँच जाते हैं कि मैं अनुचित हूँ।

लेकिन यह असंभव है क्योंकि बुराई का स्रोत मुझमें नहीं है। इसके विपरीत, इन कष्टों में जो मैं भेजता हूं,

सबसे कोमल और गहन प्रेम है।

यह मानवीय इच्छा है जो बुराई का स्रोत है।

अगर यह अच्छा करने लगता है, तो वह संपत्ति संक्रमित है और जो कोई भी इसे छूता है वह भी संक्रमित हो जाता है।"

उसके बाद, मैंने हर प्राणी के लिए खुद को प्रतिस्थापित किया जैसा कि यीशु ने मुझे सिखाया था।

के बाद, *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, जब आप वही दोहराते हैं जो मैंने आपको सिखाया है, तो मैं अपने ही प्यार से आहत महसूस करता हूं।

जब मैंने तुम्हें ये बातें सिखाईं, तो मैंने तुम्हें अपने प्यार से चोट पहुंचाई। जब आप उन्हें दोहराते हैं, तो आप बदले में मुझे चोट पहुँचाते हैं।

यहां तक कि मेरे शब्दों और मेरी शिक्षाओं को याद करने से भी मुझे दुख होता है। अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, तो हमेशा मुझे चोट पहुँचाओ!"

मैंने सोचा:

"ऐसा कैसे हो सकता है कि ईश्वरीय इच्छा करना संस्कारों से भी बढ़कर है?"

मेरे भीतर चलते हुए, यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, संस्कारों को संस्कार क्यों कहा जाता है?

क्योंकि वे पवित्र हैं, उनमें अनुग्रह और पवित्रता प्रदान करने की शक्ति है।

हालांकि, वे सृजन के प्रावधानों के अनुसार कार्य करते हैं,

इतना अधिक कि वे कभी-कभी निष्फल हो जाते हैं, अपने पास मौजूद सामान को देने में असमर्थ होते हैं।

«दूसरी ओर, मेरी इच्छा पवित्र और पवित्र है।

सभी संस्थागत संस्कारों के गुणों को एक साथ लाओ। उसे आत्मा को उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए निपटाने के लिए काम नहीं करना चाहिए जिसमें वह शामिल है:

जैसे ही आत्मा मेरी इच्छा पूरी करने के लिए तैयार होती है, सभी बलिदानों की कीमत पर,

स्वचालित रूप से आवश्यक स्वभाव हैं।

यह देखकर मेरी वसीयत बिना देर किए उसे बता दी जाती है और उसमें रखे सामान का भुगतान कर देती है।

इस प्रकार वह ईश्वरीय इच्छा के नायकों और शहीदों का निर्माण करता है, जो सभी आश्चर्यों में सबसे महान है।

आत्मा को परमात्मा से मिलाना नहीं तो संस्कार क्या करते हैं! और मेरी वसीयत क्या करती है?

क्या यह शायद सृष्टि की इच्छा को उसके निर्माता की इच्छा के साथ जोड़कर उसे शाश्वत इच्छा में विलीन नहीं कर रहा है?

जब आत्मा मेरी इच्छा में विलीन हो जाती है,

यह कुछ भी नहीं है जो संपूर्ण की ओर बढ़ता है और संपूर्ण जो कुछ भी नहीं की ओर उतरता है।

यह सबसे महान, शुद्धतम, सबसे सुंदर और वीरतापूर्ण कार्य है जिसे प्राणी कर सकता है।

ओह! हाँ! मैं आपको पुष्टि करता हूं कि मेरी इच्छा एक संस्कार है जो एक साथ सभी संस्थागत संस्कारों से बढ़कर है ।

मेरी वसीयत का संस्कार बिना किसी मध्यस्थ के, बिना किसी सामग्री के, अधिक सराहनीय तरीके से कार्य करता है।

यह मेरी इच्छा और प्राणी की इच्छा के बीच काम करता है। दोनों एक हो जाते हैं और संस्कार का निर्माण करते हैं।

मेरी इच्छा ही जीवन है और आत्मा इससे जीवन प्राप्त करती है।

मेरी इच्छा ही पवित्रता है और उसी से आत्मा को पवित्रता प्राप्त होती है। मेरी इच्छा शक्ति है और आत्मा को उसकी शक्ति प्राप्त होती है।

;;; और इसी तरह।

दूसरी ओर, मेरे अन्य संस्कारों को आत्माओं को निपटाने के लिए कितना काम करना चाहिए, इन चैनलों को मैंने अपने चर्च के लिए छोड़ दिया है, यदि केवल वे सफल होते हैं!

कितनी बार उनका उपहास या तिरस्कार किया जाता है! कुछ इसका इस्तेमाल भी करते हैं

- उनकी व्यक्तिगत महिमा के लिए और मुझे अपमानित करने के लिए।

आह! यदि आप तपस्या के संस्कार में किए गए महान बलिदानों और यूचरिस्ट के संस्कार में भयानक गालियों को जानते, तो आप मेरे साथ रोते!

ओह! हां! केवल मेरी इच्छा का संस्कार ही विजय गा सकता है।

यह अपने प्रभाव में पूर्ण है और प्राणियों के अपराधों से अछूत है। क्या वह,

मेरी इच्छा में प्रवेश करें,

प्राणी को अपनी इच्छा और अपनी लालसाओं को अलग रखना चाहिए।

तभी मेरी वसीयत उसमें निवेश करती है और उसके चमत्कारों को पूरा करती है।

जब मैं अपनी वसीयत की बात करता हूं, तो मैं बिना रुके जश्न मनाता हूं। मेरी खुशी पूरी हो गई है।

जब मेरी इच्छा का संस्कार क्रिया में प्रवेश करता है, तो आत्मा और मेरे बीच कोई कड़वाहट प्रकट नहीं होती है।

अन्य संस्कारों के लिए, हालांकि, मेरा हृदय दर्द में तैर रहा है।

मनुष्य ने उन्हें कड़वाहट के फव्वारे में बदल दिया जब मैंने उन्हें अनुग्रह के फव्वारे के रूप में स्थापित किया था »।

मैं अपनी सामान्य स्थिति में था। भीतर से आकर, मेरे अच्छे यीशु ने खुद को आँसुओं से भीगा हुआ दिखाया।

उसके पवित्र वस्त्र और हाथ भी आँसुओं से भीगे हुए थे। इस नजारे ने मुझे गहरे दर्द में डाल दिया। मैं चौंक गया।

उसने मुझसे कहा: "मेरी बेटी, दुनिया कितनी उथल-पुथल का अनुभव करेगी!

सज़ा पहले से भी ज़्यादा दर्दनाक होगी, ताकि मैं दुनिया की बदकिस्मती पर रोना बंद न करूँ।"

उन्होंने आगे कहा : "मेरी इच्छा एक चक्र की तरह है।

जो भी इसमें प्रवेश करता है वह फंस जाता है ताकि उन्हें कोई रास्ता न मिल सके। वह वहां जो कुछ भी करता है वह शाश्वत बिंदु में स्थिर रहता है और अनंत काल के चक्र में फैल जाता है"।

उन्होंने जोड़ा :

"क्या आप जानते हैं कि *मेरी वसीयत में रहने वाले का परिधान किससे* बना है ?

यह सोने से नहीं, बल्कि शुद्धतम प्रकाश से बना है।

यह एक दर्पण की तरह है जो इस आत्मा के कार्यों को पूरे स्वर्ग में दिखाता है। यह कई दर्पणों से सुशोभित है और उनमें से प्रत्येक में, मुझे पूरी तरह से देखा जा सकता है।

तो जहाँ से कोई आत्मा को देखता है, पीछे से, सामने से, बाएँ से या दाएँ से, कोई मुझे गुणा देखता है जितनी बार आत्मा ने मेरी इच्छा में कर्म किए हैं।

मैं इस आत्मा को इससे अधिक सुंदर पोशाक नहीं दे सकता था।

यह पोशाक मेरी वसीयत में रहने वाली आत्माओं का अनन्य भेद है »।

इन शब्दों ने मुझे थोड़ा हैरान कर दिया। यीशु ने आगे कहा: "तुम क्यों संदेह करते हो?

क्या ऐसा ही पवित्र यजमानों के साथ नहीं होता है?

यदि एक हजार मेजबान हैं, तो एक हजार यीशु होंगे जो एक हजार आत्माओं से संवाद करेंगे।

अगर सौ मेजबान हैं,

केवल सौ जीसस हैं जो केवल सौ आत्माओं को खुद को देंगे।

मेरी वसीयत में किए गए हर कार्य के लिए,

आत्मा मुझे घेर लेती है और अपनी इच्छा के भीतर मुझे सील कर देती है।

मेरी वसीयत में किए गए कार्य शाश्वत यजमान हैं जिनकी प्रजातियां उपभोग के अधीन नहीं हैं (संस्कारी यजमानों के विपरीत,

जहां मेरा पवित्र जीवन समाप्त हो जाता है जैसे ही संस्कारों की प्रजातियां भस्म हो जाती हैं)।

मेरी वसीयत के यजमानों में कोई आटा या अन्य पदार्थ नहीं है।

उनका सार मेरी शाश्वत इच्छा है जो उस प्राणी की इच्छा से संयुक्त है जो,

मेरे में विलीन हो गया, वह शाश्वत हो गया।

ये दो वसीयतें समाप्त होने के अधीन नहीं हैं ।

आश्चर्य की बात यह है कि मेरा पूरा व्यक्ति

जितनी बार मेरी वसीयत में किए गए कार्य हैं उतनी बार गुणा किया जा सकता है?

इनमें से प्रत्येक कृत्य के लिए,

-मैं आत्मा में बंद हूँ और

आत्मा मुझ में बंद है।

ये मेरी इच्छा के चमत्कार हैं।

सभी शंकाओं को दूर करना पर्याप्त नहीं है।"

मैंने प्रार्थना की और, विचार के माध्यम से, मैं शाश्वत इच्छा में विलीन हो गया। मैंने खुद को सर्वोच्च महामहिम के सामने रखा, मैंने उनसे कहा:

"शाश्वत महामहिम, मैं आपके चरणों में पूरे मानव परिवार के नाम पर, पहले से अंतिम व्यक्ति तक, आपकी गहराई से पूजा करने के लिए उठता हूं।

"आपके परम पवित्र चरणों में मैं सभी की पूजा करता हूं। सभी के नाम पर, मैं आपको निर्माता और सभी के स्वामी के रूप में पहचानता हूं। मैं आप सभी से प्यार करता हूं।

-सभी के नाम पर, मैं आपको वह प्यार वापस देता हूं जो आपने हमें बनाई चीजों के माध्यम से प्रकट किया है, जिसमें आपने इतना प्यार रखा है कि जीव कभी भी

इस प्यार का प्रतिदान नहीं कर पाएंगे।

हालाँकि, आपकी इच्छा में, जहाँ सब कुछ अपार और शाश्वत है, मुझे यह प्यार मिलता है और मैं इसे सभी के नाम पर आपको वापस देता हूं।

मैं तुमसे प्यार करना चाहता हूँ

-आपके द्वारा बनाए गए हर सितारे के लिए,

- प्रकाश की प्रत्येक किरण के लिए e

- गर्मी की किसी भी तीव्रता के लिए जो आपने सूर्य के संपर्क में आई हो, आदि।"

मैंने यहां जो कुछ भी कहा है, उसकी रिपोर्ट करने में बहुत समय लगेगा। और इसलिए मैं रुकता हूं।

तभी मेरे मन में एक विचार आया:

"कैसे, बनाई गई हर चीज में,

क्या हमारे भगवान जीवों के लिए प्रेम की ऐसी नदियाँ डाल सकते हैं?"

मेरे पास एक आंतरिक प्रकाश में एक उत्तर आया:

"यह सच है, मेरी बेटी,

कि प्राणियों के प्रति मेरा प्रेम सब सृष्ट वस्तुओं में उण्डेला गया है। मैंने आपको पहले ही बता दिया है और मैं इसे दोहराता हूं:

जब मेरे प्यार ने सूरज बनाया, तो उसमें प्यार का सागर रखा।

-आंख, पैर, हाथ, मुंह आदि में बहने वाली प्रत्येक किरण के लिए। प्राणी के लिए, मैं उसे प्रेम के साथ बहने वाला अपना शाश्वत चुंबन प्रदान करता हूं।

- अपने प्रकाश के अलावा, सूर्य अपनी गर्मी डालता है। जीवों का प्रेम पाने को आतुर,

मैं उन्हें इस गर्मी में एक तीव्र " **आई लव यू"** बताता हूं।

-और जब, अपने प्रकाश और अपनी गर्मी के साथ, सूरज पौधों को खाद देता है, यह मेरा प्यार है जो मनुष्य को पोषण देने के लिए खरीदारी करता है।

तुम्हारे सिर पर फैला हुआ आकाश लगातार तुम्हें मेरे प्रेम की याद दिलाता है। तारों की प्रत्येक चमक, जो रात के समय मनुष्य की आंख को प्रसन्न करती है,

मैंने उससे अपने हिस्से के लिए कहा: " **मैं तुमसे प्यार करता हूँ"**।

« **इस प्रकार,** प्रत्येक निर्मित वस्तु मनुष्य के प्रति मेरे प्रेम को प्रकट करती है।

यदि ऐसा नहीं होता, तो सृष्टि का कोई उद्देश्य नहीं होता।

जो बकवास होगा क्योंकि मैं कभी भी बिना किसी उद्देश्य के कुछ नहीं करता। सब कुछ आदमी के लिए किया गया था।

काश! वह इसे नहीं पहचानता है और यह मेरे लिए दर्द का कारण बन गया है!

मेरी बेटी, अगर तुम मेरे दुख को मीठा करना चाहती हो,

- मेरी वसीयत में अक्सर आओ और

"मुझे सभी सृष्टि के नाम पर आराधना, प्रेम, कृतज्ञता और धन्यवाद के साथ कवर करें"।

मैं पूरी तरह से ईश्वरीय इच्छा में विलीन हो गया हूं ताकि हर प्राणी के लिए खुद को प्रतिस्थापित कर सकूं ताकि उसके नाम पर वह सब कुछ पेश कर सकूं जो उसे सर्वोच्च महामहिम को देना है। जैसा मैंने किया, मैंने अपने आप से कहा:

"मुझे अपने प्यारे यीशु को सभी के नाम पर देने के लिए पर्याप्त प्यार कहां मिल सकता है?"

यीशु ने मुझे अंदर से कहा:

"मेरी बेटी, मेरी वसीयत में,

आप उस प्रेम को अति प्रचुरता में पाएंगे जो उस प्रेम को प्रतिस्थापित करने के लिए आवश्यक है जो सभी प्राणियों पर मुझ पर निर्भर करता है।

क्योंकि जो कोई भी मेरी वसीयत में प्रवेश करता है, वह उसमें तीव्र स्रोत पाता है।

जहां हम कभी भी उनसे बाहर निकले बिना जितना चाहें उतना आकर्षित कर सकते हैं।

प्रेम का फव्वारा है, जो तेजी से अपनी लहरों को लॉन्च करता है। जितना अधिक आप आकर्षित करते हैं, उतना ही इसका प्रवाह बढ़ता है।

सुंदरता का स्रोत है जो कभी सूखता नहीं है। यह हमेशा नई सुंदरियों का उत्सर्जन करता है।

ज्ञान, सुख, अच्छाई, शक्ति, दया, न्याय और मेरे अन्य सभी गुणों के फव्वारे भी हैं।

प्रत्येक फव्वारा अपने पड़ोसियों में बह जाता है। जैसे क्या

- प्रेम का फव्वारा सुंदरता, ज्ञान, शक्ति आदि को प्रेम से भर देता है।

-सौंदर्य का फव्वारा प्यार, ज्ञान, शक्ति आदि को सुंदरता देता है।

यह सब इतनी तीव्रता से संपन्न होता है कि सारा स्वर्ग इससे प्रसन्न होता है।

ये विभिन्न फव्वारे

-इस तरह के सामंजस्य को प्रस्तुत करें,

-ऐसी खुशी पैदा करो और ऐसा तमाशा पेश करो

कि सभी धन्य इससे प्रसन्न हैं और अब इससे खुद को अलग नहीं करना चाहते हैं।

तो मेरी बेटी,

क्योंकि जो कोई चाहता है, सबके नाम पर, सबको प्यार करे, मरम्मत करे और बदल दे, यह नितांत आवश्यक है कि वह मेरी वसीयत में रहे,

जहाँ से सब कुछ निकलता है, जहाँ से चीजें बहती हैं

- जितनी बार चाहें गुणा करें e

- वे दैवीय छाप द्वारा चिह्नित हैं।

यह छाप उन फव्वारों का निर्माण करती है जिनकी लहरें बिंदु तक उठती हैं

- बाढ़ सब कुछ ई

- सबका भला करो।

इसलिए हमेशा मेरी मर्जी में रहो। यहीं मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं, जहां मैं तुम्हें चाहता हूं।"

अपनी सामान्य स्थिति में जारी रखते हुए, मैं यीशु के साथ शामिल हो गया, उससे भीख माँगता हूँ कि वह मुझे साथ रखे।

मेरे अंदर चलते **हुए उसने** मुझसे कहा :

"मेरी बेटी,

यदि आप केवल यह जानते हैं कि मैं प्राणियों की संगति से कितना प्यार करता हूँ! जब मैंने मनुष्य को बनाया, मैंने कहा:

" मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है, आइए हम उसके समान एक और प्राणी उत्पन्न करें, जो उसके साथ रहे, ताकि वे एक दूसरे के लिए आनन्दित हों"।

मनुष्य को बनाने से पहले, मैं अपने आप से इसी तरह के शब्द कहता था: "मैं अकेला नहीं रहना चाहता।

मैं चाहता हूं कि जीव मेरे साथ रहें,

- ताकि मैं उनके साथ आनन्दित हो सकूं,

-तो वे मेरी खुशी साझा कर सकते हैं। उनके साथ मैं अपने प्यार को खुली लगाम दूंगा"।

इसके लिए मैंने अपनी समानता में प्राणियों को बनाया है।

"जब उनकी बुद्धि मेरे बारे में सोचती है, तो वे मेरी बुद्धि की कंपनी रखते हैं। अगर उनकी नजर मुझ पर है या मुझे प्यार करने के लिए बनाई गई चीजों पर है,

- मुझे उनकी टकटकी की कंपनी महसूस होती है।

यदि उनकी जीभ प्रार्थना करे या सिखाए कि क्या सही है,

-मैं उनकी आवाज की कंपनी सुनता हूं।

अगर उनका दिल मुझसे प्यार करता है, तो मुझे उनके प्यार की संगति महसूस होती है, आदि।

लेकिन, अगर जीव इसके विपरीत करते हैं, तो मैं एक अपदस्थ राजा की तरह अकेला महसूस करता हूं। काश! कितनों ने मुझे अकेला छोड़ दिया और मुझे नज़रअंदाज़ कर दिया!"

मेरी हालत और भी दर्दनाक होती जा रही थी। जब मैं अपने प्यारे जीसस, अपने जीवन और अपनी हर चीज के अभाव के सागर में डूब रहा था, मैं शिकायत करने और बकवास करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था।

मेरे भीतर चलते हुए, मेरे प्यारे यीशु ने आह भरते हुए मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, तुम मेरे दिल की सबसे कठोर शहीद हो।

हर बार जब मैं तुम्हें कराहते हुए देखता हूं, मेरे अभाव के दर्द से लकवा मार जाता है, तो मेरी शहादत और भी दर्दनाक हो जाती है।

मेरा दर्द इतना बड़ा है कि मैं यह कहते हुए विलाप करता हूँ:

" अरे यार, तुमने मुझे कितना खर्च किया!

तूने मेरी उस इंसानियत की शहादत रची, जिसने तेरे प्यार से पागल होकर तेरे सारे दुखों को अपने ऊपर ले लिया है।

और आप उसे शहीद करना जारी रखते हैं, जिसने मेरे और आपके लिए प्यार किया, खुद को आपकी खातिर शिकार के रूप में पेश किया »।

इस प्रकार मेरी शहादत निरंतर है। मैं इसे और अधिक स्पष्ट रूप से महसूस करता हूं

क्योंकि यह किसी की शहादत है जो मुझसे प्यार करता है और

- और यह कि एक साथ प्यार की शहादत अन्य सभी शहीदों से आगे निकल जाती है »।

फिर, अपने मुंह को मेरे दिल के कान के पास पहुंचा, उसने कराहते हुए कहा:

"मेरी बेटी, मेरी बेटी, मेरी बेटी!

केवल आपका यीशु ही आपको समझता है और आपके लिए करुणा से भरा है, क्योंकि मैं आपकी शहादत को अपने दिल में महसूस करता हूं »।

उसने जोड़ा:

"सुनो, मेरी बेटी:

अगर, युद्ध की सजा के तहत, आदमी

उसने खुद को अपमानित किया था और

अपने आप में प्रवेश किया था,

अधिक सजा की आवश्यकता नहीं होगी। लेकिन वह हंगामा करने लगा।

इस प्रकार, इसे अपने भीतर ले जाने के लिए, युद्ध से भी बदतर सजा की जरूरत है और आएगी।

मेरा न्याय मेरी अनुपस्थिति को व्यवस्थित करता है।

इस तरह मैं तुम्हारे पास आने से परहेज करता हूँ। क्योंकि अगर मैं तुम्हारे पास आऊं,

- आप मेरा न्याय लेंगे और,

-अपने कष्टों से आप उन अंतरालों को भरते हैं जो मनुष्य अपने पापों से बनाता है। क्या आपने कई सालों से ऐसा नहीं किया है?

मनुष्य का हठ उसे इस महान भलाई के योग्य नहीं बनाता है, इस कारण वह अक्सर तुम्हें मुझसे वंचित करता है।

तुझे मेरी खातिर शहीद होते देख,
- मेरा दर्द इतना बड़ा है कि मैं बेसुध हूँ।

मैं मजबूर हूँ
- मेरे विलाप को तुमसे छिपाने के लिए और
- उन्हें आप में न डालें,
ताकि आपको और अधिक कष्ट न हो।"

मैंने अपने हमेशा दयालु यीशु से शिकायत की, उससे कहा:
"तुम कैसे बदल गए!
क्या यह संभव है कि मेरे लिए और कोई दुख न हो?

हर कोई पीड़ित है; मैं अकेला हूँ जो इसके लायक नहीं है!
यह सच है कि दुष्टता में मैं सब से आगे निकल जाता हूँ, परन्तु मुझ पर दया कर।
मुझे कम से कम दुख के टुकड़ों से इनकार न करें जो आप दूसरों को बहुतायत में बांटते हैं। मेरे प्यारे, मैं कितनी भयानक स्थिति में हूँ! मुझ पर दया करो, दया करो!"
जब मैं यह कह रहा था, मेरे प्यारे यीशु मेरे भीतर चले गए और मुझसे *कहा:*

"मेरी बेटी, शांत हो जाओ!
नहीं तो तुम मेरे दिल के आँसू और गहराई से खोलोगे! क्या आप मुझे दुख में हराना चाहते हैं?
मैं भी
मैं सभी प्राणियों के सभी कष्टों को अपने भीतर ले जाना पसंद करता।

उनके लिए मेरा प्यार इतना महान था कि काश उनमें से कोई भी पीड़ित न होता। हालाँकि, मैं इसका पता नहीं लगा सका।

मुझे पिता की बुद्धि और न्याय के अधीन होना पड़ा।

हालाँकि उन्होंने मुझे प्राणियों के अधिकांश कष्टों को अपने ऊपर लेने की अनुमति दी, लेकिन वे नहीं चाहते थे कि मैं उन सभी को अपने ऊपर ले लूं।

ताकि उसके न्याय के अधिकार और संतुलन बरकरार रहे।

मेरी मानवता ने इसे समाप्त करने के लिए पर्याप्त कष्ट सहना पसंद किया होगा

-नरक, शुद्धिकरण और सभी दंड। लेकिन देवत्व ऐसा नहीं चाहता था।

न्याय ने प्रेम से कहा:

" **क्या आप अपने अधिकार चाहते थे?** वे आपको प्रदान किए गए हैं। न्याय के **भी अपने अधिकार हैं।"**

मैं तो पिता के ज्ञान के लिए इस्तीफा दे दिया हूँ।

लेकिन मेरी मानवता ने बहुत पीड़ा का अनुभव किया है, जो कि प्राणियों पर पड़ने वाले महान कष्ट को देखते हुए है।

पीड़ित न होने के बारे में आपकी शिकायतें

उसी विषय पर मेरी अपनी शिकायतों को प्रतिध्वनित करें।

मैं आपके दिल को मजबूत करने आया हूं, यह जानकर कि यह दुख कितना दर्दनाक है। हालाँकि जान लें कि यह आपके यीशु के लिए भी एक पीड़ा है »।

मेरे यीशु के प्यार के लिए, मैंने खुद को त्याग दिया है कि मैं पीड़ित न हो। लेकिन मेरे दिल की पीड़ा बहुत बड़ी थी।

मेरे दिमाग में कई तरह के विचार चल रहे थे, खासकर इस बारे में कि वह अपनी ईश्वरीय इच्छा के बारे में मुझसे क्या कह रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं इस मुद्दे पर उनके शब्दों के प्रभाव को अपने आप में कभी नहीं देख सकता।

यीशु ने कृपया जोड़ा :

"मेरी बेटी, जब मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुम मेरी वसीयत में रहने के लिए सहमत हो, तो तुमने यह कहते हुए सहमति व्यक्त की:

" मैं हाँ कहता हूँ, अपनी मर्जी से नहीं बल्कि अपनी मर्जी से,

ताकि मेरी हाँ में एक दिव्य हाँ की सारी शक्ति और मूल्य हो।

अच्छा! जान लें कि आपके द्वारा उच्चारित **यह "हां"** मेरी इच्छा की तरह ही मौजूद है और हमेशा मौजूद रहेगा।

इस "हां**"** के साथ आपका निजी जीवन समाप्त हो गया है। आपकी इच्छा को अब **अकेले नहीं रहना पड़ेगा** ।

चूंकि सभी प्राणी मेरी इच्छा में हैं, आप पूरे मानव परिवार के नाम पर मेरे सिंहासन के चरणों में दैवीय तरीके से लेटने के लिए आए हैं।

- सभी प्राणियों के विचार जो तुमने अपने मन में रखे थे, मुझे इन सभी विचारों की महिमा देने के लिए।

तुम्हारी आँखों में, तुम्हारी वाणी में, तुम्हारे कार्यों में, तुम्हारे खाने में और यहाँ तक कि तुम्हारी नींद में भी,

- प्राणियों के संगत कार्यों के लिए मुझे महिमा देकर ऐसा ही करो।

आपके जीवन में सब कुछ शामिल होना चाहिए।

अगर, मेरे निजीकरण से प्रताड़ित,

तू ने सारे मानव परिवार को अपने कामों में नहीं जोड़ा है, मैं तेरी निन्दा करूंगा।

और यदि तुम मेरी नहीं सुनते, तो मैं तुम सब से वेदना में कहता:

" यदि आप मेरा अनुसरण नहीं करना चाहते हैं, तो मैं अपने आप सब कुछ करूँगा।"

मेरी वसीयत में जीने के लिए जीना है

- अपने निजी जीवन से प्रस्थान,

- उसकी व्यक्तिगत सजगता को छोड़ दें। यह अन्य सभी जीवन को गले लगा रहा है।

इस पर ध्यान दें और डरें नहीं।"

मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा:

"मैं सबकी नज़रों से छुप जाना चाहता हूँ ताकि सब मुझे ऐसे भूल जाएँ जैसे मैं अब धरती पर नहीं हूँ। लोगों के साथ व्यवहार करना मेरे लिए कितना दर्दनाक है!

मुझे गहन मौन की आवश्यकता महसूस होती है"।

फिर, मेरे भीतर चलते हुए, यीशु ने मुझसे कहा:

"तू छिपना चाहता है, परन्तु मैं तुझे उस दीपक की नाईं चाहता हूं, जो उसके दीवट पर सब को उजियाला देता है,

-यह दीपक मेरे शाश्वत प्रकाश द्वारा संचालित है। यदि आप छिपते हैं, तो यह आप नहीं हैं जो छिपते हैं,

यह मैं, मेरा प्रकाश और मेरा वचन है »।

फिर मैंने प्रार्थना करना जारी रखा और पता नहीं कैसे, मैंने खुद को बाहर पाया

यीशु की संगति में मेरा शरीर। मैं छोटा था और यीशु बहुत लंबा था।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी,

मेरे समान बनने के लिए बढ़ो।

मैं चाहता हूं कि तुम्हारी बाहें मेरी पहुंचें और तुम्हारा मुंह मेरे पास पहुंचे।"

मैं वास्तव में नहीं जानता था कि यह कैसे करना है। यीशु ने मेरे हाथ में हाथ डाला और दोहराया: "बढ़ो, बढ़ो"।

मैंने कोशिश की और वसंत की तरह इस तरह महसूस किया कि अगर मैं चाहूं तो बढ़ सकता हूं।

फिर मैं आराम से लेट गया और अपना सिर यीशु के कंधे पर रख दिया क्योंकि वह मेरे हाथों में हाथ थाम रहा था।

उनके हाथों से इस संपर्क के माध्यम से, मुझे उनके सबसे पवित्र घावों की याद आई और मैंने उनसे कहा: "मेरे प्यार, चूंकि तुम चाहते हो कि मैं अपनी महानता बनूं, तुम मुझे अपने कष्ट क्यों नहीं देते? मुझे दो! इनकार मत करो उन्हें मेरे लिए!"

यीशु ने मेरी ओर देखा और मुझे अपने हृदय से बहुत दृढ़ता से गले लगा लिया, मानो वह मुझे बहुत कुछ बताना चाहता हो।

यह बाद में गायब हो गया और मैंने खुद को अपने शरीर में पाया।

मैं अपने गरीब राज्य में था और मुझे अपने अच्छे यीशु में महसूस हुआ जो मेरी प्रार्थना में एकजुट थे।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी, मैं आदमी बनाने में क्या चाहती थी

- सभी चीजों में मेरी इच्छा करो और

- कि धीरे-धीरे मेरी वसीयत में बार-बार किए गए कृत्यों से, मेरे जीवन का सूर्य उसमें बन जाए।

इस प्रकार, मेरे जीवन के सूर्य को इसमें वही सूर्य मिल जाता और दोनों एक में विलीन हो जाते।

तब मैं उसे स्वर्ग की खुशियों में ले आता।

काश! मनुष्य ने इस दिव्य योजना का पालन नहीं किया।

वह मेरी वसीयत पूरी नहीं करता है या वह इसे केवल आंशिक रूप से पूरा करता है।

मेरे जीवन में, उनके मानवीय कार्यों से अस्पष्ट, परिपक्वता तक बढ़ने के लिए पर्याप्त पोषण प्राप्त नहीं करता है।

इसलिए, यह सृष्टि के उद्देश्य के लगातार विरोध में है।

उनमें से कितने, जो वासना और पाप का जीवन जी रहे हैं, उनमें एक दुष्ट जीवन का निर्माण करते हैं!"

मैंने अपने प्यारे यीशु से अपनी दयनीय स्थिति के बारे में शिकायत करते हुए कहा:

"मुझे बताओ, मेरे प्रिय, तुम कहाँ हो?

मुझे बताओ कि तुमने मुझे किस रास्ते से छोड़ा ताकि मैं तुम्हें पा सकूं।

मुझे अपने कदमों के निशान दिखाओ क्योंकि कदम दर कदम मैं तुम तक पहुँचता हूँ। आह! यीशु, तुम्हारे बिना मैं जारी नहीं रख सकता!

वैसे भी, भले ही तुम दूर हो, मैं तुम्हें अपने चुंबन भेजता हूं।

मैं उस हाथ को चोदता हूं जो अब मुझे नहीं रखता, वह मुंह जो अब मुझसे बात नहीं करता, वह चेहरा जिसे मैं अब नहीं देखता, वे पैर जो अब मेरी ओर नहीं चलते हैं, लेकिन वह कहीं और जाते हैं। आह! जीसस, मेरी हालत कितनी उदास है!

क्या क्रूर अंत मेरा इंतजार कर रहा था! ”

जब मैं ये और कई अन्य बकवास कह रहा था, मेरे प्यारे यीशु मेरे भीतर चले गए और मुझसे *कहा* :

"मेरी बेटी, शांत हो जाओ।

जो मेरी वसीयत में रहता है, उसके लिए सभी जगह मुझे खोजने के लिए सुरक्षित

स्थान हैं। मेरी इच्छा सब कुछ भर देती है।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन सा रास्ता अपनाते हैं, आपको मुझे खोजने में सक्षम नहीं होने से डरना नहीं चाहिए।

आह! मेरी बेटी, मैं अपने दिल में तुम्हारी दर्दनाक स्थिति को महसूस करता हूं।

मैं देखता हूं कि मेरे और मेरी मां के बीच जो दर्द का प्रवाह गुजरा है, वह मेरे और आपके बीच खुद को दोहराता है।

मेरी पीड़ा के कारण उसे सूली पर चढ़ाया गया था। और मुझे उसकी पीड़ा के कारण सूली पर चढ़ाया गया था।

"लेकिन इस सबका कारण क्या था? आत्माओं के लिए हमारा प्यार।

आत्माओं के प्यार के लिए, मेरी प्यारी माँ ने मेरे सभी कष्टों और यहाँ तक कि मेरी मृत्यु को भी सहन किया।

आत्माओं के लिए, मैंने उनके सभी कष्टों को सहा है, जिसमें मुझसे वंचित होने के उनके दर्द भी शामिल हैं।

ओह! मेरी अविभाज्य माँ को मुझसे वंचित करने के लिए मेरे प्यार की कितनी क़ीमत चुकानी पड़ी और उसने कितना कष्ट सहा! लेकिन आत्माओं के प्यार ने हर चीज पर जीत हासिल की है।

यह भी आत्माओं के लिए है कि आपने अपने शिकार की स्थिति को स्वीकार कर लिया है, कि आपने अपने जीवन के दौरान उत्पन्न हुए सभी कष्टों को स्वीकार कर लिया है।

अगर यह आत्माओं के इस प्यार के लिए नहीं थे,

तुम्हारा वनवास समाप्त हो जाएगा,

तुम्हें मुझसे वंचित होने का दर्द नहीं होगा और

न ही मुझे तुम्हें इस तंगी से तड़पते हुए देखने का दर्द होगा।

इसलिए धैर्य रखें और आप में अंत तक आत्माओं के प्यार की जीत हो "।

मेरे दुख ने खुद को और अधिक महसूस किया और मैंने अपने आप से कहा:

"माई जीसस, मेरा क्या जीवन है!"

तुरंत, *यीशु ने मुझसे कहा* :
"मेरी बेटी,
मेरी इच्छा में रहने वाली आत्मा के लिए, पवित्रता का केवल एक ही उद्देश्य है:

एक सतत "पिता की जय"
के बाद
" *जैसा पहले था,* वैसा ही अब है
और यह हमेशा और हमेशा के लिए कैसा रहेगा »।

ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके लिए यह आत्मा ईश्वर की महिमा न करे।
उनकी पवित्रता पीछे हटने के अधीन नहीं है, लेकिन यह अभी भी राज करती है।
इसकी नींव है "पिता की महिमा" और
इसका विशेषाधिकार "जैसा कि शुरुआत में था, आदि।"

मैं यीशु के निजीकरण के बारे में शिकायत करता रहा।
मैंने यह भी शिकायत की है कि यह मुझे दूसरों को प्रचुर मात्रा में देते हुए दुख से वंचित करता है।
वह मेरे अंदर से बाहर आया और मेरे कंधे पर सिर टिकाकर दर्द से मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मेरे हौसले में रहने वाली आत्मा बुलंदियों पर रहती है
नतीजतन, वह एक बेहतर नज़र रखता है कि नीचे क्या हो रहा है।
उसे ऊपर रहने वालों के निर्णयों, कष्टों आदि में भाग लेना चाहिए।

देखें कि दैनिक पारिवारिक जीवन में क्या होता है: केवल पिता और माता, और

कभी-कभी एक बड़ा बेटा, पारिवारिक जीवन में निहित निर्णयों और पीड़ाओं में भाग लेते हैं। जब परिवार संकट में होता है, तो छोटे बच्चों को यह कुछ नहीं पता होता है।

बल्कि, वे खेलते हैं और अपना सामान्य जीवन जीते हैं।

अनुग्रह के क्रम में ऐसा है।

जो छोटे हैं और अभी भी बढ़ रहे हैं वे नीचे रहते हैं।

लेकिन जो लोग मेरी इच्छा की ऊंचाइयों में रहते हैं, उन्हें नीचे रहने वालों का समर्थन करना चाहिए, उन खतरों को देखना चाहिए जो उनका इंतजार कर रहे हैं, उन्हें सही निर्णय लेने में मदद करें, आदि।

इसलिए शांत हो जाओ। मेरी वसीयत में हमारा एक आम जीवन होगा। हम सब मिलकर मानव परिवार की कठिनाइयों और पीड़ाओं में भाग लेंगे।

आप उन बड़े तूफानों को देखेंगे जो उठेंगे। जबकि नीचे के लोग खतरों के बीच खेलते हैं, हम उनके दुर्भाग्य के लिए रोएंगे। ”

मैंने अपने प्यारे जीसस से शिकायत करते हुए कहा: "तुम्हारे वादे कहाँ हैं? मेरे पास अब तुम्हारे लिए एक क्रॉस या समानता नहीं है; सब कुछ गिर गया है, मुझे बस अपने दुखी भाग्य पर रोना है"।

मेरे भीतर चलते हुए, यीशु ने मुझसे कहा:

" **मेरी बेटी,** मेरा सूली पर चढ़ना पूरा हो गया था । क्या आप जानना चाहते हैं कि क्यों?

क्योंकि यह मेरे पिता की ईश्वरीय इच्छा में पूरी हुई थी।

इस वसीयत में, मेरा क्रॉस इतना लंबा और चौड़ा हो गया है कि सभी सदियों को गले लगा सकता है और सभी दिलों, अतीत, वर्तमान और भविष्य में प्रवेश कर सकता है।

ईश्वरीय इच्छा ने मुझ पर कील ठोक दी है:

मेरी ख्वाहिशों, मोहब्बतों और दिल की धड़कनों में।

"मैं कह सकता हूँ कि मैं जी नहीं रहा था

- मेरा अपना जीवन नहीं,

- लेकिन उस शाश्वत इच्छा की, जिसने मुझमें उन सभी प्राणियों को घेर लिया, जिनके लिए वह चाहता था कि मैं प्रतिक्रिया दूं।

यदि सनातन वसीयत लेखक न होती तो मेरा सूली पर चढ़ना कभी भी पूर्ण नहीं होता और सभी प्राणियों को गले लगाता।

मुझे भी आप में चाहिए

- कि सूली पर चढ़ना पूरा हो गया है,

- जो सभी प्राणियों को गले लगाता है।

यही कारण है कि मैं आपको लगातार कॉल कर रहा हूं

-पूरे मानव परिवार को सर्वोच्च महामहिम के सामने लाने के लिए e

- हर प्राणी के नाम पर वह काम करना जो वह नहीं करता।

स्वयं का पूर्ण विस्मरण और स्वार्थ का पूर्ण अभाव वे कीलें हैं जो मेरी इच्छा आप में रखती हैं।

मेरी वसीयत छोटी या अधूरी चीजों को करना नहीं जानती।

आत्मा को घेरे हुए, वह इसे पूरी तरह से आप में चाहता है और उस पर अपनी मुहर लगाता है।

मेरी मर्जी

- यह मानव के सभी प्राणियों के आंतरिक भाग को खाली कर देता है और

- इसे परमात्मा से बदलें।

यह आत्मा के अंदरूनी हिस्से को उतने ही कीलों से सील कर देता है, जितने कि दैवीय कार्यों से बदलने के लिए मानवीय क्रियाएं हैं।

इस प्रकार आत्मा का सच्चा क्रूस बनता है,

- सिर्फ थोड़ी देर के लिए नहीं, बल्कि पूरी जिंदगी के लिए।"

मेरी सामान्य अवस्था में होने के कारण, मेरे दयालु *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

मेरी वसीयत में किए गए कर्म मानव कर्मों को भंग कर देते हैं, जो दैवीय क्रियाओं में परिवर्तित हो जाते हैं,

- आसमान में उठो,

-सभी प्राणियों में परिसंचारी e

- सभी सदियों को गले लगाओ।

ये क्रियाएं मेरी इच्छा में स्थायी रूप से रहती हैं।

वे प्राणियों के हर अपराध के खिलाफ मेरे सिंहासन के रक्षक हैं और वह,

अभी के लिए नहीं ,

लेकिन सदियों के अंत तक ।

मेरी वसीयत में किए गए कार्यों में आवश्यकता और परिस्थितियों के अनुसार मेरी महिमा को गुणा करने का गुण है।

आत्मा का क्या सुख होगा जब स्वर्ग में पहुँचकर वह देखता है कि उसके कर्म मेरी वसीयत में हो रहे हैं?

- वे पृथ्वी से आने वाले अपराधों को बेअसर करके मेरे सिंहासन के रक्षक बन गए हैं!

स्वर्ग में मेरी इच्छा में रहने वाली आत्मा की खुशी पृथ्वी पर रहते हुए दूसरे धन्य की खुशी से अलग होगी।

दूसरों को अपनी सारी खुशी मुझसे प्राप्त होगी। जबकि ये आत्माएं,

- वे न केवल मुझसे अपनी खुशी प्राप्त करेंगे,

-लेकिन उनके पास खुशी के समुद्र से खींची गई खुशियों की छोटी-छोटी नदियाँ होंगी।

पृथ्वी पर रहते हुए इन आत्माओं ने मेरे समुद्र से सुख की नदियाँ बनाईं।

यह सही है कि स्वर्ग में उनके पास भी सुख की ये नदियाँ हैं, जो सभी धन्य लोगों पर बरसेंगी।

कितनी सुन्दर हैं ये नदियाँ जो मेरी दिव्य इच्छा के अनंत समुद्र में अपना उद्गम समेट लेती हैं!

वे मुझमें और मैं उनकी ओर उंडेलते हैं।

वे एक मनमोहक तमाशा हैं जिसके आगे सभी धन्य आनंदित हैं"।

यह मास के पवित्र बलिदान के दौरान था और मैंने उसके साथ पवित्र होने के लिए खुद को यीशु में छुपाया।

मेरे अंदर चलते *हुए उसने* मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, मेरी वसीयत दर्ज करें ताकि मैं आपको सभी मेजबानों में पा सकूं, न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में भी।

तुमको जितने मैं चाहूँगा, उतने अभिषेक प्राप्त होंगे। हर समर्पित यजमान में,

-मैंने अपना जीवन जमा कर दिया और मुझे बदले में एक और चाहिए।

-मैं खुद को आत्मा को देता हूं, लेकिन अक्सर आत्मा खुद को बदले में देने से इनकार कर देती है। इस प्रकार मेरा प्यार ठुकराया हुआ, उपहासित महसूस करता है।

आओ, इसलिए, मेरी वसीयत में

-हर यजमान में मेरे साथ प्रतिष्ठित हो।

इस प्रकार, हर एक में, मैं अपने बदले में तुम्हारा जीवन पाऊंगा।

और यह, न केवल जब आप पृथ्वी पर हैं, बल्कि तब भी जब आप स्वर्ग में हैं। और जब कि मैं अंतिम दिन तक अभिषेक प्राप्त करूंगा, तो तुम भी अंतिम दिन तक मेरे साथ अभिषेक प्राप्त करोगे »।

उन्होंने जोड़ा :

"मेरी वसीयत में किए गए कार्य अन्य सभी से ऊपर हैं।

वे अनंत काल के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं और

वे सभी मानवीय कृत्यों को पीछे छोड़ देते हैं। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि ये कृत्य

- एक समय या किसी अन्य पर बने होते हैं, या

- चाहे वे छोटे हों या बड़े।

इतना काफी है कि वो मेरी वसीयत में हो गए हैं

ताकि अन्य सभी मानवीय कृत्यों पर उनकी प्राथमिकता हो।

मेरी वसीयत में किए गए कार्य अन्य पदार्थों के साथ मिश्रित तेल की तरह हैं:

अगर यह महान मूल्य की चीजों के बारे में है, उदाहरण के लिए,

- सोना या चांदी, या

- मसालेदार भोजन, या

- सामान्य बातें,

सब कुछ नीचे रहता है, तेल हर चीज पर प्रबल होता है, वह कभी नीचे नहीं होता। कम मात्रा में भी, ऐसा लगता है, " *मैं इस सब का आनंद ले रहा हूं।"*

मेरी वसीयत में किए गए कर्म प्रकाश में परिवर्तित हो जाते हैं,

-एक प्रकाश जो शाश्वत प्रकाश में विलीन हो जाता है।

वे मानवीय कृत्यों की श्रेणी में नहीं रहते, बल्कि दैवीय कृत्यों की श्रेणी में आ जाते

हैं।

अन्य सभी कृत्यों पर उनका वर्चस्व है।

अपनी सामान्य स्थिति में बने रहना और प्रार्थना में खुद को लीन करना,

मैंने अपने आप में एक रसातल देखा जिसकी गहराई या चौड़ाई मैं नहीं खोज सका।

इस रसातल के बीच में मैंने अपने प्यारे यीशु को देखा, उदास और मौन। मैंने उसे अपने से बहुत दूर महसूस किया, जैसे कि वह मेरे लिए नहीं है।

मेरे दिल को एक क्रूर मौत ने तड़पाया है जो इस रसातल के कारण खुद को बार-बार दोहराती है जो मुझे हर चीज से, मेरे जीवन से अलग करती है।

जब मेरा दिल खून से टपक रहा था, मेरे हमेशा अच्छे यीशु ने इस रसातल से बाहर आकर खुद को मेरी पीठ के पीछे रखा और अपनी बाहों को मेरे गले में लपेटते हुए मुझसे कहा:

"मेरी प्यारी बेटी, तुम मेरी तस्वीर हो।

कितनी बार मेरी कराहती हुई मानवता ने इन यातनाओं का अनुभव किया है!

मेरी मानवता मेरी दिव्यता में शामिल हो गई, दोनों एक हो गए।

हालाँकि, तब

-कि मेरी दिव्यता ने मुझे आंतरिक और बाह्य रूप से घेर लिया,

-वह - मैं उससे जुड़ा हुआ था, मैंने उससे दूर महसूस किया।

इस पीड़ा के माध्यम से, मेरी मानवता ने मनुष्य को देवत्व से पाप के माध्यम से अलग करने की कीमत चुकाई है, ताकि उसे देवत्व के साथ फिर से जोड़ा जा सके।

मेरी दिव्यता और मेरी मानवता के बीच इस अलगाव का हर पल मेरे लिए एक

बेरहम मौत थी।

यही कारण है कि आपकी पीड़ा और आप जो रसातल देखते हैं उसका कारण है।

इन उथल-पुथल भरे समय में जब मानवता मुझसे दूर जा रही है, इस अलगाव के दर्द को मुझे वापस लाने के लिए आपको इसे महसूस करना चाहिए।

तेरी हालत बहुत दर्दनाक है, पर ये भी तेरे जीसस का दर्द है तुझे ताकत देने के लिए मैं तुझे पीछे से सहारा देता हूँ,

ताकि आपके कष्ट और अधिक तीव्र हों।

दरअसल, अगर मैं आपको सामने से सपोर्ट करूं,

- मेरी बाहों को अपने पास देखने का साधारण तथ्य

यह तुम्हारे दुखों को आधा कर देगा, और तुम्हारे समान होने में देर हो जाएगी।

मैं बहुत व्यथित, अकेला और असमर्थ महसूस कर रहा था।

मेरे प्यारे यीशु ने मुझे अपनी बाहों में ले लिया, मुझे हवा में उठा लिया और मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

जब मेरी मानवता पृथ्वी पर थी, मैं स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रहता था,

- सारी पृथ्वी मेरे अधीन है और

-मेरे ऊपर सभी स्वर्ग।

इस तरह जीने से मैं आकर्षित करने की कोशिश कर रहा था

- पूरी पृथ्वी ई

-सब स्वर्ग

मुझ में इसे एक बात बनाने के लिए।

अगर मैं पृथ्वी के स्तर पर रहता,

-मैं सब कुछ अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता था। मैं पृथ्वी के कुछ बिंदुओं पर आकर्षित होता।

यह सच है कि इस तरह जीना मुझे बहुत महंगा पड़ा, क्योंकि

-मेरे पास आराम करने के लिए या किसी के झुकने के लिए जगह नहीं थी। मेरी मानवता को केवल सख्त आवश्यक चीजें प्रदान की गई हैं।

बाकी के लिए, मैं हमेशा अकेला और बिना आराम के था।

"यह ज़रूरी था,

- *सबसे पहले टी मेरे व्यक्ति के बड़प्पन के* लिए , जिसके लिए नीचे और नीच और बुरे मानवीय समर्थन के साथ रहना उचित नहीं था और,

- *दूसरा , रिडीमर के रूप में मेरे मिशन के लिए*

जिसका हर चीज पर वर्चस्व होना था।

इसके लिए यह उचित था कि मैं सबसे ऊपर रहूं।

"इसी प्रकार, जिन्हें मैं अपनी समानता में बुलाता हूं,

मैंने उन्हें अपनी मानवता के समान परिस्थितियों में रखा। मैं उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी के बीच अपनी बाहों में बसाता हूं।

केवल सख्त आवश्यक चीजें ही उन तक पहुंचती हैं। वे सब मेरे हैं, सब कुछ से न्यारे हैं।

उनके लिए, मानवीय चीजें जो बिल्कुल जरूरी नहीं हैं, वे नीच और अपमानजनक हैं।

अगर उन्हें मानवीय सहारा दिया जाता है, तो वे इंसान की बदबू को सूंघते हैं और उससे दूर चले जाते हैं।"

उन्होंने जोड़ा :

"जैसे ही आत्मा मेरी वसीयत में प्रवेश करती है, उसकी इच्छा खुद को मुझसे बांध लेती है। भले ही वह इसके बारे में नहीं सोचती है, मेरी इच्छा जो कुछ भी करती है, उसकी इच्छा भी करती है।

और सबके भले के लिए मेरे साथ दौड़ता है।"

अपनी आदत का पालन करते हुए, मैं पूरे मानव परिवार को अपने प्यारे यीशु के पास ले आया।

-प्रार्थना करो और सब के नाम पर प्रायश्चित करो, ई

- मैं सब कुछ बदल देता हूं

उनके लिए वह सब करने के लिए जो वे करने के लिए बाध्य हैं। जब मैं यह कर रहा था, मेरे मन में एक विचार आया:

"सोचो और अपने लिए प्रार्थना करो!

क्या आप नहीं देखते कि आप किस दुखद स्थिति में हैं?"

मैं इसे करने ही वाला था कि मेरे भीतर चलते हुए, मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, तुम मेरी समानता से क्यों भटकना चाहती हो? मेरी मानवता ने कभी अपने बारे में नहीं सोचा।

मेरी पवित्रता पूर्ण निःस्वार्थता से चिह्नित थी।

- मैंने अपने लिए कभी कुछ नहीं किया।

-मैंने प्राणियों के लिए सब कुछ किया और सहा है।

मेरे प्यार को सच्चा कहा जा सकता है

क्योंकि यह पूर्ण परोपकारिता पर आधारित था।

जहां स्वार्थ है, वहां सत्य का कोई स्रोत नहीं है ।

पूरी तरह से परोपकारी आत्मा वह है जो सबसे आगे बढ़ती है।

मेरी कृपा का सागर

- पीछे से पहुंचा और

- उसके बारे में चिंता किए बिना भी उसे पूरी तरह से अभिभूत कर देता है।

आत्मा अपने आप में बदल गई, दूसरी ओर, पीछे है। मेरी कृपा का सागर उसके सामने है।

और यदि संभव हो तो उसे अपनी भुजाओं के बल से इसे पार करना होगा।

खुद के लिए चिंता कई बाधाएं पैदा करती है ,

- अन्य बातों के अलावा, मेरे समुद्र में तैरने का डर। आप जमीन पर रहने का जोखिम उठाते हैं"।

मैं यीशु के लगभग निरंतर अभाव में रहता हूँ।

सबसे अच्छा, यह कुछ समय के लिए दिखाई देता है, और फिर बिजली की तरह गायब हो जाता है। आह! मेरे बेचारे दिल की शहादत वही जानता है!

मैं उस प्यार के बारे में सोच रहा था जिसके साथ

मेरे हमेशा दयालु यीशु ने हमारे लिए बहुत कुछ सहा।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, मेरी पहली शहादत थी मोहब्बत,

जिसने मेरे दूसरे को जन्म दिया: दुख।

मेरे सारे कष्ट प्रेम के समुद्र से पहले थे।

जब मेरे प्यार ने खुद को अकेला देखा और अधिकांश प्राणियों ने त्याग दिया, तो यह भ्रम हो गया।

खुद को किसे देना है, यह नहीं पाकर उन्होंने खुद पर ध्यान केंद्रित किया।

इसने मुझे ऐसा दुख दिया कि, इसकी तुलना में, मेरे अन्य कष्टों से राहत मिली।
आह! जब मेरे प्यार को कंपनी मिलती है, तो मुझे खुशी होती है।

दूसरे प्यार की संगति में प्यार खुश है।
फिर चाहे वो थोडा सा प्यार ही क्यों न हो
क्योंकि वह पाता है कि किसे खुद को देना है, किसे अपना जीवन देना है।

जब वह किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम पाता है जो उससे प्रेम नहीं करता या घृणा नहीं करता, तो वह बहुत दुखी होता है।
कुरूपता के साथ-साथ सुंदरता भी बेइज्जती महसूस करती है। दो भाग जाते हैं।
क्योंकि सुंदरता कुरूपता से नफरत करती है।
और क्योंकि सुंदरता के आगे कुरूपता और भी कुरूप लगती है।

जो सुंदर है, जो सुंदर है उसके साथ रहने में प्रसन्नता है; दोनों अपनी सुंदरता का संचार करते हैं।

शिक्षक का इतना कुछ सीखने का क्या मतलब है
-अगर आपको पढ़ाने के लिए कोई छात्र नहीं मिल रहा है?
डॉक्टर का चिकित्सा की कला का अध्ययन करने का क्या उद्देश्य है
- अगर उसकी देखभाल के लिए कोई उसके पास नहीं आता है?

एक धनी व्यक्ति को अपने धन से क्या लाभ होता है?
-यदि वह हमेशा अकेला रहता है और अपनी संपत्ति को साझा करने के लिए किसी को नहीं ढूंढ पाता है?

कंपनी आपको खुश करती है,

- अच्छे को संवाद करने और बढ़ने देने के लिए।

अलगाव आपको दुखी और बाँझ बनाता है।

आह! मेरी बेटी, उसके अलगाव से मेरा प्यार कितना सहता है!

चंद लोग जो मुझे साथ रखते हैं, वो हैं मेरी तसल्ली और खुशी"।

मैंने अपने यीशु की परम पवित्र इच्छा में कार्य किया मेरे भीतर चलते हुए,
उन्होंने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, मेरी वसीयत में किए गए कार्यों को उसमें सील कर दिया गया है। एक बात के रूप में

अगर आत्मा मेरी वसीयत में प्रार्थना करती है, तो उसकी प्रार्थना मेरी वसीयत में मुहरबंद है।

इस प्रकार आत्मा को प्रार्थना का उपहार प्राप्त होता है,

यानी अब उसे प्रार्थना करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

स्वस्थ आंखों वालों को देखने की कोई कोशिश नहीं होती। वह स्वाभाविक रूप से वस्तुओं को देखता है और उनका आनंद लेता है।

लेकिन, उसके लिए जिसकी आंख बीमार है,

- इसे देखने में काफी मेहनत लगती है।

अगर मेरी वसीयत में आत्मा पीड़ित है,

-उसमें धैर्य का उपहार महसूस करता है। अगर वह मेरी वसीयत में काम करता है,

- वह उसे पवित्र तरीके से काम करने का उपहार महसूस करता है।

मेरी वसीयत में सील की गई कार्रवाइयां

- वे अपनी कमजोरी ई . खो देते हैं

- वे अपने मानवीय पहलू से मुक्त हो जाते हैं। वे दिव्य जीवन से ओत-प्रोत हैं »।

अपने आप को मेरी सामान्य स्थिति में पाते हुए, मैंने अपने हमेशा दयालु यीशु को मेरे अंदर प्रकाश की दुनिया डालते हुए देखा:

"मेरी बेटी, मेरी सच्चाई हल्की है।

जब मैं उन्हें आत्माओं से संवाद करता हूं, जो सीमित प्राणी हैं, तो मैं उन्हें एक संकीर्ण प्रकाश में संवाद करता हूं,

क्योंकि वे बड़ी ज्योति प्राप्त नहीं कर सकते।

यह सूर्य के साथ होता है :

जबकि यह एक सीमित ग्लोब के रूप में प्रकट होता है,

- यह जो प्रकाश फैलाता है वह पूरी पृथ्वी को निवेश करता है, गर्म करता है और उर्वरित करता है।

मनुष्य के लिए गिनना नामुमकिन है

पौधों को उपजाऊ बनाया,

पृथ्वी सूर्य से प्रकाशित और गर्म होती है ।

जबकि, एक नज़र में, कोई सूर्य को ऊपर देख सकता है, कोई यह नहीं देख सकता कि उसका प्रकाश कहाँ समाप्त होता है या वह कितना अच्छा करता है।

तो यह *मेरी सच्चाई* के साथ है ।

वे सीमित दिखाई देते हैं

लेकिन, जब वे प्रकट होते हैं,

-कितनी आत्माएं शामिल नहीं होतीं?

-कितनी आत्माएं नहीं जलतीं?

- वे क्या सामान नहीं बनाते हैं?

मैंने आप में प्रकाश का ग्लोब रखा है।

यह उन सत्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो मैं आपसे संवाद करता हूं।

उन्हें प्राप्त करने में चौकस रहें और उनके प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उन्हें संप्रेषित करने में और भी अधिक चौकस रहें »।

बाद में, प्रार्थना पर लौटते हुए, मैंने अपने आप को अपनी स्वर्गीय माता की बाहों में पाया, जिन्होंने मुझे दुलार किया और मुझे अपने स्तन से गले लगा लिया।

लेकिन, मैं यह नहीं समझा सकता कि क्यों, मैं जल्दी से इस तथ्य को भूल गया और शिकायत की कि सभी ने मुझे छोड़ दिया है।

गुजरते हुए, *यीशु ने मुझसे कहा* :

"एक पल पहले, मेरी माँ यहाँ थी और उसने तुम्हें बहुत प्यार से गले लगाया।" तो, मुझे याद आया।

उन्होंने जारी रखा :

"यह मेरे साथ भी हुआ था।

मैं कितनी बार आया हूं और तुम इसे भूल गए हो। शायद मुझे नहीं आना चाहिए?

मुझे एक माँ पसंद है जब उसका बच्चा सो रहा होता है।

वह उसे चोदती है और उसे सहलाती है, लेकिन बच्चा इसके बारे में कुछ नहीं जानता।

और जब वह जागता है, तो वह शिकायत कर सकता है

कि उसकी माँ उसे चोदती नहीं है और न ही उससे प्यार करती है।"

प्रेम की इतनी सारी चालों के निर्माता, यीशु की स्तुति करो।

मैं अभिभूत, अकेला महसूस कर रहा था और मदद या प्रोत्साहन का एक शब्द भी प्राप्त करने की कोई उम्मीद नहीं थी।

जब कोई मेरे पास आता है, भले ही वह पवित्र व्यक्ति हो,

मुझे ऐसा लगता है कि यह सिर्फ मदद, आराम पाने या किसी के संदेह से छुटकारा पाने के लिए हो सकता है। लेकिन, मेरे लिए, कुछ भी नहीं!

जब मैं इन भावनाओं में था, मेरे दयालु *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

जो मेरी वसीयत में रहता है वह मेरी हालत में है।

अगर मैंने कहा कि मुझे जीवों की जरूरत है

- क्या असंभव है,

क्योंकि प्राणी अपने सृष्टिकर्ता की सहायता नहीं कर सकते।

यह ऐसा होगा जैसे सूर्य अन्य प्राणियों से प्रकाश और ऊष्मा मांग रहा हो।

वे क्या करेंगे? उलझन में, वे सूरज से कहेंगे :

" आओ, तुम हमसे रोशनी और गर्मी मांगो,

तू जो जगत को भर देता है, और सारी पृथ्वी को अपनी ज्योति और ताप से भर देता है? आपके सामने हमारी रोशनी पूरी तरह से फीकी पड़ रही है!

बल्कि आपको ही हमें ये चीजें देनी चाहिए।"

तो यह उसके लिए है जो मेरी वसीयत में रहता है।

चूँकि वह मेरी स्थिति साझा करता है और मेरी इच्छा का सूर्य उसमें है, उसे अवश्य

प्रदान करना चाहिए

- प्रकाश, गर्मी, मदद, सुरक्षा और दूसरों के लिए आराम।

मैं ही उसका एकमात्र सहायक हूँ और वह मेरी इच्छा से दूसरों की सहायता करता है।"

मेरी हालत और भी दर्दनाक होती जा रही थी। केवल ईश्वरीय इच्छा ही मेरी मदद कर सकती है।

मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

- हर कार्य जो आत्मा मेरे लिए करती है,

- हर विचार, हर शब्द, हर प्रार्थना,

- कोई दुख ई

-मेरी एक साधारण याद भी एक जंजीर बन जाती है जो आत्मा को मुझसे बांधती है ।

मानव इच्छा का उल्लंघन किए बिना, इन जंजीरों में शक्ति है

-दृढ़ता बनाने के लिए जो अंतिम चरण है

इससे पहले कि आत्मा अनन्त महिमा को प्राप्त करे"।

मैंने उस प्रसंग पर ध्यान दिया जिसमें, अपने दर्दनाक जुनून के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले, यीशु अपनी माँ से आशीर्वाद माँगने के लिए गए थे।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी, इस रहस्य से कितनी बातें पता चलती हैं।

मैं अपनी प्यारी माँ के घर जाकर उनका आशीर्वाद माँगना चाहता था ताकि उन्हें मुझसे अपना आशीर्वाद माँगने का अवसर मिले।

उसे जिस पीड़ा से गुजरना पड़ा, वह इतनी बड़ी होगी कि मेरे लिए अपने आशीर्वाद से उसे मजबूत करना मेरे लिए सही था।

जब मैं देना चाहता हूं, तो पहले मांगना मेरी आदत है।

मेरी माँ ने इसे तुरंत समझ लिया और मुझसे पहले उसे आशीर्वाद देने के लिए कहा। उसके बाद ही उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया।

ब्रह्मांड बनाने के लिए, मैंने फिएट का उच्चारण किया

जिसके द्वारा मैंने स्वर्ग और पृथ्वी को व्यवस्थित, व्यवस्थित और सजाया है।

मनुष्य को बनाने में, मैंने उसके जीवन को अपनी सर्वशक्तिमान सांस से प्रभावित किया।

अपने जुनून की शुरुआत में, मैंने अपनी माँ को अपने रचनात्मक और सर्वशक्तिमान वचन के साथ आशीर्वाद दिया। मैंने केवल उसे ही आशीर्वाद नहीं दिया था।

उसके माध्यम से मैंने सभी प्राणियों को आशीर्वाद दिया है।

मेरी माँ का हर चीज़ पर प्रभुत्व था। और उसी में मैं ने सब को और सब को आशीष दी है।

उस से भी अधिक,

मैंने हर विचार, हर शब्द, हर क्रिया आदि को आशीर्वाद दिया है। जीवों का।

मैंने उन्हें उपलब्ध कराई गई सभी चीजों को भी आशीर्वाद दिया।

सूरज कीतरह , - मेरे सर्वशक्तिमान फिएट से,

अपने प्रकाश के बिना अपना पाठ्यक्रम जारी रखता है और इसकी गर्मी कम से कम कम हो जाती है,

मेरा आशीर्वाद , - *मेरे जुनून की शुरुआत में मेरे रचनात्मक शब्द से निकलता है,*

यह हमेशा सक्रिय रहता है ।

उसके द्वारा मैंने सृष्टि का नवीनीकरण किया है।

मैंने ***स्वर्गीय पिता को जीवों को भी आशीष देने के लिए बुलाया***

उन्हें अपनी शक्ति का संचार करने के लिए /

मैं यह भी चाहता था ***कि पवित्र आत्मा इस आशीष में भाग ले।***

ताकि प्राणियों को ***ज्ञान और प्रेम का संचार किया जा सके***

-और, इस तरह, *उनकी स्मृति,* उनकी बुद्धि और उनकी इच्छा का नवीनीकरण *होता है,*

- और *सभी पर उनकी संप्रभुता* बहाल की जाए।

जब मैं देता हूं, मैं भी प्राप्त करना चाहता हूं। तो, मेरी प्यारी माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया,

- न केवल उनके निजी नाम पर,

-लेकिन सभी प्राणियों के नाम पर।

ओह! अगर सभी लोग ध्यान दें, तो वे *मेरे आशीर्वाद को महसूस करेंगे*

पानी में वे पीते हैं,

आग में जो उन्हें गर्म करती है,

भोजन में वे लेते हैं,

उनके कष्टों में ,

उनकी दुआओं की आहट में,

अपने पापों के पश्चाताप में ,

मेरे हाथों में उनके परित्याग में ।

हर चीज में उन्होंने मेरे रचनात्मक वचन को उनसे कहते सुना होगा : "मैं तुम्हें पिता के नाम पर, अपने और पवित्र आत्मा के नाम से आशीर्वाद देता हूं।

मैं आपको मदद करने के लिए आशीर्वाद देता हूं,

- अपना बचाव करें, आपको क्षमा करें, आपको सांत्वना दें और अपने आप को पवित्र करें!"

साथ ही, हर कोई खुद मुझे आशीर्वाद देकर मेरे आशीर्वाद की प्रतिध्वनि करेगा। ये मेरे आशीर्वाद के प्रभाव हैं।

मेरा चर्च, मेरे द्वारा सिखाया गया, लगभग सभी में मेरे आशीर्वाद को प्रतिध्वनित करता है।

परिस्थितियां।

वह संस्कारों के प्रशासन में और कई अन्य अवसरों पर आशीर्वाद देता है »।

मेरे प्यारे यीशु की अनुपस्थिति से पीड़ित मेरे दिल के साथ, मैं प्रार्थना कर रहा था। अचानक मुझे लगा कि वह मेरे करीब है।

उसने मुझे बताया:

"आह! मेरी बेटी, हालात बदतर हो रहे हैं। एक बवंडर की तरह, मैं सब कुछ हिला देने आऊंगा।

यह एक बवंडर की अवधि तक चलेगा और एक बवंडर की तरह समाप्त होगा।

इतालवी सरकार को लगता है कि उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है और उसे नहीं पता कि क्या करना है: यह कार्रवाई में भगवान का न्याय है "।

तब मैंने अपने शरीर के बाहर, अपने प्यारे जीसस के बहुत करीब, इतना करीब महसूस किया कि मैं उनके दिव्य व्यक्ति को भी नहीं देख सका।

मैंने उससे कहा: "मेरे प्यारे यीशु, जबकि मैं तुम्हारे बहुत करीब हूं, मैं तुम्हें अपना प्यार, अपना आभार दिखाना चाहता हूं और तुम्हें सब कुछ वापस देना चाहता हूं।

हमारी बेदाग रानी माँ, सबसे सुंदर, सबसे पवित्र, को सभी उपहारों से समृद्ध करने के बाद, बनाने के लिए वे आपके लिए कौन से प्राणी हैं और

उसे अपनी माँ बनाकर

मैं आपको सभी भूत, वर्तमान और भविष्य के प्राणियों की ओर से धन्यवाद की यह प्रार्थना प्रदान करता हूं।

मैं हर क्रिया, हर शब्द, हर विचार, हर धड़कन और प्राणियों के हर कदम पर महारत हासिल करना चाहता हूं।

और मैं चाहता हूं कि हर कोई आपको इस सब की ओर से बताए

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ, धन्यवाद, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ और मैं तुम्हें प्यार *करता हूँ*"

वह सब जो आपने अपनी और हमारी दिव्य माता में किया है »।

यीशु मेरी प्रार्थना से बहुत प्रसन्न हुए।

उसने मुझसे कहा :

"मेरी बेटी,

मैं सभी पीढ़ियों की ओर से इस प्रार्थना की प्रतीक्षा कर रहा था।

उन्होंने कहा :

"नहीं तो कुछ भी खत्म नहीं हुआ है।"

मेरे न्याय और मेरे प्यार को इस वापसी की जरूरत महसूस हुई।

क्योंकि मेरी प्यारी माँ की कृपा जो सभी पर उतरती है वह बहुत महान है। और मुझे कभी एक शब्द भी नहीं दिया गया, इसके लिए धन्यवाद।"

एक और दिन मैंने अपने दयालु यीशु से कहा:

"मेरे लिए सब कुछ खत्म हो गया है: कष्ट, यीशु की यात्रा, सब कुछ!"

अभी , उसने मुझसे कहा :

"क्या आप संयोग से मुझसे प्यार करना और मेरी वसीयत में रहना बंद कर देंगे?"
मैंने कहा: "नहीं! और यह कभी नहीं हो सकता!"

मैंने परमेश्वर की परम पवित्र इच्छा के बारे में सोचा और मैंने मन ही मन सोचा:

"क्या जादू, क्या शक्ति, दिव्य इच्छा के पास क्या जादुई शक्ति है!"

जब मैं ऐसा ही सोच रहा था, मेरे दयालु यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

सरल शब्द " *डिवाइन विल* " *रचनात्मक शक्ति* को संदर्भित करता है ।

इसलिए, वे नामित

- आत्मा में प्रकाश, प्रेम और पवित्रता के प्रवाह को बनाने, बदलने और बनाने की शक्ति।

यदि पुजारी मुझे यजमान में प्रतिष्ठित कर सकता है, तो यह उस शक्ति के कारण है जो मेरी इच्छा ने उन शब्दों को प्रदान किया है जो वह मेजबान से कहता है।

सब कुछ ईश्वरीय इच्छा द्वारा उच्चारित फिएट से आता है।

अगर मेरी इच्छा पूरी करने के विचार से ही आत्मा को सुकून, मजबूती और परिवर्तन महसूस होता है।

क्योंकि मेरी वसीयत करने की सोच में वह अपने आप को सभी माल के रास्ते पर रखती है, जब वह उसमें रहती है तो क्या होगा ?"

उस समय मुझे याद आया कि कई साल पहले यीशु ने मुझसे कहा था:

"हम अपने आप को अमिट अक्षरों में माथे पर शिलालेख के साथ सर्वोच्च महामहिम के सामने प्रस्तुत करते हैं:

" हम चाहते हैं कि मौत हमारे भाइयों और बहनों को जीवन दे।

हम चाहते हैं कि पीड़ा उसे शाश्वत पीड़ा से मुक्त करे"।

और मैंने सोचा, "अगर वह नहीं आते हैं तो मैं यह कैसे कर सकता हूं? मैं उसके साथ कर सकता हूं, लेकिन अकेले, मुझे नहीं पता कि कैसे। इसके अलावा, मैं इतनी सारी मौतों को कैसे सह सकता हूं?"

मेरे भीतर चलते हुए, *धन्य यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, आप इसे किसी भी समय कर सकते हैं क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं और मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ता।

मैं आपको विभिन्न प्रकार की मौतों के बारे में बताऊंगा जो भुगतनी पड़ सकती हैं।

जब मेरी वसीयत किसी प्राणी के लिए भलाई चाहती है तो मैं मृत्यु को भोगता हूं और उस अनुग्रह से मुंह मोड़ लेता हूं जो मैं उसे देता हूं।

यदि प्राणी मेरी कृपा के अनुरूप होना चाहता है, तो यह ऐसा है जैसे मेरी इच्छा ने एक और जीवन को गुणा कर दिया।

अगर इसके बजाय प्राणी झिझकता है,

यह ऐसा है जैसे मेरी वसीयत एक मौत को सह रही हो!

ओह, मेरी वसीयत को कितने मरे होंगे!

प्राणी की मृत्यु तब होती है जब मैं चाहता हूं कि वह अच्छा करे और ऐसा न हो। तब उसकी इच्छा इस भलाई के लिए मर जाती है।

जो प्राणी मेरी इच्छा पूरी करने के निरंतर कार्य में नहीं है, उसके हर इनकार के लिए मृत्यु भुगतना पड़ता है।

वह इस प्रकाश में, इस अनुग्रह में, इस करिश्मे में मरता है जो उसे प्राप्त होता यदि उसने यह अच्छा किया होता।

मैं आपको उन मृतकों के बारे में भी बताना चाहता हूं जिनके साथ आप हमारे भाइयों को जीवन दे सकते हैं ।

जब आप मुझसे वंचित महसूस करते हैं, तो आपका दिल फटा हुआ होता है और आप महसूस करते हैं कि यह एक लोहे की मुट्ठी बांधता है, आप एक मौत को झेलते हैं, और यहां तक कि एक मौत से भी ज्यादा, क्योंकि मरना आपके लिए जीना होगा।

यह मृत्यु हमारे भाइयों को जीवन देने में सक्षम है। यह पीड़ा क्यों, यह मृत्यु क्यों?

- वे दिव्य जीवन से भरे हुए हैं,

- मैं एक अनंत और अनंत मूल्य के साथ एक विशाल प्रकाश, एक रचनात्मक शक्ति हूं।

तो आप हमारे भाइयों को कितनी जान दे सकते हैं!

मैं तुम्हारे साथ इन मौतों को सहता हूं, उन्हें अपनी मौत का मूल्य देता हूं।

"देखो तुम कितनी मौतें झेलते हो:

हर बार जब आप मुझे चाहते हैं और मुझे नहीं पाते हैं, तो यह एक वास्तविक मृत्यु है जिसे आप भुगतते हैं, यह एक शहादत है।

जो तुम्हारे लिए मरा वही दूसरों के लिए जीवन है"।

मैं अपने शरीर से बाहर था और मैं एक लंबी सैर कर रहा था, जिसके दौरान मैं एक सिर यीशु के साथ और एक सिर अपनी रानी माँ के साथ चला।

जब जीसस गायब हो गए, मैं अपनी मां के साथ था, और जब वह गायब हो गई, तो मैं जीसस के साथ था।

यीशु और मरियम बहुत मिलनसार थे और उन्होंने मुझे बहुत सी बातें बताईं। मैं सब कुछ भूल गया था: मेरे कष्ट और यहां तक कि मेरे कष्ट भी।

मैंने सोचा था कि मैं इस प्यारी कंपनी को फिर कभी नहीं खोऊंगा। ओह! अच्छाई से सामना होने पर बुराई को भूलना कितना आसान है!

यात्रा के अंत में, स्वर्गीय माता ने मुझे गोद में लिया।

मैं बहुत छोटा था।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी, मैं तुम्हें हर चीज में मजबूत करना चाहता हूं।" मुझे ऐसा लग रहा था कि अपने पवित्र हाथों से,

- मेरे माथे पर लिखा और उस पर मुहर लगा दी; उसी तरह से

- मेरी आंखों पर, मेरे मुंह पर, मेरे दिल पर, मेरे हाथों पर और मेरे पैरों पर, हर जगह मुहर लगाकर लिखा।

मैं जानना चाहता था कि वह मेरे बारे में क्या लिख रहा है, लेकिन मैं उसे पढ़ नहीं पाया। हालाँकि, मेरे मुँह पर, मुझे कुछ अक्षर समझ में आए, जिसमें कहा गया था कि "सभी स्वादों का विनाश"

मैंने तुरंत कहा:

"धन्यवाद, माँ, मुझसे कोई भी स्वाद लेने के लिए जो यीशु का नहीं है"।

मैं बाकी को समझना चाहता था, लेकिन मेरी माँ ने मुझसे कहा:

"आपको जानने की ज़रूरत नहीं है। मेरा विश्वास करो। मैंने वही किया जो आवश्यक था।"

उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और गायब हो गए, जिसके बाद मैंने खुद को अपने शरीर में पाया।

बाद में, मेरा प्यारा यीशु लौट आया।

वह एक कोमल बच्चा था जो रो रहा था और ठंड से कांप रहा था। उसने खुद को गर्म करने के लिए खुद को मेरी बाहों में फेंक दिया।

मैंने उसे अपने ऊपर कस लिया और उसकी वसीयत में खुद को विलीन कर लिया।

सब के विचार लेने, और उन्हें मेरे साथ जोड़ने के लिए, और उनके साथ कांपते

हुए यीशु को घेरने के लिए।

मैंने उन्हें सभी सृजित बुद्धिओं की आराधना भी भेंट की।

फिर मैंने सबकी आँखें पकड़ लीं और उन्हें यीशु की ओर निर्देशित किया कि वे उसे उसके आंसुओं से विचलित करें।

मैं ने सब प्राणियों के मुंह, वचन, और शब्द को भी थाम लिया, क्योंकि उन सब ने उसको पंगा लिया होता।

ताकि वह फिर न रोए और उनकी सांसों से गर्म हो जाए।

बच्चे यीशु ने रोना बंद कर दिया और फिर, जैसे कि वह गर्म हो गया हो, *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, क्या तुम समझती हो कि मुझे ठंड से कांपने और रोने का क्या कारण था? यह प्राणियों का परित्याग था।

तुमने उन्हें मेरे चारों ओर रख दिया और मुझे लगा कि सब मुझे देख रहे हैं और मुझे चूम रहे हैं। इस तरह मैंने रोना बंद कर दिया।

पता है कि

मैं अपने प्यार के संस्कार में जो पीड़ित हूं वह उससे भी अधिक कठिन है जो मैंने एक बच्चे के रूप में चरनी में सहा था।

- गुफा , हालांकि ठंडी थी, विशाल थी। मुझे सांस लेने के लिए हवा मिली।

मेहमान भी ठंडा है, लेकिन वह इतना छोटा है कि मुझे हवा की याद आती है।

-गुफा में मेरे पास बिस्तर के रूप में एक चरनी और कुछ भूसा था। *मेरे पवित्र जीवन* में, मुझे भूसे की भी कमी है, और बिस्तर के लिए मेरे पास केवल एक कठोर और ठंडी धातु है।

- *गुफा* में मेरी प्यारी माँ थी जो अक्सर मुझे अपने शुद्ध हाथों से ले जाती थी

और मुझे गर्म करने और मेरे आँसू शांत करने के लिए अपने गर्म चुंबन से ढक लेती थी। उसने मुझे अपने मीठे दूध से खिलाया।

मेरे पवित्र जीवन में, यह बिल्कुल विपरीत है:

मेरे पास मेरी माँ नहीं है, और अगर मैं पकड़ा जाता हूं, तो मुझे अक्सर अयोग्य हाथों का स्पर्श महसूस होता है जो मिट्टी और खाद की गंध करते हैं।

ओह! मैं गुफा में महसूस की गई खाद से ज्यादा उनकी गंध को कैसे सूंघता हूं!

मुझे चुंबन के साथ कवर करने के बजाय, वे मुझे अपमानजनक कृत्यों से ढकते हैं। दूध के बदले वे मुझे अपके अपवित्रीकरण की कड़वाहट देते हैं,

उनकी उदासीनता और शीतलता से।

-गुफा में , सेंट जोसेफ ने मुझे रात के दौरान कभी भी एक छोटी सी रोशनी या एक छोटे से दीपक से वंचित नहीं किया।

संस्कार में कितनी बार अँधेरे में रहता हूँ, रात में भी!

"ओह! मेरी पवित्र स्थिति कैसे भुगतती है! कितने छिपे हुए आंसू हैं जो किसी ने नहीं देखे हैं! कितने कराहते हैं जो नहीं सुने जाते हैं!

अगर एक बच्चे के रूप में मेरी स्थिति पर आप पर दया आती है,

मेरी पवित्र स्थिति पर आपको कितना दया आनी चाहिए ».

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था

और मैंने खुद को ईश्वरीय इच्छा में डुबोने की कोशिश की।

यह जानते हुए कि उससे कुछ नहीं बचता,

न अतीत का, न वर्तमान का, न भविष्य का,

मैंने वह सब कुछ ले लिया है जो इस ईश्वरीय इच्छा में है

और, सभी की ओर से, मैं अपनी श्रद्धांजलि, अपना प्यार, हमारी क्षतिपूर्ति, आदि प्रदान करता हूं। सर्वोच्च महामहिम को। मेरे भीतर चलते हुए, मेरे हमेशा दयालु यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

आत्मा के लिए, मेरी वसीयत में जीने का सही तरीका अपने जीवन को मेरे अंदर ढालना है।

मेरे सांसारिक जीवन के दौरान,

- *मैंने अपनी वसीयत में अपने सभी कार्यों* को आंतरिक और बाहरी दोनों तरह से प्रवाहित किया है।
- *मैंने अपने* विचारों को प्राणियों के विचारों पर उड़ा दिया है।

मेरे विचार

उनके विचारों के ताज की तरह बन गए और

उनके नाम पर पिता की महिमा को श्रद्धांजलि, आराधना, प्रेम और क्षतिपूर्ति की पेशकश की।

-मैंने अपने लुक्स, अपने शब्दों, अपनी हरकतों और अपने कदमों के साथ भी ऐसा *ही किया।*

मेरी वसीयत में जीने के लिए, आत्मा को देना होगा

-उनके विचारों, उनके रूप, उनके शब्दों और उनके आंदोलनों के लिए मेरे विचारों, रूप, शब्दों और आंदोलनों का आकार।

ऐसा करने में, आत्मा मेरा प्राप्त करने के लिए अपना मानव रूप खो देती है।

इसमें मनुष्य को परमात्मा से प्रतिस्थापित करने के लिए निरंतर मृत्यु देता है। नहीं तो उसमें दिव्य रूप कभी पूर्ण रूप से अनुभव नहीं होगा।

मेरी शाश्वत इच्छा सब कुछ खोजना और पूरा करना संभव बनाती है।

यह भूत और भविष्य को एक साधारण बिंदु तक कम कर देता है जहां सभी हृदय, सभी मन, प्राणियों के सभी कार्य पाए जाते हैं।

मेरी वसीयत को उसकी, आत्मा बनाना

सब कुछ करता है, हर चीज के लिए संतुष्ट है ,

सब से प्रेम करो, सबका भला करो, मानो सब एक हों।

मेरी वसीयत से इसे कौन दूर कर सकता है?

मेरी वसीयत में जीवन की तुलना किसी भी गुण, वीरता, शहादत से नहीं की जा सकती।

इसलिए चौकस रहो और मेरी इच्छा को तुम सब पर राज करने दो »।

अपने आप को मेरी सामान्य स्थिति में पाकर, मेरे हमेशा दयालु यीशु आए और अपनी बाहों को मेरे गले में लपेट लिया।

फिर मेरे हृदय के पास पहुँचकर अपने सीने को अपने हाथों से दबाते हुए मेरे हृदय की दिशा में दबा दिया और दूध की धाराएँ निकलीं।

यह मेरे दिल को इस दूध से भर देता है और मुझसे कहता है:

"मेरी बेटी, क्या तुम देखती हो कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ?

मैं ने तेरे हृदय को अपने अनुग्रह और अपने प्रेम के दूध से भर दिया है, कि जो कुछ तू कहता और करता है, वह उस अनुग्रह और उस प्रेम के उण्डेले से अधिक कुछ न हो, जिससे मैं ने तुझे भर दिया है।

आपको केवल अपनी वसीयत को मेरी इच्छा के अधीन रखना होगा और मैं अपने द्वारा सब कुछ करूंगा।

तुम होगे

मेरी आवाज की आवाज,

मेरी इच्छा के वाहक ,

मानवीय तरीके से किए गए सद्गुणों का विनाश e

दैवीय तरीके से अभ्यास किए गए गुणों के प्रेरक, जो एक विशाल, शाश्वत और अनंत बिंदु में पाए जाते हैं"।

इतना कह कर गायब हो गया।

इसके तुरंत बाद, वह वापस आ गया और मुझे कुछ ऐसी बातें सोचकर पूरी तरह से सफाया महसूस हुआ, जिन्हें यहाँ कहने की आवश्यकता नहीं है।

मेरी पीड़ा चरम पर थी और मैंने सोचा: "यह कैसे संभव है? मेरे यीशु, इसकी अनुमति न दें!

हो सकता है कि आपका इरादा हो, लेकिन इस बलिदान को करने के लिए आगे न बढ़ें। जिस कठिन स्थिति में मैं खुद को पाता हूं, मुझे स्वर्ग जाने के अलावा और कुछ नहीं मिलने की उम्मीद है ”।

मेरे भीतर से बाहर आकर, यीशु फूट-फूट कर रो पड़े।

मैं इन सिसकियों को स्वर्ग और पृथ्वी में गूँजते हुए सुन सकता था। इन सिसकियों के बाद, उसने एक मुस्कान की ओर इशारा किया, जो उसके रोने की तरह, स्वर्ग और पृथ्वी पर गूँज रही थी।

मैं इस मुस्कान में आनन्दित हुआ और मेरे प्यारे यीशु ने मुझसे कहा:

"मेरी प्यारी बेटी,

इस दुख की घड़ी में जीव मुझे जो महान पीड़ा देते हैं, उसके लिए मुझे रुलाते हैं

-और चूंकि वे ईश्वर के आंसू हैं, वे स्वर्ग और पृथ्वी पर गूँजते हैं-

एक मुस्कान दिखाई देगी जो स्वर्ग और पृथ्वी को खुशियों से भर देगी।

ये मुस्कान देखते ही मेरे होठों पर आ जाएगी

- पहला फल,

- मेरी वसीयत के पहले बच्चे,

मानव तरीके से नहीं, बल्कि दैवीय तरीके से जी रहे हैं।

वे मेरी अपार, शाश्वत और अनंत इच्छा की मुहर से चिह्नित होंगे।

यह शाश्वत बिंदु, जो वर्तमान में केवल स्वर्ग में है, पृथ्वी पर प्रकट होगा।

और आत्माओं का निर्माण करेंगे

- इसके अनंत स्रोत,

- उनकी दिव्य क्रिया ई

- एक अधिनियम से कृत्यों का गुणन।

माई फिएट से रिलीज हुई क्रिएशन इसी फिएट द्वारा पूरी की जाएगी। मेरी वसीयत के बच्चे मेरे फिएट में सब कुछ करेंगे।

इस फिएट में वे मुझे देंगे,

-पूरी तरह

-और हर चीज और सबके नाम पर,

प्रेम, महिमा, क्षतिपूर्ति, धन्यवाद और स्तुति।

मेरी बेटी, चीजें अपने मूल में वापस चली जाएंगी।

मेरे फिएट से सब कुछ निकल गया है और इस फिएट के जरिए सब कुछ मेरे पास वापस आ जाएगा।

वे कम होंगे लेकिन, मेरे फिएट के माध्यम से, वे मुझे सब कुछ देंगे »।

मुझे आश्चर्य हुआ कि उस पर क्या लिखा है और मैंने सोचा:

"मुझे नहीं पता कि यीशु मुझसे क्या चाहता है।

हालांकि, वह जानता है कि मैं कितना बुरा और अच्छा हूं।"

मुझमें लहराते हुए *उसने* मुझसे कहा :

"मेरी बेटी", आपको याद है, "मैंने आपसे कुछ साल पहले पूछा था

- यदि आप मेरी वसीयत में रहना चाहते हैं और यदि आवश्यक हो,

- मेरी वसीयत में अपने "फिएट" का उच्चारण करें। और इस तरह आपने इसे किया।

आपका फिएट

- यह मेरी वसीयत के केंद्र में पाया जाता है e

- मेरी अनंत विशालता से घिरा हुआ है।

अगर वह इससे बाहर निकलना चाहता तो शायद ही उसे अपना रास्ता मिल पाता।

इसके अलावा, मुझे मज़ा आ रहा है

- आपके छोटे विरोधियों का ई

- असंतोष की आपकी अभिव्यक्तियों के बारे में।

आप एक व्यक्ति की तरह हैं

- जो अपनी मर्जी से समुद्र की गहराई में है और

-जो इस जगह को छोड़ना चाहता है, उसे अपने चारों ओर केवल पानी दिखाई देता है।

इसलिए

बोरियत देखकर उसके बाहर निकलने का कारण बन जाएगा

और सहज और खुश महसूस करना चाहते हैं,

- यह और भी गहरे समुद्र में डूब जाता है।

ऐशे ही

मेरी वसीयत से बाहर जाने की शर्मिंदगी से ऊब चुके हैं और यह देखकर कि आप इसके लिए असमर्थ हैं,

जुड़ा है कि आप अपने स्वयं के फिएट से हैं,

मेरी इच्छा की गहराई में फिर से डूबो।

यह मेरा मनोरंजन करता है।

क्या आपको लगता है कि मेरी वसीयत को छोड़ना आसान और आसान है? आपको एक शाश्वत बिंदु को आगे बढ़ाना चाहिए।

यदि आप जानते थे कि एक शाश्वत बिंदु को स्थानांतरित करने का क्या मतलब है, तो आप डर से कांप उठेंगे।"

उन्होंने जोड़ा :

"मैंने अपनी वसीयत में अपनी प्यारी माँ से पहली वसीयत मांगी। ओह! मेरी वसीयत में इस फिएट की शक्ति!

जैसे ही मेरी माँ का फिएट डिवाइन फिएट से मिला, वे एक हो गए। माई फिएट ने मेरी मां को पाला, उन्हें दिव्य बनाया, उन्हें भर दिया।

-फिर, बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के, उन्होंने मेरी मानवता की कल्पना की।

केवल मेरे फिएट में ही वह मेरी मानवता की कल्पना करने में सक्षम थी। माई फिएट ने उनसे दिव्य तरीके से संवाद किया

- विशालता, अनंतता और उर्वरता।

इस प्रकार उसमें असीम, शाश्वत और अनंत की कल्पना की जा सकती थी।

जैसे ही उन्होंने अपना फिएट कहा,

-न केवल उसने मुझ पर अधिकार कर लिया,

परन्तु उसके अस्तित्व ने सब प्राणियों और सब सृष्ट वस्तुओं को ढांप दिया।

उसने उसमें सभी प्राणियों के जीवन को महसूस किया और सभी की माँ और रानी के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया ।

मेरी माँ के इस फरमान में कितने अजूबे थे? अगर मैं आप सभी को उनके बारे में बताना चाहता, तो आप उनके बारे में सुनना बंद नहीं करते!

फिर मैंने अपनी वसीयत में दूसरा फरमान मांगा। हालांकि कांपते हुए, आपने कहा।

मेरी वसीयत में यह फिएट अपने चमत्कारों को पूरा करेगा। इसकी दिव्य पूर्ति होगी।

मेरा पीछा करो और मेरी इच्छा के विशाल समुद्र में डूबो और मैं बाकी सब कुछ संभाल लूंगा।

मेरी माँ को आश्चर्य नहीं था कि मैं उनमें कैसे अवतरित होऊँगी।

उसने केवल अपने फरमान का उच्चारण किया और मुझे इस बात की चिंता थी कि उसमें कैसे अवतार लिया जाए। ऐसे ही आपको करना है।"

मैंने महसूस किया कि मेरा गरीब मन सभी ईश्वरीय इच्छा के विशाल समुद्र में डूबा हुआ है।

मैंने जो कुछ भी बनाया था उसमें दिव्य फिएट की छाप महसूस की।

मैंने इस पदचिह्न को धूप में महसूस किया। मुझे ऐसा लग रहा था कि सूर्य हमें उस दिव्य प्रेम का संचार कर रहा है जो हिम्मत करता है, दर्द देता है और रोशन करता है।

इस छाप के पंखों पर मैं प्रभु के पास गया, उनके लिए, पूरे मानव परिवार के नाम पर, दिव्य प्रेम जो हिम्मत करता है, घाव करता है और रोशन करता है।

मैंने उससे कहा:

"यह आपके फिएट में है कि आप मुझे यह प्यार देते हैं जो हिम्मत करता है, घाव करता है और रोशन करता है, और यह आपके फिएट में है कि मैं इसे आपको वापस देता हूं"।

तब मैंने तारों की ओर देखा और मैंने महसूस किया कि, उनकी मधुर झिलमिलाहट में, वे प्राणियों को पाप की रात में एक शांतिपूर्ण, दयालु, छिपे हुए और करुणामय प्रेम का संचार करते हैं।

और मैं

ईश्वरीय फिएट की इस छाप के लिए मैं सभी के नाम पर प्रभु के सिंहासन पर लाया हूं,

- एक शांतिपूर्ण प्रेम ताकि पृथ्वी पर स्वर्गीय शांति का शासन हो,

- प्यार में आत्माओं की तरह एक मीठा प्यार,

- एक छिपा हुआ प्यार जैसे कि रद्द की गई आत्माएं e

-एक विनम्र प्रेम जीवों की तरह जो पाप के बाद भगवान के पास लौटते हैं।

क्रिएशन में दैवीय फिएट के इन पैरों के निशान को देखकर जो कुछ मैंने समझा और कहा है, उसे मैं कैसे याद कर सकता हूं? इसमें बहुत समय लगेगा और मैं यहीं रुकता हूँ।

तब मेरे प्यारे यीशु ने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और उन्हें कसकर पकड़कर *मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, मेरा फिएट जीवन से भरा है। बेहतर अभी भी, यह जीवन है।

सारा जीवन और सब कुछ मेरे फिएट से आता है। क्रिएशन माय फिएट से आता है।

प्रत्येक निर्मित वस्तु में उसकी छाप देखी जा सकती है।

मेरी वसीयत में उच्चारित ***मेरी प्यारी माँ के फरमान से मोचन का परिणाम है, और मेरी रचनात्मक आज्ञा के समान शक्ति है।***

इसलिए छुटकारे में हर चीज में मेरी मां के फरमान की छाप है।

यहां तक कि मेरी अपनी मानवता, मेरे कदमों, मेरे शब्दों और मेरे कार्यों पर भी इसके अधिकार की छाप है ।

मेरे कष्ट, मेरे घाव, मेरे कांटे, मेरा क्रॉस और मेरा खून उसके आदेश की छाप है ,

क्योंकि चीजें अपने मूल की छाप रखती हैं।

समय के साथ मेरी उत्पत्ति मेरी बेदाग माँ के फरमान की छाप है ।

यह फिएट हर संस्कारी मेजबान में पाया जाता है । यदि मनुष्य पाप के बाद नया जन्म लेता है,

यदि नवजात को बपतिस्मा दिया जाता है,

यदि स्वर्ग आत्माओं को प्राप्त करने के लिए खुलता है,

यह मेरी माँ के आदेश का परिणाम है। ओह! इस फिएट की शक्ति!

मैं अब आपको बताना चाहता हूं कि मैंने आपसे आपकी वसीयत में आपकी हां क्यों मांगी। " *फिएट वोलोंटस तुआ सिकट इन कोएलो एट इन टेरा* "

- " *आपकी इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी होगी जैसे स्वर्ग में होती है*" -,

कि मैंने सिखाया है और जो इतनी पीढ़ियों से कई शताब्दियों तक सुनाया गया है, मैं चाहता हूं कि यह पूरी तरह से पूरा हो।

इसलिए मैं चाहता था

- एक अन्य फिएट ने भी रचनात्मक शक्ति के साथ निवेश किया,

-एक फिएट जो हर पल उगता है और हर चीज में गुणा करता है।

मैं एक आत्मा में अपने स्वयं के फिएट को देखना चाहता हूं जो मेरे सिंहासन पर चढ़ता है और जो मेरी रचनात्मक शक्ति के माध्यम से ' *आपकी इच्छा पृथ्वी पर स्वर्ग के रूप में पूरी होती है*' की प्राप्ति होती है।"

इन शब्दों से चकित और तबाह होकर, मैंने यीशु से कहा: "यीशु, तुम क्या कह रहे हो? तुम जानते हो कि मैं कितना बुरा और अक्षम हूँ!"

उन्होंने आगे कहा: "मेरी बेटी, मेरे महान कार्यों के लिए सबसे अक्षम और सबसे गरीब लोगों में से आत्माओं को चुनना मेरी आदत है।

यहाँ तक कि मेरी अपनी माँ के पास अपने बाहरी जीवन में कुछ भी असाधारण नहीं था: कोई चमत्कार नहीं, कोई संकेत नहीं जो उन्हें अन्य महिलाओं से अलग करता।

उनका एकमात्र भेद उनका पूर्ण गुण था, जिस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

और यदि मैं ने किन्हीं पवित्र लोगों को चमत्कारों का भेद दिया है, और उनके घावों में से कुछ को सजाया है,

मेरी माँ के लिए , कुछ भी नहीं।

हालाँकि, यह था

-अद्भुत चमत्कार,

-चमत्कारों का चमत्कार,

- सच्चा और सही क्रूस। उसके जैसा कोई और नहीं था।

मैं आमतौर पर एक स्वामी की तरह व्यवहार करता हूं जिसके दो नौकर होते हैं।

-ऐसा लगता है कि एक विशाल विशालकाय है, जो कुछ भी करने में सक्षम है।

- दूसरा छोटा और अक्षम है और कुछ भी करना नहीं जानता।

यदि गुरु इसे रखता है, तो यह दान के लिए है, और उसके मनोरंजन के लिए भी

है। कहीं एक मिलियन डॉलर भेजने के लिए, वह क्या करता है?

वह छोटे, अक्षम को बुलाता है, और उसे बड़ी राशि सौंपता है, खुद से कहता है:

" अगर मैं विशाल को मैगट सौंपता हूं, तो हर कोई इसे नोटिस करेगा और चोर बहुत अच्छी तरह से हमला कर सकते हैं और चोरी कर सकते हैं।

और अगर वह अपनी भारी ताकत से अपना बचाव करता है, तो उसे चोट लग सकती है।

मुझे पता है कि वह सक्षम है, लेकिन मैं उसकी रक्षा करना चाहता हूं। मैं उसे स्पष्ट खतरे में नहीं डालना चाहता।

दूसरी ओर, छोटे पर कोई ध्यान नहीं देगा,

- उसे एक पूर्ण अक्षम के रूप में जानना।

कोई नहीं सोचेगा कि मैं उसे इतनी बड़ी रकम सौंप सकता हूं। साथ ही वह अपने मिशन से सुरक्षित और स्वस्थ होकर लौटेंगे।"

गरीब और अक्षम इस बात से चकित हैं कि उसका मालिक उस पर भरोसा करता है जब वह उस विशाल का इस्तेमाल कर सकता था।

और, सब कांपते और नम्र होकर, वह बड़ी रकम सौंप देगा, यहाँ तक कि कोई उस पर नज़र डालने की भी इज़्ज़त नहीं करेगा। तब वह सुरक्षित होकर अपने स्वामी के पास लौट आता है,

पहले से कहीं अधिक विनम्र और कांपने वाला।

यहां बताया गया है कि मैं कैसे आगे बढ़ता हूं:

- जितना अधिक काम करना है,

-अधिक मैं बिना किसी बाहरी रूप के गरीब और अज्ञानी आत्माओं को चुनता हूं जो ध्यान आकर्षित कर सकें और उन्हें उजागर कर सकें।

आत्मा की मिटाई हुई अवस्था मेरे व्यवसाय के लिए सुरक्षा एहतियात के रूप में

कार्य करती है।

स्वाभिमान और स्वाभिमान से भरे चोर

वह उसकी विकलांगता को जानकर उस पर ध्यान नहीं देगा।

और वह दीन और कांपती हुई उस काम को पूरा करती है जो मैं ने उसे सौंपा है, यह जानते हुए कि वह अकेली कुछ नहीं करती।

-लेकिन मैं उसके लिए सब कुछ करता हूं।"

जब मैंने इस कानूनी आदेश के बारे में सोचा तो मैं तबाह हो गया और मेरे दयालु यीशु मेरे भ्रम को और भी अधिक बढ़ाना चाहते थे।

ऐसा लग रहा था कि वह मुझे आश्चर्यजनक और यहां तक कि अविश्वसनीय चीजों की पेशकश करने में मजा करना चाहता था, मुझे भ्रमित करने और मुझे और भी अधिक नष्ट करने में आनंद ले रहा था।

और, इससे भी बुरी बात यह है कि मैं आज्ञाकारिता और अपनी सबसे बड़ी पीड़ा के कारण इसे लिखित रूप में लिखने के लिए विवश हूं।

जैसे ही मैंने प्रार्थना की, यीशु ने अपना सिर मेरे ऊपर झुका लिया, अपना माथा अपने हाथ में पकड़ लिया। उसके माथे से एक रोशनी निकल रही थी।

उसने मुझे बताया:

"मेरी बेटी,

पहला फिएट, जो क्रिएशन से संबंधित है, किसी भी प्राणी के हस्तक्षेप के बिना उच्चारित किया गया था। - दूसरे के लिए, जो मोचन की चिंता करता है, मैं एक प्राणी का हस्तक्षेप चाहता था और मेरी माँ को चुना गया था।

तीसरे फिएट को पहले दो को पूरा करने की योजना है, और इस बार भी एक प्राणी को भाग लेना चाहिए। और यह तुम हो जिसे मैंने चुना है।

इस तीसरे फिएट को फिएट ऑफ क्रिएशन एंड रिडेम्पशन को पूरा करना होगा। वह पृथ्वी पर " *तेरी इच्छा पृथ्वी पर पूरी की जाएगी जैसा कि यह स्वर्ग में है*" *की प्राप्ति लाएगा।*

तीन फिएट अविभाज्य हैं, प्रत्येक अन्य दो को पूरा करते हैं।

वे पवित्र त्रिमूर्ति का प्रतिबिंब हैं, एक और एक दूसरे से अलग।

मेरा प्यार और मेरी महिमा इस तीसरे फिएट की मांग करती है।

मेरी रचनात्मक शक्ति जिससे पहले दो फिएट पैदा हुए थे, अब खुद को समाहित करने में सक्षम नहीं है और चाहता है कि तीसरा फिएट पहले से किए गए काम को पूरा करने के लिए आगे बढ़े।

नहीं तो सृष्टि और मोक्ष का फल अधूरा रह जाएगा"।

इन शब्दों को सुनकर मैं न केवल भ्रमित हुआ, बल्कि सचमुच दंग रह गया।

मैंने सोचा:

"क्या यह संभव है? और भी बहुत से लोग हैं!

और अगर मैंने चुना है, तो मैं अपने यीशु के सामान्य पागलपन को पहचानता हूं। तो मैं क्या कर सकता हूं, जैसे कि मैं एक बिस्तर पर सीमित हूं, आधा लकवाग्रस्त और औसत दर्जे का हूं? क्या मैं फिएट ऑफ क्रिएशन एंड रिडेम्पशन की बहुलता और अनंतता का सामना कर सकता हूं?

अगर यह तीसरा फिएट पहले दो की तरह है, तो मुझे उनके साथ दौड़ना होगा, गुणा करना होगा और उनके साथ जुड़ना होगा। जीसस, सोचिए कि आप क्या कर रहे हैं; मैं नहीं हूँ

वास्तव में आपके लिए सही व्यक्ति नहीं है! "मेरे द्वारा इस तरह कही गई सारी बकवास कौन कह सकता है?

मेरे प्यारे **यीशु** ने वापस आकर **मुझसे कहा:**

"मेरी बेटी, शांत हो जाओ। मैं चुनता हूं कि मुझे कौन चाहिए।

आप जानते ही होंगे कि मेरे ज्यादातर काम की शुरुआत मेरे और एक प्राणी के बीच होती है। अगला, विकास, विस्तार है।

फिएट ऑफ ***माई क्रिएशन*** का पहला दर्शक कौन था ? आदम पहले और हव्वा दूसरे।

तो वे एक भीड़ नहीं थे!

इसके बाद, वर्षों से, बहुसंख्यक सृष्टि के दर्शक रहे हैं।

« ***दूसरे फिएट*** *में,* मेरी मां एकमात्र दर्शक थीं।

सेंट जोसेफ को भी इसके बारे में कुछ नहीं पता था। मेरी माँ की भी तुम्हारे जैसी ही हालत थी। उसने अपने अंदर जो रचनात्मक शक्ति महसूस की वह इतनी महान थी कि भ्रमित होकर, वह अपने आप में किसी को भी इसके बारे में बताने की ताकत नहीं पा सकी।

अगर बाद में सेंट जोसेफ ने इसे सीखा, तो यह मैं ही था जिसने इसे उसके सामने प्रकट किया था। बाद में, मेरी मानवता बेहतर रूप से जानी गई, लेकिन सभी के लिए नहीं।

यह दूसरा फिएट मैरी के कुंवारी गर्भ में एक बीज की तरह अंकुरित हुआ, इसने एक कान बनाया जो गुणा करने और इस महान आश्चर्य को प्रकाश में लाने में सक्षम था।

तीसरी फिएट **के साथ भी** ऐसा ही होगा /यह आप में अंकुरित होगा और वहां सिल बन जाएगा। पुजारी ही जानेंगे, फिर कुछ आत्माएं; फिर इसका प्रसारण किया जाएगा।

यह उसी रास्ते पर फैलेगा जैसे फिएट ऑफ क्रिएशन एंड रिडेम्पशन।

आप जितना अधिक तबाह महसूस करेंगे, उतना ही अधिक सिल बढ़ेगा और निषेचित होगा। इसलिए चौकस और वफादार रहें ».

अपने आप को अपनी सामान्य अवस्था में पाते हुए, मैंने खुद को ईश्वरीय इच्छा में गहराई से डुबो कर यीशु से कहा:

"माई जीसस, काश मेरे अंदर इतना प्यार होता कि मैं सभी अतीत, वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के प्यार की कमी की भरपाई कर पाता।

लेकिन इतना प्यार कहां से लाएं?

चूंकि आपकी वसीयत में क्रिएटिव फोर्स शामिल है, इसमें मैं कर सकता हूं।

उसमें मैं समान प्रेम पैदा करना चाहता हूं और यहां तक कि उन सभी प्रेम को भी पार करना चाहता हूं जो प्राणियों को अपने निर्माता के लिए देना है।"

तब मैंने अपने आप से कहा:

"मैं क्या बकवास कह रहा हूँ!" फिर, मेरे भीतर चलते हुए, मेरे प्यारे *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

स्वाभाविक रूप से मेरी इच्छा में सृजनात्मक शक्ति है।

एक फिएट ऑफ माय विल से लाखों सितारे निकले हैं । *मेरी माँ के फरमान से* , जिससे मेरी मुक्ति की उत्पत्ति हुई है, आत्माओं के लिए लाखों कृपा निकली है,

- सितारों की तुलना में अधिक सुंदर, उज्जवल और अधिक विविध।

इसके अलावा, जबकि तारे स्थिर हैं और गुणा नहीं करते हैं, अनुग्रह

- अंतहीन गुणा करें, लगातार दौड़ें,

- जीवों को आकर्षित करें, उन्हें खुश करें,

-उन्हें मजबूत करें और उन्हें जीवन का संचार करें।

आह! यदि जीव चीजों के अलौकिक पहलू को समझ सकते हैं, तो वे ऐसी सुंदर सामंजस्य सुनेंगे और

वे ऐसा मनमोहक नजारा देखेंगे

- जिन्हें विश्वास होगा कि वे स्वर्ग में चले गए हैं।

तीसरा फिएट भी अन्य दो के साथ चलना चाहिए। की आवश्यकता है

- अनिश्चित काल तक गुणा करें,

- आकाश में जितने तारे हैं , समुद्र में पानी की बूँदें, सृष्टि के फिएट द्वारा बनाई

गई चीजों के रूप में कई अनुग्रह उत्पन्न करें।

तीनों फिएट का मूल्य और शक्ति समान है। आपको गायब हो जाना चाहिए और यह फिएट है जो कार्य करेगा।

इसलिए *आप मेरे सर्वशक्तिमान फिएट में कह सकते हैं* :

" मैं चाहता हूँ

- ढेर सारा प्यार, पूजा और आशीर्वाद बनाएं e

-मेरे भगवान को वह सारी महिमा लाने के लिए जो उसे चाहिए

सभी प्राणियों और सभी चीजों की भरपाई करने के लिए "।

आपके कार्य

स्वर्ग और पृथ्वी को भर देगा,

यह सृष्टि के कार्यों और छुटकारे के कार्यों के समानांतर गुणा करेगा।

सब एक हो जाएगा।

ये बातें आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय लग सकती हैं।

जो लोग इसमें संदेह करते हैं, वे मेरी सृजनात्मक शक्ति पर संदेह करते हैं। जब हम समझते हैं कि यह मैं हूं

-कौन चाहता है कि,

-जो यह शक्ति देता है, या संदेह समाप्त हो जाता है।

क्या मैं वह करने के लिए स्वतंत्र नहीं हूं जो मैं चाहता हूं और जिसे मैं चाहता हूं उसे देने के लिए? ध्यान से। मैं तुम्हारे साथ होउंगा।

माई क्रिएटिव फोर्स के साथ, मैं आपकी छाया बनूंगा और मैं जो चाहता हूं उसे पूरा करूंगा।"

आज सुबह, पवित्र भोज प्राप्त करने के बाद,

मैंने मुझमें अपने हमेशा दयालु *यीशु को महसूस किया जिन्होंने कहा* :

"हे अधर्मी संसार, तू सब कुछ करता है

- मुझे पृथ्वी के चेहरे से दूर करने के लिए,

- मुझे समाज, स्कूलों और बातचीत से दूर करने के लिए। तुम मन्दिरों और वेदियों को गिराने की साज़िश करते हो,

-मेरे चर्च को नष्ट करने और मेरे मंत्रियों को मारने के लिए।

अपने हिस्से के लिए, मैं आपके लिए तैयारी करता हूँ

प्यार का जमाना ,

मेरे तीसरे फिएट का युग।

जब तुम मुझे भगाने की कोशिश करते हो,

मैं तुम्हें प्यार से भ्रमित करने के लिए पीछे से और सामने से आऊंगा।

जहाँ कहीं तूने मुझे निर्वासित किया है, वहां मैं अपना सिंहासन खड़ा करूंगा और पहले से कहीं अधिक राज्य करूंगा और इस तरह से आपको आश्चर्य होगा, जब तक कि आप मेरे प्यार से प्रभावित मेरे सिंहासन के पैर पर नहीं गिरेंगे "।

उसने जोड़ा:

"आह! मेरी बेटी, जीव अधिक से अधिक बुराई में भाग रहे हैं। वे कितनी साजिशें करते हैं और कितने खंडहर तैयार करते हैं!

वे स्वयं बुराई को समाप्त करने की स्थिति में आ जाएंगे।

लेकिन, जैसे-जैसे वे अपने रास्ते पर चलते हैं,

मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि " *आपकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जैसे स्वर्ग में है*"

यह अपनी पूर्ण पूर्ति तक पहुँचता है।

मैं तीसरे फिएट के युग की तैयारी कर रहा हूं जिसमें मेरा प्यार एक अद्भुत और पूरी तरह से नए तरीके से प्रकट होगा।

ओह! हां! मैं आदमी को प्यार से भ्रमित कर दूंगा! आपके लिए, सावधान रहें।

मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ प्रेम के इस दिव्य और दिव्य युग की तैयारी करें। हम हाथ से काम करेंगे"।

फिर वह मेरे मुंह के पास पहुंचा और जैसे ही उसने अपनी सर्वशक्तिमान सांस को उसमें भेजा, मुझे लगा कि एक नया जीवन मुझ पर हावी हो रहा है। फिर वह गायब हो गया।

जब मैं ईश्वरीय इच्छा पर चिंतन कर रहा था, मेरे प्यारे *यीशु* *ने* मुझसे कहा :

"मेरी बेटी,

मेरी इच्छा में प्रवेश करें,

कोई रास्ता नहीं, कोई द्वार नहीं, कोई चाबी नहीं, क्योंकि मेरी इच्छा हर जगह है। यह उसके पैरों के नीचे, दायीं ओर, बायीं ओर, सिर के ऊपर, सर्वत्र सर्वत्र है।

इसे एक्सेस करने के लिए, आपको बस इसे चाहिए।

इस निर्णय के बिना, भले ही मानव इच्छा मेरी इच्छा में है, यह इसका हिस्सा नहीं है और इसके प्रभावों का आनंद नहीं लेता है।

वह वहाँ एक अजनबी के रूप में है।

जिस क्षण से आत्मा मेरी इच्छा में प्रवेश करने का निर्णय लेती है, वह मुझमें और मैं उसमें विलीन हो जाती है।

मेरे सभी सामानों को अपने निपटान में खोजें:

-शक्ति, प्रकाश, सहायता, जो कुछ भी आप चाहते हैं।

आपको बस इतना करना है कि आप इसे चाहते हैं।

मेरी इच्छा हर चीज का प्रभार लेती है, आत्मा को वह सब देती है जो उसके पास है और जो उसे मेरी इच्छा के अनंत सागर में आराम से तैरने की अनुमति दे सकती है।

यह उन लोगों के लिए विपरीत है जो सद्गुणों की प्राप्ति के माध्यम से आगे बढ़ते हैं।

इतने प्रयास की जरूरत है, इतने सारे झगड़े, इतने लंबे रास्ते जाने हैं!

और जब ऐसा लगता है कि पुण्य अंत में आत्मा पर मुस्कुराता है, कुछ हद तक हिंसक जुनून, एक प्रलोभन, एक मौका मुठभेड़ इसे शुरुआती बिंदु पर वापस लाता है।"

मैं अपनी सामान्य अवस्था में था और मेरे प्यारे जीसस सब कुछ चुप थे।

मैंने उससे कहा: "मेरे प्रिय, तुम मुझे कुछ क्यों नहीं बताते?"

उसने उत्तर दिया: "मेरी बेटी, ऐसा करने के बाद चुप रहना मेरी आदत है

बोली जाने।

मैं उन शब्दों में आराम करना चाहता हूं जो मैंने कहा था, यानी उस काम में जो मुझसे निकला था। मैंने इसे क्रिएशन के संबंध में किया था।

" *फिएट लक्स* " *("*चलो प्रकाश हो*")* कहने के बाद

और यह कि प्रकाश स्वयं प्रकट हो गया है,

और अन्य सभी चीजों के लिए " *फिएट*" कहने के बाद और उन्होंने अस्तित्व पाया,

मैं आराम करना चाहता था।

मेरे अनन्त प्रकाश ने उस प्रकाश में विश्राम किया जो समय पर आया था। मेरा प्रेम

उस प्रेम पर टिका है जिसे मैंने सृष्टि में निवेश किया था।

मेरी सुंदरता ब्रह्मांड में निहित है कि मैंने अपनी सुंदरता के अनुसार मॉडलिंग की थी।

मेरी बुद्धि और शक्ति उस काम में टिकी हुई थी जिसे मैंने इतनी बुद्धि और शक्ति के साथ आदेश दिया था।

कि जब मैंने इसे देखा, तो मैंने अपने आप से कहा:

" कितना सुंदर है यह काम जो मुझ से निकला है। मैं उसमें आराम करना चाहता हूँ!" मैं आत्माओं के साथ भी ऐसा ही करता हूं:

उनसे बात करने के बाद, मैं आराम करता हूं और अपने शब्दों के प्रभावों का आनंद लेता हूं।"

फिर वह कहता है: "चलो ' ***फिएट*** एक साथ कहते हैं**"**। इस फिएट के परिणामस्वरूप,

स्वर्ग और पृथ्वी सर्वोच्च महामहिम की आराधना से भर गए।

उन्होंने फिर से " ***फिएट*** " दोहराया , और इस बार यीशु के रक्त और घाव अनंत तक बढ़ गए।

तीसरी बार उन्होंने " ***फिएट*** " कहा और इस फिएट ने उन्हें पवित्र करने के लिए प्राणियों की सभी इच्छाओं में गुणा किया।

के बाद, *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

ये तीन फिएट क्रिएशन, रिडेम्पशन और सेंटिफिकेशन के हैं »।

फिर *उन्होंने जोड़ा* :

"मनुष्य को बनाने में, मैंने उसे तीन शक्तियाँ दीं:

उसकी बुद्धि, उसकी स्मृति और उसकी इच्छा।

अपने तीन फिएट्स के माध्यम से, मैं उनके भगवान के लिए उनकी चढ़ाई में उनकी सहायता करता हूं।

मेरे रचनात्मक फिएट के माध्यम से , मनुष्य की बुद्धि उन सभी चीजों को देखकर आनंदित होती है जो मैंने उसके लिए बनाई हैं और जो उसके लिए मेरे प्यार को प्रकट करती हैं।

छुटकारे के फिएट के माध्यम से , उसकी स्मृति को मेरे प्रेम की ज्यादतियों से छुआ गया है, जो उसे उसके पाप की स्थिति से मुक्त करने के लिए इतनी पीड़ा के साथ प्रकट हुई थी।

अपने तीसरे फिएट के माध्यम से , माई लव फॉर मैन खुद को और भी अधिक प्रकट करना चाहता है।

मैं उसके समर्थन में अपनी वसीयत रखकर उसकी वसीयत पर हमला करना चाहता हूं। और चूंकि मेरी इच्छा उसे सभी चीजों में लाएगी, वह लगभग उससे बचने में सक्षम नहीं होगा।

जब तक मेरी इच्छा पूरी पृथ्वी पर राज्य नहीं करेगी, तब तक पीढ़ियाँ समाप्त नहीं होंगी। मेरे तीन फिएट आपस में जुड़ेंगे और मनुष्य के पवित्रीकरण को अंजाम देंगे।

तीसरा फिएट मनुष्य को इतनी अधिक कृपा देगा कि वह लगभग अपनी मूल अवस्था में वापस आ जाएगा।

केवल तभी, जब मैं मनुष्य को अपने में से बाहर निकलते हुए देखूंगा, क्या मेरा काम पूरा होगा और मैं अपना शाश्वत विश्राम लूंगा!

यह मेरी वसीयत में जीवन के माध्यम से है कि मनुष्य को उसकी मूल स्थिति में बहाल किया जाएगा। चौकस रहो और प्राणी के पवित्रीकरण को पूरा करने में मेरी मदद करो »।

ये बातें सुनकर मैंने उससे कहा:

"यीशु, मेरे प्रिय, मैं आपकी तरह नहीं कर सकता और जैसा आपने मुझे सिखाया है। अगर मैं वह नहीं करता जो आप मुझसे उम्मीद करते हैं तो मैं आपकी निंदा प्राप्त करने से लगभग डरता हूं।"

हे भगवान, यीशु ने मुझे उत्तर दिया:

"मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि जो कुछ मैं आपसे मांगता हूं वह आप पूरी तरह से करने में सक्षम नहीं हैं, लेकिन आप जो हासिल नहीं कर सकते हैं वह मैं आपके लिए करूंगा।

हालाँकि, यह आवश्यक है

-मैं आपको बहका सकता हूं और आपको समझा सकता हूं कि आपको क्या करना है। अगर आप सब कुछ नहीं कर सकते हैं, तो भी आप वही करेंगे जो आप कर सकते हैं।

तेरी इच्छा मेरी जंजीर में जकड़ी हुई है।

इतना ही काफ़ी होगा कि तुम वही करना चाहो जो मैं तुमसे माँगता हूँ।

मैं इसे ऐसे मानूंगा जैसे मैंने सब कुछ किया हो।"

मैं दोहराता हूँ:

"ईश्वर में यह जीवन दूसरों को कैसे सिखाया जा सकता है और कौन इसका पालन करने के लिए तैयार होगा?"

उन्होंने जारी रखा :

"मेरी बेटी, भले ही मेरे धरती पर आने से कोई नहीं बचा होता, फिर भी पिता की महिमा पूरी होती।

इसी तरह, भले ही कोई और नहीं बल्कि आप

तुम मेरी इच्छा की भलाई प्राप्त नहीं करना चाहते थे - जो नहीं होगा - मुझे सारी महिमा देने के लिए केवल आपके लिए पर्याप्त होगा

कि मैं सभी प्राणियों से अपेक्षा करता हूं"।

मुझे मेरी सामान्य अवस्था में पाकर, मेरे हमेशा दयालु *यीशु ने आकर मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी,

तीसरा फिएट , " *तेरी इच्छा पृथ्वी पर पूरी की जाएगी जैसा स्वर्ग में है",*

यह इंद्रधनुष की तरह होगा

-बाढ़ ई . के बाद आकाश में दिखाई दिया

- जो शांति का संकेत था कि बाढ़ खत्म हो गई थी।

जब आप तीसरे फिएट को जानते हैं,

- प्यार करने वाली और निःस्वार्थ आत्माएं वहां रहने के लिए आएंगी। वे शान्ति के इन्द्रधनुष के समान होंगे

-जो स्वर्ग और पृथ्वी का मेल करेगा

- पापों के प्रलय को त्यागने से पृथ्वी पर बाढ़ आ गई।

मेरी " *तेरी इच्छा पूरी*" इन आत्माओं में अपनी पूर्ति पायेगी। जबकि

दूसरा फिएट

- तू ने मुझे मनुष्यों के बीच रहने के लिथे पृथ्वी पर उतारा,

तीसरा फिएट

- *वह मेरी इच्छा को आत्माओं में उतार देगा*

जहां वह ' *पृथ्वी पर स्वर्ग के रूप में* ' राज्य करेगा। "

यह देखकर कि मैं उसके वंचित होने से दुखी था, *यीशु ने आगे कहा* :

"मेरी बेटी,

सांत्वना दी जाए। मेरी वसीयत में आओ।

मैंने तुम्हें हज़ारों हज़ारों में से चुना है

- ताकि मेरी इच्छा आप सभी पर राज करे और

- ताकि आप शांति का इंद्रधनुष बन सकें, जो अपने सात रंगों के साथ दूसरों को भी मेरी इच्छा में रहने के लिए आकर्षित करता है।

चलो पृथ्वी को एक तरफ छोड़ दें। मैंने तुम्हें अब तक अपने पास रखा है

-मेरे न्याय को खुश करने के लिए e

- पुरुषों पर कठोर दंड से बचने के लिए।

आइए अब मानव अधर्म की धारा को चलने दें। मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ, मेरी वसीयत में, आपको मेरी वसीयत के युग के लिए तैयार करें।

जब तुम मेरी मर्जी के रास्तों पर चलते हो,

आप में शांति का इंद्रधनुष खींचा जाएगा और

आप एक कड़ी बन जाओगे

ईश्वरीय इच्छा और मानव इच्छा के बीच।

इस बंधन के माध्यम से, मेरी और पूरे चर्च की प्रार्थना के जवाब में पृथ्वी पर मेरी इच्छा का शासन शुरू होगा:

" *अपना राज्य आने दो और*

आपकी इच्छा पृथ्वी पर स्वर्ग की तरह पूरी होगी »।

जब मैं प्रार्थना कर रहा था और ईश्वरीय इच्छा में खुद को विसर्जित कर रहा था, मेरे प्यारे यीशु मेरे आंतरिक भाग से बाहर आए, अपनी बाहों को मेरे गले में डाल दिया और मुझसे कहा:

"मेरी बेटी,

उनके प्यार, उनकी प्रार्थनाओं और उनके विनाश के लिए,

मेरी माँ ने मुझे अपने गर्भ में अवतार लेने के लिए स्वर्ग से नीचे उतारा।

आप, अपने प्यार और मेरी इच्छा में रहने के साथ, मेरी इच्छा को अपने भीतर और बाद में, अन्य प्राणियों में स्थापित करने के लिए लाएंगे।

लेकिन जान लें कि उसके गर्भ में प्रवेश करके एक ऐसा कार्य जो कभी दोहराया नहीं जाएगा,

-मैंने अपनी माँ को सभी कृपाओं से समृद्ध किया है और

-मैंने उसे लव टू द पॉइंट के साथ संपन्न किया

उस प्रेम पर विजय प्राप्त करें जो अन्य सभी प्राणियों में एक साथ है।

मैंने उसे दिया

- विशेषाधिकारों में प्रधानता,

-महिमा और सब।

सारे यहोवा ने उस में धारा प्रवाहित की।

"जैसे आपके लिए,

मेरी वसीयत एक समान अद्वितीय कार्य द्वारा आप में उतरती है।

और, सजावट के लिए,

मुझे आप पर बहुत सी कृपा और प्रेम डालना है

कि तुम इन क्षेत्रों में अन्य सभी प्राणियों से आगे निकल जाओगे।

चूँकि मेरी इच्छा की हर चीज़ पर प्रधानता है, जो शाश्वत, अपार और अनंत है,

मुझे इन विशेषाधिकारों को उसी में रखना चाहिए जिसे चुना गया है,

- कि इसमें आपको मेरी विल का जीवन मिल जाए

इसकी शुरुआत और इसकी समाप्ति,

उसे मेरी इच्छा के गुणों के साथ संपन्न करना,

उसे हर चीज पर सर्वोच्चता देना।

मेरी शाश्वत इच्छा

भूत, वर्तमान और भविष्य को ले लो,

उन्हें एक बिंदु तक कम करें e

वह उन्हें तुम में डालेगा।

मेरी इच्छा शाश्वत है और जहां वह अनंत काल पाती है वहां खुद को स्थापित करना चाहती है।

यह बहुत बड़ा है और यह वहीं बसना चाहता है जहां यह अपारदर्शिता पाता है।

यह अनंत है और जहां अनंत पाता है वहीं बसना चाहता है।

अगर मैं इसे पहले नहीं रखूंगा तो मैं यह सब आप में कैसे ढूंढ सकता हूं?"

ये शब्द सुनकर मैं घबरा गया।

मैंने ये बातें सिर्फ आज्ञाकारिता से लिखी हैं। मैंने यीशु से कहा: "यीशु, तुम क्या कहते हो?

आप वास्तव में मुझे भ्रमित करना चाहते हैं और मुझे धूल में मिलाना चाहते हैं! आप जो कहते हैं, मैं उसे बर्दाश्त करने में पूरी तरह से असमर्थ महसूस करता हूं।

मुझे अपने अंदर अत्यधिक डर लग रहा है"।

उन्होंने कहा :

"ये चीजें मेरी इच्छा की पवित्रता और गरिमा के लिए जरूरी हैं। मैं वहां नहीं रुक सकता और वहां नहीं रह सकता जहां मुझे वह नहीं मिलता जो मेरा है।

आप एक बहुत बड़ी भलाई के रखवाले से ज्यादा कुछ नहीं होंगे, जिसकी आपको ईर्ष्या से रक्षा करनी होगी।

अपने साहस को दोनों हाथों से लो और डरो मत।"

मैंने सोचा:

"मेरी रानी माँ ने यीशु की मानवता को बनाने के लिए रक्त प्रदान किया जिसे उन्होंने अपने गर्भ में धारण किया।

और मुझमें ईश्वरीय इच्छा का निर्माण करने के लिए मुझे क्या प्रदान करना चाहिए?"

मेरे दयालु *यीशु ने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, तू वह भूसा होगा जो मेरी इच्छा के गेहूं को बनने देगा। मैं अपनी इच्छा के गेहूं को उन सभी आत्माओं को भोजन के रूप में दूंगा जो इसे खिलाना चाहते हैं। आप इसके लिए भूसे होंगे। संरक्षण"।

यह सुनकर मैंने कहा:

"मेरे प्यार, भूसे के रूप में सेवा करने की मेरी भूमिका अप्रिय है क्योंकि भूसे

इसे फेंक दिया जाता है, जला दिया जाता है और इसका कोई मूल्य नहीं होता है।"

यीशु ने जारी रखा :

"हालांकि, गेहूं के लिए भूसे की जरूरत होती है।

यदि यह पुआल के लिए नहीं होता, तो गेहूं न पक सकता था और न ही गुणा कर सकता था। पुआल अनाज के लिए एक पोशाक और रक्षा के रूप में कार्य करता है।

यदि चिलचिलाती धूप मकई के कान से टकराती है, तो पुआल इसे अधिक गर्मी से बचाता है जिससे यह सूख सकता है।

अगर पाला, बारिश या कुछ और अनाज को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है, तो पुआल इन सभी बुराइयों को अपने ऊपर ले लेता है।

तो यह कहा जा सकता है कि पुआल गेहूं का जीवन है।

भूसे को फेंक दिया जाता है और केवल तभी जलाया जाता है जब वह अनाज से अलग हो जाता है।

मेरी वसीयत का अनाज वृद्धि या कमी के अधीन नहीं है।

यदि हम इसका बहुत अधिक मात्रा में सेवन कर भी लें तो यह किसी भी प्रकार से कम नहीं होता, एक दाने से भी नहीं।

तो मुझे तेरा भूसा चाहिए; मुझे इसे एक परिधान के रूप में, एक बचाव के रूप में चाहिए। इसलिए तुम्हारे मुझसे अलग होने का कोई खतरा नहीं है।"

बाद में वह वापस आया और मैंने उससे कहा:

"यीशु, मेरे जीवन, यदि आपकी इच्छा में रहने वाली आत्माएं शांति की इंद्रधनुष होंगी, तो उनका रंग क्या होगा?"

अच्छाई, *उसने मुझसे कहा* :

"उनके रंग चमकदार और पूरी तरह से दिव्य होंगे। वे होंगे:

-प्यार, दया,

-बुद्धि,

-शक्ति,

-परम पूज्य,

- दया और न्याय।

ये रंग रात के अंधेरे में रोशनी की तरह होंगे। वे प्राणियों की आत्माओं को ऊपर उठाएंगे »।

मैंने अपने प्यारे यीशु से कहा: "मैं नहीं समझता।

जितना अधिक तुम मुझसे कहते हो कि तुम मुझे अपनी पवित्र इच्छा के लिए बहुत कुछ देते हो, उतना ही मैं दुखी और बदसूरत महसूस करता हूँ,

जब मुझे बेहतर महसूस करना चाहिए।"

यीशु ने उत्तर दिया:

"मेरी बेटी,

जितना अधिक मेरी इच्छा का दाना तुम में बढ़ेगा, उतना ही अधिक तुम अपने भूसे के दुख को महसूस करोगे।

जब सिल बनना शुरू होता है, तो गेहूँ और भूसा एक ही होते हैं।

लेकिन जब सिल विकसित होता है, दाना पक जाता है, भूसा उससे अलग हो जाता है और केवल अनाज की रक्षा के लिए रह जाता है।

तो जितना अधिक आप दुखी महसूस करते हैं,

मेरी वसीयत का दाना आप में उतना ही अधिक बनता है और अपनी पूर्ण परिपक्वता तक पहुंचता है।

आप में तिनका कोई और नहीं बल्कि आपका कमजोर स्वभाव है,

- मेरी इच्छा की पवित्रता और बड़प्पन की संगति में रहते हुए, वह अपने दुख को और अधिक महसूस करता है »।

उन्होंने जोड़ा :

"मेरे प्यारे, अब तक आपने मेरी तरफ से उस भूमिका पर कब्जा कर लिया है जो मेरी मानवता ने पृथ्वी पर निभाई है।

मैं अब आपको एक महान और बड़ी भूमिका देना चाहता हूं: जिसे मेरी इच्छा ने मेरी मानवता के संबंध में किया है।

देखो कितना ऊंचा है, यह रोल जितना उदात्त है।

मेरी मानवता की शुरुआत हुई थी, लेकिन मेरी इच्छा शाश्वत है। मेरी मानवता

स्थान और समय में सीमित थी

लेकिन मेरी इच्छा की कोई सीमा नहीं है।

मैं आपको इससे ज्यादा नेक रोल नहीं दे सकता था।"

यह सुनकर मैंने उससे कहा:

"मेरे प्यारे जीसस, मुझे समझ नहीं आता कि आप मुझे यह भूमिका क्यों सौंपना चाहते हैं। मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो मुझे इतना बड़ा एहसान दे सके!"

उन्होंने कहा :

"कारण हैं:

- मेरा प्यार ,

-तुम्हारा छोटापन,

-तुम्हारा जीवन मेरी बाहों में एक बच्चे की तरह है

जो अपने इकलौते यीशु के सिवा कुछ नहीं सोचता,

-और यह भी कि तुमने मुझे कभी बलिदान देने से मना नहीं किया।

मैं महान चीजों से प्रभावित नहीं हूं।

क्योंकि जो चीजें बहुत अच्छी लगती हैं उनमें हमेशा इंसान होता है।

मैं छोटी चीज़ों से प्रभावित होना पसंद करता हूँ, दिखने में छोटा, लेकिन वास्तव में बड़ा!

इसके अलावा, आपको यह संदेह होना चाहिए था कि मैंने अपनी वसीयत में आपको एक विशेष मिशन सौंपा होगा,

-चूंकि मैं आपसे उसके बारे में उसके सभी पहलुओं में लगातार बात करता हूं, जो मैंने अब तक किसी और के साथ नहीं किया है।

मैंने आपके साथ एक शिक्षक की तरह व्यवहार किया है जो चाहता है कि उसका

शिष्य अपने अनुशासन में सिद्ध हो: ऐसा लगता है कि वह किसी अन्य विषय के बारे में बात नहीं कर सकता।

यहां बताया गया है कि मैंने इसे आपके साथ कैसे किया।

मैंने आपको ईश्वरीय इच्छा के बारे में बताते हुए गुरु के रवैये को ऐसे लिया जैसे मुझे बाकी सब कुछ पता नहीं है।

जब मैंने तुम्हें अच्छी तरह सिखाया, तो मैंने तुम्हें प्रकट किया

आपका मिशन ई

कैसे पृथ्वी पर " *फिएट वॉलंटस तुआ*" की पूर्ति आप में शुरू होगी ।

हिम्मत मेरी बेटी! डरो नहीं।

सहायता और समर्थन के रूप में आप में मेरी इच्छा होगी »।

जब वह मुझसे बात कर रहा था, उसने मेरे सिर, चेहरे और दिल को अपने हाथों से सहलाया, जैसे कि यह पुष्टि करने के लिए कि वह मुझसे क्या कह रहा है। फिर वह गायब हो गया।

अपनी सामान्य अवस्था में स्वयं को पाते हुए, मैंने स्वयं को अपने शरीर के बाहर यीशु के पास पाया।

मैंने उससे कहा:

"मेरे प्रिय, मैं चाहता हूं कि आप इस बात पर ध्यान दें कि मैं आपकी वसीयत में कैसे प्रवेश करता हूं, ताकि आप मुझे बता सकें कि आपको यह पसंद है या नहीं।"

जब मैंने उनकी वसीयत में प्रवेश करते समय सामान्यत: जो कहा, उसके बाद, जो मुझे नहीं लगता कि इसे यहां दोहराना आवश्यक है, इसे कहीं और कहा है।

उसके बाद, यीशु ने मुझे एक चुंबन दिया, इस अर्थ में कि वह मेरी बात से संतुष्ट था।

फिर *उसने मुझसे कहा* :

"मेरी बेटी, मेरी वसीयत में आत्माओं को छोटा करने का विशेष गुण है,

- इतना कि उन्हें एक अत्यधिक आवश्यकता महसूस होती है कि मेरी इच्छा उनके पूरे जीवन को निर्देशित करती है।

उनका छोटापन इतना महान हो जाता है कि वे मेरी इच्छा के पीछे कोई कार्रवाई या कदम नहीं कर सकते हैं।

वे पूरी तरह से मेरी वसीयत की कीमत पर जीते हैं, क्योंकि उनकी इच्छा न तो उनकी अपनी चीजों का सामान ले जाती है और न ही आत्म-प्रेम का। वे सब मेरी वसीयत का हिस्सा हैं, यानी

- अपने लिए नहीं,

-लेकिन इसे मुझे वापस देने के लिए।

क्योंकि उन्हें हर चीज की जरूरत होती है, वे मेरी वसीयत में डूबे रहते हैं।

मेरी बेटी, मैं कई बार दुनिया का चक्कर लगा चुकी हूं और सबसे छोटी कृतियों को खोजने के लिए एक-एक करके सभी कृतियों को देखा।

अंत में मैंने तुम्हें पाया, सबसे आखिरी। मुझे तुम्हारा छोटापन पसंद था और मैंने तुम्हें चुना।

मैंने तुम्हें अपने स्वर्गदूतों को सौंपा है कि तुम पर निगरानी रखो, तुम्हें बढ़ने के लिए नहीं, बल्कि *तुम्हारे छोटेपन की रक्षा करने के लिए* ।

अब मैं आप में अपनी इच्छा को पूरा करने का महान कार्य शुरू करना चाहता हूं, और इसके माध्यम से आप अपने आप को बड़ा नहीं महसूस करेंगे।

इसके उलट मेरी वसीयत तुम्हें और भी छोटा कर देगी।

और आप अपने जीसस की छोटी बेटी, मेरी वसीयत की छोटी बेटी बनी रहेंगी »।

मुझे लगता है कि मेरा गरीब दिमाग चकित है।

शब्द मुझे यह बताने में विफल करते हैं कि मैं कैसा महसूस करता हूं।

यदि मेरा यीशु चाहता है कि मैं लिखूं, तो उसे मुझे शब्दों में बताना होगा कि उसने मुझमें क्या प्रकाश डाला है। मुझे *बस इतना याद है कि उसने मुझसे कहा था* :

"मेरी बेटी, जब, मेरी वसीयत में,

एक आत्मा मुझसे प्रार्थना करती है, मुझे प्यार करती है, मेरी मरम्मत करती है, मुझे चूमती है और मुझे प्यार करती है, मुझे लगता है कि सभी प्राणी

- मुझसे प्रार्थना करो, मुझे प्यार करो, मेरी मरम्मत करो, मुझे चूमो और मुझे प्यार करो।

वास्तव में, चूंकि मेरी वसीयत सब कुछ और प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर ले जाती है, यह मुझे वह आत्मा देती है जो मेरी इच्छा में कार्य करती है।

चुंबन, आराधना और सभी का प्यार।

और उसमें सभी प्राणियों को देखकर,

मैं उसे सभी के लिए पर्याप्त चुंबन, प्यार और आराधना देता हूं।

मेरी वसीयत में रहने वाली आत्मा खुश नहीं है

-अगर वह मुझे हर किसी से पूरी तरह से प्यार करते नहीं देखता,

-अगर वह मुझे सभी के द्वारा गले लगाए, प्यार और प्रार्थना करते हुए नहीं देखता है।

मेरी वसीयत में, चीजें आधी नहीं, बल्कि पूरी तरह से की जा सकती हैं। मैं अपनी इच्छा से कार्य करने वाली आत्मा को छोटी-छोटी चीजें नहीं दे सकता, लेकिन विशाल चीजें जो सभी के लिए पर्याप्त होने में सक्षम हैं।

मेरी इच्छा में अभिनय करने वाली आत्मा के साथ, मैं एक मार्गदर्शक के रूप में

कार्य करता हूं

-जो दस लोगों द्वारा किया जाने वाला काम करना चाहेगा,

जबकि उनमें से केवल एक ही कार्य करने की पेशकश करता है,

- बाकी सभी मना कर देते हैं।

क्या यह उचित नहीं है कि प्रबंधक जो कुछ भी दस देना चाहता था, वह काम करने वाले एक व्यक्ति को दिया जाए?

नहीं तो मेरी वसीयत में काम करने वाले और अपनी मर्जी से काम करने वाले में फर्क कहां रह जाएगा?"

मैं बहुत कड़वे दिन जी रहा हूं क्योंकि मेरा हमेशा दयालु यीशु लगभग पूरी तरह से गायब हो गया है। क्या पीड़ा है!

मुझे लगता है कि मेरा मन भागवत इच्छा के क्षेत्र में भटक रहा है ताकि मैं इसे समझ सकूं और इसे प्राणियों तक पहुंचा सकूं।

ताकि वे इसे अपना जीवन बना सकें।

मेरा मन ईश्वरीय इच्छा और मानवीय इच्छा के बीच घूमता है ताकि वे एक हो जाएं।

जब मैं अपनी कड़वाहट की ऊंचाई पर था, मेरा अच्छा यीशु मुझ में कमजोर रूप से चला गया, उसने मेरे हाथों को अपने हाथों में पकड़ लिया और मेरे अंदर उसने मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, हिम्मत, मैं आऊंगा!

मेरी वसीयत के अलावा किसी और चीज की चिंता मत करो। चलो पृथ्वी को एक तरफ छोड़ दें। अंततः वे बुराई से थक जाएंगे।

वे हर जगह आतंक और नरसंहार बोएंगे, लेकिन यह बंद हो जाएगा और मेरे प्यार की जीत होगी। टी।

तुम, अपनी इच्छा को मेरे में विसर्जित करो

अपने कार्यों से आप प्राणियों के सिर के ऊपर एक दूसरे स्वर्ग की तरह बनेंगे और मैं आपके दिव्य कार्यों के माध्यम से उनके कार्यों को देखूंगा।

-दिव्य क्योंकि वे मेरी इच्छा से आते हैं।

इस तरह आप मेरी शाश्वत इच्छा को मानव इच्छा के दुखों पर विजय प्राप्त करने के लिए पृथ्वी पर उतरने के लिए बाध्य करेंगे।

यदि आप चाहते हैं कि मेरी इच्छा पृथ्वी पर उतरे और मेरे प्रेम की विजय हो, तो आपको अवश्य करना चाहिए

- सांसारिक आकस्मिकताओं से ऊपर उठना

- और हमेशा मेरी इच्छा में कार्य करें।

फिर हम एक साथ नीचे उतरेंगे और हम अपनी इच्छा और अपने प्यार से प्राणियों पर हमला करेंगे।

हम उन्हें इस तरह भ्रमित करेंगे कि वे विरोध नहीं कर पाएंगे।

अभी के लिए, उन्हें वह करने दें जो वे चाहते हैं। मेरी इच्छा में जियो और सब्र रखो।"

जब मैं अपनी दर्दनाक अवस्था में तरस रहा था, मेरा प्यारा यीशु आया, मुझे कसकर खींच लिया और मुझसे कहा:

"मेरी बेटी, मैं तुमसे दोहराता हूँ, पृथ्वी पर मत रहो! प्राणियों को वही करने दो जो वे चाहते हैं।

वे युद्ध में जाना चाहते हैं, ऐसा ही रहने दें।

जब वे थक जाएंगे तो मैं भी अपनी लड़ाई लड़ूंगा।

उनकी बुरी थकान, उनकी निराशा और उनकी पीड़ा उन्हें मेरे युद्ध को स्वीकार करने के लिए तैयार करेगी।

यह प्रेम का युद्ध होगा।

मेरी इच्छा प्राणियों के बीच स्वर्ग से उतरेगी। मेरे वसीयत में किए गए आपके कार्य,

- साथ ही मेरी इच्छा में बनाई गई अन्य आत्माओं की तरह, वे प्राणियों के खिलाफ युद्ध करेंगे, खूनी युद्ध नहीं।

वे प्रेम के हथियारों से लड़ेंगे,

- प्राणियों के लिए उपहार, अनुग्रह और शांति लाना। वे ऐसी अद्भुत चीजें देंगे

-कि पुरुष चकित होंगे।

मेरी इच्छा, स्वर्ग का मेरा मिलिशिया,

यह मनुष्यों को दैवीय हथियारों से भ्रमित करेगा।

यह उन्हें अभिभूत कर देगा, उन्हें उन उपहारों और धन को देखने के लिए प्रकाश देगा जिनके साथ मैं उन्हें समृद्ध करना चाहता हूं।

मेरी वसीयत में किए गए कार्य,

-सृजनात्मक शक्ति को अपने भीतर ले जाना मनुष्य का नया उद्धार होगा और

वह उन्हें पृथ्वी पर स्वर्ग का सारा माल लाएगा।

वे लाएंगे

- प्यार का नया युग और

- मानव अधर्म पर उनकी विजय।

इसलिए हथियार, उपहार और अनुग्रह बनाने के लिए मेरी इच्छा में अपने कार्यों को गुणा करें।

- जीवों के बीच में कौन उतरेगा और

-जो उनके साथ लव की जंग में शामिल होगा।"

फिर, अधिक व्यथित स्वर में, उन्होंने कहा:

"मेरी बेटी, मेरे साथ क्या होता है एक गरीब पिता के साथ होता है जिसके बुरे बेटे न केवल उसे नाराज करते हैं बल्कि उसे मारना चाहते हैं।

और अगर वे नहीं करते हैं, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि वे नहीं कर सकते।

अगर ये बच्चे अपने पिता को मारना चाहते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है

- जो एक दूसरे को मारते हैं,

- कि एक दूसरे के खिलाफ खड़ा है,

-जो एक दूसरे को गरीब करते हैं

-कि वे मरने की स्थिति में पहुंच जाएं।

और इससे भी बुरी बात यह है कि उन्हें पिता होने की भी याद नहीं है।

और पिता क्या करते हैं?

अपने ही बच्चों द्वारा निर्वासित। और जबकि ये

-लड़ाई,

- एक दूसरे को चोट पहुँचाना

-भूखे जा रहे हैं, हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करें

-नया धन ई

- अपने बच्चों के लिए उपाय।

फिर, जब वह उन्हें लगभग खोया हुआ देखेगा, तो वह उनके बीच जाएगा।

-उन्हें अमीर बनाने के लिए,

-उन्हें उनकी चोटों के लिए उपचार दें e

- उन्हें शांति और खुशी लाने के लिए।

इतने प्यार से जीते उसके बच्चे

वे स्थायी शांति में अपने पिता के साथ मिल जाएंगे और
वे इसे प्यार करेंगे।

मेरे साथ भी ऐसा ही होगा। तदनुसार
मैं तुम्हें अपनी वसीयत में चाहता हूं।
और मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ काम करें
प्राणियों को दिए जाने वाले धन को प्राप्त करने के लिए। मेरे प्रति वफादार रहो
और किसी और चीज की चिंता मत करो।"